मोहब्बत का पैग़ाम

विनोबा

अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, काशी

प्रकाशक :
मन्त्री, अखिल भारत सर्व-सेवा-संघ,
राजघाट, काशी

•

पहली बार : मार्च, १९६० : १,०००
दूसरी बार : अगस्त, १९६० : ३,०००
कुल छपी प्रतियाँ : ४,०००
संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण
मूल्य : ढाई रुपये

•

मुद्रक :
बलदेवदास,
संसार प्रेस, काशीपुरा, वाराणसी

दो शब्द

विनोबाजी की जम्मू-कश्मीर यात्रा के प्रवचनों का यह संकलन पाठकों की सेवा मे प्रस्तुत किया जा रहा है। इस यात्रा मे विनोबाजी के कुल १२१ पड़ाव हुए हैं। उनमें से ७६ प्रवचन लिये गये हैं। इनमें विनोबाजी की उस यात्रा के सभी महत्त्वपूर्ण विचार आ गये है। छोड़े गये प्रवचनों में इन्हीं विचारों की पुनरुक्ति है।

आशा है, इस संकलन से पाठकों को जम्मू-कश्मीर के बारे मे विनोबाजी ने जो कुछ कहा है, उसका समग्र दर्शन होगा।

—निर्मला देशपांडे

प्रकाशकीय

'मोहब्बत का पैग़ाम' का यह दूसरा संस्करण पाठकों के हाथों में है। पहले संस्करण की अपेक्षा यह संस्करण लगभग डेढ़गुना बड़ा है, फिर भी कीमत वही रखी गयी है। इस संस्करण मे जम्मू-कश्मीर संबंधी पू० विनोबाजी के सभी विचार सुव्यवस्थित रूप से आ गये हैं।

इस संस्करण में जम्मू-कश्मीर के पड़ावों की तथा उर्दू के विशिष्ट शब्दों की तालिका हिन्दी अर्थ-सहित जोड़ दी गयी है।

●

जम्मू और कश्मीर-राज्य

आचार्य विनोबाजी की पदयात्रा के पड़ावों की सूची

(ता० २२-५-'५९ से २०-९-'५९ तक)

१. लखनपुर	२२-५-'५९	२०. जम्मू	१०-६-'५९
२. बख्तपुर	२३-५-'५९	२१. ,,	११-६-'५९
३. थेन	२४-५-'५९	२२. दुमाना	१२-६-'५९
४. ·· ···	२५-५-'५९	२३. अखनूर	१३-६-'५९
५. बबार	२६-५-'५९	२४. गघारवाल	१४-६-'५९
६. पर्नाला	२७-५-'५९	२५. चौकीचोरा	१५-६-'५९
७. बिलावर	२८-५-'५९	२६. खरोट	१६-६-'५९
८. माडली	२९-५- ५९	२७. सुन्दरबनी	१७-६-'५९
९. गुजरु नगरौटा	३०-५-'५९	२८ सियार	१८-६-'५९
१०. रामकोट	३१-५-'५९	२९. बगनोटी	१९-६-'५९
११. बिलासपुर	१-६-'५९	३०. नौशेरा	२० ६-'५९
१२. मानसर	२-६-'५९	३१. नारियाँ	२१-६-'५९
१३. नयीकल्डी	३ ६-'५९	३२. कल्लार	२२-६-'५९
१४. साबा	४-६-'५९	३३ रजौरी	२३-६-'५९
१५ रामगढ़	५-६-'५९	३४ ··· ···	२४-६-'५९
१६. अर्निया	६-६-'५९	३५. थाना मंडी	२५-६-'५९
१७. रणवीरसिंगपुरा	७-६-'५९	३६. डेरा की गली	२६-६-'५९
१८. मीरा साहिब	८-६-'५९	३७. बफलियाज	२७-६-'५९
१९. जम्म	९-६-'५९	३८. सूरनकोट	२८-६-'५९

926

३९.	... ...	२९-६-'५६
४०.	पूँच	३०-६-'५६
४१.	,,	१-७-'५६
४२.	चांडक	२-७-'५६
४३.	मडी राजपुरा	३-७-'५६
४४.	,,	४-७-'५६
४५.	,,	५-७-'५६
४६.	,,	६-७-'५६
४७.	,,	७-७-'५६
४८.	,,	८-७-'५६
४९.	लोरेन	९-७-'५६
५०.	,,	१०-७-'५६
५१.	मोलसर	११-७-'५६
५२.	ब्रोटपथरा	१२-७-'५६
५३.	तुगन	१३-७-'५६
५४.	गोरवन	१४-७-'५६
५५.	गुलमर्ग	१५-७-'५६
५६.	,,	१६-७-'५६
५७.	,,	१७-७-'५६
५८.	,,	१८-७-'५६
५९.	,,	१९-७-'५६
६०.	बाबारेषि	२०-७-'५६
६१.	मागाम	२१-७-'५६
६२.	पट्टण	२२-७-'५६
६३.	दिलना	२३-७-'५६
६४.	बारामुल्ला	२४-७-'५६
६५.	वत्तरगाम	२५-७-'५६
६६.	हिंदवारा	२६-७-'५६
६७.	बूमे	२७-७-'५६
६८.	वटलब	२८-७-'५६
६९.	सोपोर	२९-७-'५६
७०.	हमरे	३०-७-'५६
७१.	सिंगपुरा	३१-७-'५६
७२.	शालटेंग	१-८-'५६
७३.	श्रीनगर	२-८-'५६
७४.	,,	३-८-'५६
७५.	,,	४-८-'५६
७६.	,,	५-८-'५६
७७.	,,	६-८-'५६
७८.	पामपुर	७-८-'५६
७९.	अवतीपुरा	८-८-'५६
८०.	बीजबेहारा	९-८-'५६
८१.	मार्तण्ड	१०-८-'५६
८२.	अक्कड़	११-८-'५६
८३.	गनेशपुर	१२-८-'५६
८४.	पहलगाँव	१३-८-'५६
८५.	,,	१४-८-'५६
८६.	बटकुट	१५-८-'५६
८७.	ऐशमुकाम	१६-८-'५६
८८.	सीर	१७-८-'५६
८९.	अनन्तनाग	१८-८-'५६
९०.	अच्छाबल	१९-८-'५६

९१. कूकरनाग २०-८-'५९
९२. ,, २१-८-'५९
९३ वेरीनाग २२ ८-'५९
९४. टटहार २३-८-'५९
९५. बनीहाल २४-८-'५९
९६. रामसू २५-८-'५९
९७. डिगडोल २६-८-'५९
९८. रामबन २७-८-'५९
९९. पीडा २८-८-'५९
१००. बटोत २९-८-'५९
१०१. कूद ३० ८-'५९
१०२. चपियाड़ी ३१-८-'५९
१०३. सस्मोली १-९-'५९
१०४. उधमपुर २-९-'५९
१०५. गढ़ी ४-९-'५९
१०६. टिकरी ५-९-'५९
१०७. कटरा ६-९-'५९
१०८. ,, ७-९-'५९
१०९. दोमेल ८-९-'५९
११०. नगरौठा ९-९-'५९
१११. जम्मू १०-९-'५९
११२. ,, ११-९-'५९
११३. भटिंडी १२-९-'५९
११४. बम्मनवाड़ी १३-९-'५९
११५. विजयपुर १४-९-'५९
११६. साँबा १५-९ '५९
११७. गगवाल १६-९-'५९
११८. हीरानगर १७-९-'५९
११९. हमीरपुर १८-९-'५९
१२०. कठुवा १९-९-'५९
१२१. ,, २०-९-'५९

अनुक्रम

मोहब्बत का पैग़ाम

: १ :

तिहरा काम : देखना, सुनना, प्यार करना

[आरभ मे जम्मू-कश्मीर राज्य के प्रधान मत्री श्री बक्शी गुलाम मुहम्मदजी ने पू० विनोबाजी के स्वागतार्थ भाषण किया। बाद में पू० विनोबाजी ने कहा .]

पंढरपुर मे ऐलान

आज मुझे कितनी खुशी हो रही है, इसका बयान लफ्जों मे नहीं हो सकता। करीब एक साल हुआ, सर्वोदय-सम्मेलन पढरपुर मे हुआ था। वहाँ हमने जाहिर किया था कि अब हम कश्मीर जाना चाहते हैं। इसलिए इसके बीच का प्रोग्राम इधर-उधर जाने का कुछ कम करना पड़ा। सारे भारत मे और शायद भारत के बाहर दूसरे देशों में भी यह बात जाहिर हो गयी कि बाबा कश्मीर जा रहा है।

मेरे आने के पहले अच्छे काम

मेरे कश्मीर आने के पहले यहाँ कुछ बातें अच्छी हुई, जो मेरे यहाँ आने मे मददगार होंगी और काम के लिए बहुत ताकत देनेवाली होंगी। एक तो यह कि यहाँ बाहर से आने के लिए पाबदियाँ थीं। उसका अब कोई कारण नहीं मालूम हुआ। इसलिए अब वह हटा दी गयी हैं। हम समझते हैं कि हमारे लिए यह एक बहुत बड़ी बात है। दूसरी बात, हमने अखबारों मे पढा है कि यहाँ जमीन का सीलिंग हुआ है और उसके ऊपर की जमीन बाँटी गयी है और बाँटी जा रही है। लेकिन एक बात हमारे आने से पहले जाहिर हो गयी है कि जो जमीन सरकार की तरफ आयेगी, वह बेजमीनो को दी जायगी। यह एक बहुत बड़ा काम हुआ है। मेरे आने के लिए यह एक शुभ बात हो गयी है।

कल पठानकोट मे कुछ मुसलमान भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने अपनी तरफ से हमे एक ऐसी भेट दी, जिससे बेहतरीन दूसरी कोई चीज हो ही नहीं सकती। उन्होंने एक बड़ी खूबसूरत कुरान की प्रति मुझे भेट में दी। शायद विदेश मे छपी है और उसमे एक बाजू अंग्रेजी मे तरजुमा किया है। हम समझते हैं कि हमारे कश्मीर-प्रवेश के लिए अल्ला का आशीर्वाद हमे हासिल हो गया है और अब यहाँ आने पर तो हमारे बक्शीजी ने जाहिर कर दिया कि कुल रियासत का ही दान दिया जा सकता है। यह बहुत बड़ी बात उन्होंने कही। यह हो सकता है और होना ऐसा ही चाहिए। कुल रियासत गरीबों को मदद करती है—कुल स्टेट गरीबों के लिए काम कर रही है, ऐसा होना चाहिए। बक्शीजी ने अभी जो जाहिर किया, वह केवल एक शब्द नहीं; बल्कि उसके पीछे बहुत बड़ा भाव पड़ा है। इसलिए मुझे विश्वास हो जाता है कि परमेश्वर का आशीर्वाद इस काम के पीछे है।

अभी आपने सुना कि लोग एक मंत्र बोल रहे हैं, 'जय जगत्'। इससे आगे बच्चों की जबान से भी यही मंत्र निकलेगा—'जय जगत्!' यह भी एक बड़ी ताकत है। अभी यहाँ तीन-चार भाइयों ने दानपत्र दिये हैं। ये सब अच्छे लक्षण हैं। हमारे लिए लोगों ने जो आशा और श्रद्धा रखी है, वह इसमे दीख पड़ती है।

तीन चीजें चाहता हूँ

मैं यहाँ आकर क्या करना चाहता हूँ, इसकी ओर थोड़ा-सा इशारा कर दूँ। मैं अपनी ओर से कुछ भी नहीं चाहता। भगवान् जो करना चाहता है, वही होगा। मैं उसमें रुकावट न बनूँ, तो मैंने कमाया। उसकी जो इच्छा हो, वही होनी चाहिए। वह जो चाहेगा, वही होगा। इसमें मेरा पूरा यकीन है। जैसे कुरान में कहा है, यह केवल 'इल्मुल यकीन' नहीं, 'आयनुल यकीन' भी है। मैंने देखा है कि भगवान् जो चाहता

है, वही होता है। अभी तक मैंने अपना सारा उसी पर सौंपा है। कभी भी मेरे लिए ऐसी चीज नहीं हुई, जो मेरे लिए और देश के लिए मुफीद न हो। मेरा उस पर भरोसा है। वह जो चाहेगा, वही होगा। इसलिए अगर भगवान् ने चाहा, इन्शा अल्लाह! तो मैं तीन बातें करना चाहता हूँ : (१) मैं देखना चाहता हूँ, (२) मै सुनना चाहता हूँ और (३) मैं प्यार करना चाहता हूँ। जितना प्यार करने की ताकत भगवान् ने मुझे दी है, वह सब मैं यहाँ इस्तेमाल करना चाहता हूँ। अगर वह सारी खतम हो जाय, तो मैं भगवान् से और माँगूँगा। अगर लाचारी से मुझे बोलना पडे, तो केवल प्यार करने के लिए ही बोलूँगा, ज्यादा नहीं बोलूँगा। मेरा भरोसा बोलने पर नहीं है। हम दिल से भगवान् की प्रार्थना करें, तो उसीके बल से सारा होता है।

मेरे पीछे इलाही ताकत

जो काम मैंने उठाया है, वह मैंने नहीं उठाया है। मुझ पर वह लादा गया है। आठ साल पहले की बात है, तेलगाना मे मै एक गाँव मे गया था। वहाँ के हरिजनों ने जमीन माँगी। मैं सोच में पड़ गया कि मैं कहाँ से जमीन ला दूँ? एक विचार यह भी आया कि सरकार के पास अर्जी पेश करूँ, लेकिन फिर सोचा कि इस प्रकार की माँग हर गाँव से आ सकती है। और लोग तो सरकार की सरकार हैं। इसलिए मैंने लोगों से ही पूछा, तो एक भाई खड़ा हुआ। ८० एकड़ जमीन माँगी थी और वह १०० एकड़ देने को तैयार हुआ। मैंने उसे भगवान् का इशारा समझा और उसीको लेकर निकल पड़ा। उस दिन से आज तक लगातार घूमता ही हूँ। इस तरह बुढ़ापे मे लगातार घूमने की ताकत जिस्मानी ताकत नहीं हो सकती। रूहानी ताकत हो सकती थी, अगर वह मुझे हासिल होती। लेकिन वह मुझे हासिल नहीं है। मैं बहुत नम्रता से कहना चाहता हूँ कि यह ताकत 'इलाही' है, जो मुझे घुमा रही है, आगे ढकेल रही है, मेरे पीछे पडी है।

मुझमें अंदर ताकत है, लेकिन इस काम को उठाने के लिए जो ताकत चाहिए, वह मेरे पास नहीं है। लेकिन मैं घूम रहा हूँ, थकान बिलकुल नहीं है—इस पर मुझे भी अचरज होता है। इसलिए सिवा इसके कि अल्ला चाहता है और कोई वजह नहीं है कि यह काम मैं करूँगा।

मैं सबका, सब मेरे

जैसा कि बक्शी साहब ने कहा, मुझसे मिलने में किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं है। कोई किसी भी पार्टी का या पंथ का या और भी कोई हो, मेरे पास आ सकता है। किसीके लिए कोई पाबंदी नहीं है। अगर कोई पाबंदी रहेगी, तो वक्त की रहेगी। और एक बात मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि बक्शी साहब ने तो राज्य की ओर से कहा कि सब मुझसे मिल सकते हैं। लेकिन मैं अपने दिल की ओर से कहता हूँ कि मेरे दिल में सबके लिए गुञ्जाइश है। बावजूद इसके कि पंजाब को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की तकसीम के समय ज्यादा-से-ज्यादा भुगतना पड़ा, फिर भी वहाँ भजन चलता है: 'ना कोई वैरी, नाही बिगाना।' गुरुओं का यह भजन है कि हमारे लिए कोई दुश्मन नहीं है, कोई परकीय नहीं है। सभी हमारे दोस्त हैं, परिवार के हैं: 'सकल संगी हमको बनी आई।' हमारी सबके साथ बनती है। जैसा कि इस भजन में कहा है, वैसे ही मेरी भी सबके साथ बनती है। सब मेरे है और मैं सबका हूँ। मेरे दिल में 'खास किसीके लिए' ऐसी बात नहीं है कि फलाने पर मैं ज्यादा प्यार करूँ और फलाने पर कम।

मुहम्मद पैगंबर का जीवन-चरित्र मैं पढ़ रहा था। उसमें एक बात आती है। अबुबकर के बारे में मुहम्मद साहब कहते हैं कि "मैं उस पर सबसे ज्यादा प्यार कर सकता हूँ, अगर एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना न हो। याने खुदा की तरफ से एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना है। इस तरह मनाही न होती, तो मैं अबुबकर पर

ज्यादा प्यार करता।" यही मेरे दिल की बात है। मैं एक भी शख्स पर किसीसे ज्यादा प्यार नहीं कर सकता। याने प्यार करने मे फर्क नहीं कर सकता हूँ।

मैने लुई पाश्चर की एक तस्वीर देखी थी। उसके नीचे एक वाक्य लिखा था, फ्रेंच, अग्रेजी और हिन्दी मे भी : "मै तुम्हारा धर्म क्या है; यह नहीं जानना चाहता। तुम्हारे खयालात क्या हैं, यह भी नहीं जानना चाहता। सिर्फ यही जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे दुःख क्या हैं। उन्हें दूर करने मे मदद करना चाहता हूँ। मजहब क्या है, यह देखना नहीं चाहता। खयालात नहीं देखना चाहता। दुःख दूर करना चाहता हूँ। ऐसा काम करनेवाले इन्सान का फर्ज अदा करते हैं।" इस वचन का मुझ पर बहुत असर हुआ। मेरी वैसी ही कोशिश हो रही है।

लखनपुर
२२-५-'५९

मुझमें अंदर ताकत है, लेकिन इस काम को उठाने के लिए जो ताकत चाहिए, वह मेरे पास नहीं है। लेकिन मैं घूम रहा हूँ, थकान बिलकुल नहीं है—इस पर मुझे भी अचरज होता है। इसलिए सिवा इसके कि अल्ला चाहता है और कोई वजह नहीं है कि यह काम मैं करूँगा।

मैं सबका, सब मेरे

जैसा कि बक्शी साहब ने कहा, मुझसे मिलने में किसी प्रकार की कोई रुकावट नहीं है। कोई किसी भी पार्टी का या पथ का या और भी कोई हो, मेरे पास आ सकता है। किसीके लिए कोई पाबंदी नहीं है। अगर कोई पाबंदी रहेगी, तो वक्त की रहेगी। और एक बात मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि बक्शी साहब ने तो राज्य की ओर से कहा कि सब मुझसे मिल सकते हैं। लेकिन मैं अपने दिल की ओर से कहता हूँ कि मेरे दिल में सबके लिए गुञ्जाइश है। बावजूद इसके कि पंजाब को हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की तकसीम के समय ज्यादा-से-ज्यादा भुगतना पड़ा, फिर भी वहाँ भजन चलता है: 'ना कोई बैरी, नाही बिगाना।' गुरुओं का यह भजन है कि हमारे लिए कोई दुश्मन नहीं है, कोई परकीय नहीं है। सभी हमारे दोस्त हैं, परिवार के हैं: 'सकल संगी हमको बनी आई।' हमारी सबके साथ बनती है। जैसा कि इस भजन में कहा है, वैसे ही मेरी भी सबके साथ बनती है। सब मेरे हैं और मैं सबका हूँ। मेरे दिल में 'खास किसीके लिए' ऐसी बात नहीं है कि फलाने पर मैं ज्यादा प्यार करूँ और फलाने पर कम।

मुहम्मद पैगंबर का जीवन-चरित्र मैं पढ़ रहा था। उसमें एक बात आती है। अबुबकर के बारे में मुहम्मद साहब कहते हैं कि "मैं उस पर सबसे ज्यादा प्यार कर सकता हूँ, अगर एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना न हो। याने खुदा की तरफ से एक शख्स से दूसरे शख्स पर ज्यादा प्यार करना मना है। इस तरह मनाही न होती, तो मैं अबुबकर पर

ज्यादा प्यार करता।" यही मेरे दिल की बात है। मैं एक भी शख्स पर किसीसे ज्यादा प्यार नहीं कर सकता। याने प्यार करने मे फर्क नहीं कर सकता हूँ।

मैंने लुई पाश्चर की एक तस्वीर देखी थी। उसके नीचे एक वाक्य लिखा था, फ्रेंच, अंग्रेजी और हिन्दी मे भी : "मै तुम्हारा धर्म क्या है, यह नहीं जानना चाहता। तुम्हारे खयालात क्या हैं, वह भी नहीं जानना चाहता। सिर्फ यही जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे दुःख क्या हैं। उन्हें दूर करने में मदद करना चाहता हूँ। मजहब क्या है, यह देखना नहीं चाहता। खयालात नहीं देखना चाहता। दुःख दूर करना चाहता हूँ। ऐसा काम करनेवाले इन्सान का फर्ज अदा करते हैं।" इस वचन का मुझ पर बहुत असर हुआ। मेरी वैसी ही कोशिश हो रही है।

लखनपुर
२२-५-'५१

: २ :

इधर ग्रामराज्य, उधर दुनिया की सरकार

सर्वत्र एक ही दर्शन

आज इस राज्य मे मेरा यह पहला ही दिन है। मैं यहाँ कुछ देख रहा हूँ और कुछ सुन रहा हूँ। इस समय मेरी वही हालत है, जो पहले दिन स्कूल मे दाखिल होनेवाले लड़के की होती है। लड़का स्कूल मे सारी चीजें आँखों से देखता है, कानों से सुनता है, पर कुछ भी सोच नहीं पाता। धीरे-धीरे उसका स्कूल के साथ परिचय होता है। इसी तरह आज हमने भी सारे दिन सिर्फ देखा-सुना। आज यहाँ दिनभर जो चहल-पहल रही, उससे हमें बिहार का स्मरण हो आया। जो चीज बिहार की जनता मे दीख पडती थी, वही यहाँ भी दिखाई पडी है। बात यह है कि कन्याकुमारी से लेकर कश्मीर तक सारे देश मे एक ही सभ्यता, एक ही संस्कार और एक ही जैसे खयाल काम करते हैं। मैं यहाँ की बहनों और भाइयों को देखता हूँ, तो वे ही चेहरे दीखते है, जिन्हे सात-आठ सालों से देख रहा हूँ। आज जो कुछ सवाल मेरे सामने रखे गये और जो कुछ जानकारी मुझे दी गयी, उससे मालूम पडता है कि मैं किसी नयी जमीन पर नहीं आया हूँ। अपनी पुरानी जमीन पर ही आया हूँ।

राष्ट्र नही रहेंगे

यहाँ के हालात कुछ खास किस्म के हैं, ऐसा कहा जाता है। परन्तु यह है विज्ञान का जमाना, जिसकी एक तमन्ना, एक ख्वाहिश है कि सारे इन्सान मिल-जुलकर काम करें। ये जो अलग-अलग राष्ट्र और अलग-अलग कौमे बनी है, विज्ञान के जमाने मे नहीं टिकेंगी, इन्सान को कुल एक होकर

रहना पडेगा। इधर तो गॉव रहेगा, छोटी-सी आबादी, जहॉ सब लोग इकट्ठा होकर रहेगे और उधर कुल दुनिया की एक सरकार बनेगी। आज बीच-बीच में राष्ट्र, प्रात और जिले हैं, लेकिन विज्ञान के जमाने मे एक बाजू गॉव और दूसरी बाजू दुनिया रहेगी और इस बीच जो कड़ियॉ होंगी, वे सभी को जोडनेवाली होंगी। ज्यादा सत्ता गॉववालों के हाथ मे होगी और अखलाकी, नैतिक सत्ता, दुनिया का जो मरकज होगा, विश्व का मुख्य केन्द्र होगा, उसमे रहेगी। उसमे ऐसे लोग रहेगे, जो गैरजानिबदार होंगे, अच्छे सोचनेवाले होंगे, स्वार्थी नहीं होंगे, वे सलाह-मशविरा देते रहेगे। इसका आरम्भ हम यहॉ पर गॉव-गॉव को एक समाज बनाकर करें और स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी रहे, ऐसा करें।

जनता के बल पर ही सरकार चलेगी

आज हर बात सोचने का जिम्मा बक्शी साहब पर डाला गया है। और लोग यही करते है कि उनसे ठीक काम हुआ, तो उनकी तारीफ करते हैं और ठीक काम नहीं हुआ, तो उनकी निंदा करते है। इसके बदले मे हर गॉव को अपने पॉवों पर खडा होना चाहिए और अपनी जिम्मेवारी आप उठानी चाहिए। स्टेट पर कम-से-कम जिम्मेवारी होनी चाहिए। विज्ञान के जमाने मे यही चीज माकूल होगी।

यहॉ कुछ लोग ऐसे हैं, जिनसे जमीन ली गयी है और कुछ लोग ऐसे हैं, जिनको जमीन की जरूरत है। उन लोगों ने आज अपनी-अपनी समस्याऍ हमारे सामने रखीं। उनके सवाल याने सारी जमात के सवाल है। उन सारे सवालो को हल करना किसी भी सरकार के लिए मुमकिन नहीं है। गॉव-गॉव के लोग अपना जिम्मा न उठायें, तो यह नामुमकिन है कि कोई भी सरकार इस काम को उठाये।

सीलिंग के बाद भी दान

गॉव मे आदमी रहता है और जगल मे जानवर। उन दोनो मे यही

फर्क है कि इन्सान एक-दूसरे के लिए हमदर्दी दिखा सकता है, जानवर अपने दुःख से दुःखी होता है और अपने ही सुख से सुखी होता है। इन्सान दूसरों के दुःख में भी दुःखी होना जानता है। जहाँ दूसरे के लिए हमदर्दी हो, वहीं लोग अपने गाँव का कारोबार खुद चला सकेंगे और उसमें सरकार की मदद भी ले सकेंगे। इसलिए जनता को अपने मसले खुद-ब-खुद हल करने चाहिए।

आज यहाँ हमें चार भूदान-पत्र मिले थे। यहाँ जमीन पर सीलिंग है। इसके बावजूद यहाँ के लोगों ने, जिनके पास मर्यादा से भी कम जमीन है, हमें दान दिया। यह बहुत बड़ी बात है। इससे मुझे बहुत खुशी हुई। भगवान् ने हमें संपत्ति, श्रम-शक्ति, जमीन आदि जो कुछ दिया है, उसका एक हिस्सा समाज को देना चाहिए।

जैसे हवा, पानी सबके लिए हैं, वैसे ही जमीन सबके लिए है, ऐसा समझकर गाँव के लोग सारी जमीन को गाँव की बना दें, तो गाँव में सरकारी दखल नहीं होगा। लेकिन सरकार की मदद मिलेगी। कानून तो स्टीम रोलर जैसा होता है। कानून की मंशा सभी को इन्साफ देने की हो, तब भी वह सभी को इन्साफ नहीं दे सकता, इसलिए गाँव को एक परिवार बनाकर हम जमीन सबकी बना देते हैं, तो सरकार का कानून गाँव में दखल नहीं दे सकेगा।

जैसे बारिश बरसती है, तो सब खेतों पर समान बरसती है। उसका उपयोग कैसे हो, यह तो किसान की अक्ल पर निर्भर है। गाँव में एक शख्स दुःखी है, उसे आप मदद देने के लिए कुछ दान देते हैं, तो क्या कोई आपको रोक सकता है? आज आपके पास कानून से २२ एकड़ जमीन रह गयी है। इसमें से आप दान करते हैं, तो आपको कानून नहीं रोक सकता। इस तरह हम सारे गाँव के लिए सोचें, एक-दूसरे के लिए हमदर्दी रखें। हम सब इन्सान हैं। हम सबको भूख-प्यास लगती है, इसलिए जरूरी

है कि हम एक-दूसरे को मदद करें। इस तरह हम सारे गाँव को एक बना सकते हैं।

मैं घर-घर जाऊँगा

मै यहाँ कुछ देखना चाहता हूँ, इसलिए मै गाँव-गाँव मे पहुँचकर आपके घरों मे आऊँगा। आज लोग नाहक मेरे दर्शन के लिए आये। लेकिन कल से मै ही आपके दर्शन के लिए आऊँगा, आपकी बातें सुनूँगा और चाहूँगा कि आपके गाँव का कुछ काम बने। तेलगाना मे मैं इसी तरह घर-घर जाता था। लोगो की बाते सुनता था। उनकी समस्याओ का अध्ययन करता था और सरकारी अफसरों की मदद से उन समस्याओं को सुलझाता भी था। इसी तरह मै यहाँ भी करना चाहता हूँ। और हर गाँव मे देखूँगा कि जिस गाँव मे मैं आज आया, उस गाँव का कुछ काम बना या नहीं? जम्मू और कश्मीर स्टेट की चर्चा हुई, लेकिन क्या उससे गाँववालो का पेट भरेगा? क्या इस गाँव का सुख बढ़ा, दुःख घटा? मैं दुनियाभर के मसलों को महत्त्व देने के बजाय गाँव के मसलों को ज्यादा महत्त्व देता हूँ। बाबा आपके गाँव मे आया है, तो आपको भी सोचना चाहिए कि क्या आपने भूदान, सम्पत्तिदान देने का निश्चय किया है? आपमे से कोई शान्ति-सैनिक निकला है? गाँववालों ने गाँव की भलाई के लिए कोई संकल्प किया है? दर्शन तो हुए। दर्शनों से भी कुछ लाभ होता है। उस पर भी मेरा विश्वास है। लेकिन अगर गाँव का कोई काम नहीं बनता है, तो खाना मेरे गले नहीं उतरेगा।

एक वक्त का खाना छोड़ा

मैं बड़ी फजर मे थोडा-सा खा लेता हूँ। ९-१० मील चलना होता है। लेकिन आज कश्मीर मे प्रवेश हो रहा था, मै कश्मीर की जनता की कुछ सेवा करना चाहता हूँ, इसलिए आज मैंने एक समय का खाना छोड दिया। मेरा पेट ऐसा है कि एक समय खाना छोड़ देने से दूसरी बार मैं

भरपेट नहीं खा सकता हूँ और न दुगुना ही खा सकता हूँ। फिर भी सोचा कि थोड़ा-सा फाका करूँ, तो शुद्धि हो जाय। उससे थोडा काम बनता है, तो मैंने कश्मीर का नाम लेकर खाना छोड़ दिया। मेरा मन ऐसा नहीं है कि यहाँ जो खाना मैं खाऊँगा, उससे मुझे खुशी होगी। मै जरूर चाहता हूँ कि गरीबो का कुछ काम बने, उनको अच्छा खाना मिले। कहते हैं कि कश्मीर मे बहुत फल, मेवे और शहद होता है। लेकिन अगर गरीबों को ये चीजें नहीं मिलेंगी, तो मुझे नहीं भायेंगी, मीठी नहीं लगेंगी, उसका जायका नहीं आयेगा। वह तब आयेगा, जब यहाँ के गरीबो का कुछ काम बने।

नगद धर्म

स्टेट का भला बक्शीसाहब सोचेंगे, वह मेरा काम नहीं है। देश का भला पडित नेहरू सोचेंगे और दुनिया का भला मालूम नहीं कौन सोचेगा? अल्लामियाँ तो है ही। मैं गाँव ही की सोचता हूँ और गाँव का काम कैसा बने, यही देखता हूँ। स्वामी रामतीर्थ 'नगद धर्म' की बात करते थे। मरने के बाद की सोचना 'उधार धर्म' है। तुलसीदासजी ने कहा है : किसे मालूम है कि कौन 'जमपुर' जायगा और कौन 'परमधाम' जायगा? कौन 'दोजख' मे जायगा और कौन 'जन्नत' मे जायगा, यह कोई नहीं जान सकता। इसलिए हम नगद धर्म चाहते हैं, उधार नहीं। तो जिस गाँव मे हम आये हैं, उस गाँव का काम आज ही बने, यह हम चाहते हैं।

जम्मू-कश्मीर मे मेरी यात्रा चार छह महीनों तक चलेगी। उससे इस स्टेट का, हिन्दुस्तान का और दुनिया का क्या लाभ होगा, यह तो पता नहीं, लेकिन मै जिस गाँव मे जाऊँगा, वहाँ कुछ बनना चाहिए, यही मै देखूँगा।

हमारा भविष्य

हमारी कश्मीर-यात्रा की ओर सभी का ध्यान है, यह बात भी सही है।

लोग सोच रहे हैं कि देखें, अब बाबा यहाँ से किधर जाता है ? कश्मीर से एक रास्ता तिब्बत की तरफ जाता है, दूसरा रूस की तरफ, तीसरा पाकिस्तान की तरफ तथा चौथा पंजाब की तरफ जाता है। इन चारों रास्तों के अलावा एक रास्ता और भी है, जो सीधा ऊपर (आसमान) जाता है। ऊपर जाने के लिए तो कहीं से भी रास्ता मिल सकता है। इसलिए बाबा का आज का यह पड़ाव आखिरी पड़ाव नहीं है, ऐसा कोई नहीं कह सकता। मेरी ६४ साल की उम्र हो चुकी है। आखिर हिन्दुस्तान में औसत उम्र २७ साल की है। २७ से दुगुना भी जीऊँ, तो वह ५४ साल होता है। मैं तो उससे भी आगे दस साल बढ़ चुका हूँ। इसलिए मुझे अब यहाँ से बिदा होने के लिए पासपोर्ट मिल चुका है। मेरा टिकट कट चुका है। इस समय मुझे मरने का पूरा हक है। उस हक को मैं अदा न करूँ, तो दूसरी बात है। इसलिए तीन महीने के बाद मैं यहाँ रहूँगा या नहीं, किसको मालूम ? इसलिए मैं आज की बात आज ही करना चाहता हूँ। ईसामसीह ने कहा है : 'Sufficient unto the day the evil there of.' इस पर मेरा भरोसा है।

गरीबों को खाना मिले, तभी मुझे खाने का हक

आज मैं यही सोचूँगा कि यहाँ आने पर क्या काम बना। अगर कुछ बना होगा, तो मुझे आज खाने का हक है। मेरी यात्रा मेरे गुजारे के लिए चल रही है। गरीबों को खाना मिलेगा, तभी मुझे खाने का हक है। मुझे रोज अपना खाना हासिल करना चाहिए। मेरा रोज खाना-पीना चलता है। लोग मेरी सेवा करते हैं। इसलिए सवाल यह है कि मैं सेवा ज्यादा करता हूँ या सेवा ज्यादा लेता हूँ ? लोग मेरी बहुत चिंता करते हैं। मुझे दूध, शहद आदि देते हैं। अच्छे-से-अच्छा मकान भी रहने के लिए देते है। मेरी सेवा उधार रह जायगी, तब मैं घाटे में ही रहूँगा। तो जैसे आज का खाना आज खाता हूँ, वैसे इस गाँव का काम भी आज ही करना

चाहता हूँ। इसलिए मैंने तय किया है कि गाँव के हर घर में जाऊँगा। कुछ काम बनेगा, तभी मुझे खाना अच्छा लगेगा। यह मैं कोई आपको डरा नहीं रहा हूँ, कोई सत्याग्रह की बात नहीं कर रहा हूँ। ऐसे सत्याग्रह पर मेरा विश्वास भी नहीं है। मैं खाऊँगा, खाना मुँह में जायगा, लेकिन दिल को खुशी नहीं होगी। उसका स्वाद मुझे नहीं मिलेगा और लगेगा कि मैं हराम का खा रहा हूँ। लोग तो कहेंगे कि बड़ा सेवक आया है, खूब खाता है, लेकिन मुझे वह खाना अच्छा नहीं लगेगा। इसीलिए काम नहीं बनेगा, तो न हमारे लिए अच्छा है, न आपके लिए।

लखनपुर
२२-५-'५९

: ३ :

देहली के मन्सूबे से देहात की तरक्की नहीं होगी

हम चाहते हैं कि गॉव-गॉव की सेवा के लिए लोग निकलें। अपने घर की तो सभी देखते हैं, लेकिन गॉव की देखने के लिए कोई आगे आये। इस तरह जब गॉव की सेवा करनेवाले निकलेंगे, तभी गॉवो की तरक्की होगी। हम जगह-जगह देखते हैं कि स्कूलो की दीवालो पर पॉँच सालाना योजना मे भारत की तरक्की की तस्वीरें टॅगी रहती है। लेकिन तरक्की एक वात है और तरक्की की तस्वीर दूसरी वात। कुआँ एक वात है और कुएँ की तस्वीर दूसरी वात है। कुएँ मे पानी होता है, तस्वीर मे नहीं। दिल्ली मे बैठकर बड़े-बड़े दिमागवाले सारे भारत के लिए 'पॉचसाला' योजना वनाते हैं। लेकिन उनके दिमाग कितने ही वड़े क्यो न हों, कुल देश की योजना वे नहीं कर सकते। हर गॉव की हालत वे नहीं जानते। एक पचवर्षीय योजना खतम हुई, दूसरी चल रही है, फिर भी वेकारी दिनोंदिन बढ रही है। दुनिया की ऐसी अजीबोगरीव हालत है कि वेकारी भी वढती है और योजना भी चलती है। डॉक्टर भी वढते हैं और बीमारियॉ भी बढ़ती हैं। सूरज का प्रकाश भी फैल रहा है और ॲधेरा भी वढ रहा है। इसका कारण यही है कि गॉव-गॉव के लोग अपनी योजना नहीं बनाते।

सरकारी योजना का लाभ गरीबों को नसीव नही

होना तो यह चाहिए कि गॉव-गॉव के लोग योजना वनायें और सरकार उन्हे मदद दे। सरकार की योजना का लाभ उन्हींको मिलता है, जो मदद चूस सकते हैं। वडो को ही मदद मिलती है, गरीवो को नहीं।

यद्यपि हम चाहते है कि गरीबों को मदद मिले, लेकिन वे दे नहीं पाते। इस तरह की बाते अब खुल्लमखुल्ला योजना-मत्री (श्री डे) भी कर रहे हैं। दुनिया मे कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो मॉगने की भी ताकत नहीं रखते। असली दुःखी मनुष्य को ढूँढ़कर मदद देनी पड़ती है। वह बेचारा तो बेजबान होता है। यहाँ तक कि आप उसके गॉव मे आये हैं, इसका भी उसे पता नहीं चलता।

भाखरा-नांगल 'तीर्थ' कब ?

भाखरा-नागल बन रहा है, तो उसका पानी उन्हींको मिलेगा, जो जमीन के मालिक हैं। जो भूमिहीन हैं, उन्हे कुछ नहीं मिलेगा। कहा जाता है कि पानी मिलेगा तो फसल बढ़ेगी, जिससे सबको लाभ मिलेगा। ऊपर से पानी गिरता है, तो नीचे जमीन मे जाता ही है। लेकिन चट्टान हो, तो नीचे के स्तर मे कुछ भी पानी न जायगा। इसलिए केवल उत्पादन बढ़ा, तो गरीबो को कुछ-न-कुछ मिलेगा, यह मानना अपने-आपको ठगना है, आत्म-वचना है। इसलिए सीधे गरीब को ढूँढकर उसे मदद देनी चाहिए। पचवर्षीय योजना मे यह नहीं हो रहा है, ऐसा स्वयं श्री डे कह रहे हैं और हमने भी जगह जगह देखा है।

पं० नेहरू कहते हैं कि "भाखरा-नागल तीर्थस्थान है"। हमने कहा कि वह तीर्थस्थान बनेगा, बशर्ते जिन्हे पानी मिलेगा, उनकी जमीन का छठा हिस्सा गरीबों के लिए दान मे मिले। इसमे देनेवाला कुछ भी न खोयेगा, क्योंकि पानी मिलने से उत्पादन बहुत बढ़ जायगा। कहा जाता है कि एक करोड़ एकड़ जमीन को उससे पानी मिलेगा। अगर उसका छठा हिस्सा याने १६ लाख एकड़ जमीन दान में मिले, तो बहुत बड़ी बात हो जायगी। अगर सरकार इस तरह दान की शर्ते रखती, तो फिर पंजाब मे '. ति-कर' (betterment levy) के सवाल पर जो हो-हल्ला मचा, न मचता। उसमे गरीबों को जमीन मिलती, तो कम्युनिस्टों को भी

वह मजूर करना पडता। परन्तु यह किसे सूझता है? जो गरीबों जैसा बनकर गरीबों मे रहे, गरीबो के दुःख जाने, ऐसे को, मुझ जैसे को ही यह सूझता है। इसलिए देहली मे योजना बनने से गॉव की तरक्की नहीं होगी। तरक्की तो तब होगी, जब गॉव-गॉव मे अपने गॉव का हित सोचनेवाले लोग निकलेंगे। गॉव के दुःखी गरीबो का दुःख जानेंगे और सारे गॉववाले मिलकर दुःख मिटाने की योजना करेंगे। इस तरह गॉव-गाँव मे सेवा का इन्तजाम होगा, तभी यह काम बनेगा।

यहाॅ का दान आन्तरिक प्रेम का सूचक

हम जब यहाॅ आये, तो कितनों ने कहा कि यहाॅ की हालत अलग है। इसलिए हमने यहाॅ कदम रखा, तो डरते-डरते और भगवान् की खूब प्रार्थना करते-करते। हमे लग रहा था कि न मालूम यहाँ के लोग हमारी बात कैसे मानेंगे। उन्हे हमारी बात जॅचेगी या नहीं? हिन्दुस्तान के दूसरे सूबो की तरह यहाॅ खादी, ग्रामोद्योग, हरिजन-सेवा, कस्तूरबा ट्रस्ट आदि का कुछ काम भी नहीं हुआ था। इसलिए हमारे मन मे शक था कि यहाॅ अपना काम कैसे बनेगा? लेकिन हमे यहाॅ आये चार दिन हुए। हमने देखा कि चार ही दिनो मे कुल हवा बदल गयी। दानपत्रों की वर्षा शुरू हो गयी। ये दानपत्र बड़े कीमती हैं, क्योंकि यहाँ सरकार ने २२ एकड़ का सीलिंग पहले ही बना लिया है। इसलिए जो दान मिल रहा है, वह २२ एकड़ के अन्दर का ही है। जिन्होने दान दिया, उन पर परमेश्वर की बड़ी कृपा होगी, क्योंकि इस दान मे किसी प्रकार का दबाव नहीं है, इसमे केवल प्रेम है। यहाॅ के लोगों ने ऐसा नहीं कहा कि सरकार ने तो सीलिंग बनाया ही है, अब क्यों दान मॉगते हो? यह एक बहुत बडी बात है। ये दान दिल की गहराई से दिये जा रहे हैं, अदर के प्रेम को बता रहे हैं।

त्याग से ही जबान में ताकत

हमने दो दिनों से यहाँ गाँव की सेवा के लिए सेवकों की मॉग करना

भी शुरू किया है। पहले दो दिन इस तरह माँगने की हिम्मत नहीं की, लेकिन जब माँगना शुरू किया, तो काफी लोग नाम दे रहे हैं, जिनमें बहनें भी हैं। हमने देखा कि यहाँ भी दूसरे सूबों के जैसे ही प्रेम और त्याग करनेवाले इन्सान हैं। प्रेम से समझाया जाय, तो हिंदुस्तान के लोग त्याग करने के लिए राजी हैं। परंतु समझानेवाले की जबान में ताकत होनी चाहिए। जिसने खुद त्याग किया हो और जिसके हृदय में प्रेम हो, उसीकी जबान में ताकत आयेगी। जिसने त्याग का मजा चखा है, वही दूसरों से कहेगा कि तुम भी यह मजा चखो।

गाँववालों का सत्संकल्प

इस गाँव के लोगों ने सभी भूमिहीनों को जमीन दी है और यहाँ एक आश्रम खड़ा करने का भी संकल्प किया है, जिसके लिए जमीन तथा संपत्ति भी मिली है। इस तरह यहाँ नये सिरे से एक समाज बन रहा है। परमेश्वर की प्रेरणा काम कर रही है। अब हमें संकल्प करना है कि हम अपने गाँव में ग्राम-स्वराज्य स्थापित करेंगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, अपना कपड़ा गाँव में ही तैयार करेंगे। छुआछूत आदि सब भेद मिटा देंगे, प्रेम से रहेंगे। जो किसीको डराता नहीं और न किसीसे डरता है, सब पर प्रेम करता है, ऐसे शख्स की मदद भगवान् ऊपर-नीचे, अंदर-बाहर आदि सभी तरफ से करने के लिए तैयार खड़े रहते हैं। यकीन रखें कि ऐसे को कोई तकलीफ नहीं होती है। हमें आशीर्वाद दीजिये कि हमारी जम्मू-कश्मीर की यात्रा सफल हो और यहाँ का काम ऐसा बढ़े कि सारे भारत को गौरव महसूस हो कि जम्मू-कश्मीर ने भारत की इज्जत बढ़ायी।

सवार
२६-५-'५९

: ४ :

आजादी लाख नियामत है

हमारे देश को आजादी हासिल हुई है, लेकिन अभी सच्ची आजादी हासिल करना बाकी है। अंग्रेजों की और राजा-महाराजाओं की हुकूमत गयी, इसलिए सियासी आजादी हासिल हुई। लेकिन सियासी आजादी कम-से-कम आजादी है। उतनी आजादी से इन्सान तरक्की नहीं कर सकता। इन्सान तभी तरक्की कर सकता है, जब माली, इक्तसादी, सामाजिक आजादी भी हासिल हो और उसका दिल भी आजाद हो। कल हमने स्कूल की दीवाल पर लिखा हुआ एक जुमला पढ़ा : 'तन्दुरुस्ती हजार नियामत है।' यह बात तो बिलकुल ठीक है, लेकिन हम कहना चाहते हैं कि 'आजादी लाख नियामत है।' वह है दिल की आजादी। लेकिन दिल की यह आजादी तभी महसूस होती है, जब इन्सान अपने पर जब्त रखता है। जब वह अपने मन, इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखता है, तभी अन्दर की आजादी हासिल होती है।

सच्ची आजादी कब ?

बाहरी आजादी के लिए यह जरूरी है कि हम जिस जगह रहते हैं, वहाँ हमारा जीवन मिला-जुला हो, हम आपस में एक-दूसरे पर प्यार करते हों। फिर किसी तीसरे की हुकूमत हम पर नहीं चलेगी। लेकिन अगर हम आपस में लड़ते-झगड़ते हैं, तो सरकार का कानून आ बैठता है और हमारी आजादी में पाबंदी आ जाती है। गाँव-गाँव के लोग मिल-जुलकर रहते हैं, अपना कारोबार खुद सँभालते हैं, प्यार से गाँव का एक परिवार बनाकर रहते हैं, तो वह आजादी है। फिर गाँव को सरकार की मदद तो मिलेगी, लेकिन दखल सरकार का न होगा। जगह-जगह सरकार का कानून आये,

प्रजा के बोझ का सारा जिम्मा सरकार पर आये, लोग आपस मे लडते-झगड़ते रहे और उनके झगड़ों को मिटाकर अमन कायम करने की सारी जिम्मेदारी भी सरकार पर ही आये, तो वह सच्ची आजादी नहीं है।

सच्ची आजादी तभी आयेगी, जब : १. हम अपने मन, इन्द्रियों और बुद्धि पर काबू रखना सीखेगे, २ गॉव का एक परिवार बनाकर रहेगे, जमीन की मालकियत मिटायेंगे, गॉव का स्वराज्य चलायेंगे, गॉव के झगडे गॉव के बाहर नहीं ले जायेंगे, ३. कपड़ा, तेल आदि रोजमर्रा की चीजे गॉंव मे ही बनायेगे, जिससे गॉव के सब हाथ काम मे लगे। अगर रोजमर्रा की चीजे बाहर से लानी पड़ती हैं, तो वह गुलामी ही है, न कि आजादी।

आजादी याने अपने पर पाबन्दी

आजादी के मानी यह नहीं कि कोई पाबन्दी ही न हो। आजादी के माने है अपनी अपने-आप पर पाबन्दी। हम अपने घर मे झाड़ू लगाकर सारा कचरा पड़ोसी के घर के सामने फेंक देते है, तो उसे तकलीफ होती है। लेकिन अगर हम अपने खेत मे गड्ढा बनाकर उसमे वह कचरा डालते है, तो किसीको तकलीफ नहीं होती। आजादी का लक्षण यह नहीं कि जो मन मे आये, सो करना। सरकार कानून बनाये और पुलिस के जरिये सबसे उस पर अमल करवाये, तो वह आजादी नहीं कही जायगी। हम ही अपना कानून बनाते हैं और हमीं उस पर अमल करते हैं, तो वह आजादी है। यद्यपि आज चोरी के खिलाफ कानून बना है और चोरी करनेवाले को सजा मिलती है, फिर भी हम चोरी नहीं करते, तो वह सजा के डर से नहीं, बल्कि इसलिए चोरी नहीं करते कि हम उसे अधर्म मानते हैं। सरकार के दड के, सजा के भय से हम भलाई से बरतते हैं, तो वह आजादी नहीं है। लोग अच्छी चीज को खुद अच्छा समझ लेते हैं और उस पर अमल करते हैं। खराब चीज को खराब समझते हैं और उसे छोड़ देते हैं, तब आजादी है, ऐसा कहा जायगा।

जब जेल खाली रहेंगे

अच्छा काम करना चाहिए, बुरा नहीं करना चाहिए, यह बात बच्चों को सरकार का कानून सिखायेगा या पुलिस समझायेगी ? माता-पिता ही बच्चों को धर्म की तालीम देंगे कि सचाई बरतना चाहिए, झूठ नहीं बोलना चाहिए, किसीको तकलीफ नहीं देना चाहिए, सब पर प्यार करना चाहिए, सबके साथ अदब से और नम्रता से पेश आना चाहिए। इस प्रकार की तालीम माता-पिता अपने बच्चों को देंगे, तब बच्चे अच्छे बनेंगे। अगर यह तालीम देने की बात हम सरकार पर छोड़ेंगे, तो आजादी नहीं रहेगी। क्या बच्चों को मादरी जबान सरकार ने सिखायी ? जैसे माता बच्चे को मादरी जबान सिखाती है, वैसे ही भलाई, बहादुरी, विनय, सत्यनिष्ठा, प्रेम से मिल-जुलकर काम करना आदि बातें सिखाये, तो फिर सरकार के कानून की जरूरत नहीं रहेगी। फिर कानून किताब में पड़ा रहेगा, लेकिन कोई चोरी या झगड़ा नहीं करेगा। अदालत मे कोई केस नहीं जायगा। कोर्ट खाली रहेंगे, जेल खाली रहेंगे। जब जेल खाली पड़ेंगे, तब सच्ची आजादी आयेगी।

दुर्जन को सुधारने का तरीका

गाँववालों को हर रोज शाम को इकट्ठा होकर भजन करके फिर गाँव के बारे मे सोचना चाहिए। किसको क्या दुःख है, किसको क्या कमी है, कहाँ सेवा की जरूरत है, आदि सब देखकर सेवा का इन्तजाम करना चाहिए। गाँव मे सबको तंग करनेवाला कोई दुर्जन मनुष्य हो, तो ग्रामसभा उसे बुलायेगी और पूछेगी कि "क्यों भाई! तकलीफ क्यों देते हो ?" अगर उसने बात नहीं सुनी, तो गाँव का मुखिया कहेगा कि जब तक तुम अच्छी तरह से नहीं बरतते, तब तक मैं फाका करूँगा। इससे दुर्जन का दिल पिघलेगा और वह कहेगा कि अब मैं ऐसा बुरा काम नहीं करूँगा। फिर किसीको दंड देने की जरूरत नहीं पड़ेगी। दुर्जन पर प्रेम से जब्त रखके उसे सज्जन

बनाया जायगा । खराब चीज मे से अच्छी चीज पैदा हो सकती है। जैसे मनुष्य के मैले की खाद बनती है, तो उससे मेवे और फल पैदा होते हैं। इस तरह समाज मे जो बुराइयाँ हैं, उनका इलाज सारे गाँववाले मिलकर सोचेंगे। झगड़े मिटाने के काम मे बहनों को आगे आना चाहिए। इस तरह अपने गाँव के लोगों को खुद सँभालना यह आजादी का लक्षण है।

सजा नही, दया

आठ साल से मैं यही प्रेम की बात समझाता हुआ घूम रहा हूँ। प्रेम का लक्षण है 'देना'। **'हाथ दिये कर दान रे, कहत कबीरा सुनो भाई साधो, कंचन निपजत खान रे'**, जैसे खान में से सुवर्ण निकलता है, वैसे ही यह मनुष्य-देह सोने की खान है। लेकिन सोने की खान मे भी कचरा होता है, उसे अलग करके खालिस सोना लेना होता है। इसी तरह इस शरीर मे अच्छाई भी है और खराबी भी। भगवान् ने हमे हाथ दिये है, तो उन हाथों से हम अच्छे काम भी कर सकते हैं और बुरे काम भी। हमे चाहिए कि अच्छे काम करे, बुरे न करे। भगवान् ने इन्सान को जबान दी है, जो दूसरे किसी जानवर को नहीं दी है। उस जबान से हम 'राम-नाम' ले सकते हैं, प्रेम और ज्ञान की बाते कर सकते है और गालियाँ भी दे सकते हैं। भगवान् ने हमे जो नियामते, ताकते दे रखी हैं, उनका अच्छा उपयोग करे, तो वह होती है आजादी और गलत उपयोग करें, तो बर्बादी। आप तय कीजिये कि आप आजादी चाहते हैं या बर्बादी ? अगर आजादी चाहते हैं, तो अपने-आप पर जब्त रखना होगा, अच्छाई से बरतना होगा, बुराई को छोड़ना होगा, एक-दूसरे को बचाना होगा।

अगर मै गलत काम करूँ, तो आप मुझे बचाये। आप करे, तो आपको मै बचाऊँ। इस तरह एक-दूसरे को मदद देते चले जायँ। जैसे इन्सान तैरते हुए कभी थक जाता है, तो डूबने लगता है, फिर उसे बचाना पड़ता है। उसी तरह कमजोरी के कारण इन्सान कभी गलती कर लेता है, तो उसे हीन या नीच न समझकर उसकी मदद करनी चाहिए। यह ध्यान मे रखना

चाहिए कि हरएक मे कमजोरी होती है, हममे भी है। कोई बीमार पडा, चाहे वह अपनी ही गलती से बीमार पडा हो, तो भी हम उसकी सेवा करते हैं, उसे सजा नहीं देते। किसीने मीठे आम ज्यादा खाये और वह बीमार पडा, तो हम उससे यह नहीं कहते हैं कि तुमने आम खाये, अब तुम ही उसका फल भोगो। बल्कि पहले हम उसकी सेवा मे दौडे जाते हैं। फिर उसे प्रेम से समझाते हैं कि ज्यादा नहीं खाना चाहिए। उसी तरह किसीने चोरी की, तो आज उसे सजा दी जाती है, लेकिन वह बेचारा बाल-बच्चो को खिलाने के लिए चोरी करता है। उसे काम मिलता है और वह बच्चों को भूखों मरते देख नहीं सकता है, इसलिए ऐसा काम करता है। उसको हम जेल भेजते है, तो नतीजा यह होता है कि उसको तो जेल मे तीन-तीन बार खाना मिलता है, लेकिन बाहर उसके बाल बच्चे भूखे मरते हैं। होना तो यह चाहिए कि किसीने चोरी की, तो उसे पचायत में ले जाना चाहिए और चोरी का कारण मालूम होने पर उसे तीन साल की सजा देने के बजाय तीन एकड जमीन देनी चाहिए, जिससे कि वह मेहनत करके अपने बाल-बच्चो को खिला सके। कोई बुरा काम करता है, तो उसे बीमारी मानकर उस शख्स की सेवा करके उसे सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। सजा देने से मामला सुधरता नहीं, बल्कि बिगड़ता है।

जम्मू-कश्मीर अच्छा राज्य कैसे बनेगा?

हम चाहते हैं कि गॉव गॉव मे ग्राम-स्वराज्य बने और गॉव गॉव की सेवा के लिए शान्ति सैनिक मिले। वे जाति, धर्म, पथ, पक्ष आदि का खयाल नहीं करेंगे, इन्सान की इन्सान के नाते सेवा करेंगे और मौके पर शान्ति कायम रखने के लिए मर मिटेंगे। इस तरह अपने भाइयो के लिए प्रेम से जमीन देनेवाले और प्रेम से उनकी सेवा करनेवाले निकलेंगे, तो जम्मू और कश्मीर मे राज्य का आदर्श नमूना दीखेगा।

बिलावर
२८-५-'५९

: ५ :

जनता जाग रही है

हम देख रहे हैं कि यहाँ गाँव-गाँव के लोग जमीन का दान दे रहे हैं और शान्ति-सेना मे नाम दे रहे हैं। इसका मतलब यही हुआ कि यहाँ लोगों के मन मे एक इन्किलाब आ रहा है। अक्सर दुनिया में जो इन्किलाब की बात चलती है, वह तगद्दुद, हिंसा के साथ लाये जानेवाले इन्किलाब की चलती है। लेकिन हम अमन और प्रेम की ताकत से ससार मे बदल करने की शातिमय क्राति की बात कर रहे हैं। वह बात यहाँ के लोगों को जँच रही है और शाति सेना के लिए सैकड़ों नाम आ रहे है।

यह टिकनेवाला समाज

यह एक नयी बात हो रही है। जम्मू और कश्मीर मे आज तक ऐसी बात नहीं हुई है और न हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों मे ही हुई है। इसलिए यहाँ जो नयी चीज पैदा हो रही है, वह एक शुभ चिह्न है। वह यह बता रहा है कि यहाँ का समाज टिकनेवाला समाज है। कारण यहाँ के लोग सेवा के लिए सामने आ रहे है और अपने पास जो कुछ थोड़ा-सा है, उसीमे से अपने गरीब भाइयो के लिए दे रहे है। यहाँ का समाज प्राचीन काल से यहाँ बसा हुआ है। यहाँवाले हमे सुनाते है कि हम सोमवश के है या ययाति के वश के। याने इतने कदीम जमाने से यहाँ सभ्यता चली आयी है। बीच के जमाने मे यहाँ के लोग दबे हुए थे। लेकिन कोई जगानेवाला शख्स आया, तो श्रद्धा के साथ जाग रहे हैं।

शंकराचार्य के नक्शेकदम पर

आज एक भाई ने हमसे कहा कि शकराचार्य के बाद आप ही यहाँ

आ रहे हैं—पैदल चलकर, एक मिशन लेकर, धर्म का काम लेकर आ रहे हैं। हम तो तवारीख नहीं जानते और हिन्दुस्तान की तवारीख लिखी हुई भी नहीं है। वैसे शकराचार्य के बाद यहाँ कुछ लोग आये भी होंगे, लेकिन यहाँ के लोगो को सिर्फ शकराचार्य याद हैं। उन्होंने धर्म का बहुत बड़ा काम किया, इसलिए १२०० साल बाद भी लोग उनका नाम याद रखते हैं। यहाँ अमरनाथ की यात्रा के लिए कई यात्री पैदल आते हैं, परन्तु वे पुण्य हासिल करने के लिए आते हैं, स्वर्ग मे अपना स्थान पक्का बनाने के लिए आते हैं। इसलिए समाज के उत्थान का काम लेकर, एक मिशन लेकर पैदल आनेवाले शकराचार्य को ही लोग याद करते हैं, इसमे कोई आश्चर्य की बात नहीं है। मैं भी उन्हींको याद करता हूँ, जब कि अपने मिशन के बारे मे सोचता हूँ। शकराचार्य ने बिलकुल जवानी मे ही पैदल यात्रा की, केरल से निकलकर कश्मीर पहुँचे, बिलकुल गिरे हुए, मायूस बने हुए समाज को—जिसकी श्रद्धा टूट रही थी—खडा किया। उसमे जजबा और हिम्मत पैदा की। मै उन्हींके कदम पर चलने की कोशिश कर रहा हूँ। लेकिन यह काम ऐसा है कि आप सबकी मदद मिलने पर ही पूरा होगा। यह ऐसा काम नहीं है कि मै विद्वानों के, पण्डितों के सामने एक तकरीर करूँ, तो वह बन जायगा। यह तो समाज की ताकत बढाने का काम है। इसलिए सब लोग मिलकर करेंगे, तभी होगा। इसमें मुझे अपने बल से नहीं, बल्कि आप सबके बल से कामयाबी मिलनेवाली है।

हमने बहुत श्रद्धा से परमेश्वर का स्मरण करते-करते यहाँ प्रवेश किया है। हम मानते है कि परमेश्वर की ताकत हमारे पीछे है। वही ताकत आपको जगा रही है। बच्चे-बच्चे को वही प्रेरणा दे रही है। कल एक सात साल के बच्चे ने सभा मे उठकर कहा कि मैं अपना नाम सेवा के लिए देना चाहता हूँ। यह कौन कह रहा है? परमेश्वर कह रहा है। उसीने हमे घुमाया और वही आपमे उत्साह पैदा कर रहा है।

भगवान् के दर्शन के लिए सेवा

सर्वोदय मे जाति, पथ, धर्म, भाषा, पक्ष आदि कोई भेद नहीं हैं। इसमे इन्सान को इन्सान ही समझकर उसकी सेवा करनी है। हरएक के हृदय मे जो अंतर्यामी भगवान् बैठे है, उनकी सेवा करनी है। उस सेवा से कोई मतलब नहीं है। इस सेवा मे सेवा करो और मेवा माँगो, ऐसी बात नहीं है। जो मेवे को मद्देनजर रखकर सेवा करेगा, वह सेवा नहीं, सौदा होगा। हमे तो ऐसी सेवा करनी है, जिसमे हमारी कोई चाह नहीं है। वरन् इससे हमे भगवान् को राजी करना है।

इसी जिन्दगी मे हमे भगवान् के दर्शन हों, इसलिए हम सेवा करते हैं। जैसे माँ बच्चे की सेवा पूरे प्यार से और बिना कुछ मतलब के करती है, वैसी ही हमे भी करनी चाहिए। अगर मन मे यह बात हो कि आज मैं खूब सेवा करूँगा, तो ३ साल के बाद लोग मुझे वोट देंगे, तो वह सेवा तो है, लेकिन मतलब की सेवा है। सेवा के बाद सीट मिलेगी, तो फिर भगवान् के दर्शन नहीं होंगे। भगवान् कहेंगे कि तू जो चाहता था, वह तुझे मिल गया। तूने भर-भरके पाया। याने भगवान् के बहीखाते मे हमारा नाम दर्ज नहीं होगा। लेकिन हम बिना किसी चाह के सेवा करें, तो वह सेवा भगवान् के बहीखाते मे दर्ज होगी। फिर भगवान् पर जिम्मेवारी आयेगी और वे हमे दर्शन देंगे।

हमारी तमन्ना

हम आठ साल से पैदल यात्रा कर रहे हैं। अब पता नहीं कि जम्मू-कश्मीर से वापस लौटेंगे या नहीं। अमरनाथ मे मर गये, तो अमर हो जायेंगे। इतनी मेहनत हम इसलिए करते हैं कि हमे उसीका दीदार चाहिए। इस काम से गरीबों को जमीन मिलेगी, लोगों मे प्यार बनेगा, समाज मे फसल बढेगी, सुख बढेगा, लेकिन हमे हासिल यही करना है कि इस निमित्त से भगवान् राजी हो, हमे उनका दर्शन हासिल हो। यह चोला

छोड़ने के पहले उनका दर्शन हो, उनका मुखडा दीखे, इसके सिवा हमारे दिल मे और कोई तमन्ना नहीं है।

परमेश्वर के नाम से छोटा काम हो, तो भी बड़ा फल मिलता है और उसका नाम न हो, तो बड़ा काम करने पर भी छोटा फल मिलता है, याने इस जिन्दगी मे फल मिलता है। मरने के बाद कुछ नहीं मिलता है। इस जिन्दगी का हिस्सा तो बहुत छोटा, ज्यादा-से-ज्यादा ७०-८० साल का है, लेकिन मरने के बाद का हिस्सा बहुत बड़ा है। इसलिए जो यहाँ कुछ पाना चाहता है, उसे यहाँ मिलेगा, फिर वहाँ कुछ नहीं मिलेगा। हम तो चाहते हैं कि यहाँ जितना मिले, लोगों को मिले, हमे कुछ भी न मिले। शान्ति-सेना मे कोई इज्जत या पद पाने के खयाल से नाम मत देना, कोई भी वासना रखकर नाम मत देना।

यहाँ पर मैंने अब तक सर्वोदय-पात्र की बात नहीं कही थी। लेकिन अब कहता हूँ कि हर घर मे सर्वोदय-पात्र रखिये।

माडली
२९-५-'५९

: ६ :

इन्सान पर भरोसा ही सर्वोदय का हथियार

आज रास्ते में एक भाई ने सवाल पूछा कि "सर्वोदय में तो आप मान लेते हैं कि इन्सान का स्वभाव अच्छा है, लेकिन मनुष्य में काफी खराबियाँ हैं। जब तक खराबियाँ नहीं मिटतीं, तब तक सर्वोदय के लिए अनुकूल वातावरण नहीं मिलता। ऐसी हालत में समाजवाद, साम्यवाद या दूसरा कोई वाद चलेगा। उसके बाद जब इन्सान का स्वभाव अच्छा बनेगा, तभी सर्वोदय आयेगा। तब तक आप घूमते रहिये और लोगों को समझाते रहिये, जैसा कि पुराने संतों ने किया था। परन्तु बात तभी बनेगी, जब मनुष्य का स्वभाव बदलेगा। वह होने में कितनी देर लगेगी, पता नहीं।"

मानव का स्वभाव आज भी अच्छा

इस पर मेरा कहना यही है कि हम मानते हैं कि मनुष्य का स्वभाव आज भी अच्छा है, उसे अच्छा बनाना बाकी नहीं है। फिर भी उसमें कोई दोष नहीं, ऐसी बात नहीं। दोष तो हैं और उन्हें हमें हटाना ही पड़ेगा तथा वे धीरे-धीरे हटेंगे भी, लेकिन स्वभाव बदलने की बात नहीं। हर बच्चा सहज स्वभाव से सच ही बोलता है, झूठ नहीं बोलता। बच्चा स्वभाव से ही सब पर प्यार करता है, घरवालों पर और पड़ोसियों पर भी विश्वास करता है। इस तरह भलाई, नेकी, सचाई आदि सभी चीजें मनुष्य के स्वभाव में ही हैं। इसीलिए मनुष्य का स्वभाव बदलने का कोई सवाल नहीं है।

कायमुल् अक्ल जरूरी

फिर भी एक बात अवश्य है। आज विज्ञान का जमाना आ गया है, जिसके कारण उपयोग की चीजे, सहूलियत की चीजें बहुत बढ गयी हैं। पुराने जमाने मे लाउडस्पीकर नहीं था, इसलिए हजारों लोगों के सामने बोलने का मौका आने पर मुश्किल हो जाती थी। जैसे आज के नेताओं की सभाओं मे हजारो लोग सुनने के लिए आते हैं, वैसे बुद्ध भगवान् की सभाओं मे न आते होंगे। बुद्ध के दर्शन के लिए हजारों लोग आते होंगे, परन्तु उनका उपदेश सुनने के लिए तो ५०-६० ही आते होंगे। फिर बुद्ध भगवान् चिल्लाकर तो बोलते न होंगे, शान्ति से ही बोलते होंगे। इन दिनों औजार बहुत बढ गये हैं। ऐनक की सहायता से हम साफ देख सकते हैं। फाउण्टेनपेन हो, तो सतत लिखते ही चले जायेंगे, दावात साथ रखने की जरूरत नहीं। रेकार्डिंग मशीन हमारा हर शब्द पकड़ लेती है और बाद मे सारा व्याख्यान सुनाती है, ताकि हम मुकर नहीं सकते कि हमने फलानी बात नहीं कही थी। यह सारी मशीन युग की कीमिया है। जब कि इस तरह की चीजे बहुत बढी हैं, ऐसी हालत मे मनुष्य के लिए यह जरूरी है कि वह अपने पर जब्त रखने के गुण का विकास करे। अब लाखों लोगो को अपनी बात सुनानी होती है, तो यह जरूरी है कि हमारी जबान से कोई गलत शब्द न निकले। जब लाउडस्पीकर नहीं था और १०-२० लोग ही बात सुनते थे, तब कोई गलत शब्द निकलने पर भी उतना नुकसान नहीं होता था। लेकिन आज गलत शब्द निकलेगा, तो अनर्थ हो जायगा। इसलिए आज जबान पर काबू रखने की जरूरत पैदा हुई है। इसी तरह इन्द्रिय, मन, बुद्धि आदि पर भी काबू रखने की जरूरत पैदा हुई है। इस विज्ञान-युग मे मनुष्य को अपना दिमाग मजबूत बनाना चाहिए, बुद्धि स्थिर—कायम रखनी चाहिए। 'कायमुल् अक्ल' जिसकी अक्ल कायम है, ऐसा बनना चाहिए। उसीको 'स्थितप्रज्ञ' कहते हैं।

युग की माँग : अपने पर नियन्त्रण रखें

बाकी मनुष्य का स्वभाव तो अच्छा ही है। अगर हम सर्वोदयवाले स्वभाव को बदलने की बात करते हैं, तो स्वभाव कभी बदलता ही नहीं है। शेर शेर ही रहेगा, वह हिरन के जैसा डरपोक कभी नहीं बनेगा। हिरन हिरन ही रहेगा, वह शेर जैसा बहादुर नहीं बनेगा। इसलिए स्वभाव बदलने की बात होती, तो सर्वोदय कभी नहीं आ सकता था, वह नामुमकिन हो जाता। इसलिए समझना चाहिए कि सर्वोदय मे स्वभाव बदलने की बात नहीं है। मन, इन्द्रियाँ, बुद्धि आदि पर काबू पाने की जरूरत है। स्कूलों मे इसकी तालीम मिलनी चाहिए। अगर इस बात मे हम हार गये, तो इस विज्ञान-युग मे कारगर नहीं होगे। विज्ञान के जमाने मे शस्त्रास्त्र लेकर लडना है, तो भी दिमाग ठडा रखना पडता है। दिमाग तेज हो जाय, तो हारने की नौबत आती है। जनरल का हुक्म हुआ कि पचास कदम पीछे हटो, तो हटना ही पड़ता है और आगे बढ़ने का हुक्म होते ही आगे बढ़ना पडता है। पहले के जमाने मे हम गुस्से से हमला कर सकते थे, डर से भाग सकते थे। लेकिन विज्ञान के जमाने मे हुक्म के मुताबिक ही काम करना पडता है। इस जमाने मे हम न गुस्से से हमला कर सकते हैं, न डर से भाग ही सकते हैं। हाथ मे बन्दूक हो, तो दिमाग ठडा रखकर, निशाना बराबर ताककर गोली चलानी पडती है। निशाना चूक गया, तो मामला खतम हो जाता है। हवाई जहाज चलाते समय दिमाग तेज रहा, तो गलत जगह पहुँचने से दुश्मन का शिकार बनना पडता है। इसलिए ठडे दिमाग से, गणित के साथ, अक्ल कायम रखकर हवाई जहाज चलाना पडता है। राजनीतिज्ञों को गुस्सा आये, तो भी ठडे दिमाग से जवाब देना पडता है।

इस तरह अपने पर जब्त रखने के गुण की आज जितनी जरूरत है, उतनी पहले कभी नहीं थी। आज उसके बिना कुछ भी नहीं चलेगा। उसके बिना न हम लड़ाइयाँ लड सकते हैं, न शान्ति ही कायम कर

सकते हैं। न कोई इन्तजाम कर सकते हैं, न चर्चा और न सलाह-मशविरा ही कर सकते हैं। जिस समाज मे उसकी कमी रहेगी, वह समाज इस युग मे कभी भी आगे नहीं बढ सकता। इस युग मे बिलकुल शान्ति से, सब्र से काम करना पडता है, केवल जज्बा (भावना) से तो काम बनता ही नहीं। तौल-तौलकर बोलना पड़ता है, तौल-तौलकर सोचना पड़ता है, तौल-तौलकर काम करना पडता है। इस तरह विज्ञान के जमाने मे यह एक नयी जरूरत पैदा हुई है, जिसकी तालीम हमे हासिल करनी होगी। बाकी मनुष्य स्वभाव अच्छा ही है। उसमे किसी प्रकार के परिवर्तन की जरूरत नहीं है।

भरोसे के लाभ

यह हमारा विश्वास है। अतः जहाँ हम जाते हैं, भरोसा रखकर माँगते हैं, तो लोगों को देना ही पडता है। हमने माँगना भी इसी तरह शुरू किया कि आपके घर मे पाँच भाई हैं, तो हम छठे हैं। हमारा चेहरा देखकर पहचान लो कि हम आपके घर के हकदार हैं या नहीं? अगर हमारा अधिकार कबूल हो, तो हिस्सा दो। हजारों लोगो ने हमे घर का भाई समझकर हिस्सा दिया है। हम भरोसा रखकर और प्रेम से माँगते है, तो कोई 'ना' नहीं कह सकता। किसीके पास देने के लिए न हो, तो वह दुःखी होता है। जैसे बच्चा माँ के पास लड्डू माँगता है, तो माँ दिये बिना नहीं रहती। अगर वह न दे सकी, तो दुःखी हो जाती है। इसी तरह हम भी बच्चे बनकर पूरे यकीन के साथ माँगते है, इसलिए मिलता ही है। यह जो मनुष्य-स्वभाव पर भरोसा है, उसीको हमने अपना शस्त्र बनाया है। उसी शस्त्र से हम लडाइयाँ फतह करते है। यह भरोसा बहुत बडी बात है। उसके बिना सर्वोदय सम्भव नहीं है। वैसे मनुष्य-स्वभाव मे परिवर्तन की जरूरत नहीं है, वह अच्छा ही है।

मांडली

२९-५-'५९

: ७ :

दिल बड़ा बनाइये

कुदरत का कानून

यहाँ की कुदरत तो खूबसूरत है, लेकिन कुदरत की सबसे बेहतरीन देन है इन्सान, उसकी हालत क्या है। हम कुदरत के खिलाफ काम करेंगे, तो कुदरत हमें मुआफ नहीं करेगी। वह न किसी पर गुस्सा करती है, न किसी पर अपनी ओर आशक होती है। वह कहती है, जैसा बीज बोओगे, वैसा फल पाओगे। यहाँ पर कुदरत की तरफ से इन्सान को बहुत सारी नियामतें मिली हैं, लेकिन उनका उपयोग करने की अक्ल होनी चाहिए। इन्सान के आपस-आपस के झगड़े नहीं मिटते, तो वह कुदरत की सेवा नहीं कर सकता, न उसको विज्ञान का लाभ ही मिलेगा।

हिन्द-पाक पानी के मसले का हल

विज्ञान ने कुदरत का राज खोल दिया है। इसके आगे और भी खुलेगा। विज्ञान ने इतनी तरक्की की है, लेकिन इन्सान अभी भी तग नजरिया रखता है। जो सियासतदाँ है, उनका अक्सर तग नजरिया होता है। वे जानते ही नहीं कि विज्ञान हमें कहाँ ले जा रहा है। इधर तो चाँद पर जाने की बात करते हैं और उधर जानवर के जैसे बरतते हैं। आज भी हम छोटे दायरे मे सोचेंगे, तो बिलकुल गये-बीते साबित होगे। हम देख रहे हैं कि यहाँ की नदियों का पानी पाकिस्तान मे जाता है। आज हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच पानी का मसला खड़ा है। अभी पजाब का पानी सैकड़ों मील दूर राजस्थान मे ले जाने की कोशिश हो रही है, क्योंकि देश के टुकड़े हुए हैं, दो देश बने हैं। वैसे तो राजस्थान मे सिन्ध नदी का पानी आसानी से पहुँच सकता है और यहाँ का पानी पाकिस्तान मे पहुँच सकता है। लेकिन झगड़ो की वजह से हमारा-तुम्हारा झगड़ा चलता है। पानी

का इन्तजाम आपस आपस मे मिल-जुलकर किया जा सकता है। लेकिन हमारा तग नजरिया होता है, इसलिए वह बनता नहीं। हमे समझना चाहिए कि हम दिल बडा नहीं बनायेंगे, तो इस जमाने मे टिक नहीं सकेंगे।

सर्वोदय में दुनिया एक होगी

सर्वोदय मे जिन्दगी की शक्ल ऐसी होगी कि किसी भी मुल्क का आदमी दुनिया के किसी भी मुल्क मे बे-रोक-टोक जा सकेगा। कुल दुनिया की जो जमीन है, वह सब इन्सान की है। कुदरत ने जो ताकतें दी है, वे दुनियाभर के इन्सानों के लिए हैं। आज जापान मे आबादी ज्यादा है, जमीन कम है, इसलिए वह सोचता है कि अपनी आबादी कम होनी चाहिए। इससे उलटे रूस मे आबादी कम और जमीन ज्यादा है, तो वे सोचते है कि आबादी बढनी चाहिए। इसलिए वहाॅ ज्यादा बच्चे पैदा करनेवालो को इनाम दिया जाता है। यह सब इसलिए हो रहा है, क्योंकि विज्ञान के कारण इल्म बढा हुआ है। लेकिन फिर भी दिल छोटा रहा है, इसलिए छोटे-छोटे झगड़े होते है, अमल छोटे होते है।

किसान और नेता

जैसे मामूली किसान सोचता है कि पड़ोसी गाफिल हो, तो उसके खेत का थोड़ा-सा हिस्सा अपने मे आ जाय। उससे अपना थोड़ा अनाज बढ़ेगा। लेकिन वह बेवकूफ समझता नहीं है कि उसका अनाज बढा, तो उधर पड़ोसी का घटा। देश का कुछ नहीं बढा। दायीं जेब का पैसा बायीं जेब मे आया, तो वह खुश होता है, लेकिन वह समझता नहीं कि दायीं जेब तो खाली हो गयी। बड़े-बड़े देश भी इसी तरह करते है। चीनवाले अपने नक्शे मे हिन्दुस्तान का कुछ हिस्सा अपना ही बताते हैं। यानी अपढ किसान की जो हालत है, वही बड़े-बड़े देशो के नेताओं की है और ऐसो के हाथ मे देश की बागडोर सौपते है। होना तो यह चाहिए कि जिनके पास अखलाकी ताकत है और जिनका दिल और दिमाग बड़ा है, उन्हींके हाथ मे बागडोर सौंपनी चाहिए और गॉववालो को अपने गाँव का

कारोबार अपने हाथ मे लेना चाहिए। जो बडे दिलवाले होंगे, उनका काम सिर्फ सलाह देने का और गॉवों को जोड़ने का होना चाहिए। आज के सारे झगडे इसीलिए हो रहे है कि इन्सान का दिमाग तो विज्ञान के कारण बड़ा बना है, लेकिन दिल नहीं बड़ा बना है। इसके आगे हमे अपना दिल बडा बनाना होगा। जब तक गॉववाले मिल-जुलकर काम नहीं करेगे, तब तक आज की हालत नहीं बदलेगी। मैं आपसे यह नहीं कह रहा हूॅ कि मैं आपको बचाऊॅगा। बल्कि यह कह रहा हूॅ कि अपना कारोबार अपने हाथ मे लेना चाहिए और सरकार का बोझ हल्का करना चाहिए।

'जय जगत्' मे ही बचाव

इससे आगे हमे सारी दुनिया के बारे मे सोचना चाहिए। 'जय जगू' बल्कि 'जय जगत्' कहना चाहिए। उसीमे हमारा रक्षण है। इधर 'जय ग्रामदान' और उधर 'जय जगत्' कहेगे, तभी हम बचेंगे। गॉव एक परिवार बनेगा और कुल दुनिया एक देश बनेगी, तभी ससार बचेगा। 'जय कश्मीर', 'जय हिन्द', 'जय पाकिस्तान' और 'जय जापान' कहने से अब नहीं चलेगा। अब 'जय जगत्' ही कहना होगा। जब गॉंववाले अपना परिवार बनायेगे, तो देशवाले भी सोचेंगे कि हमें भी दूसरे देशों के लिए सोचना होगा। इससे आगे हमारा परिवार ग्राम परिवार बनेगा और हमारा देश दुनिया बनेगा। इसके लिए जरूरी है कि दिल बड़ा बने।

तपी जमीन पानी चूस रही है

कुछ लोग सोचते थे कि यहॉ का मुल्क पिछडा हुआ है, तो यहॉ कैसे काम होगा। लेकिन हम देख रहे है कि यहॉ के लोग उठ खडे हो रहे हैं और शाति-सेना में नाम दे रहे है। इसके माने है कि यहॉ के लोग इन्तजार मे थे कि कोई शख्स आयेगा और हमे जगायेगा। जैसे तपी हुई जमीन हो और पानी चूस रही हो। यह सब देखकर हमे बडी खुशी होती है।

गुजरु नगरौटा

२०-५-'५९

: ८ :

जनता जबर और सरकार जेर हो

विज्ञान-युग मे लोक-शक्ति का महत्त्व

लोकशक्ति और राजशक्ति, ये दो शक्तियाँ पहले से काम करती आयी हैं। लेकिन अब विज्ञान का जमाना आया है, इसमे लोकशक्ति जोर करेगी और राजशक्ति कमजोर होगी। यह बात जिनके ध्यान मे नहीं आयी, वे आज भी राजशक्ति के पीछे पड़े हैं। वेलफेयर स्टेट मे चलानेवाले लोग अच्छे हो, तो प्रजा सुखी होती है और खराब हों, तो प्रजा दु.खी बनती है। याने जैसे पुराने राजा-महाराजाओ के जमाने मे चलता था, वैसा आज भी चल रहा है, यद्यपि यह जमाना लोकशक्ति का आया है। योजना करना सरकार का काम नहीं होना चाहिए, लोगों का होना चाहिए। सरकार का काम है—सिर्फ मदद देना। लेकिन आज योजना भी सरकार करती है, पैसा भी सरकार खर्च करती है और योजना के अमल की जिम्मेवारी भी सरकार की ही होती है। फिर लोग समझते है कि जैसे आसमान से बारिश बरसती है, वैसे ही सरकार की तरफ से हम पर नियामतें बरसें और हमारा भला हो। लेकिन ऐसा चाहनेवाले लोग इस जमाने के लायक नहीं है। वे नहीं टिकेंगे।

आज विज्ञान के कारण सरकार के हाथ मे इतनी शक्ति आयी है, जितनी पुराने जमाने के बादशाहो के पास कभी न थी। आज पाँच मिनट मे सरकार का हुक्म सारे देशभर पहुँच सकता है और एक दिन मे उस पर अमल करने का बन्दोबस्त किया जा सकता है। ऐसी हालत मे अगर हम सारी सत्ता सरकार के हाथों मे सौपेंगे और आज के जैसे ही रहेंगे, तो

फिर सरकार बहुत ताक़तवर बनेगी और हमारे हाथ मे सिर्फ अपना नसीब आजमाने की बात रहेगी। इसलिए विज्ञान की पैदा की हुई ताकतें सीधी लोगों के पास आनी चाहिए, तब गाँवों का भला होगा। पुराने जमाने मे औरंगजेब का हुक्म किसी सरदार के पास पहुँचने मे ही महीने लग जाते थे, तो फिर जुल्मी राजा भी क्या कर सकता था ? लेकिन आज हमने देखा कि पाकिस्तान मे जनरल अयूबखान आया, तो एक ही दिन मे सब पॉलिटिकल पार्टियो के आफिसों को ताले लग गये। क्या औरंगजेब यह कभी कर सकता था ? इस तरह आज की ताकत के सामने पुराने राजाओं की ताकत का कोई हिसाब ही नहीं है। इस हालत मे उस ताकत का एक मरकज मे इकट्ठा होना गलत है।

आजादी के माने लोगो के हाथ मे राज्य

हमारी लोकशक्ति लगाने की ही कोशिश चल रही है। हमे पता नहीं था कि जम्मू-कश्मीर मे क्या बनेगा, लेकिन जब से हम यहाँ आये, तब से देख रहे है कि यहाँ के लोग तैयार हैं। गाँव-गाँव के लोग शान्ति-सेना मे नाम दे रहे हैं। शान्ति सेना बनाने के मानी हैं, गाँववाले गाँव का कारोबार खुद सँभालें, गरीबों के दुःख सारे गाँव के दुःख बन जायँ और जब तक उन्हे सुखी नहीं बनाते, तब तक किसीको चैन न आये।

हमे सरकार से मदद माँगने का हक है, लेकिन योजना हमारी हो और सरकार सिर्फ मदद दे। आज सरकार ही सब कुछ करती है और लोग जड बने हुए हैं। लोगो मे ऐसी जड़ता आये, तो इस जमाने के लिए शोभा नहीं देगा। आज तालीम भी सरकार के हाथ मे है और शिक्षक नौकर की हैसियत मे आये है। इससे तालीम कुंठित हो जायगी। लेकिन लोग इसको समझते नहीं। वे सरकार से कहते हैं कि हम स्कूल के लिए मकान बना देंगे और स्कूल आप चलायें। हम बीमार पड़ेंगे और आप दवाखाना खोलिये। क्या यह भी कोई जिम्मेवारी का बँटवारा है ? यह

कोई आजादी नहीं है। लोगों को लगता है कि आजादी का माने है—हमारी जातवालों की सरकार। पाकिस्तान में मुसलमानो की हुकूमत है, तो वहाँ के लोग समझते हैं कि हम आजाद हैं। चीन मे चीनी की हुकूमत, जापान मे जापानी की हुकूमत है, तो वहाँवाले समझते हैं कि हम आजाद हैं। यह आजादी नहीं है। आजादी के मानी है, जनता के हाथ मे राज्य हो।

ताली कब बजेगी ?

सरकार एक हाथ है और जनता दूसरा हाथ। दोनो हाथ जुड़ जाते हैं, तब ताली बजती है। आज सरकारवाले शिकायत करते है कि पचवर्षीय योजना के काम मे लोगों की तरफ से सहयोग नहीं मिल रहा है। एक हाथ से ताली कैसे बजेगी ? इसलिए लोगो की तरफ से सहयोग मिलना चाहिए और लोगों का हाथ जबर होना चाहिए और सरकार का हाथ जेर होना चाहिए। आज तो उलटा हो रहा है। सरकार का हाथ ऊपर है और जनता का हाथ इतना नीचे है कि ताली बजती ही नहीं। होना तो यह चाहिए कि जनता का हाथ जबर हो और सरकार का हाथ जेर।

यह इत्तहाद या दिल जोड़ने का काम है

एक भाई ने हमसे पूछा कि भूदान से सभी मसले किस तरह हल होंगे ? बात यह है कि समाज मे अगर कोई मसला बाकी न रहा, तो जिन्दगी मे कोई लुत्फ ही नहीं रहेगा। इसलिए कुछ न कुछ मसले बाकी रहने ही चाहिए और वे बाकी रहनेवाले ही हैं। रामचन्द्र आये और एक बडा मसला हल करके चले गये। लेकिन बाकी मसले बचे ही रहे। फिर कृष्ण भगवान् को अवतार लेना पड़ा। उन्होने खूब काम किया, तब भी मसले बाकी ही रहे। बुद्ध भगवान् आये। उन्होने चालीस साल घूमकर कुछ मसले हल किये, फिर भी मसले बने ही रहे। आखिर गाधीजी आये और कुछ मसले हल करके चले गये। लेकिन तब भी मसले बाकी ही रहे। इसलिए कोई भी ऐसा दावा नहीं कर सकता कि मै सब मसले हल

करके ही रहूँगा। अगर कोई ऐसा दावा करे भी, तो समझना चाहिए कि वह दावा शैतानी है, अहंकार मात्र है।

हमने यह कभी नहीं माना कि हम कोई मसला हल करनेवाले है। लेकिन समाज की जो हालत है, उसे हम सामने अवश्य रखते है। हमने जमीन की बात लोगो के सामने रखी है। लेकिन उसका मतलब यह नहीं कि जमीन का मसला ही हम हल करनेवाले हैं। हम यहाँ आये है, तो क्या यह निश्चित है कि हम कश्मीर की यात्रा पूरी करके पजाब वापस जायेंगे ही ? हर्गिज नहीं। यहाँ से एक राह पजाब जाती है, दूसरी तिब्बत, तीसरी रूस, चौथी पाकिस्तान और पाँचवीं राह सीधी ऊपर जाती है। इसलिए हमारा ही मसला हल हो सकता है। हम क्या मसला हल करेंगे ? हम तो लोगो के सामने केवल यह विचार रखते हैं। जो लोग विचार को समझते हैं, वे इस काम मे सहयोग देते हैं।

भूदान ही माध्यम क्यों ?

हमने जो काम उठाया है, वह जमीन का नहीं है। जमीन तो एक बहानामात्र है। हमारा काम यह है कि दिल के साथ दिल जुड जायँ। एक उर्दू अखबार (पयामे मश्रीक) के सपादक ने लेख लिखा है कि 'विनोबा हिंदू-मुस्लिम-इत्तहाद का सवाल हाथ मे ले, तो अच्छा होगा।' वह भाई जानते नहीं कि हमने जो सवाल हाथ मे लिया है, वह इत्तहाद का ही है। हम चाहते हैं कि दिलो का मेल हो। उसके लिए हमने बहाने के तौर पर जमीन के मसले जैसी एक ऐसी चीज हाथ मे ली है, जो बुनियादी है और आज के जमाने की माँग है। अगर हम ऐसा कोई मसला हाथ मे लेते और यहाँ आकर सिर्फ कहते जाते कि भाई आपस मे मत लडो, प्यार से रहो, तो ऐसा कहनेवाले तो कई सत हो गये। लोग उनकी बात सुनने के आदी बन गये है। हम सिर्फ इतना ही नहीं कहते कि प्यार करो, बल्कि यह भी कहते हैं कि प्यार का सुबूत, निशानी, इलामत भी पेश करो।

लोग दान देते हैं, तो हमारी बात उनके हृदय मे पैठ जाती है, इसका सुबूत मिलता है ।

दिलो को जोड़ना ही देश की मुख्य समस्या

हिन्दुस्तान की मुख्य समस्या यही है कि लोगों के दिल जुड़ जायँ। यहाँ अनेक जमातें रहती है, अनेक जमातो मे अनेक मजहब, पथ है, जिनसे सुन्दर सगीत बनता है। केवल एक ही सुर हो, तो सगीत नहीं बनता। सगीत के लिए मुख्तलिफ सुर हो, यह निहायत जरूरी है। लेकिन वे सुर एक-दूसरे के खिलाफ न हो। अनेक मजहबो, अनेक जमातों का होना हिन्दुस्तान का ऐब नहीं, बल्कि वैभव, गुण है। यहाँ पर दुनियाभर से जमातें आयीं। तिलक महाराज ने तो कहा था कि हमारे पूर्वज उत्तर ध्रुव से आये थे। उत्तर मे ऋषिदेश है, जिसे आजकल रशिया कहते हैं। यह कश्मीर कश्यप ऋषि का स्थान है। उधर कश्मीर से लेकर जो कश्यप समुद्र (Caspian Sea) है, वहाँ तक कश्यप ऋषि ने पराक्रम किया है, जैसे कि दक्षिण मे अगस्त्य ऋषि ने पराक्रम किया। दुनियाभर के लोग यहाँ आये और हमने उन्हे जज्ब कर लिया। कभी-कभी आरम्भ मे कुछ कशमकश भी चली, लेकिन हमने प्रेम से सबको हजम कर लिया। यहाँ ईसाई, मुसलमान आदि जो भी आये, उन पर यहाँ की हवा का रग चढा। उनमे हिन्दुस्तान की सिफत आयी। यहाँ हिन्दू और मुसलमान बडे प्रेम से रहते थे। परन्तु अग्रेजों ने यहाँ आकर 'फूट डालो और शासन करो' का रवैया अपनाया, जिससे तमाम राजनैतिक झगडे पैदा हुए। जहाँ सियासी बातें आती हैं, वहाँ दिमाग के टुकडे हो जाते है।

हिन्दू मुसलमानो मे अंग्रेजों ने फूट डाली

बहुत से सियासतदाँ लोगो के साथ मेरा परिचय है। मैने देखा है कि अक्सर वे जितने बुद्धू होते है, उतने दूसरे नहीं। उनका नजरिया तग होता है और वे उसी दायरे मे सोचते हैं। अपनी-अपनी पार्टी बन गयी,

तो बस, वे उतने के ही लिए सोचते हैं। कोई हिन्दुओं की सोचते है, तो कोई मुसलमानों की। कोई मध्ययुगीन की बातें करते हैं कि यहाँ तो हमारा राज्य था। उनका दिमाग भरा हुआ रहता है, खाली नहीं। इसीलिए उनके दिमाग की नये विचार को कबूल करने की तैयारी नहीं रहती। जैसे बच्चा कोई हठ पकड़ लेता है, तो उसे छोडता नहीं, वैसी ही हालत इन सियासतदाँ लोगों की भी होती है।

कहा जाता है कि वे अक्लवाले होते हैं, लेकिन उनकी अक्ल बहुत ही सीमित होती है। जब तक अंग्रेजों ने यहाँ आकर फूट नहीं डाली थी, तब तक यहाँ हिन्दू-मुसलमान इतने प्यार से रहते थे कि एक-दूसरे को चाचा-चाचा कहते थे। एक-दूसरे के त्योहारों मे हिस्सा लेते थे। हमने बचपन मे देखा था कि मुहर्रम, दीवाली जैसे त्योहारों मे दोनों हिस्सा लेते थे। भाई-भाई जैसे रहते थे। उनके नाम भी मिले-जुले होते थे। इसका कारण यही है कि मुसलमान यहाँ हजार साल से रहते थे। जब वे आये, तब कुछ कशमकश हुई, लेकिन फिर नानक, कबीर जैसे आये और उन्होंने धर्म का विचार सबके सामने रखा। 'ना मंदिर में, ना मस्जिद में, ना काबे मे।'—वह तो घर-घर है, ऐसा विचार उन्होंने लोगों को समझाया। नामदेव ने कहा कि हिन्दू उसकी पूजा मन्दिर मे करते हैं और मुसल्मान मस्जिद मे। लेकिन खुद उसने उसकी पूजा की है, जो घर-घर मे रहता है। ऐसा ही अन्य सन्तों ने भी समझाया। फिर हिन्दू और मुसलमानों की कारीगरी, दस्तकारी आदि सब मिली-जुली बन गयी। हिन्दू मन्दिरों की बनावट मे मुस्लिम बनावट आ गयी। सूफियों ने भी एकता पैदा की।

सारे जहाँ से अच्छा क्यों?

इन्द्रधनुष के समान हिन्दुस्तान मे अनेक रंग हैं और वे एक-दूसरे से इस तरह मिले हैं कि पता ही नहीं कि एक कहाँ खत्म होता है और दूसरा कहाँ से शुरू होता है। इस तरह हिन्दुस्तान एक खूबसूरत

नज्जारा बन गया है। कवि ने जो कहा है कि 'सारे जहाँ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' इसमे कुछ सार है। वैसे तो हर देशवाले कहते है कि हमारा देश अच्छा है, क्योंकि वह हमारा है। दूसरे देशों मे भी खूबसूरत कुदरत है। फिर भी कवि की इस पक्ति मे सार है, क्योंकि हिन्दुस्तान मे जो समाज बना है, वह मिला जुला है। इतना मिला-जुला समाज दुनिया के दूसरे देशों मे नहीं है। न वह चीन मे है, न रूस मे और न अमेरिका मे ही। पूरे यूरोप का जब एक राष्ट्र बनेगा, तब वह हिन्दुस्तान की बराबरी कर सकेगा।

हमारे सहायक उत्पादन

मतलब यह कि हमने जो काम उठाया है, वह सबके दिलों को जोड़ने का काम है। बड़े कारखाने मैं एक मुख्य चीज के साथ सहायक उत्पादन (Bye-Products) भी होते है। वैसे ही हमने भूदान की बात शुरू की, तो उसके साथ खादी, ग्रामोद्योग जोड़ दिया। फिर कहा कि तालीम पर सरकार का अकुश न हो, लोग तालीम अपने हाथ मे लें। फिर कहा कि शान्ति सेना बनाओ, जिससे पुलिस-सेना की जरूरत न पड़े। फिर कहा कि जमीन की, कारखानो की मालकियत मिटा दो। अब कह रहा हूँ कि आप हर घर मे सर्वोदय पात्र रखिये।

हम हर साल सर्वोदय-सम्मेलन किसी तीर्थस्थान मे करते थे, तो कइयों ने उस पर आक्षेप उठाया। लेकिन वे समझते नहीं ये कि मे हर साल तीर्थस्थान के मन्दिरों के दरवाजे खटखटाता रहा। आखिर पढरपुर में दरवाजा खुल ही गया और हमारे सब धर्मवाले, सब जातिवाले साथियों के साथ हमे वहाँ प्रवेश मिला। इससे हिन्दू-धर्म का कायापलट हो गया। यह हमारे कारखाने का 'बाइ प्रोडक्ट' है। इसके लिए हमे ज्यादा काम नहीं करना पडा। सिर्फ साल में एक दफा दरवाजा खटखटाना पडा। ग्राम-दान में गॉव का परिवार बनता है, तो जातिभेद, धर्मभेद, छुआछूत आदि सभी भेद खत्म हो जाते हैं। इसलिए हमारे काम से जमीन का मसला

हल होगा या नहीं, यह तो भगवान् ही जाने, लेकिन दिल अवश्य जुट जायेंगे। मजदूर और मालिक, देहातवाले और शहरवाले, हिन्दू और मुसलमान, हरिजन-परिजन सबके दिल जुट जायेंगे।

ये सोने की बेड़ियाँ निकाल फेंकें

हमारा काम दिल जोड़ने का है, उस निगाह से उसकी तरफ देखा जाय, तो बहनें कहेंगी कि यह तो हमारा ही काम है। हम चाहते है कि शान्ति-सेना मे बहने आगे आये, तो फिर झगडे टिक ही न सकेंगे। हिंसा की सेना मे अक्सर भाई नाम देते हैं लेकिन शान्ति-सेना मे तो सब पर प्रेम करने की, घर-घर जाकर सेवा करने की, अपना सब कुछ न्योछावर करने की और प्रेम से दुनिया को जीतने की बात है। इसलिए इसमे बहनें पीछे नहीं रहेगी, आगे आयेगी। आज हालत ऐसी है कि भाइयों ने बहनों के हाथ-पॉव मे सोने की बेडियॉ डाल रखी हैं, जिसे वे 'अलकार' समझती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि बहनें हिम्मत के साथ बाहर जा नहीं सकतीं और रक्षा के लिए भाइयों की जरूरत महसूस करती हैं। क्या आपने कभी यह देखा है कि जगल मे शेरनी के बचाव के लिए शेर आता है? बल्कि शिकारी तो अपने अनुभव यो सुनाते हैं कि शेरनी के बच्चे को पकड लिया जाय, तो शेर बन्दूक देखकर भाग जाता है, लेकिन शेरनी अपने बच्चे को छुडाने के लिए बार-बार हमला करती है। वह तब तक नहीं हटती, जब तक उसे खत्म नहीं कर दिया जाता या उसका बच्चा उसके सुपुर्द नहीं किया जाता। फिर मनुष्य-जाति मे ही स्त्री की रक्षा के लिए पुरुष की जरूरत क्यों? पुरुषो ने स्त्रियो को गहने पहनाकर बैंक बना दिया है, इसलिए उनकी रक्षा करनी पड़ती है। वे माल बनी हैं, इसलिए माल के साथ मालिक की भी जरूरत होती ही है। गहनों ने बहनों को डरपोक बनाया है। इसलिए ये सारी बेड़ियॉ फेक दे, तो आपमे हिम्मत आयेगी। बहनों मे पुरुषो की अपेक्षा क्या कमी है? यही कमी है कि उनमे उद्दण्डता कम है, वे एकदम कोई काम नहीं करतीं। पर यह

तो अच्छी ही बात है। इसलिए बहनों को दिल जोड़ने का काम उठा लेना चाहिए।

बहनें लोक-सेवक-संघ बनायें

इन दिनों एक नयी बला आयी है। सारे पुरुष पार्टियों मे फँसे हैं। अगर कुश्ती के जैसी चुनाव खेलने की बात होती, तो ठीक होता। होना तो यह चाहिए कि दो भाई प्रेम से एक ही घर मे रहे, प्रेम से खाये पीये। दोनों के सियासी विचार अलग-अलग हैं, इसलिए दोनों जनता मे जाकर अपना-अपना विचार समझाकर वोट मॉगें। चुनाव मे एक हार जाय और दूसरा जीते, तो भी दोनों प्रेम से साथ रहे। यह होगा, तब तो हिन्दुस्तान की चीज बनेगी। नहीं तो आज पश्चिम से चुनाव लडने की जो बात आयी है, उसके कारण गॉव-गॉव मे आग लग जाती है। अतः अब बहनो को लोक-सेवक-संघ बनाने के लिए आगे आना चाहिए और पुरुषो से कहना चाहिए कि तुम जानो अपने झगडे, हम उसमे नहीं पड़तीं। हम दिल जोडने का काम करेंगी। मै कहता हूँ कि जितने पुरुष हैं, वे अलग-अलग पार्टियों मे बॅटें और जितनी स्त्रियॉ हैं, वे कुल की कुल हमारे पास आयें, तो फिर देखें कि हिन्दुस्तान का नक्शा कैसा बनता है!

भारत मे स्त्री-पुरुषो को समान अधिकार

एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान मे बड़े-बडे ज्ञानियों को तालीम पाने के लिए बहनों के पास भेजा जाता था। जनक महाराज बडे ज्ञानी थे, लेकिन उन्हे आत्मज्ञान के लिए सुलभा के पास जाना पडा था। महाभारत मे सुलभा-जनक-संवाद मशहूर है। प्राचीन काल मे इस तरह बहनें ज्ञानी बनी थीं। लेकिन बीच के जमाने मे वे घर मे फँस गयीं, भोग का साधन बन गयीं। पुरुषो ने उन्हे गहने पहनाकर कैदी बना लिया। यह केवल हिन्दुस्तान मे ही नहीं हुआ, यूरोप मे भी यही हालत हुई। इग्लैंड की बहनो को तो वोट का हक हासिल करने के लिए काफी आन्दोलन करना पड़ा। वहॉ की बहनो ने पार्लमेंट मे जाकर अडे फेंके थे। लेकिन हमारे यहॉ

बहनों को वोट का हक हासिल करने के लिए कुछ भी करना नहीं पड़ा। हमने कभी यह माना ही नहीं कि बहनों में कुछ कमी है, जिनके कारण उन्हें वोट का हक नहीं दिया जा सकता। हमारे यहाँ तो यज्ञ आदि धर्म-कार्य पति-पत्नी को साथ-साथ करने पड़ते थे। हमने दोनों के समान अधिकार माने हैं। हमें अब फिर से बहनों की ताकत जगानी है, इसलिए कि हमें हारे भारत के दिलों को और उसके जरिये सारी दुनिया के दिलों को एक बनाने का काम करना है।

कुल मानव-समाज एक करना है

हम 'जय जगत्' कहते हैं। यह कोई आज की बात नहीं है। एक साल पहले आजाद-हिन्द-सेना के एक भाई मुझसे मिलने आये थे। उन्होंने 'जय हिन्द' कहा, तो मैंने जवाब में कह दिया 'जय हिन्द, जय दुनिया, जय हरि।' यूरोप के लोगों को ताज्जुब होता है और खुशी भी होती है कि हिन्दुस्तान में बच्चा-बच्चा कहता है कि 'सारी दुनिया की जय हो'। क्या दुनिया के दूसरे किसी देश में यह चलता है? वहाँ तो हर कोई अपने-अपने देश की जय बोलता है। सिर्फ हिन्दुस्तान का काम करने से हमारा काम पूरा नहीं होगा, बल्कि हमें कुल मानव-समाज को एक करना है।

कुरान में कहा है—'उम्मतुम् वाहिद' यानी तुम सब एक जमात हो। इसी मकसद के लिए भूदान एक बहाना बन गया है। इस तरह की किसी बाहरी चीज के बिना अदरूनी चीज दिल में पैठती नहीं। आपके दिल को प्रसन्न करने के लिए हम फूल, फल जैसी कोई बाहरी चीज देते हैं, तो प्रेम की पहचान हो जाती है। छह लाख लोगों ने दान दिया, तो मैं जान गया कि उन्होंने हमारा प्रेम का संदेश कबूल किया। नहीं तो मैं कैसे जानता? बड़ी खुशी की बात है कि जम्मू कश्मीर में भी लोग प्रेम से दान दे रहे हैं और शान्ति-सेना में नाम दे रहे हैं।

रामकोट
३१-५-'५९

: ९ :

जीवन में कुदरत-सा मेल-जोल बढ़ायें

मै चाहता हूँ कि बच्चा-बूढा, भाई बहन हर कोई दान दे। हर बच्चा यह महसूस करे कि मैं खाता हूँ, तो खाने के पहले मुझे समाज को कुछ-न-कुछ देना चाहिए। जम्मू कश्मीर मे ४० लाख लोग है, जो सरकार को थोड़ा टैक्स देते हैं और उसीके आधार पर सरकार काम करती है। लेकिन जनता की तरफ से कुछ काम होना चाहिए। आज गॉव गॉव में अनेक मसले हैं, जिनका समाधान अभी होना है। कई बेजमीन दु.खी पडे है, कई निरुद्योगी हैं। इन सब समस्याओ को हल करने के लिए गॉव के लोगों को आगे आना चाहिए।

जो खाये, सो दान दे

यहाँ कुछ लोगों ने दान दिया है। उन्होंने अपना दिल खोला है, इसलिए हम उन्हे धन्यवाद देते हैं। लेकिन क्या थोडे लोगों के दान के आधार पर सब लोग खा पायेंगे? नहीं! इसलिए ऐसा खयाल कायम होना चाहिए कि जो खाये, वह दान दे। अगर ऐसा हो जाय, तो जम्मू-कश्मीर का रूप ही बदल जाय। जिसके पास जमीन है, वह जमीन का दान दे। सरकारी अधिकारी, व्यापारी आदि भी अपनी सम्पत्ति का हिस्सा सम्पत्ति-दान में दे। जो कुछ नहीं दे सकते, वे श्रमदान दें। बच्चा भी सूत कातकर दे। साथ ही सभी लोग अपने-अपने घर में सर्वोदय-पात्र रखकर उसमे रोज मुट्ठीभर अनाज डाले। सर्वोदय के लिए, शाति-सेना के लिए हरएक को कुछ देना चाहिए। यह विचार सब कबूल करे, तो हम समझेंगे कि हमारा यहाँ आना सार्थक हुआ।

सुन्दर प्रदेश में झगड़े क्यों ?

जम्मू-कश्मीर मे मै अपनी ओर से कुछ नहीं करना चाहता और न दूसरों से ही कराना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि कश्मीर सारी दुनिया को जोडनेवाली कडी बन जाय। आज कश्मीर स्वय एक मसला बन बैठा है। जब कि होना यह चाहिए कि कश्मीर का कोई मसला न हो और वह दुनिया के मसले हल करे। आखिर ऐसे खूबसूरत प्रदेश मे झगड़े क्यों हो ? यहाँ जो सियासी झगडे चल रहे हैं, उन्हे मिटा दे, तो ताकत बनेगी।

विदेशियों के जरिये हमारी इज्जत बढ़े

आज कश्मीर देखने के लिए जितने विदेशी यात्री यहाँ आते है, उतने हिन्दुस्तान के दूसरे किसी सूबे मे नहीं आते। हजारों लोग इसे देखने के लिए आते है, तो क्या यहाँ सिर्फ पहाड, पेड़, पत्थर, फूल, झील ही देखेंगे ? वे क्या इन्सान को नहीं देखेंगे ? अगर वे लोग यह देखेंगे कि इस खूबसूरत सूबे के लोग आपस मे लड़ते-झगड़ते नहीं, आलस मे नहीं बैठे रहते, दोनों हाथो से खूब काम करते हैं, दूसरो को देकर ही खाते हैं—तो वे अपने देशों मे जाकर कश्मीर की इज्जत बढायेंगे। जब हम इज्जत के लायक काम करेंगे, तभी उनके जरिये हमारी इज्जत बढ़ेगी।

कश्मीर का कर्तव्य

कश्मीरवालों की बड़ी हैसियत है। वे हिन्दुस्तान के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। उसके लिए एक ही बात करनी है। जैसे कुदरत मे मेल-जोल है, वैसे हमारे जीवन मे भी हो। आम के पेड़ में जो लकड़ी है, वह खाने के नहीं, जलाने के काम मे आती है। उसी पेड मे फल, फूल, पत्ते भी होते हैं। लकडी का उस मीठे आम से क्या सबध ? लेकिन एक बीज बोये, तो उसीमे से लकड़ी, फल, फूल, पत्ते निकलते हैं। पेड का एक पत्ता दूसरे पत्ते से मिला होता है। लेकिन सारे पत्ते एक ही पेड़ के है। लकड़ी, पत्ते, फल, फूल, सबमे एक प्रेमरस भरा है। पेड को ऊपर से सूर्य की

किरणें मिलती है। नीचे जड़ें हैं, वहाँ से पानी मिलता है, हवा भी मिलती है। अगर हवा, पानी या रोशनी इनमें से एक भी चीज न मिले, तो पेड़ नहीं बढ़ेगा। इस तरह कुदरत में सारी चीजें मिली जुली रहती है, इसीलिए खूबसूरती पैदा होती है। सृष्टि में जैसे अन्दर एक रस है, वैसे मनुष्य के जीवन में प्रेमरस भरा रहेगा, तो सृष्टि के समान मनुष्य समाज भी हरा-भरा रहेगा।

विलासपुर
१-६-'५९

: १० :

दिल जुड़ जायँ और निडर बनें

इस प्रसन्न, गम्भीर मानससरोवर के किनारे और गगनचुम्बी वृक्षों की छाया मे यहाँ आप हमारी बात सुनने के लिए इकट्ठा हुए हैं, तो हमे बहुत आनन्द होता है।

ये वृक्ष हरे-भरे क्यों?

ये सारे वृक्ष कितने ऊँचे चढ़ गये हैं? उनकी शाखाएँ आसमान में फैली हैं और जड़े जमीन के नीचे गयी है। उन्हे ऊपर से आसमान मे धूप मिलती है, तो नीचे पाताल से पानी। इन दोनों की मदद से ये गरमी मे भी हरे-भरे दीख रहे हैं। अगर ऊपर से सिर्फ धूप होती और नीचे से पानी न मिलता, तो ये सारे वृक्ष सूख जाते। अगर धूप न होती और सिर्फ पानी मिलता, तो वे सड जाते। इसी तरह हमारे जीवन मे प्रेम और भक्ति का पानी चाहिए और बाहर से मेहनत, मशक्कत, सतत तपस्या होनी चाहिए, सेवा होनी चाहिए। चदन के मुआफिक शरीर पिसता जाय, तपस्या की अग्नि मे जलता रहे, तो जीवन मे रस आयेगा, जिन्दगी मे लुत्फ आयेगा।

आज १२ मील ऊपर चढ़ना और नीचे उतरना हुआ। बडा आनन्द आया। डेपुटी कमिश्नर कहते थे कि "आपको हमारे जिले में बडी तकलीफ है।" लेकिन हमे तो इसमे बड़ा आनन्द आता है, क्योंकि ऊपर से यह ताप और अन्दर से भक्ति का झरना (पानी) बह रहा है। नहीं तो इतनी तकलीफ उठाते हुए हम सूख जाते—शरीर थक जाता। अन्दर से भक्ति के प्रेम का पानी है, इसलिए थकान नहीं आती। इसी तरह इन

वृक्षों को भी नीचे से पानी और ऊपर से धूप का लाभ मिलता है, जिससे वे हरे-भरे रहते है।

आपसे परिचय पाने आया हूँ

मेरे प्यारे भाइयो ! बडी खुशी की बात है कि मुझे आप सबसे मिलने का मौका मिला है। मै कश्मीर मे आया, तो खास अपनी ओर से कुछ करने नहीं आया हूँ। सब विचार मैंने जेब मे रख दिये है। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों में भूदान, ग्रामदान आदि बातें चली थीं। मन मे था कि जरा कश्मीर जाऊँ और देखूँ-समझूँ। यहाँ मै लोगो के साथ बात करने मे समय भी बहुत देता हूँ। हिन्दुस्तान मे इतना समय बात करने मे नहीं देता था। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के भाइयों के दिलो के साथ मेरा परिचय हो। फिर अगर वे चाहे, तो अन्दर दाखिल होना चाहता हूँ।

दो काम करें

पहली बात मैं यह चाहता हूँ कि यहाँ सब दिल जुड़ जायँ। दूसरी बात, जनता निडर, निर्भय बने और अन्दर शान्ति, हिम्मत, इतमीनान महसूस करे। दिल का इत्तिफाक हो—सब दिल एक हो जायँ और डर न रहे, ये दो चीजे जम्मू और कश्मीर मे मै कर सकूँ, तो यहाँ की सारी तक-लीफो की भरपाई मान लूँगा।

'पण्डिताः समदर्शिनः'

आज कुछ कबीरपंथी हरिजन मिलने आये थे। उन्होंने मास खाना छोड दिया है। वे कहते थे कि "आज भी हमे दूर रखा जाता है।" यह गलत बात है। हम बैल पर भी प्यार करते हैं, प्यार से उसे स्पर्श करते हैं। गाय पर, कुत्ते पर भी प्यार करते हैं। मैने ऐसे ब्राह्मण देखे हैं, जो खाना खाते समय बिल्ली को अपने पास बिठाकर दही-भात खिलाते हैं। प्राणिमात्र पर प्यार करना मनुष्य का धर्म ही है। ऐसी हालत मे हम इन्सान को भी दूर रखें और उसमे भी कबीर के भक्तों

को दूर रखें, यह बड़ी नासमझी है। मै चाहता हूँ कि हम ऐसा करना छोड़ दें। यह तो धर्म नहीं है। हम सबके साथ प्रेम से रहे। किसीको नीचा न माने। सबको बराबरी का माने। 'नानक उत्तम-नीच न कोई।' हम सब परमेश्वर की संतान है। परमेश्वर का रक्षण सबको समान हासिल है। इसलिए यह ऊँच नीच भाव हम छोड़ दें। मैंने भी धर्म-शास्त्र का अध्ययन किया है। मैं जानता हूँ कि यह धर्म नहीं, बल्कि धर्म के खिलाफ है। गीता मे कहा है, पंडित लोग कुत्ता, चांडाल, हाथी, गाय, ज्ञानी सबको समान भाव से देखते हैं।

मैत्रीभाव से देखे और रहें

हम सब भाई-भाई हैं। किसीको हम नीच न समझें, हीन न समझें। हम सब समान है। हमे किसीको न डराना चाहिए और न किसीसे डरना ही चाहिए। आज हम इधर किसीको डराते हैं और उधर कोई अधिकारी आ जाय, तो उससे डरते हैं। हमे यह समझना चाहिए कि ये सब हमारे नौकर हैं। सरकार हमारी नौकर है। वह लोगों द्वारा चुनी हुई है। लोगों की सेवा के लिए, लोगों की तरफ से, लोगो की सम्मति से वह काम करती है। इसलिए ये अधिकारी आते हैं, तो उनसे डरना नहीं चाहिए। जो शख्स किसीको दबाता है, वह दूसरे किसीसे दबता भी है। बिल्ली चूहे को दबाती है, तो कुत्ते के सामने दबती भी है। हमे किसीको ऊँचा नहीं मानना चाहिए। हम सबके सिर पर भगवान् है। सबके साथ मैत्रीभाव से देखना और रहना चाहिए। मैत्रीभाव रहेगा, तो दिल से दिल जुडेगा।

मानसर
२-६-'५९

: ११ :

भारत सेवक समाज क्या करे ?

'भारत सेवक समाज' यह नाम महात्मा गोखले की 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी' (Servants of India Society) का हमारी भाषा मे किया हुआ अनुवाद है। उसी ढाँचे पर पंजाब मे लाला लाजपतराय ने 'पीपुल्स सोसाइटी' (People's Society) बनायी थी।

सोसाइटी का उज्ज्वल कार्य

गोखले की उस संस्था मे अच्छे, चरित्रवान्, अध्ययनशील और सेवापरायण लोगों को लिया जाता था। उनको 'ऑनरेरियम' दिया जाता था, जो बहुत ही कम था। अब भी सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी मे नये लोगों को लिया जाता है। लेकिन गोखले, देवधर, श्रीनिवास शास्त्री आदि के जमाने मे वह जितनी व्यापक थी, आज उतनी नहीं है। फिर भी अच्छे-अच्छे लोग उसमे काम कर रहे हैं। श्री ठक्कर बाप्पा, हृदयनाथ कुन्जरू आदि उसी सोसाइटी के है। उसके सदस्यों की दुनिया मे यह प्रतिष्ठा है कि वे गैरजानिबदार—किसी प्रकार का पक्षपात न करनेवाले, स्वतन्त्र दिमाग के, शान्त मनोवृत्ति के और किसी विषय पर बिना अध्ययन के न बोलनेवाले होते हैं। भारत सेवक समाज का नाम तो उस सोसाइटी पर से लिया है। किन्तु आज के इस भारत सेवक समाज के जितने सम्पर्क मे मै आया हूँ, उस पर से मुझे लगता है कि जैसे सोसाइटी के सदस्य उसके लिए अपना जीवन समर्पण कर देते थे (आज की भाषा मे जो 'जीवनदानी' कहला सकते हैं), वैसी कोई चीज 'भारत सेवक समाज' मे नहीं दीखती।

सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी के कार्यकर्ताओं को कोई आदेश नहीं दिया जाता था, सिवा इसके कि वे अपने दिमाग को स्वतन्त्र रखकर सेवा करें। साल मे एक दफा मिलकर चर्चा करें और अपने-अपने काम की रिपोर्ट दें। वे काम के लिए भारतभर मे कहीं भी जा सकते थे, लेकिन उनके अपने-अपने सेवा-क्षेत्र भी थे। उस सोसाइटी मे अच्छे परखे हुए और चरित्रवान् लोग ही लिये जाते थे। उसकी कोई तुलना 'भारत सेवक समाज' के साथ नहीं हो सकती। उस सोसाइटी की हैसियत ही दूसरी थी। वे अपने दिमाग से काम करते थे, पूरे आजाद थे। उनका एक ब्रदरहुड (बन्धु-मण्डली) था। उन्होने देश की तरह-तरह से सेवा की है। अकालपीडितो की सेवा की है, शोध (Investigation) का काम किया है। उनमे से कुछ लोग असेम्बली और पार्लमेंट मे भी पहुँचे, जहाँ वे अपना स्वतन्त्र विचार पेश करते रहे। उन्होंने अखबार, स्कूल आदि चलाये हैं। ठक्कर बाप्पा की हरिजन-सेवा तो विख्यात ही है। इस तरह वे अपनी बुद्धि को पूरा आजाद रखते थे। बिना किसी बन्धन के जिस तरह अपनी बुद्धि का विकास चाहते थे, कर सकते थे।

गांधीजी की देन—व्रतनिष्ठा

गाधीजी ने अपनी कल्पना के अनुसार आश्रम बनाया। इसमें एकादश व्रतों की निष्ठा की बात थी। आश्रम मे उन व्रतों का पालन करते हुए दुनिया के हित मे विरोधी न हो, ऐसी अविरोधी सेवा करने की बात थी। गोखले ने 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी' मे राजनीति को आध्यात्मिक रूप देने की बात चलायी। गाधीजी ने उसका आशय स्पष्ट कर दिया और व्रतो की बात रखी। 'विश्व-हित की अविरोधी भारत की सेवा' यह मूल उद्देश्य रखकर उसकी सिद्धि के लिए साधनस्वरूप एकादश व्रत और उनके लिए खादी, गो-सेवा, आर्थिक समता आदि का रचनात्मक कार्य-

क्रम—इस तरह गाधीजी ने हमारे सामने एक पूरा चित्र रखा और लोगों को काम करने के लिए छोड दिया। वे लोग अपना पूरा समय इसी काम मे देते थे। आज भी थोडे लोग हैं, जो काम करते हैं, ट्रेनिंग देने के लिए आश्रम आदि चलाते हैं।

'समाज' में न ट्रेनिंग है और न व्रतनिष्ठा

भारत सेवक समाज मे न ट्रेनिंग की योजना है, न आश्रम जैसी कोई व्रतनिष्ठा की बात। कार्यक्रम के बारे मे भी मै जहाँ तक समझा हूँ, सरकार की पचवर्षीय योजना की पूर्ति मे जनता में कुछ काम चलाने की ही बात है। परन्तु उसमे पूरा जीवन देनेवाले मैंने कोई नहीं देखे। देवधर, श्रीनिवास शास्त्री, ठक्कर बाप्पा जैसे अपना पूरा जीवन-समर्पण करनेवाले मनुष्य उसमे नहीं हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि 'भारत सेवक समाज' सरकार के साथ किसी-न-किसी प्रकार से जुडी हुई सस्था है। सरकार के साथ जुडना कोई गलत बात नहीं है। सरकार अपनी ही है, लेकिन इन दिनों जहाँ कोई सस्था सरकार के साथ जुडकर काम करती है, वहाँ लोगों का अभिक्रम (initiative) लगभग खतम हो जाता है। स्वराज्य-प्राप्ति के लिए लोगों में अभिक्रम था, जो अब खतम हो गया है। अब लोग सोचते हैं कि हमारे ही भाई सरकार मे हैं, इसलिए सारे काम वे ही करें। भारत सेवक समाज पर लोगों का खास भरोसा भी नहीं दीखता। इस सस्था मे 'सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी' के जैसे त्याग-परायण, सेवा-परायण लोग हैं, ऐसा लोग नहीं मानते। गाधीजी की व्रतनिष्ठा की बात बहुत ऊँची थी, इसलिए उसे मैं छोड़ देता हूँ। लेकिन सोसाइटी का जो ध्येयवाद था, वह भी भारत सेवक समाज मे नहीं दीखता है।

दुःखियों की सेवा

अब आपसे क्या हो सकता है, इस बारे मे मैं कुछ कहूँगा। १. इस सस्था मे ऐसे लोग आने चाहिए, जो अपना जीवन इसमे समर्पण

कर दे। २. इस संस्था को ऐसे काम करने चाहिए, जिनसे अत्यन्त दुःखी, पीड़ित गरीबों को सीधी मदद मिले। कहीं रास्ता बनाया, तो सबको लाभ होता है, तो गरीबों को भी होता है। सर्वसाधारण स्वास्थ्य सुधारना अच्छा है, किन्तु ऑख बिगडी हो, तो उसका भी इलाज होना ही चाहिए। इस तरह समाज के जिन अवयवो को कोई बीमारी हो, उनके लिए कुछ विशेष रूप से आज नहीं किया जा रहा है। आप कोआपरेटिव सोसाइटी बनाते है, तो उसमे बड़े और छोटे मालिक आते हैं, लेकिन भूमिहीनो का वहॉ कोई हिस्सा ही नहीं है। इसमे भूमिहीनों की हालत बिगड भी सकती है, क्योंकि पहले अलग-अलग मालिक थे, तो कुछ मालिक उदार भी हो सकते थे। परन्तु सोसाइटी के कोई हृदय नहीं होता, कोई व्यक्तिगत सम्पर्क नहीं होता। इसलिए आपकी कोआपरेटिव सोसाइटी की योजना मे मजदूरों की हालत सुधारने की कोई बात नहीं है। दुःखियों के लिए आपके पास क्या योजना है, इसका कोई उत्तर मुझे भारत सेवक समाज की तरफ से नहीं मिला।

सरकार की पचवर्षीय योजना की यही हालत है। द्वितीय पचवर्षीय योजना बन रही थी, तब मुझे उसके बारे मे सुझाव देने के लिए कहा गया था। मैंने पूछा कि छोटे देहात के लोगो के लिए, देहातों के नीचे के तबकों के लिए, शहर के दुःखी लोगों के लिए इसमे कितना है, यह बताइये। उन्होंने इधर-उधर से देखकर कुछ आँकडे निकाले, क्योंकि योजना उनके लिए नहीं बनायी गयी थी।

गरीबों की सीधी मदद

यह ठीक है कि अगर आज हिन्दुस्तान मे उत्पादन बढ़ाने का कुछ काम किया जाय, तो गरीबो को कुछ मिलेगा ही। सर्वसाधारण का स्तर बढे, इसकी कोशिश की जा रही है। लेकिन खास गरीबो के लिए क्या किया जा रहा है? जब हम नागपुर जेल मे थे, तब एक शिकायत हुई कि कई कैदियों का वजन घट रहा है, उन्हे ठीक आहार नहीं मिलता। फिर

जेलवालों ने सबका वजन लेकर औसत निकालकर जवाब दिया कि खास शिकायत करने की कोई बात नहीं है। औसतन सिर्फ आधा पौंड वजन ही घटा है। अब सोचने की बात है कि जिनका वजन १०-१२ पौंड घटा, उनकी क्या हालत रही होगी। सोचने का यह एक तरीका है।

जिनके जीवन का स्तर बिलकुल ही गिरा है, जो परित्यक्त हैं, उनके पास मदद कहाँ पहुँचती है ? योजना-आयोग का अंग जो कम्युनिटी-प्रोजेक्ट है, उसके मन्त्री स्वयं कहते है कि अभी तक हमारी तरफ से जो मदद मिली, वह उन्हींको मिली, जो उसे खींच सकते थे। याने गरीबों को मदद नहीं मिलती। इस तरह से काम चलता है, तो दुःखियो का दुःख मिटाने का काम नहीं होता। आप देखते हैं कि भूदान-आन्दोलन मे सीधी मदद गरीब बे-जमीन को मिलती है। यहाँ सरकार ने २२ एकड का सीलिंग बनाया है, तो मुजारो को जमीन मिली है। कई दफा मुजारों की हालत मालिकों से अच्छी होती है। कानून बनाने के पहले ही कइयों ने अपने भाइयों और लडकों मे जमीन बाँट ली और कानून बनने पर भी बेजमीन ऐसे ही रह गये। इस तरह आज जो भी काम चलता है, वह ऊपर के स्तर मे ही रुक जाता है। ये लोग कहते हैं कि उत्पादन बढेगा, तो वह टपककर गरीबों तक कुछ पहुँचेगा ही। लेकिन नीचे चट्टान हो, तो उसके नीचे टपकेगा भी नहीं। सवाल यही है कि क्या हम सीधे गरीबों के लिए कुछ मदद दे रहे है ? मनुष्य का सारा शरीर ठीक है, लेकिन कान मे दर्द है, तो बाकी सारे अवयव अच्छे हो, तो भी मनुष्य बेचैन हो जाता है। उसका सारा ध्यान कान की ओर जाता है। इसी तरह अपने समाज का जो सबसे दुःखी अव-यव है, उसे मदद पहुँचाने की कुछ योजना आप कीजिये। अगर आप कहीं रीडिंग रूम खोलेंगे, तो उससे क्या लाभ होगा ? जो सुखी होंगे, वे ही वहाँ आकर पढेंगे, दुःखी नहीं आयेंगे। वहाँ भी कोई अच्छा साहित्य तो नहीं रखा जाता। अखबार रखे जाते हैं, जिसमे गंदगी ही भरी रहती है। पुराने जमाने मे अखाड़ा खोले, तो वह भी देशभक्ति होती थी। लेकिन आज

आपने अखाड़ा खोला, तो उसमे कुश्ती खेलने के लिए वही आयेगा, जिसे खाना मिलता है। ये सारी सेवाएँ बिलकुल निकम्मी नहीं हैं। सेवा के नाते दुनिया मे उनका भी कुछ उपयोग है। परन्तु आज जिन्हे मदद की जरूरत है, उन्हे मदद पहुँचानी होगी। उस दृष्टि से ऐसी सेवा का कोई उपयोग नहीं है।

निचला वर्ग दुःखी रहा, तो आजादी खतरे में

जम्मू और कश्मीर राज्य की हालत विशेष प्रकार की है। यहाँ की राजनीतिक परिस्थिति डॉवाडोल है। इसलिए यहाँ गरीबों को कुछ मदद मिले, तो उन्हें इतमीनान हो जाता है और राज्य को भी स्थिरता प्राप्त होती है। अगर साक्षात् गरीबों के लिए कुछ न किया जाय, ऊपर-ऊपर ही से काम करें और राज्य को गरीबों का शाप ही मिले, तो उसमे क्या सार रहेगा? अंग्रेज सात हजार मील से जहाजों मे बैठकर यहाँ आये, जब कि आमद-रफ्त के आज के जैसे साधन नहीं थे। उन्होने यहाँ व्यापार चलाया, राज्य कमाया और १५० वर्षों तक राज्य चलाया और आखिर वे इसे छोड़कर चले गये। यहाँ उनके पैर इसीलिए जम सके कि यहाँ निचली जमातों की कोई पर्वाह नहीं की जाती थी। इसलिए अंग्रेजों को उन जमातों में से चाहे जितने नौकर मिले। मिशनरियों को भी उन्हीं जमातो मे से धर्मान्तर करनेवाले मिले। कोई बहुत अच्छा शख्स समझ-बूझकर धर्मान्तरित हुआ है, ऐसा बहुत कम हुआ। अक्सर मुसलमान और ईसाइयों को निचली जमातों मे से ही धर्मान्तर करनेवाले मिले, क्योकि ऊपर के लोग उनकी पर्वाह नहीं करते थे और आपस मे लडते-झगड़ते रहते थे। बड़ो के झगड़े चलते और नीचे के लोग पीसे जाते थे। अंग्रेज यहाँ आये, तब देश की यही हालत थी। इसीलिए हमने आजादी खो दी।

आज भी वही हालत है। इसलिए हमे समझना चाहिए कि इन दिनों देशों की आजादी तभी टिक सकती है, जब निचला वर्ग सुखी रहेगा।

अगर वह सुखी नहीं होगा, तो आज जिसे हम लोकशाही कहते हैं, उसका परिवर्तन देखते-देखते लश्करशाही मे होने लगेगा। अभी खबर आयी है कि हिन्दएशिया में 'गाइडेड डेमोक्रेसी' की बात नहीं चली, इसलिए लश्कर की सत्ता आयी। पाकिस्तान, मिस्र, फ्रान्स आदि सभी देशों मे जो कुछ हुआ, वह हम देख चुके हैं। इस तरह लोकशाही का रूपान्तर लश्करशाही मे होने मे देर नहीं लगती, क्योंकि राज्य का सारा दारोमदार लश्कर पर ही होता है। अगर गरीब असन्तुष्ट रहे, तो चाहे हम जम्हूरियत (लोकशाही) की बातें करते रहे, तो भी लोकशाही के मूल्य नहीं टिकेंगे। इसलिए आप सीधे गरीबो को मदद देने का काम कीजिये।

'समाज' वाले मेरा साथ दें

यहाँ भूदान मे लोग जमीन दे रहे हैं और उसे बाँटने का इन्तजाम भी हो चुका है। इस काम मे सीधे गरीबों को मदद मिलती है, इसलिए मैं इसमे आपका योग चाहता हूँ। यहाँ शरणार्थियो की समस्या है। उनकी सेवा भी आप कीजिये। सर्वेण्ट्स आफ इण्डिया सोसाइटी के लोग जहाँ कहीं दुःख हो, वहाँ पहुँच जाते थे। आप भी वैसा ही कीजिये। आप मुझे सहयोग देंगे, तो मेरी शक्ति का आपको और आपकी शक्ति का मुझे उपयोग होगा। इस तरह दोनों के मिल-जुलकर काम करने से इस राज्य का कुछ काम बनेगा।

रणवीरसिंगपुरा
७-६-'५९

: १२ :

तालीमी संघ का सर्व-सेवा-संघ में विलीनीकरण

आज मैंने सोचा है कि तालीमी सघ और सर्व-सेवा-सघ दोनों ने मिलकर जो प्रस्ताव किया है, वही आपके सामने रखूँ और दो शब्द कहूँ। जम्मू और कश्मीर मे आज नयी घटना हुई है। एक नयी चीज बनी है। अपने देश की ताकत बढ़ानेवाली चीज बन गयी है। वह यह है कि दोनों सघ मिल गये हैं। तालीमी सघ और सर्व-सेवा-सघ दोनों गाधीजी की सस्थाएँ थीं और अलग-अलग काम करती थीं। आपस में सलाह-मशविरा करती थीं। अलग-अलग काम करने के लिए अलग सस्थाएँ बनायी गयी थीं। परन्तु वे आज एक हो गयी हैं और मिला-जुला एक सर्व-सेवा-सघ हो गया है। इसकी चर्चा कई दिनों से चल रही थी, लेकिन आखिरी फैसला आज हुआ है। यह बहुत खुशी की बात है और यह खुशखबरी मैं आप लोगों को बताना चाहता हूँ।

बापू का आखिरी वसीयतनामा

आप जानते ही हैं कि गाधीजी की मृत्यु को अब लगभग १२ साल हो रहे हैं। अपनी मृत्यु के पहले गाधीजी ने देश को एक आदेश दिया था कि "काग्रेस का स्वराज्य-प्राप्ति का अपना काम अब हो चुका है। इसके आगे उसे समाज की सेवा मे लग जाना चाहिए और 'लोक-सेवक-सघ' बनना चाहिए।" काग्रेस के लिए यह उनका आखिरी वसीयतनामा था, जो उन्होने आखिरी दिनो मे तैयार किया था। उस पर नेताओं ने बहुत सोचा, लेकिन काग्रेस 'लोक-सेवक-सघ' नहीं बन सकी। गाधीजी की राय थी कि एक लोक-सेवक-सघ बने, जिसमे काग्रेस तो पूरी तरह से शामिल हो,

साथ ही उनकी रचनात्मक काम करनेवाली सस्थाएँ (याने खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम, स्त्री-सेवा, हरिजन सेवा, हिन्दू-मुस्लिम एकता, शान्ति-सेना, आर्थिक आजादी—इस तरह उनका जो तामीरी प्रोग्राम था, उसे करनेवाले सभी लोग) भी उसमे मिल जायॅ। ऐसा मिला-जुला सघ बने। अगर ऐसा होता, तो उसका सारे भारत पर अच्छा प्रभाव पडता और काग्रेस भारतभर मे सबसे बड़ी सेवा-सस्था बनती। लोगों को योग्य दिशा मे ले जाने के लिए, निष्काम और निष्पक्ष भाव से उनकी सेवा करने के लिए, लोगो को ठीक राह दिखाने और नीति का विचार देने के लिए, लोगों की या सरकार की गलती होने पर उन्हे तटस्थ भाव से लोगों के सामने रखने के लिए एक नैतिक शक्ति देश के सामने खडी हो सकती थी। जिस काम के लिए काग्रेस बनी थी, वह काम तो बन चुका था। इसलिए स्वराज्य के बाद ऐसी एक सस्था बने—ऐसा वे चाहते थे। लेकिन वह नहीं बन सका। ऐसी एक शक्ति इस देश मे खडी होती, तो काग्रेस को जो पुण्य हासिल हो चुका था, उसका भी उसे लाभ मिलता और वह ज्यादा बढ़ता—यह बापू का खयाल था, जो उस समय हमारे नेताओं के ध्यान मे नहीं आया। मैं नेताओं को दोष नहीं देना चाहता। उस समय उनकी कुछ ऐसी वृत्ति थी कि काग्रेस देश को बचाने के लिए ऐसी ही कायम रहे। फलस्वरूप गाधीजी की कल्पना के अनुसार लोक-सेवक-सघ नहीं बन पाया।

नैतिक आवाज के अभाव में जनता निष्क्रिय

यही कारण है कि आज हालत यह है कि एक नैतिक आवाज उठाकर सब लोग उसके अनुसार काम करे, ऐसी कोई सस्था या ऐसे कोई व्यक्ति देश के सामने नजर नहीं आ रहे हैं। काग्रेस के नेता, जो एक जमाने मे देश के नेता थे, आज एक पार्टी के नेता बन गये हैं। दूसरी पार्टियों के नेता भी देश के नेता नहीं, पार्टी के ही नेता हो गये हैं। नयी-नयी पार्टियॉ निकल रही हैं और उनके नेता जन-समाज के सामने एक-दूसरे का खडन

करते हैं। इससे निष्क्रिय जनता मे किसी प्रकार की क्रियाशीलता नहीं आ रही है। एक-दूसरे का शब्द तोड़ने का काम हो रहा है। जिसे हम नैतिक नेतृत्व कह सकते हैं, उसका सर्वथा अभाव है। ऐसी कोई बडी संस्था या जमात नहीं है, जो अपनी ताकत से देश पर असर डाल सके और देश को गलत रास्ते पर जाने से परावृत्त करे। इससे देश मे एक प्रकार की निष्क्रियता, शून्यता, रिक्तता, खालीपन आ गया है और जनता भ्रांत हो गयी है। कहाँ जायँ और कहाँ न जायँ, यह जनता की समझ मे नहीं आता। एक नेता कहता है—इधर चलो, तो दूसरा नेता कहता है, उधर चलो। ऐसी हालत मे जनता मे शक्ति होनी चाहिए। लेकिन इतनी शक्ति जनता मे नहीं आयी है कि वह ठीक तरह से सोचे और खुद अपने फैसले कर सके। एक नेता दूसरे को गाली देता है, उसका खडन करता है, तो दूसरा नेता पहले को गाली देता है और लोग दोनो की गालियाँ सुनते हैं। इससे बचानेवाली तारक शक्ति का अभाव स्पष्ट दीख रहा है। ऐसा न होता, अगर गाधीजी की वह सलाह मान ली गयी होती। उससे कुछ काम बन सकता। लेकिन गाधीजी के साथियों ने सोचा कि हम अपनी ताकत से दुनिया को नहीं बचा सकेगे। इसलिए लोक-सेवक-सघ नहीं बना।

सर्व-सेवा-संघ की प्रवृत्तियाँ

आठ साल हुए, हम भूदान, ग्रामदान, शाति-सेना, सर्वोदय-पात्र, खादी, ग्रामोद्योग, नयी तालीम आदि सारी बाते बताकर ग्राम-स्वराज्य की कल्पना देश के सामने रख रहे हैं। यह नया काम शुरू हुआ है और आज यहाँ एक और नयी बात हुई है। तालीमी सघ और सर्व-सेवा-सघ दोनों एक हो गये है। बहुत दिनो से सोचा जा रहा था कि गाधीजी के बाद उतनी ताकत चाहे पैदा न भी हो, लेकिन कम-से-कम लोगों को एक नैतिक राह दिखाने के लिए, सलाह देने के लिए एक ऐसी सस्था होनी ही चाहिए। यों सोचकर सर्व-सेवा-सघ बनाया गया और उसमे तालीमी सघ

को भी दाखिल करने का बहुत दिनों से सोचा जा रहा था। आखिरी फैसला आज हुआ है और यह खुशखबरी मैं आप लोगों को सुना रहा हूँ।

सर्वसम्मति से निर्णय : एक प्रमुख विशेषता

इन बारह सालों मे जो इजाफा, जो वृद्धि इस काम मे हुई है, उसमे शाति-सेना, भूदान, ग्रामदान का काम हुआ है और जमीन के बारे मे सबका समाधान करने का नया तरीका हाथ मे आ गया है। यह सब कार्य-क्रम यह सस्था करेगी और मुझे कहने मे खुशी होती है कि लोगों को भी कुछ राह मिलेगी। इस सर्व-सेवा सघ मे बहुत बड़ी बात यह है कि हिन्दुस्तान के नेक, प्रेम से काम करनेवाले और जनता की सेवा के सिवा दूसरा कोई खयाल न रखनेवाले चार-पॉच हजार कार्यकर्ता काम कर रहे हैं। हिन्दुस्तान की जन-सख्या चालीस करोड़ है, इस हिसाब से तो पॉच हजार सेवकों की यह जमात बहुत बड़ी नहीं कही जा सकती। फिर भी विशेष बात यह है कि इनका जो काम चलता है, उसमे फैसले सर्वसम्मति से होते हैं। बहुमत की बात इसमे नहीं है। आज जो चुनाव चलते हैं और दूसरे भी काम अकल्लियत (अल्पमत) और अक्सरियत (बहुमत) से होते हैं, लोकशाही के नाम से होते हैं और उन्हींके कारण सत्ता के झगड़े गॉव-गॉव में पैठ गये हैं, गॉव-गॉव मे आग लग रही है—ये सारी बाते तब तक हल नहीं होंगी, जब तक हम मिल-जुलकर काम नहीं करेंगे और फैसले सर्व-सम्मति से नहीं करेंगे। सर्व-सेवा-सघ ने तय किया है कि जो भी फैसला हम करेंगे, सर्वसम्मति से करेंगे। जहाँ सर्वसम्मति नहीं होगी, वहाँ हम बार-बार सोचते रहेगे और जब तक सर्वसम्मति नहीं होगी, तब तक फैसले नहीं करेंगे।

सिखो की ताकत टूट रही है

करीब एक महीना हुआ, हम पजाब मे थे। उन दिनों वहॉ शिरो-

मणि गुरुद्वारा के झगड़े भी चल रहे थे और आज भी चल रहे हैं। दोनों बाजू बड़े-बड़े मजबूत नेता है। जब मैं पजाब मे था, तो दोनों मेरे पास आये थे। मैंने कहा कि राजनीति के झगड़े धर्म मे नहीं आने चाहिए। अल्पमत-बहुमत की बात धर्म मे नहीं आनी चाहिए। इस तरह कोई धर्म नहीं टिक सकता। जिस धर्म मे अल्पमत-बहुमत के झगड़े हों, वह धर्म नहीं टिकेगा। सिखों के गुरुग्रन्थ मे ही कहा है, **'पंच परवाण पंच प्रधान। पंचों का गुरु एक धियान।'** पाँचों का ध्यान जब एक होगा, तभी फैसला होगा, तभी काम होगा और तभी धर्म मजबूत बनेगा। नहीं तो ४६ एक बाजू और ५१ दूसरी बाजू, तो ५१ की ही चलेगी। याने ४६ पर ५१ का राज! यह आग लगानेवाली बात राजनीति मे चलती है। वह वहाँ से भी हट जाय, यही मै चाहता हूँ। तो, धर्म मे तो यह बात होनी ही नहीं चाहिए। यह तभी होगा, जब सत्ता विकेंद्रित होगी और फैसले सर्व-सम्मति से होंगे। राजनीति मे भी यह बात आनी चाहिए, लेकिन धर्म मे तो यह बात जरूर होनी ही चाहिए। आखिर सिखों ने जो धर्म बनाया था, वह किसलिए बनाया था? हिंदू और मुसलमानों के झगड़े होते थे। मूर्तिपूजा करनी चाहिए या नहीं, इस पर झगड़े चलते थे। उस वक्त नानक ने सबको बचानेवाली एक मजबूत जमात खड़ी की। आज वह टूट रही है।

... के जूते बाहर ही रखें

मैने सिख भाइयो से कहा कि जैसे आप गुरुद्वारा मे जाते हैं, तो अपने जूते बाहर छोडकर जाते हैं, वैसे ही अपनी राजनैतिक पार्टी के जूते भी बाहर रखकर यह धर्म-कार्य करें। कांग्रेस का जूता, अकाली दल का जूता, कम्युनिस्ट का जूता, समाजवाद का जूता—आदि तरह तरह के जूते आप लोग पहनते हैं। इन्हे आप न पहनें या पहनना ही है तो पहनें; लेकिन कृपा कर गुरुद्वारा के काम के समय उन्हे बाहर खोलकर अन्दर आयें।

जब मैंने यह मिसाल उन्हे दी, तो उन्होंने कहा, "आपकी बात बिलकुल सही है, लेकिन अगर"·· बीच मे यह 'लेकिन' आता है, तो धर्म टूट जाता है। इस वास्ते मेरी अपने सिख भाइयों से अपील है कि धर्म के सबंध मे एकता कायम रखे और तब सारे सवाल हल करे। उनके गुरुओं ने जो सिखावन दी है, उस पर पूर्ण श्रद्धा रखकर धर्म के सवाल हल करें। सर्वसम्मति से फैसले नहीं होते, तो कभी भी अल्पमत-बहुमत से सवाल हल न करे। जब तक सर्वसम्मति नहीं होती, फैसला न करें। नानक ने जो धर्म सिखाया था, उसमे ऐसे झगड़े नहीं थे।

धर्म के फैसले बहुमत से नहीं होते

जब हम हाईस्कूल मे पढते थे, तब हमारे क्लास मे शिक्षक ने गणित का एक उदाहरण हल करने के लिए दिया। जब शिक्षक ने पूछा, तब दो-तीन लड़को के सिवा और किसीका उत्तर ठीक नहीं था। बाकी के लड़के कहने लगे कि "तीस लडकों मे से तीन लड़के जो कहते हैं, वह ठीक और २७ लड़को का कहना ठीक नहीं, यह कैसे होगा? सत्ताईस तो बहुमत होगा, इस वास्ते सत्ताईस का ही कहना ठीक मानना चाहिए।" लेकिन गणित के फैसले ऐसे बहुमत से नहीं होते। इसी तरह जहाँ धर्म की बात आती है, वहाँ कितने लोग मूर्तिपूजा को मानते हैं और कितने नहीं मानते, इससे फैसला हो सकता है? आखिर यह धर्म है या धर्म का उपहास? स्पष्ट है कि यह धर्म नहीं, धर्म की दिल्लगी है। इस वास्ते मेरी मेरे सिख भाइयो से अपील है कि आप अपने सियासत के जूते बाहर रखकर सारे फैसले करे। इस तरह सूरत निकल सकती है या नहीं, यह आप सोचें। अल्पमत बहुमत को इसमे मत लाइये। वे कहते हैं यह विचार अच्छा है, लेकिन कैसे बनेगा? मैं कहना यह चाहता हूँ कि वह वैसे ही बनेगा, जैसे कि सर्व-सेवा-सघ करता है। अब यह ठीक है कि सर्व-सेवा-सघ बहुत छोटी जमात है, लेकिन वह बड़ी बनेगी, तो भी फैसले सर्वसम्मति से ही होंगे।

'क्वेकर्स' की मिसाल

मैंने सिख भाइयों के सामने 'क्वेकर्स' की मिसाल रखी। वे हजारों की तादाद में स्कूल वगैरह चलाते हैं। सेवा के काम करते हैं। वे लोग अपने फैसले एकमति से, सर्वसम्मति से करते हैं। इस वास्ते उनका काम लोगों के सामने एक आदर्श जैसा होता है। सर्व-सेवा-संघ ने भी सर्वसम्मति से फैसले करने का तय किया है। आप अल्पमत-बहुमत के झगड़े धर्म में लायेंगे, तो धर्म न टिकेगा। लोग राजनीतिज्ञों के पीछे चलेंगे, तो गड्ढे में जायेंगे।

ज्ञान और कर्म साथ-साथ रहना जरूरी

विज्ञान के जमाने में तंगनजरिया नहीं चलेगा। जब तक छोटी-छोटी पार्टियाँ रहेंगी और देश की बागडोर भी ऐसे लोगों के हाथ में रहेगी, जिनका नजरिया तंग है, तब तक देश की तरक्की नहीं होगी। इस आणविक युग में छोटे दिल से काम नहीं चलेगा। इसलिए धर्म के मामले में यह राजनीति के झगड़े कभी न लायें। हमें अपनी ताकत बनाने के लिए यह जरूरी है कि हम जो काम करें, सर्वसम्मति से करें और एकता कायम रखें। धर्म के काम में यह बहुत जरूरी है। रचनात्मक काम में भी यह होना जरूरी है। इसलिए सर्व-सेवा-संघ ने जो प्रस्ताव किया है, वह बहुत महत्त्व का है। जम्मू और कश्मीर में यह बहुत बड़ी बात बनी है। गांधीजी के साथ रहनेवाली जमात, एक सर्व-सेवा-संघ और दूसरी तालीमी संघ कोई अलग काम करने के खयाल से नहीं थी। बल्कि इसी खयाल से रही कि तालीम का काम करना है, तो खास जानकार लोग होने चाहिए। सब लोग जानकार कैसे होंगे? लेकिन दोनों को अलग-अलग रखने का यह खयाल ही गलत है। यह कभी नहीं हो सकता कि इल्म और अमल, ज्ञान और कर्म दोनों अलग हों। दोनों कभी अलग नहीं हो सकते। अगर अलग हुए, तो दोनों जड़ बनेंगे, प्राणहीन, बेजान बन जायेंगे। ज्ञान के

साथ कर्म और कर्म के साथ ज्ञान होना जरूरी है। इसी दृष्टि से ये दोनों सघ एक हो गये, यह बहुत बड़ी बात है।

समर्थों का सहयोग ही प्रशस्त

हिंदुस्तान मे तरह-तरह के भेद पडे हैं, टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं। कुछ लोगो की कल्पना है कि "कुछ लोग दिमागी काम कर सकते हैं, तो कुछ लोग हाथो से।" मै कहता हूँ, ऐसे लोग, जो हाथों से काम नहीं कर सकते, पाँव से नहीं चल सकते, लेकिन दिमागी काम कर सकते हैं, पगु और लॅंगड़े हैं। उनके ऑखें हैं, लेकिन वे चल नहीं सकते। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं, जो हाथों से काम कर सकते हैं, पाँव से चल सकते हैं, लेकिन उनके पास विद्या नहीं, ज्ञान नहीं। परिणामस्वरूप दो टुकड़े हो गये हैं। ये दूसरे प्रकार के लोग अधे हैं। लोग कहते हैं, इन अन्धो का और लॅंगड़ों का सहयोग होना चाहिए, तभी समाज चलेगा। याने लॅंगड़े के कन्धे पर अन्धा बैठे। लॅंगडा राह दिखाये और अन्धा चले। इस तरह अन्ध-पगु-न्याय के अनुसार काम हो। लेकिन मै कहता हूँ कि यह अक्षमो का सहयोग हुआ, इससे काम नहीं होगा। समर्थों का सहयोग होना चाहिए। इसलिए जिनके पास ज्ञान नहीं है, उन्हे ज्ञान-शक्ति देनी चाहिए। अक्सर ऐसे लोग देहात मे होते हैं। देहात मे कर्म-शक्ति है, लेकिन ज्ञान-शक्ति नहीं है। अतः ज्ञान-शक्ति देहात मे पहुँचानी चाहिए—शहर मे विद्या है, लेकिन काम करने की ताकत नहीं—कर्म-शक्ति शहर मे नहीं है। लेकिन जब शहर मे काम करने की ताकत बनेगी और देहात मे विद्या पहुँचेगी तथा दोनो समाज एकरस बनेंगे, तभी काम बनेगा। याने वह समर्थों का सहयोग होगा। आज जो बॅटवारा हो गया है, वह नहीं रहेगा। दोनो को दोनों तरह के काम मिलने चाहिए। जिनके पास कर्म-शक्ति है, उन्हें दिमागी काम भी मिलना चाहिए। जिनके पास दिमागी काम है, उन्हे हाथ का काम भी मिलना चाहिए। इस तरह दोनो एक बनेंगे, तभी काम होगा। दोनों आज अलग हो गये हैं, इसलिए

यह झगडा पैदा होता है। दोनो एक होने पर निश्चय ही कुछ राह मिलेगी। आजकल कहा जाता है कि "मिल मे इतने-इतने हैण्ड्स हैं, याने इतने मजदूर हैं।" लेकिन हम कहते हैं कि हरएक को हैण्ड्स तो होना ही चाहिए और 'हेड' (सिर) भी होना चाहिए। हरएक के पेट मे भूख है, इसलिए हरएक को हाथों से काम करना चाहिए और हरएक को दिमागी काम भी मिलना चाहिए। तभी समाज बनेगा। यही ध्यान मे रखकर सर्व-सेवा-सघ और तालीमी सघ दोनों एक हो रहे है, यह बहुत बड़ी बात है।

जम्मू (कश्मीर)
९-६-'५९

: १३ :

कश्मीर स्वर्ग कैसे बनेगा ?

जम्मू और कश्मीर में २० दिन हुए, यात्रा चल रही है। इतने समय मे कुछ देखा और कुछ सुना भी। काफी जानकारी मिली और धीरे धीरे यहाँ के मसलों का खयाल भी मुझे आ ही रहा है।

मसला भी और ताकत भी

जितना अनुभव हुआ, उससे यही लगा कि जो मसला भारत मे है, वही यहाँ है। चाहे उसकी शकल-सूरत कुछ अलग दीखती हो, लेकिन मसला वही है। फिर, वह सिर्फ मसला नहीं है। अगर आप अक्ल से काम करें, तो वह ताक़त भी है।

हिन्दुस्तान मे अनेक धर्म, जाति और पथों के लोग इकट्ठा हुए हैं। हमारे यहाँ के एक महाकवि रवि ठाकुर ने कहा था कि भारत मानवों का एक समुन्दर है। बहुत कदीम जमाने से मनुष्य जाति इस देश मे आकर बस रही है। इस देश का इतिहास बहुत पुराना है और वह यही दिखाता है कि मुख्तलिफ कौमे यहाँ आयीं और यहाँ की ताक्तों से उनकी ताकत टकरायी। इस तरह अनेक ताक्तो से टक्कर और कशमकश चली। लेकिन आखिर मे वे यहाँ के समाज मे मिल गये। इस समाज के अवयव, जुल बन गये और एक मिली-जुली सभ्यता यहाँ बनी। यह हमारे देश की एक ताकत है, लेकिन अक्ल से हम काम न लें, तो वही मसला हो जाती है। अनेक धर्म और अनेक जातियों का होना मसला भी हो सकता है और ताकत भी।

लोकतंत्र में देश के अनुरूप परिवर्तन जरूरी

यूरोप से हमने प्रजातन्त्र का नमूना लिया और वह ज्यादातर इंग्लैंड का ही नमूना है। किन्तु यहाँ की और इंग्लैंड की हालत मे कितना फर्क है, इसे देखिये। वहाँ एक ही अंग्रेजी जबान है। यहाँ हमारे देश मे तरह-तरह की १४ राष्ट्रीय जबानें हैं। इनके अलावा जिन्हे 'बोलियाँ' कहते हैं, ऐसी भी कुछ हैं। किन्तु उधर यूरोप मे एक-एक भाषा का एक-एक राष्ट्र है। यहाँ हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बुद्ध, पारसी, यहूदी जैसे अनेक धर्म हैं। लेकिन इंग्लैंड मे एक ही धर्म है और वह है, ईसाई-धर्म। यहाँ अनेक जातियाँ हैं। लेकिन इंग्लैंड मे जाति-भेद नहीं है, इसलिए यहाँ की और वहाँ की हालत मे बहुत फर्क है। इंग्लैंड ने २००-३०० साल बहुत पराक्रम किया और जगह-जगह से वहाँ सम्पत्ति का झरना बहने लगा। उन्होंने बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज बनायी, देश को मालामाल बनाया। इस तरह इंग्लैंड की तुलना मे तो हिन्दुस्तान बहुत ही गरीब देश है। फिर भी वहाँ का लोक-शाही का तरीका हमने ठीक वैसा ही (ज्यों का त्यों) उठा लिया। यह सच है कि शासन-पद्धतियों मे सबसे बढ़कर तरीका लोकशाही का है, फिर भी हरएक की अपनी-अपनी अलग हालत होती है। उसे देखकर उसमे कुछ-न-कुछ फर्क करना चाहिए। वैसा न करें और जैसा का तैसा नमूना ही उठा लें, तो लोकशाही की मुश्किलें, तकलीफें, दुश्वारियाँ सामने आ जाती हैं, फैसले जल्दी नहीं होते और काम मे देर होती है। इस तरह के कई सवाल खड़े हो जाते हैं और उसमे काफी वक्त जाता है। आधुनिक विज्ञान के जमाने में खोने के लिए इतना वक्त नहीं होता। इसलिए अपने देश की परिस्थिति देखकर लोकशाही मे बदल करना और उसे अपने अनुकूल बनाना होगा। मैं मानता हूँ कि हम इसमे तब्दीली करेंगे, लेकिन इसमे कुछ समय जायगा। इसमे कुछ अनुभव मिलेंगे, तो कुछ तकलीफ भी होगी।

संवादिता की आवश्यकता

हमारे देश मे एक खूबी है, लेकिन वही खामी हो जाती है, अगर हम अक्ल से काम न करें। सगीत के सात स्वर होते हैं। सातों मिलकर बडा सुन्दर सगीत बनता है। लेकिन ये एक-दूसरे के खिलाफ जायँ, राग के अनुकूल न हों, तो विसंवाद होगा, गाने का लुत्फ–मजा नहीं रहेगा। 'सा सा सा' जैसा एक ही स्वर रहेगा, तो सगीत नहीं बनेगा। अतः अनेक स्वर होने चाहिए और उनमे संवाद भी होना चाहिए। सवाद हो, तभी मीठा सगीत निर्माण होता है। सगीत मे इस प्रकार की जो कला होती है, वैसी ही कला हिन्दुस्तान मे भी होनी चाहिए। हिन्दुस्तान मे अनेक धर्म हैं, अनेक पन्थ हैं। उनका ठीक उपयोग करने का फन और सिफत होनी चाहिए। तभी वह खूबी कायम रहेगी। यहाँ लद्दाख मे बौद्ध हैं। जम्मू मे हिन्दू और सिख हैं, कश्मीर मे मुसलमान हैं, ऐसे चार धर्म यहाँ है। इसके अलावा कुछ ईसाई भी होंगे, ऐसी मुख्तलिफ जमातें यहाँ है, तो हमे उनका ठीक उपयोग करना चाहिए। हम यह न समझें कि यह मुख्तलिफ जमातें हमारे मार्ग मे रोड़े डालेंगी। ये रोड़े नहीं, सीढ़ियाँ हैं।

विश्व को बुद्ध-उपदेश का आकर्षण

लद्दाख मे पुराने जमाने के बौद्ध हैं। हमारे यहाँ बम्बई-राज्य मे, खासकर महाराष्ट्र मे हजारों हरिजनों ने बौद्धधर्म स्वीकार किया। एक जमाना था, जब इसी तरह हजारों लोगों ने बौद्धधर्म स्वीकार किया था। यह हमारे देश का गौरव है, इज्जत है कि हमारे यहाँ बौद्धधर्म चला और यहाँ से हिन्दएशिया, लका, बर्मा, चीन, जापान, मध्यएशिया आदि स्थानों मे प्रचारक पहुँचे और दुनिया को यहाँ से प्रकाश दिया गया। यहाँ तक कि बाइबिल मे भी जिक्र आता है कि ईसामसीह के जन्म पर पूर्व से ज्ञानी आये थे—'वाइज मेन आफ दि ईस्ट'—और कहा जाता है कि ये बौद्ध थे। इस तरह यहाँ से जो लोग बाहर गये, वे अपने साथ तराजू

या तलवार लेकर नहीं गये। दूसरी जमातें तलवार और तराजू लेकर गयीं। तलवार और तराजू के बाद फिर तख्त आता ही है। बौद्धधर्म चीन, जापान आदि मे फैला, लेकिन वहाँ जाकर हमारे लोगो ने अपनी हुकूमत कायम नहीं की, बल्कि उन्होंने वहाँ के लोगो के साथ प्रेम-परिचय प्राप्त किया और उससे वहाँवाले बहुत प्रभावित हुए। हमारे देश की यह बहुत बड़ी बात है। यहाँ के राजाओ की बहुत बड़ी-बड़ी सल्तनतें थीं, लेकिन उन्होंने कभी दूसरे देश पर हमला नहीं किया। बौद्धधर्म हमला करनेवाला नहीं हुआ। इसलिए हम उसका बड़ा उपकार मानते हैं। भगवान् बुद्ध की जो इज्जत ब्रह्मदेश और तिब्बत मे है, वह हमारे लिए बहुत बड़ी बात है। इस पर हमे फख्र हो सकता है और है भी। हमने बुद्ध को भगाया नहीं। उसे अवतार मान लिया और उसका सारा का सारा उपदेश जज्ब कर लिया। यहाँ के हिन्दू-धर्म, वैदिक धर्म मे वह समा गया, जैसे समुद्र मे नदी समा जाती है। यही हमारे देश की खूबी है।

अब तो नये सिरे से बुद्ध की सिखावन की ओर लोगों का ध्यान जा रहा है और बुद्ध की सिखावन ही ऐसी है, जो आज के जमाने के लिए जरूरी है। जब बडे-बडे शस्त्रास्त्र बन रहे हैं और इन्सान को इन्सान से ही बहुत डर मालूम हो रहा है, ऐसी स्थिति मे अगर हम सबको प्यार से जीतेंगे, तो वह खौफ—डर न रहेगा। हमे सबके साथ प्यार से रहना चाहिए और सीधी राह चलना चाहिए।

धर्म-परिवर्तन व्यर्थ की चीज

इस प्रकार बौद्ध-धर्म सबको अपनी ओर खींचता है, मुझे भी खींचता है। फिर भी मैं हिंदू मिटकर बौद्ध बनने की जरूरत महसूस नहीं करता। दूध के नाम से मै शक्कर भी पीता हूँ। दूध में शक्कर डालता हूँ और लोग पूछते हैं, तो 'दूध पीया' ऐसा ही कहता हूँ, 'दूध और शक्कर पीया' ऐसा नहीं कहता। शक्कर उसके नीचे चुपचाप अपनी मिठास देगी। इस

तरह मेरे हिंदू-धर्म मे बौद्ध-धर्म मिठास पैदा करता है। मैंने बौद्धों से पूछा था कि क्या आप मुझे दीक्षा देंगे, तो उन्होने कहा कि आपको दीक्षा देने की जरूरत ही नहीं है। एक जगह बौद्धधर्मी लोग मिले, उन्होंने कहा कि बाबा गौतम बुद्ध के नक्शेकदम पर, चरण-चिह्न पर चल रहा है। मैंने इसमे गौरव माना। बिहार मे मैं गया था, तो वहाँ का कुल काम मैंने भगवान् बुद्ध के नाम से किया और बोधगया मे जिस पेड़ के नीचे भगवान् बुद्ध को ज्ञान मिला, उसके नजदीक ही मुझे जमीन दान मे मिली, तो वहाँ समन्वय-आश्रम शुरू किया। मैंने 'धम्मपद' का नया संस्करण निकाला है, जिसमे भगवान् बुद्ध के सब वचनों की नये सिरे से रचना की है। बौद्धधर्म का प्रभाव मेरे भी दिल पर है, लेकिन हिन्दू मिटकर मैं बौद्ध बनूँ या बौद्ध लोगो को हिन्दू बनाऊँ, हिन्दुओ को बौद्ध बनाऊँ, इसकी जरूरत मुझे महसूस नहीं होती। भोजन मे खारापन, मीठापन, तीखापन सब तरह के रस होने चाहिए। वैसे ही हिन्दू, बौद्ध, सिख और इसलाम आदि अनेक धर्मों मे भी अलग-अलग रस हैं। सभी धर्मों की सीख का सार हमें समझना चाहिए। वह एक ही है।

रसूलों मे फर्क नहीं

गुरु नानक ने कहा है कि अठारह हजार बातें हैं, लेकिन असल धातु, बुनियादी चीज एक ही है—'सहस अठारह कहनि कतेबा असलू इक धातु।' जितने भी अलग अलग धर्म हैं, वे सब इबादत के अलग-अलग प्रकार हैं। इबादत के अनन्त तरीके हो सकते है। लेकिन अनन्त तरीको मे चीज एक ही है। अनुभव एक ही आता है। सबके अनुभव इकट्ठा कर सकते हैं। यही बात कुरान मे कही है। उसमे कहा है कि हर जमात अपने अपने पथ पर चलती है, डटी रहती है, फख्र करती है। एक-दूसरे को नीचा ऊँचा समझती है। लेकिन आप सब लोग एक ही जमात हैं। जितने नबी, गुरु, पैगम्बर आदि महान् लोग हो गये, उन सब रसूलों मे हम फर्क

नहीं करते। 'उम्मतुँम् वाहिद्' भगवान् मुहम्मद को कह रहे हैं कि कुछ रसूल ऐसे है, जिनके नाम तुम जानते हो। लेकिन ऐसे बहुत से रसूल हैं, जिनके नाम तुम्हे मालूम नहीं। 'ला नफर्रिकु वैन अहदिम् मिर रुसुलिह्' हम किन्हीं रसूलो मे फर्क नहीं करते।

सभी धर्मों की खूबियाँ इकट्ठा करे

तात्पर्य यह कि सब खूबियों को इकट्ठा करना भारत की खूबी है। सबकी अलग-अलग खूबी होती है। जैसे इसलाम मे एकता का खयाल है, समानता की भावना है, ऊँच-नीचता का स्थान नहीं है। नमाज पढ़ने के लिए बादशाह भी देर से आयेगा, तो पीछे जहाँ जगह होगी, उस स्थान पर बैठ जायगा। मजदूर और बादशाह मे कोई फर्क नहीं है। सब समान हैं और सारे इबादत मे मगन हो जाते है। यह लेने लायक बात हमे लेनी चाहिए। ऐसी ही खूबियाँ हर धर्म मे होती हैं। ईसाइयों की ही बात देखिये। दुनिया मे जहाँ कहीं कोई बीमार होते हैं, उनकी खिदमत मे, सेवा मे, ईसाई पहुँचते हैं। कुष्ठ-रोगियों की सेवा भी वे करते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि प्रभु ईसा का सदेश पहुँचाने के लिए वे सेवा करते हैं। पर मैं कहता हूँ कि यह शर्म की बात है कि हमारे देश मे बीमारों की सेवा हम न करे और वे आकर करते हैं। ईसाई लोग अपने जीवन और कर्म से एक बहुत बड़ी नसीहत देते हैं। हिन्दू-धर्म मे वेदान्त और ब्रह्मविद्या है, जो लेने लायक है। बौद्ध-धर्म मे करुणा है, बुद्धि पर जोर दिया गया है, उसे हमे लेना चाहिए। इसलाम मे जाति-भेद मिटाने की बात है, वह हमे लेनी चाहिए। सिखों ने वीरता और पराक्रम के साथ भक्ति को जोड़ दिया है। उनके यहाँ जो बड़े बड़े योद्धा थे, वे ही उत्तम ज्ञानी हो गये, यह बात हमे लेने लायक है। इस तरह हर धर्म मे जो लेने लायक है, उसे हमे ले लेना चाहिए।

मसले हम पैदा करते है

मैने कभी कहा था कि "हम तो समझते हैं कि कश्मीर मे मसला है ही

नहीं।" जब यह अखबारो मे छपा, तो कुछ लोग हैरान हो गये और कहने लगे कि यह आपने कैसे कहा ? मैने उनसे कहा कि मृगजल वहीं होता है, जहाँ धूप की किरणें पड़ती हैं। लेकिन जहाँ रात होती है, वहाँ मृगजल नहीं होता, मृगजल एक खयाल मात्र ही है। इसी तरह वे मसले भी खयाली हैं। अगर हम ठीक ढग से पेश आते हैं, तो मसले काफूर हो जाते हैं। मसले हमने बनाये हैं, वे परमेश्वर के बनाये नहीं हैं। अब यह बात ठीक है कि बिहार मे बाढ आती है, तो कुदरत एक मसला खडा करती है। आज भी चीन मे तीन तीन हजार मील बहनेवाली नदियाँ बाढ के कारण अपनी जगह बदलती रहती हैं, तो यह एक कुदरती मसला है। इसमे विज्ञान की मदद ली जाय, तो मसला कुछ हद तक हल होगा, कुछ हद तक हल नहीं भी होगा। कश्मीर मे मसला हमने पैदा किया है। हम मसले पैदा करने मे बहादुर हैं। लेकिन हम प्रेम से रहना सीखेंगे, तो ऐसे पैदा किये हुए सब मसले जरूर हल होंगे। इसलिए मै तो कहता हूँ कि यहाँ मसला है ही नहीं।

भारत की जनता बुराई को भूल जाती है

दस हजार साल से यहाँ अनेक जमातें आ बसी हैं और यहाँ मिली-जुली सभ्यता चल रही है। हम प्रेम से रहना जानते हैं। हमारी सभ्यता मे ही यह चीज पड़ी है। फिर भी कभी कहीं कुछ हो जाता है और जो खराब चीजें होती है, वे ही अखबारों मे बडे-बडे टाइपों मे छपती हैं। सीतामढी मे, भोपाल मे कुछ गलत बातें हुई, तो बिलकुल बडे टाइप मे वह खबर छपी। अगर पुराना जमाना होता, तो सीतामढी मे, भोपाल में क्या हुआ, इसका किसीको पता भी न चलता। लेकिन इन दिनो साइन्स बढ़ा है, तो दुनिया के किसी गोशे मे 'खट्' आवाज हुई, तो एकदम लोग हैरान हो जाते हैं। लेकिन ऐसी हालत नहीं है कि हम परेशान, हैरान हों। जजबा आया, तो एक बात कर डाली और

मैं कहना यह चाहता हूँ कि कोई मसला नहीं, अगर हम प्रेम मे रहे। यहाँ हिन्दू, सिख, मुसलमान और बौद्ध, ये चार धर्म है। हरएक की अपनी-अपनी खूबी है, अपना-अपना रग है। उनका ठीक उपयोग हो, तो हम देखेगे कि कोई मसला है ही नहीं। हरएक खूबी का उपयोग, लाभ मिल सकता है। ये सारे अच्छे रग हैं, इन्हींमे से अच्छी बात निकल सकती है।

चुनाव ने जाति-भेद को जिलाया

भारत मे जातिभेद, छुआछूत बहुत है। वह चीज मरने को थी और मर भी चुकी थी, लेकिन उसे जिलानेवाली जड़ी बूटी हमारे हाथ मे आ गयी। वह जड़ी-बूटी थी लोकशाही का तरीका, जिसे हमने इग्लैण्ड से जैसा का तैसा ही ले लिया। पार्सल खोला नहीं, देखा नहीं और ऐसा ही खाने लग गये और कहने लगे कि मिठाई मीठी लगती है। फिर उससे हैजा हो जाय, तो उसका कोई विचार ही नहीं। इसीसे जातिभेद को बल मिला, नहीं तो राजा राममोहन राय से गाधीजी तक उस पर प्रहार कर चुके थे और वह मरने को ही था। लेकिन इलेक्शन के तरीके से ही उसमे प्राण आ गया। तरह-तरह के लोग जाति की तरफ से खड़े किये जाते है। जहाँ तहाँ वही बात चलती है। दस साल पहले जितना जातिभेद था, आज वह उससे अधिक हो गया है। उसमे कोई जान नहीं, पर बिना जान के ही वह जिन्दा हो गया है। उसे हमे मिटाना चाहिए और हम मिटा सकेंगे। अगर हम प्रेम से बरतें, तो उसे हम मिटा सकते है।

कश्मीर की सुन्दर आबोहवा

यहाँ पर हम सब तरह के भेद मिटाने की बात करते है, तो बड़ा आनद आयेगा और कश्मीर एक सुन्दर स्वर्ग बन जायगा। इस स्वर्ग मे सुविधा भी है। कश्मीर मे ठडक हुई, तो जम्मू मे आने की सुविधा है। मैंने स्वर्ग के वर्णन बहुत पढ़े हैं। वहाँ कुछ लोग हमेशा पालकी मे बैठते हैं, तो कुछ लोगो को कन्धे पर पालकी उठानी भी पड़ती है। मैंने कहा कि ऐसा

निकम्मा स्वर्ग हमे नहीं चाहिए। यहाँ गर्मी हुई, तो हम कश्मीर मे जा सकते हैं। दोनों प्रकार की आबोहवा का लाभ मिल सकता है, यह अच्छी बात है। कुदरत ने हमे बहुत नियामतें दी हैं, इसमे विज्ञान से भी मदद मिल सकती है। लेकिन विज्ञान की एक शर्त है। उस शर्त के साथ उसका उपयोग हमे करना होना, तभी लाभ होगा। विज्ञान कहता है कि तुम लोग एक बनोगे तो लाभ होगा, नहीं तो खात्मा होगा। हमे विज्ञान से लाभ लेना चाहिए और हम उसे ले सकते हैं। उसके लिए हमे प्रेम से मिल-जुलकर रहना चाहिए।

जम्मू (कश्मीर)
१०-६-'५९

: १४ :

सियासी नहीं, रूहानी तरीका

हमने देखा कि जम्मू और कश्मीर का जो मसला है, उसका अंतर्राष्ट्रीय सवाल तो तब हल होगा, जब बैनुल अकवामी हालात बदलेंगे और हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस, अफगानिस्तान आदि जिन जिनका कश्मीर से सम्बन्ध आता है, उन सबके मन मे मसला हल करने की बात आयेगी। जब उन सबके मन मे ऐसा खयाल आयेगा, तब सिर्फ कश्मीर का मसला ही नहीं, बल्कि दुनिया के सभी मसले हल होगे। परन्तु जहाँ तक कश्मीर का सवाल है, वह तब हल होगा, जब यहाँ के लोग अदरूनी ताकत महसूस करेंगे। होना तो यह चाहिए कि गाँव गाँव के लोग अपनी जमात बनायें और एक-दूसरे के लिए मर मिटने को तैयार हों।

प्रेम करनेवाली फौज

आज तक मैं इतना ही कहता था कि गाँव एक बनें। लेकिन अब कहना चाहता हूँ कि गाँववाले एक-दूसरे के लिए मर मिटने को तैयार हो, जिससे गाँव एक मजबूत फौज बने। दुश्मन से लड़नेवाली फौज नहीं, क्योंकि उसके सामने कोई दुश्मन ही नहीं है, बल्कि प्रेम करनेवाली फौज बने। जैसे फौजवाले अनुशासन और कानून से रहते हैं, वैसे ही गाँववाले अपना एक कानून बनाये और उसके मुताबिक चलें। राज्य का कानून अलग हो और गाँव का कानून अलग हो। गाँव के सब लोग मिलकर सोचें कि गाँव की ताकत किस तरह बढ सकती है और गाँव के हर तबके के लिए क्या-क्या करना होगा। समाज मे तबके होते हैं। हर तबके की जो

सिफत होती है, उसे प्रकट करने का मौका मिलना चाहिए। हमारे गाँव का कोई मनुष्य दुःखी हो और वह अकेला ही रोता रहे, यह हम बर्दाश्त न करें। सारा गाँव उसके दुःख में शामिल हो, तो उसके दुःख का भार हल्का होगा। इस तरह गाँववालो को चाहिए कि सुख-दुःख दोनों बाँट ले। अगर मेरे पास कोई चीज पडी है या मैंने अपने परिश्रम से कोई चीज पैदा की है, तो वह मेरी मानी जाती है। मैं उसका मालिक माना जाता हूँ। मेरा उस पर हक है, लेकिन सबको बाँटकर खाने का हक है। दूसरो को उस चीज से महरूम रखने का हक नहीं है। जैसे घर के मालिक या मालकिन पिता, माता घर के मुखिया हैं, इसका मतलब यह है कि वे सबको खिलाकर बाद मे खाते हैं। अगर माँ कहे कि मै मालकिन हूँ, इसलिए मै पहले खाऊँगी, तो वह मुखिया नहीं साबित होगी। गाँव के लोगों को चाहिए कि वे मिल जुलकर काम करें, एक-दूसरे के सुख-दुःख मे हिस्सा लें। जाति, धर्म, पन्थ, पक्ष आदि का खयाल छोड़कर ग्राम-समाज बनायें। एक दूसरे के लिए मर मिटने के लिए तैयार हों, यही कश्मीर का मसला हल करने का तरीका है। जातियाँ काम के लिए बनी थीं, उसमे ऊँच-नीच की कोई बात नहीं है। धर्मों मे भी कोई फर्क नहीं है। धर्म याने इबादत का तरीका। भगवान् के गुण अनन्त, लातादाद है, इसलिए इबादत के तरीके भी कई होते हैं। जिसको जो गुण पसन्द हो, उसकी वह इबादत करता है।

सियासी ढंग कश्मीर की ताकत तोड़ेगा

इन दिनो जो पक्षभेद बने हैं, उनका कतई उपयोग नहीं है। राजनीतिक पक्ष तोड़नेवाले हैं, जोडनेवाले नहीं। यह बात सारे हिन्दुस्तान को लागू होती है, लेकिन जम्मू-कश्मीर को ज्यादा लागू होती है। मुझे लगता है कि यहाँ (जम्मू-कश्मीर मे) काम करना है, तो जिनका सियासी चिंतन चलता है, वे कुछ भी नहीं कर सकते। यहाँ काम करने का तरीका सियासी

नहीं, रूहानी ही हो सकता है। सियासी तरीके से काम किया जाय, तो गाँव के टुकड़े होंगे और फिर गाँव में सरकार का दखल होगा, जिससे गाँव की तरक्की नहीं होगी। गाँव के सब लोगों की तरक्की करनी है, तो हमें रूहानी ढंग से ही पेश आना होगा और सियासी ढंग छोड़ देना होगा। छोटे अर्थ में हमें मजहबी ढंग को भी छोड़ना होगा और रूहानी ढंग ही अख्तियार करना होगा। याने सबकी रूह एक है, यह समझना होगा। 'हम सब एक हैं और एक-दूसरे के लिए मर मिटने के लिए तैयार हैं'—इस भावना से काम करना रूहानियत के ढंग से काम करना है।

कुल गाँव शान्ति-सेना बने

अभी तक मैं कहता था कि गाँव में काम करने के लिए शान्ति सेना में नाम दीजिये। शान्ति-सैनिक मौके पर शान्ति के लिए मर मिटेंगे। लेकिन अब मैं दूसरी बात बोल रहा हूँ। वह यह कि कुल का कुल गाँव शान्ति-सेना बने। एक भी शख्स उसके बाहर न रहे। एक दिन में यह काम नहीं बनेगा, इसलिए आज मैं शान्ति-सेना में नाम तो ले रहा हूँ। परन्तु यही कहूँगा कि ये शान्ति-सैनिक दही की तरह हैं और सारा गाँव दूध है। दही सारे दूध में घुल-मिल जायगा, तो सारे दूध का दही बन जायगा। वैसे ही ये शान्ति सैनिक सारे समाज में घुल-मिलकर गाँव को ही शान्ति-सेना बनायेंगे। जब गाँव शान्ति-सेना बनेगा, तो फिर गाँव की हिफाजत के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ेगा। फिर गाँव पर कोई हमला नहीं करेगा। अगर बाहर के किसी देश ने हमला किया भी, तो वह उस गाँव का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेगा। क्योंकि सारा गाँव एक बनेगा, गाँव का कोई भी मनुष्य दुश्मन का साथ नहीं देगा। इस तरह गाँव एक मजबूत किला बनेगा।

गंधारवान
१४-६-'५९

: १५ :

ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य

लोगों के सामने सवाल है कि स्वराज्य तो मिला, लेकिन सुराज्य कैसे हो ? सुराज्य हो याने अच्छा राज्य चले, लोग खुश हों। लेकिन मेरे सामने वह सवाल नहीं है। बल्कि यही सवाल है कि स्वराज्य आया—ऐसा कहते तो है, लेकिन दरअसल मे वह कहाँ है ? आज स्वराज्य न अमेरिका मे है, न रूस मे, न चीन मे, न जापान मे, न हिन्दुस्तान मे और न पाकिस्तान मे ही है। किसी भी देश मे स्वराज्य नहीं है। वैसे ये सारे देश सियासी मानी मे आजाद जरूर हैं। लेकिन दरअसल इन देशों मे से कोई देश आजाद है, ऐसा मुझे तो मालूम नहीं देता। कम-से-कम अपना देश तो आजाद नहीं ही हुआ है, यह मुझे पक्का मालूम है।

'यतेमहि स्वराज्ये'

यह ठीक है कि अंग्रेजों की हुकूमत गयी। यहाँ ऐसी कई हुकूमतें आयीं और गयीं। लेकिन स्वराज्य आया, ऐसा मैं नहीं कह सकता। बल्कि वेद मे तो एक मन्त्र है **'यतेमहि स्वराज्ये'**। अर्थात् स्वराज्य हासिल करने के लिए यत्न करें—ऐसी प्रार्थना ऋषि करता है। वैदिक ऋषियो के जमाने मे भी स्वराज्य नहीं था। लोगों का खयाल है कि वेद के जमाने मे सभी ऋषि थे और वे ध्यान-धारणा करते थे। लेकिन ऐसा नहीं है। उनकी रहन-सहन हमसे कुछ अलग होगी, पर जनता आज के जैसी ही थी। ऋषि को यह महसूस नहीं होता था कि स्वराज्य आया है। बल्कि वह कहता है कि हम स्वराज्य के लिए कोशिश करेंगे।

ज्यादा आबादीवालों का कम आबादी के मुल्क में जाना लाजिमी

अब विज्ञान का जमाना आया है। इसमे जिसे हम सियासी आजादी कहते हैं, वह बहुत ज्यादा कीमत नहीं रखती, क्योंकि लोगो की जिन्दगी मे कितनी ही चीजे ऐसी हैं, जो दुनियाभर से आती है। एक सादी-सी बात देखिये—आज हर पढ़े-लिखे व्यक्ति के हाथ पर रिस्टवाच होगी। जो आल्सी है, जिसे वक्त की कीमत कम है, उसे घडी से सिर्फ इतना ही पता चलता है कि कितना समय आलस मे बीता। फिर भी उसके पास घड़ी होती है, क्योंकि वह एक गहना बन गया है। यह घड़ी बाहर से आती है। अपने देश मे नहीं बनती। बाहर से आनेवाली चीजों मे कुछ चीजें ऐसी हैं, जो टाली जा सकती हैं। लेकिन कुछ ऐसी भी हैं, जो टाली नहीं जा सकतीं और उनका दूर-दूर से आना रुक भी नहीं सकता। अनाज, कपडा, मकान जैसी बुनियादी चीजें हम अपने गाँव मे अपनी मेहनत से पैदा कर सकते हैं, लेकिन बाकी तमाम चीजें दुनियाभर से आती है। दुनिया मे कहीं ज्यादा बस्ती है, तो कहीं कम। अब यह हर्गिज नहीं होनेवाला है कि ज्यादा बस्तीवाले अपनी ही जगह पर रुके रहे। वे कम बस्तीवाले प्रदेश मे जानेवाले ही हैं। उन्हे प्रेम से जाने दिया जाय, तो प्रेम से जायेंगे, नहीं तो हमलावर बनकर जायेंगे। जैसे पानी का नीचे गिरना लाजिमी है, वैसे ही उन्हे हम हमलावर कहे या और कुछ कहे, उनका जाना लाजिमी है।

आज सियासी आजादी की ज्यादा कीमत नहीं

अलावा इसके दुनिया की मुसाफिरी आज जितनी हो रही है, उतनी इसके पहले कभी नहीं हुई थी। आज लाखों की तादाद मे लोग विदेशों से हिन्दुस्तान आते हैं और यहाँ के लोग भी बाहर जाते हैं। कश्मीर मे तो इतने यात्री आते हैं कि यात्रियों की सेवा करना यहाँ का एक उद्योग ही हो गया है, जिससे कश्मीर को काफी आमदनी होती है। अब दुनियाभर

के लोग इधर से उधर आने-जानेवाले हैं। इस परस्पर व्यवहार को देखते हुए हमें समझना चाहिए कि इसके आगे सियासी आजादी के बहुत ज्यादा मानी नहीं हैं। चाहे हमने यहाँ (कश्मीर में) फौज की एक कतार खड़ी कर दी है और 'उस पार दुश्मन है' ऐसा हम बोलते हैं, लेकिन अब ऐसी दुनिया चल नहीं सकती। अगर ऐसी दुनिया चलेगी, तो दुनिया में इन्सान जिन्दा नहीं रहेगा। अगर इन्सान को जिन्दा रहना है, तो हमें नये सिरे से दुनिया की योजना बनानी होगी। उस योजना में यह होगा कि गाँव की इकाई बने, लोग अपने लिए अपना इन्तजाम करें। जब गाँव गाँव में यह होगा, तभी स्वराज्य आयेगा।

मसला सुराज्य का नहीं, स्वराज्य का

आज जहाँ भी मैं जाता हूँ, देखता हूँ कि लोग इसी फिक्र में रहते हैं कि हमें सरकार से मदद मिले। कुछ लोग इस फिक्र में भी हैं कि हमें सत्ता हासिल हो। याने दोनों सरकार के इर्द-गिर्द ही रहते हैं। मुकामी स्वराज्य, ग्राम-स्वराज्य अपनी योजना खुद बनाये और अपनी बुद्धि का विकास खुद करे। ऐसा नहीं होगा, तो सियासी आजादी अब ज्यादा टिकनेवाली नहीं है। दुनिया में कशमकश जारी ही रहेगी।

आज आप किसी भी दिन अखबार का कोई पन्ना उलटकर देखिये, तो मालूम होगा कि दुनिया के कुछ देशों में कशमकश जारी है। केरल में क्या चल रहा है? कश्मीर, बंगाल, उड़ीसा की क्या हालत है? लंका, पाकिस्तान, बर्मा, हिन्दएशिया, कोरिया, मिस्र, ईरान में क्या चल रहा है? तिब्बत में क्या हुआ? ईरान में क्या होने जा रहा है? बर्लिन का क्या होगा—यह सब देखें, तो पता चलेगा कि जगह-जगह कशमकश चल रही है। इसका एक ही इलाज है—इधर ग्राम स्वराज्य और उधर विश्व-साम्राज्य। ये दोनों मिलकर पूरा इलाज हो जाता है। गाँव-गाँव आजाद हों, इन्सान जहाँ भी बैठा हो, अपनी योजना खुद बनाये और उस पर खुद

अमल करे, तो ग्राम स्वराज्य हो जायगा। ग्राम-स्वराज्य और विश्व-साम्राज्य के बीच में स्टेट, सूबा आदि जो रहेंगे, वे सब जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। लेकिन ऊपर विश्व-साम्राज्य और नीचे ग्राम-स्वराज्य—इस तरह कुल दुनिया की योजना बनेगी, तभी दुनिया में सच्ची आजादी आयेगी। इसलिए मेरे सामने मसला सुराज्य का नहीं, स्वराज्य का है।

राजनीति ने हसद को फैलाया

हमें समझना चाहिए कि दलगत राजनीति इतनी छोटी और निकम्मी चीज है कि वह इस जमाने में चल ही नहीं सकती। पहले जो हसद, ईर्ष्या राजाओं के चंद सरदारों में चलती थी, उसीको इस दलगत राजनीति ने आज राष्ट्रव्यापी स्तर पर चलाया है। लोकल बोर्ड, असेम्बली, पार्लमेंट आदि सभी जगहों में ईर्ष्या और छोटी-छोटी लड़ाइयाँ चलती हैं। इसका नतीजा यह है कि दुनिया का कब्जा उन लोगों के हाथ में रहेगा, जिनके पास आणविक शस्त्रास्त्र हैं। अमेरिका और रूस के हाथ में वैसे आणविक अस्त्र हैं, अतः आज यही चल रहा है कि कुछ मुल्कों पर अमेरिका का वरदहस्त है, तो कुछ पर रूस का। कुछ मुल्क इसके पख (छाया) में आये हैं, तो कुछ उसके। हिन्दुस्तान कोशिश कर रहा है कि न इसके पख में आये, न उसके। लेकिन यह कोशिश कहाँ तक चलेगी, कहा नहीं जा सकता। दुनिया के हालात बदलेंगे, तो मुझे पता नहीं कि हिन्दुस्तान जैसे देश कैसे बचे रहेंगे, बावजूद इसके कि उनका मिलिटरी पर भरोसा हो। आज बचना है, तो कुल दुनिया को बचना है और डूबना है, तो कुल दुनिया को डूबना है। बचने की तरकीब है—विश्व साम्राज्य और ग्राम-स्वराज्य। विश्व-साम्राज्य में सिर्फ सलाह देने की शक्ति हो। वहाँ से सबको नैतिक मार्गदर्शन मिले और बाकी सब काम गाँववाले खुद करें। वे अपने मसले खुद हल करें। ऐसा होगा, तभी दुनिया बचेगी।

नारियाँ

१५-६-'५९

: १६ :

रिश्वतखोरी कैसे मिटेगी ?

दबाव नहीं, प्यार

यहाँ पर कुछ भाइयों ने बहुत मेहनत करके कुछ भूदान हासिल किया है। इस पर किसीने कहा कि यहाँ दबाव से जमीन मिली है। मैंने जवाब दिया कि २२ एकड की सीलिंग होने पर दबाव से जमीन हर्गिज नहीं मिल सकती। प्रेम का दबाव हो सकता है और वह तो बाबा का भी हो सकता है। परन्तु वह खुशी का दबाव होगा, जबर्दस्ती का नहीं। इसलिए दिल मे जज्बा हो, तो उसका भी दबाव हो सकता है। समझना चाहिए कि यहाँ पर लोग प्यार से जमीन दे रहे हैं। इसीसे गाँव का काम बनेगा, क्योकि उससे प्रेम और धर्म बढेगा। इस काम मे बड़े-बडे कूबतवाले लोग शामिल हैं, यह हमे बहुत अच्छा लगता है। ये सब बडे लोग इसमे इसलिए लगे है कि परमात्मा उनको इसमे लगा रहा है। वही बाबा को पैदल घुमा रहा है और वही इनके दिलो मे इन्किलाब ला रहा है। हमने उनसे कहा है कि ग्रामदान मे पूरी ताकत लगाइये। सब बीमारियों की जड़ काटनी चाहिए, टहनियाँ काटी जायँ, तो नदी फूट निकलती है। सबकी जड़ है मिल्कियत। यहाँ के लोगों ने बहुत मुसीबतें झेली हैं, ऐसे लोग अक्लमद होते हैं। खुदा उनके ऊपर-नीचे, बाहर-अन्दर, इधर-उधर रहता है। सब तरह से उनकी हिफाजत करनेवाला उनके पास खड़ा है। इसलिए ऐसे लोगों को ठीक से समझाया जाय, तो ये जरूर ग्रामदान देंगे।

रिश्वतखोरी : अखलाकी गिरावट

आज कुछ विरोधी पार्टी के भाई हमसे मिलने आये थे। हमने उनसे पूछा कि क्या आप चाहते हैं कि बेखौफ बातें करने के लिए दूसरो को यहाँ से हटा दिया जाय। उन्होंने 'हाँ' कहा, तो हमने दूसरों को हटाया। फिर उन्होंने इत्मीनान से बातें कीं। लेकिन उनकी बाते ऐसी नहीं थीं कि जो लोगों के सामने रखी नहीं जा सकतीं। उन्होंने कहा कि यहाँ रिश्वतखोरी बहुत चलती है। मैंने कहा कि यह तो कम बेशी सभी सूबों मे फैली है। मैं मानता हूँ कि रिश्वत देनेवाला और लेनेवाला दोनो गुनहगार हैं। देनेवाले का काम बन जाता है, इसलिए वह रिश्वत देता है और लेनेवाले की दौलत बढ़ती है, इसलिए वह लेता है। दोनों बुरा काम करते है, लेकिन उसे जाहिर नहीं करते। 'तेरी भी चुप, मेरी भी चुप' चलती है। इस तरह दोनो एक-दूसरे की रजामदी से काम करते हैं। यह अखलाकी गिरावट है, जो सब गिरावटों मैं ज्यादा खौफनाक है। दूसरी गिरावट हम बर्दाश्त कर सकते हैं, लेकिन अखलाकी गिरावट हर्गिज बर्दाश्त नहीं कर सकते।

रिश्वत से न दीन सघता है, न दुनिया

जब मैंने उन भाइयों से पूछा कि इसका इलाज बताइये, तो उन्होंने कहा कि माहौल मे फर्क होना चाहिए। लोगों मे उसके खिलाफ जज्बा बनना चाहिए। इस तरह लोगों के सामने अखलाकी बातें आयें। इसके सिवा दूसरा कोई इलाज नहीं सूझता। एक इलाज यह भी है कि सरकार का जाब्ता हो। वह भी होना चाहिए। लेकिन लोगों के हाथ मे यही है कि एक माहौल पैदा किया जाय, लोगो को समझाया जाय कि रिश्वतखोरी उसूली तौर पर गलत है। उससे न दीन सघता है, न दुनिया। अक्सर लोग समझाते हैं कि उससे चाहे दीन न सधे, पर दुनिया तो अवश्य सघती है। लेकिन लम्बी नजर से देखने पर

समझ में आयेगा कि उसमें दीन भी जाता है और दुनिया भी। सभी सबको ठगना चाहेंगे, तो ठगों का ही राज्य होगा। उस हालत में दुनिया का काम भी नहीं बनेगा।

खुफिया पुलिस और बाबा

किसीने कहा कि इन दिनों जिधर देखो, उधर खुफिया पुलिस रहती है। मैंने कहा कि मुझे इसमें खुशी है। अगर खुफिया पुलिसवाले मेरे साथ रहेंगे, तो उनके दिलों पर बहुत असर होगा। मैं तो चाहता हूँ कि हरएक का मुझसे ताल्लुक आये। वे मेरे साथ रहेंगे, तो मेरा कुछ बिगड़नेवाला नहीं है, उन्हींका सुधरनेवाला है। अगर हर कोई दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखने लग जाय, तो मुझे भी लगेगा कि मेरे साथ रहनेवाला कोई खुफिया पुलिस तो नहीं है? और आपको भी मेरे बारे में यही शक पैदा होगा कि यह बाबा दाढीवाला दीखता है, पर शायद खुफिया पुलिस हो। इस तरह हम सब एक-दूसरे की तरफ शक-शुबहे की निगाह से देखते रहेंगे, तो माँ बाप और बच्चे, भाई-भाई भी एक-दूसरे से कतराते रहेंगे और दुनिया का कोई काम नहीं बनेगा। बुराई से दुनिया भी नहीं सधती, इस बात का पक्का यकीन हो जाय, तो इन्सान कभी भी उसमें नहीं फँसेगा, गाफिल नहीं रहेगा। वह हमेशा चौकन्ना रहेगा कि हमारे हाथ से कोई गलत काम न हो। वह सोचेगा कि रिश्वत देने का या लेने का मोह नहीं होना चाहिए। फिर रिश्वत के खिलाफ माहौल पैदा होगा। उसके साथ-साथ सरकार के यन्त्र में कोई ढिलाई हो, तो सरकार भी अपने यन्त्र को कस सकती है। यहाँ की सरकार में इस तरह कसने की गुंजाइश है या सब कसा हुआ ही है, यह मैं नहीं जानता।

अलावा इसके गाँव-गाँव में सेवा करनेवाले सेवक हों और उनका जाब्ता सब पर रहे। फिर मेरे जैसे लोग, जिनकी जबान में ताकत है और जिन पर लोगों का विश्वास है, वे भी रिश्वतखोरी के खिलाफ कहते रहें,

तो इन सबका हमला होने पर वह राक्षस नहीं टिकेगा। हमें उसके खिलाफ जद्दोजहद करना होगा और ऐसा मोर्चा खड़ा करना होगा कि हम अपने समाज मे ऐसी बदी नहीं रहने देंगे।

इन्सान इन्सान से क्यों डरे ?

यहाँ भूदान तो आप दे रहे हैं, लेकिन ग्रामदान भी होने चाहिए और होंगे। सिर्फ होंगे ही नहीं, हम करेंगे, ऐसी बात कीजिये। अलावा इसके, गॉव की सेवा करनेवाले और दङ्गा-फसाद होने पर शाति-स्थापना करने के लिए, मर मिटने के लिए तैयार रहनेवाले शाति-सैनिक निकलने चाहिए। यहाँ से थोड़ी ही दूरी पर Cease Fire-line (जगबदी-लाइन) है। उधर उन्होंने हजारों सिपाही खड़े कर दिये है और इधर इन्होने खड़े कर दिये हैं। इन्सान को इन्सान के ही डर से इतना सारा करना पड रहा है, यह बड़े दुःख की बात है। इन सबका इलाज यही है कि गॉव गॉव मे ग्रामदान और शाति-सेना खडी हो। शाति-सैनिक किसीको मारेंगे नहीं और भागेंगे भी नहीं, बल्कि मार खायेंगे, रोते हुए नहीं, हॅसते-हॅसते खायेंगे। उनके दिल मे गुस्सा नहीं होगा, बल्कि सबके लिए प्यार और रहम होगा।

सुन्दरबनी
१७-६-'५९

: १७ :

जहाँ दिल बाग, वहीं स्वर्ग

यकीन के तीन रूप

हमे यकीन था कि सही चीज लोगो को कबूल करनी ही पड़ती है। इन्सान के दिमाग मे ऐसी खुसूसियत है कि जब उसे असलियत का पता चल जाता है, तो झूठ का परदा हट ही जाता है। हमने यकीन रखा था और वह 'इलमुल यकीन' था। हमने देखा, लोग हजार हजार दानपत्र और ग्रामदान दे रहे है। फिर 'आयनुल यकीन' हो गया। इस तरह ग्रामदान शुरू हो गया, तो फिर हमने 'फिरका दान' शुरू कर दिया। यहाँ तो बक्शी साहब ने कहा है कि वे इस राज्य का पूरा दान कर सकते हैं। अब उन्होंने कहा है कि "लेकिन उतना लेने की हमारी कूवत है या नहीं, यह देखना है।" वैसे फिरकादान—जिसे 'महाल' कहते हैं—महालदान बम्बई-राज्य मे हुआ है। उसका नाम है 'अक्राणी महाल'। ३०० गाँवो का पूरा का पूरा फिरका मिल गया है। देखिये, हम यकीन रखकर, लोगो के दिलो पर भरोसा रखकर माँगते चले गये, तो हमे मिला।

साराश, हम पहले मामूली दान माँगते थे, फिर ग्रामदान और बाद मे फिरका-दान। पहले 'इल्मुल यकीन' था, फिर 'आयनुल यकीन' हो गया—साक्षात्कार हो गया। अब हक्कुल यकीन होना चाहिए। यह यकीन की बात क्या है, यह मुसलमान लोग जानते होंगे। शास्त्रों मे भी यह बात आती है। मान लीजिये, एक शख्स ने सुना कि लड्डू की पगत पड़ोस के गाँव मे हुई है। पर उससे पेट नहीं भरा। इसे इलमुल यकीन कहते हैं। याने उसने सुना। फिर दूसरे ने देखा कि पगत हो रही है और

लोग लड्डू खा रहे है। यह 'आयनुल यकीन' हो गया। लेकिन 'हक्कुल यकीन' तब होगा, जब लड्डू खाने को मिलेगे। इस तरह जब ग्रामदान होगा, ग्राम स्वराज्य होगा—गाँव मे बच्चो को तालीम मिलेगी, शामिलात दूकान होगी, गॉव के झगडे गाँव के बाहर न जायॅगे, वकील का मुँह न देखना पड़ेगा, सारी शादियाँ मिली-जुली होगी—तब जो यकीन होगा, वह 'हक्कुल यकीन' होगा। इलमुल यकीन से शुरू हुआ और 'हक्कुल यकीन' हो गया है। इसलिए अब हमारे बच्चे, हमारे साथी कोशिश मे लगे हैं कि उन गाँवों मे कोई 'मूरत' बने। उधर ग्रामदान तो मिल रहे हैं। लेकिन यहॉ जम्मू और कश्मीर मे जमीन मिल रही है, तो लोगों को ताज्जुब हो रहा है। यहॉ सीलिंग हो गया है और उसके बाद भी जमीन मिल रही है। याने लोग जिगर का टुकड़ा काटकर दान दे रहे हैं। यह बहुत बड़ी बात है। बडी खुशी की बात है। हमारा जी चाहता है कि यहाँ ग्रामदान भी हो। यहॉ का राज्य इस काम के लिए अनुकूल भी है।

ऐसे बाग से आग ज्यादा पसन्द

अगर यहॉ यह काम होता है, तो हम जो सुनते थे कि कश्मीर स्वर्ग है, वह तो सचमुच स्वर्ग बनेगा। जहॉ कुछ जमीनवाले हों और कुछ बे-जमीन, तो वह स्वर्ग कैसे होगा? हम स्वर्ग का वर्णन सुनते थे, तो बडा अजीब लगता था। क्योकि कहते थे कि वहॉ कुछ लोग पालकी मे बैठते है, तो कुछ लोगो के कन्धे पर पालकी रहती है। हम कहते थे, ऐसा स्वर्ग हमें नहीं चाहिए। हमे ऐसा ही स्वर्ग चाहिए, जहाँ सभी लोग समान हों। हम ऐसे बाग मे जाना पसन्द नहीं करेंगे, जहाँ सब नहीं जा सकते। बल्कि ऐसी आग पसन्द करेंगे, जहॉ सबके साथ जा सकें। वही स्वर्ग है, वही बहिश्त है, जहॉ सब समान हैं। सब भाई-भाई भी नहीं, दोस्त हैं। क्योंकि भाई भाई मे भी एक काफी बड़ा और एक काफी छोटा हुआ करता है।

हमारी मॉ कहती थीं, रामायण मे रामजी ने खूब सेवा ली। लक्ष्मण

से ली, बन्दरो से ली। सेवा ले-लेकर आखिर वे थक गये, ऊब गये। वे बडे भाई बने थे। इसलिए नये अवतार मे वे छोटे भाई बन गये—कृष्ण। उस अवस्था मे उन्होंने सबकी सेवा की। कहीं हुकूमत नहीं चलायी। मालिक कैसा होना चाहिए? इसका नमूना तुलसीदासजी लिखते हैं 'प्रभु तरु तल, कपि डार पर।'—बन्दर ऊँचे स्थान पर, पेड़ पर बैठते थे और प्रभु पेड के नीचे। इसलिए मालिक राजा राम जैसे और सेवक खिदमतगार कृष्ण जैसे हों। रामजी बड़े भाई बन गये, तो उन्होंने समझा कि तजुरबे मे कोई कमी, कोई नुक्स रह गया। इसलिए उन्होंने नया जन्म 'कृष्ण' का लिया।

भाई और दोस्त

जैसे भाई-भाई मे छोटा-बडा रहता है, वैसे दोस्त मे छोटा दोस्त, बडा दोस्त नहीं होता। भाई भाई के तो झगडे होते हैं, कोर्ट मे—अदालत मे पहुँचते हैं। चार भाई हों, तो उनके मुँह चार दिशाओं मे होते हैं। भाई-भाई जितना लड सकते हैं, उतना दुश्मन भी नहीं लड़ सकता। जहाँ हक की बात आती है, वहाँ झगडा होता है और मुहब्बत नहीं रहती। वहाँ हर कोई अपने हक पर अडा रहता है। इससे कशमकश होती है। लडाई होती है। भाई-भाई मे ऐसा हमेशा चलता है। देखिये, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों भाई-भाई है। दक्षिण कोरिया और उत्तर कोरिया भाई-भाई हैं। इस तरह घर मे, कुनबे मे सिर्फ मुहब्बत नहीं रहती है, उसके साथ हक भी रहता है। इसके कारण घर मे कानून पैठ गया है। सिर्फ प्यार होता, तो वह स्वर्ग होता। लेकिन वहाँ हक की भी बात आती है। जहाँ दिल की उदारता है, बड़ा दिल है, वहीं स्वर्ग है। यहाँ बड़े-बड़े पहाड़ है। बड़े-बडे गुल है। बडे-बड़े तालाब है। पर वह स्वर्ग नही है। जहाँ दिल बाग है, वहीं स्वर्ग है।

सियार

१८-६-'५९

: १८ :

सब मुसीबतों का इलाज—ग्रामदान

मुश्किलें मिटाने की तरकीब

आप लोगों को यहाँ भागकर आना पड़ा। आते ही कुछ दिन तो आपके आफत मे, मुश्किल मे बीते। फिर यहाँ आपको जमीन मिली। जो आफतें आयीं, वे अब याददाश्त हो गयी हैं। इस समय दिन-ब-दिन आबादी बढ रही है। आबादी के हिसाब से जमीन तो बढ़नेवाली है ही। इस हालत मे चन्द लोगों के हाथ मे जमीन रहेगी, तो कैसे होगा ? यह ठीक है कि यहाँ सबको जमीन मिली है। लेकिन जम्मू और कश्मीर मे जमीन ही कम है और यहाँ की सरकार ने सीलिंग भी किया है। फिर भी जमीन का मसला तो रहेगा ही। अभी आपको और फिर आपके बच्चों को भी जरूरत रहेगी, इसलिए अभी आपका तो ठीक चल रहा है। लेकिन आगे आपके बेटों को मुश्किल होगी। आज कुछ एक्स-सोल्जर्स भी हमसे मिलने आये थे। उनको १०, १५ रुपये पेन्शन मिलती है। उनके पास जमीन भी नहीं है। जमीन मुजारों को मिली है। ऐसे कई मसले हैं। और भी कई ऐसी मुश्किले पेश आयेगी। आपकी आज की और आनेवाली सभी मुश्किलों को ध्यान मे रखकर हमने एक तजवीज सुझायी है। वह यहाँ माकूल है और वह यह है कि आप जमीन की शख्सी मिल्कियत छोड़ें, शामिलात मिल्कियत रखे और बख्शीराज या नेहरूराज न रखकर गाँव मे ग्रामराज बनाये। इधर गाँव का राज और उधर अल्लाह का राज हो। इसके बीच मे नेहरू और बख्शी मददगार हो सकते हैं। एक-दूसरे की जोडनेवाली कड़ी हो सकते है। यह तब तक नहीं होगा, जब तक सबको जमीन नहीं मिलेगी, दस्तकारी नहीं मिलेगी और गाँव का जिम्मा गाँववाले ही नहीं उठायेंगे।

माखन खाते जाना, सूत कात हरषाना

आज जुलाहे, बुनकर मिलने आये थे। हमने उनके घर जाने का

वादा किया था। उनके हाथों मे बुनने का फन है। उन्होंने कहा कि हमारा बुनने का उद्योग चलना चाहिए। हमने कहा, आपको रोजी मिलनी चाहिए, बुनने का काम मिलना चाहिए। यह तब मिल सकता है, जब कि उनको यहाँ काता हुआ सूत मिले। गॉव का कपडा गॉव में बनना चाहिए और गॉव मे ही उसका इस्तेमाल होना चाहिए।

गॉव का ग्रामदान करें, एक कुनबा बनायें, रोजमर्रा की चीजे गॉव मे ही तैयार कर लें, तो हमारी जिन्दगी मे सुख आयेगा। फिर पाकिस्तान से और लोग अगर यहॉ आयेगे, तो उन्हें भी कहेंगे कि तुम भी हमारे ग्रामदान मे शामिल हो जाओ। अगर हम ग्रामदान का रास्ता ले, तो इस तरह से आगे आनेवाली मुसीबते भी हल हो सकती हैं।

इन्सान कायम के लिए अच्छा है

आज एक बूढे मुसलमान भाई हमसे मिले। उन्होंने हमारे सामने सिर झुकाया और लगे रोने। वे बहुत रोये। उनका एक बेटा मर गया और दूसरा पाकिस्तान मे रह गया। ऐसे सारे किस्से सुनकर हमारा दिल भी रोने लगता है। हमने कैसी फिजा बनायी है। किसीके बेटे छूट गये, किसीके भाई। जब मुल्क के दो हिस्से हुए थे, तब काफी झगड़े थे। लड़कियॉ इधर से उधर और उधर से इधर भगायी गयी थीं। हिन्दू, सिख, मुसलमान—सबने उस वक्त खराब काम किये थे। खराब हवा आयी थी। अब वह हवा नहीं रही है। यह परमात्मा की कृपा है। खराब हवा आती है और जाती है। वह कायम नहीं रहती है। इन्सान कायम के लिए अच्छा ही है। वे बूढे भाई हमसे पूछ रहे थे कि क्या हमारे बेटे से हम मिल सकते है? हमने कहा, आप वहॉ जा सकते है। असल मे वहाँ जाने मे कोई रुकावट नहीं आनी चाहिए। अपने इस देश की दस हजार साल की तवारीख है। उतने मे सैकडो राजा, महाराजा और बादशाह आये, गये। पर यह कश्मीर कायम है। जैसे ये नदियॉ झेलम, चिनाब, सिन्धु आदि और ये पहाड कायम है और लोग भी जैसे के तैसे कायम है। कायम की

चीजें परमात्मा की, खुदा की हैं। जो चीजें कायम नहीं रहतीं, वे फानी हैं। यह दुनिया फानी है। फना होनेवाली है। इस फना होनेवाली दुनिया में 'यह मेरा बेटा है और यह पराया है', ऐसा भेद करके नहीं देखना चाहिए। हम सभी खुदा की, परमात्मा की सन्तान हैं, इस तरह से देखेंगे, तो सब पर बराबर प्यार रहेगा। हमेशा भगवान् को याद करें, झूठ न बोलें, सचाई पर चलें, ईमान रखें। अपने लिए अलग-अलग न सोचें, मेरा मैं देखूँगा—यह खयाल न रखें। हम सब अपना मिलकर सोचें, मिलकर देखें, मिलकर काम करें। कोई चीज मेरी नहीं, सभी हमारी है। इस तरह 'मेरा' छोड़ें और 'हमारा' सोचें।

हम नबीयों का माल पहुँचाने आये है

हम तो आपके खिदमतगार हैं। यहाँ आपको भगवान् का पैगाम सुनाने आये हैं। सभी जगह यह पैगाम पहुँचाने के लिए ही हम पैदल-पैदल घूम रहे है। हमारा कौल 'जय जगत्' है। हम सारे जगत् की जय चाहते हैं। आज तो लोग चाहते हैं कि हमारी फतह हो और हमारे दुश्मन की हार हो। दो पक्षों में लड़ाई होती है, तो दोनों ओर की फौजें अल्लामियाँ से यह दुआ माँगती हैं : 'हमारी फतह हो'—एक की हार में दूसरे की जीत है। लेकिन हम सबकी जीत चाहते हैं। मेरी जय, तेरी जय, उनकी जय, सबकी जय हो, सबकी फतह हो। सबकी फतह में किसीकी भी हार नहीं है। परमात्मा हमें यही नसीहत देता है और यही नसीहत हमें नबी, पैगम्बर और सन्तों ने दी है। यह नसीहत पुरानी है। इसी नसीहत को पहुँचाने हम आपके पास आये है। जैसे छोटे व्यापारी बड़े व्यापारी से माल लेते हैं और बेचते हैं, वैसे ही बड़े-बड़े महान् नबी, रसूल, साधु और सन्तों के पास जो माल पड़ा है, वही लेकर हम गाँव-गाँव में आपके पास पहुँचाते हैं।

बगनोटी
१९-६-'५९

: १९ :

देश निडर कैसे बनेगा ?

मशहूर नौशेरा

'नौशेरा' का नाम तो बहुत सुना था। अखबार मे आता ही था। यहाँ के कई किस्से सारे देश मे फैले हैं—कुछ गलत और कुछ सही भी। जैसे भी हों, वे लोगो मे पहुँचे हैं और इस शहर का नाम सबको मालूम हो गया है। एक जमाना था, जब कि इस नौशेरा मे बड़े बड़े आलिम और बडे-बडे महापुरुष घूमे हैं। शायद गुरु नानक भी इसी रास्ते से श्रीनगर गये और उनके बाद अकबर बादशाह भी। खैर! यह एक ऐसा मुकाम है, जहाँ से बहुत-से लोगों ने दुनिया को नीति का सन्देश दिया है। हम भी आज वहीं आ पहुँचे हैं।

अमल करने से आवाज दुनिया मे फैलेगी

आप जानते हैं कि हमारी पैदलयात्रा आठ साल से चल रही है। अगर परमेश्वर ने चाहा, तो चंद दिनों मे हम श्रीनगर पहुँचेंगे। आप देखते हैं, आपने अभी बहुत ऊँची आवाज मे अपना 'कौल' सुनाया—'जय जगत्', ताकि वह पाकिस्तान की हद तक पहुँचे।*

अगर आपने ठीक समझकर इसका उच्चारण किया, तो आपकी यह आवाज सिर्फ पाकिस्तान की हद तक ही नहीं, बल्कि कुल दुनिया मे

---

* नौशेरा शहर से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरहद, जिसे Cease Fire Line कहते हैं, दो-ढाई मील पर ही है। विनोबाजी का भाषण शुरू होने के पहले एक भाई ने लोगों से कहा कि 'जय जगत्' का मन्त्र इतनी ऊँची आवाज में बोलें कि वह पाकिस्तान की सीमा तक पहुँचे—स०।

पहुँच सकती है। अगर आप यह सोचकर बोलेंगे कि हम जो बोल रहे हैं, उसका अमल अपनी जिंदगी मे करेंगे, तो यह आवाज सिर्फ पाकिस्तान मे ही नहीं, कुल दुनिया मे पहुँच जायगी। उसके लिए किसी रेडियो की जरूरत नहीं होगी, ऐसे ही सारी दुनिया मे पहुँच जायगी। अगर इस चीज का अमल जिन्दगी मे हो, तो उसे फैलाने के लिए कहीं जाना नहीं होगा। लोग यहीं आयेंगे और इसे ले लेंगे। रास्ते में हमने संयुक्त राष्ट्रसंघ की जीप देखी। उसमे एक ही मनुष्य था और वह था—ड्राइवर! गाड़ी खाली थी। ये लोग यहाँ आते हैं, देखते हैं। वे अगर यहाँ 'जय जगत्' की जिन्दगी देखेंगे, तो बाहर जाकर यहाँ की कहानी सुनायेंगे और प्रचार करेंगे। इसलिए हमे यह ध्यान मे रखना होगा कि हम जिस शब्द का उच्चारण करते हैं, उसका अमल हमें जिन्दगी मे करना है।

'जय जगत्' का तर्जुमा नामुमकिन

आज एक पुलिस-अधिकारी 'गीता-प्रवचन' पर हस्ताक्षर लेने आये थे। पूछने लगे : 'जय जगत्' की मानी क्या है? मैंने उन्हे इसका मानी समझाया। फिर उन्होंने पूछा कि इसका उर्दू तर्जुमा क्या हो सकता है? मैंने समझाया कि ऐसे शब्दों का तर्जुमा नहीं हो सकता। ऐसे शब्द दुनिया में ऐसे ही फैलेंगे, ऐसे ही जायेंगे। 'सत्याग्रह' यह एक ऐसा शब्द है, जो मुझे अंग्रेजी, फ्रेंच और यूरोप की दूसरी भाषाओं की किताबों मे देखने को मिला है। चीनी और जापानी किताबों में भी, जिनमें हिन्दुस्तान की बात हो, मैंने 'सत्याग्रह' शब्द देखा है। इसलिए इन कौलों का तर्जुमा करने की जरूरत नहीं है। इनके जो सही मानी है, उन्हे हम प्राप्त कर लें, तो ये शब्द भी दुनिया में ऐसे ही पहुँचेंगे। इनके अनुवाद की जरूरत नहीं। हम इसे जिन्दगी में लाते हैं या नहीं, यही देखने की बात है।

'दुश्मन' नहीं, दोस्त कहिये

'जय जगत्' के मानी यही हैं कि हम किसीसे डरेंगे नहीं और किसीको

डरायेंगे भी नहीं। किसीसे दबेंगे नहीं और न किसीको दबायेंगे ही। हम दब्बू नहीं हैं। यह है निडरता। यह निडरता हममें होनी चाहिए। दूसरी बात है, सब पर प्यार करना। यह भावना होनी चाहिए कि सारी दुनिया में हमारे ही रिश्तेदार हैं, हमारे ही लोग हैं। कुल दुनिया मे हमारे ही दोस्त फैले है, दोस्तों से दुनिया भरी है। इसमे कोई दुश्मन नहीं है-- **'ना कोई वैरी नाहीं बिगाना।'** यहाँ बोलने का एक रिवाज है, कहते हैं : "यहाँ इस पहाड़ी पर हमारी फौज खडी है और उस बाजू दुश्मन है।" वहाँ भी, उधर भी इसी तरह बोलने का रिवाज होगा। लेकिन हमे यह सोचना चाहिए कि हम किसीके दुश्मन नहीं, सब हमारे दोस्त हैं। हम ऐसी जिन्दगी बसर करें कि हमे किसीका डर न हो और न हम किसीको डरायें ही। आज यहाँ फौज खड़ी है और बच्चे खेल रहे हैं, किसी चीज का डर, खौफ नहीं है। लेकिन किसके बल पर ? तो फौज के ही बल पर। लेकिन अगर कहीं यहाँ से फौज हट जाय या हार जाय तो ? खतम !

लड़ाइयों से देश के नसीब का निपटारा बेतुका

पलासी की लड़ाई मे एक बाजू क्लाइव लड रहा था और दूसरी बाजू नवाब था। क्लाइव के पास थोड़ी सेना थी। लेकिन दोनों सेनाओं के बीच का फासला बहुत कम था याने दो फर्लांग भी नहीं था। दोनों फौजें आमने-सामने खडी थीं। दो-तीन घण्टे मे वह लड़ाई खत्म हुई। नवाब की फौज हारी। उसकी फौज से बहुत सारे भाग निकले और थोड़े कट मरे। क्लाइव की फतह हुई। कुल बगाल पर अग्रेजों ने कब्जा कर लिया और देखते-देखते सारा भारत अग्रेजों के हाथ मे आ गया। एक बाजू २५ हजार और दूसरी बाजू १० हजार। वे कुल मिलकर ३५ हजार थे और उन्होंने ३५ करोड के नसीब का फैसला कर दिया ! अगर क्लाइव की हार होती, तो अंग्रेजों के हाथ मे हिन्दुस्तान न जाता। खैर ! इस तरह सारे देश के नसीब के फैसले चद घण्टों मे, किसी एक मैदान पर, चद लोग करें, यह कैसी

बात है ? इसीके कारण लोग डरपोक बनते हैं, बुजदिल बनते है। यहाँ फौज बेकार खडी है, ऐसा मुझे नहीं कहना है। अपना काम वह करती है। लेकिन इन बच्चों को भी निडर बनना चाहिए। कोई हमला करने आये, स्टेनगन लेकर आये, तो उसको कहना चाहिए "चलो देखें क्या चल रहा है, कौन आ रहा है ?"

बहादुरी शस्त्रों पर निर्भर नहीं

सच्ची बहादुरी कौन-सी है, यह हमें देखना चाहिए। डरकर भागनेवाले पर ही शेर हमला करता है और उसका मुकाबला करता है। मनुष्य की आँखो में वह देख लेता है। वहाँ उसे जरा भी डर नजर आया, तो वह एकदम हमला करता है। आँखो मे गुस्सा देखता है, तो भी हमला करता है। लेकिन जब वह ऐसी आँखें देखता है, जिनमे न तो गुस्सा है और न डर, बल्कि बिलकुल शान्ति है, तो वह हमला नहीं करता। ऐसे तजुरबे शिकार करनेवाले को आते हैं। शेर को आँखो की पहचान होती है। उनमे क्या चीज भरी है, बहादुरी है या बुजदिली, यह वह देख लेता है। इसलिए हमें सचमुच अदर से बहादुर बनना चाहिए। जो शख्स शस्त्र के आधार पर बहादुर होता है, उसकी बहादुरी तब खत्म हो जाती है, जब कि वह अपने सामने ज्यादा मजबूत शस्त्र देखता है। बिल्ली चूहे के सामने शेर बनती है। चूहा उसके सामने काँपता है, भाग जाता है। लेकिन जब बिल्ली के सामने कुत्ता आता है, तब वह डरपोक बन जाती है। क्या यही सच्ची बहादुरी है ? चूहा तो छोटा-सा जानवर है, इसलिए उसके सामने वह शेर बनती है।

जर्मन सेना का उदाहरण

जर्मन लोगों ने लाखो की तादाद मे दूसरे मुल्क पर हमला किया। एक-दो दिनो में दूसरे देशों पर टूट पड़े और तीन-चार दिनों मे दूसरे देश पर कब्जा कर लिया। यह बहादुरी आपने सुन ली। अब उनकी बुजदिली

भी सुन लीजिये। जब अमेरिका की सेना फ्रान्स के किनारे उतरी, तो जर्मनी ने देखा कि अमेरिका के पास बीसगुना ज्यादा हवाई जहाज और ज्यादा शस्त्रास्त्र हैं। यह सब लेकर अमेरिकी सेना फ्रान्स के किनारे उतरी है। तब जर्मनी ने समझ लिया कि अब अपनी कुछ न चलेगी। तुरन्त हुक्म हुआ, फौज की शरण आओ। अखबारों मे रोज आता था, 'आज दो लाख जर्मन शरण आये! आज तीन लाख जर्मन सेना ने शस्त्र नीचे रख दिये और शरण आये।' याने बहादुरों की बुजदिली जाहिर हुई। जो शख्स हमलावर थे, बुजदिल बने। क्योंकि हिसाब हुआ—सामने जो दुश्मन है, उसके पास बहुत बड़े खौफनाक शस्त्र हैं। इसलिए फिर उनके सामने शरण गये। इस तरह स्पष्ट है कि जो शस्त्र पर आधार रखती है, वह सच्ची बहादुरी नहीं है।

सच्ची बहादुरी कब ?

जो समझेगा कि यह शरीर एक चोला है और इसे कोई मारेगा, तो परवाह नहीं, वही सच्चा बहादुर होगा। ऐसी हिम्मत देश मे कब आयेगी? जब हम सबको अपने दोस्त समझेंगे, किसीको भी दुश्मन नहीं समझेंगे। सब पर प्यार करेंगे। क्योंकि सामनेवाला दुश्मन बीच मे, आपस मे फूट डालता है। इसलिए पूरा प्रेम हो, आपस मे मेल-जोल हो कन्धे से कन्धा लगाकर काम करे। एक का सुख सबका सुख हो, एक का दुःख सबका दुःख हो। जब ऐसा समाज बनेगा और वह अन्दर से निर्भयता महसूस करेगा, शरीर को एक चोला समझेगा, तभी देश महफूज होगा। नहीं तो देश महफूज नहीं होगा।

नौशेरा
२०-६-'५९

: २० :

शान्ति-सेना की तस्वीर

हमने जब से जम्मू-कश्मीर मे कदम रखा, तब से हमारे इन्तजाम मे कुछ भाई लगे हुए हैं। उनके मुखिया हैं, मेजर जनरल यदुनाथ सिंह।

यदुनाथ सिंहजी शान्ति-सैनिक बने

दस-बारह साल पहले पाकिस्तान की ओर से नौशेरा पर जो हमले हुए थे, उस समय यहाँ के लोगो को बचाने का काम हमारे सिपाहियों ने इन्हीं मेजर यदुनाथ सिंह के मार्गदर्शन में किया था। उनके पिताजी (श्री मेहता नानकचद) यहाँ बैठे हैं। उन्होने भी उस समय यहाँ के लोगों को खिलाने-पिलाने का बहुत काम किया है। किन्तु फौज की तरफ से लोगों को बचाने का काम यदुनाथ सिंहजी ने ही किया। इसलिए यहाँ के लोग उनको याद करते हैं। अब आपको सुनकर खुशी होगी, शायद आश्चर्य भी होगा कि उन्होंने शान्ति-सेना मे अपना नाम दिया है। वैसे यह नाम उन्होंने तो तभी दिया था, जब वे अजमेर मे सर्वोदय-सम्मेलन मे आये थे। लेकिन लिखित तब दिया, जब हमने जम्मू-कश्मीर मे कदम रखा।

शान्ति-सैनिक बहादुर होता है

अचरज इसलिए कहा कि फौजवाला आदमी शान्ति-सेना मे नाम कैसे दे सकता है? लेकिन बात यह है कि शान्ति-सेना का काम बुजदिलों, डरपोकों का नहीं है। जो निर्भय हैं, निडर है, उन्हींका यह काम है। एक गुजराती भगत ने कहा है : 'हरिनो मारग छे शूरानो।' यानी हरि के मार्ग मे वे ही जा सकते हैं, जो बहादुर हैं, शूर है। वैसे ही हम भी कहते है कि शान्ति-सेना मे जो शूर है, वे आ सकते हैं। जिनको अपने जिस्म

के लिए बहुत ज्यादा मोह है, जो अपने आजा पर जब्त नहीं रख सकते, गुस्से को मौके पर रोक नहीं सकते, वे शान्ति सेना मे नाकामयाब होंगे। धर्म का एक वचन है, सस्कृत मे है : **'क्षमा वीरस्य भूषणम्'** सब्र रखना, बरदाश्त करना, क्षमा करना बहादुर के लिए जीनत (शोभा) है। क्षमा, सब्र, बरदाश्त करना मामूली बात नहीं है। उसके लिए बहादुरी चाहिए। गुस्से मे खूब काम करें और मारने की ख्वाहिश रखे, यह बहादुरी नहीं है। डरते-डरते जो बुजदिल भाग जाता है, पीठ दिखाता है, वह भी दिल मे ख्वाहिश रखता है कि हमे कोई बचाये। इस तरह भागनेवाला अन्दर से खून करता है। वह अहिंसक नहीं है। अहिंसक तो वह है, जो निडर है, जिसे यह जिस्म कपडे के मुआफिक मालूम पडता है, जिसे मौके पर हम फेंक सकते हैं। ऐसी हिम्मत जो रखता है, वह अहिंसक है।

इंग्लैण्ड के लिए निःशस्त्रीकरण संभव

हम कई दफा कहते हैं कि कोई देश यह हिम्मत कर दिखाये कि दुश्मन क्या करता है, यह न देखें और लश्कर का, फौज का आसरा छोड़ दे। कौन-सा मुल्क यह हिम्मत कर सकेगा? डरपोक मुल्क कभी नहीं करेगा। बल्कि मैने तो एक दफा यह उम्मीद की थी कि इग्लैण्ड जैसा देश यह हिम्मत कर सकता है। हिन्दुस्तान मे एक परपरा (ट्रेडिशन) है। प्रेम और अहिंसा की बात यहाँ के खून मे है। गाधीजी ने भी एक राह दिखायी थी। लेकिन हिन्दुस्तान यह कर नहीं सकता, क्योंकि अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान के लोगों के शस्त्र जबर्दस्ती से छीने थे और पूरे के पूरे देश को अपने काबू मे कर लिया था। इस तरह शस्त्र छीने जाते हैं, तो एकदम हिम्मत नहीं होती। अब आजादी मिली है, इसलिए धीरे-धीरे आगे हिम्मत बढेगी। लेकिन आज उसके लिए यह नामुमकिन है कि चाहे अड़ोस-पड़ोस के देश कुछ भी करें।

लेकिन इग्लैण्ड जैसा देश यह कर सकता है। भारत का कब्जा छोड़ने

से इग्लैण्ड की इज्जत बहुत बढ़ गयी है। कुछ लोग समझते हैं कि इससे इग्लैण्ड की इज्जत कम हुई है और वह दोयम दरजे का मुल्क साबित हुआ है। लेकिन यह गलत खयाल है। हम समझते हैं कि इससे आज इग्लैण्ड की अखलाकी, आध्यात्मिक इज्जत हुई है। इसलिए उसकी इज्जत और बढ़ेगी, अगर वह लश्कर छोड़ देगा। लेकिन यह हिम्मत उसकी भी नहीं है। कारण उसने भारत तो छोड़ा है, लेकिन लाचारी से छोड़ा है और आखिर तक कहता रहा कि हमने हिन्दुस्तान को आजादी के लायक बनाकर छोड़ा है। यानी हमारे पुराने कारनामे अच्छे हैं, यही अग्रेजो का कहना है। लेकिन अगर वे समझें कि इग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान पर कब्जा कर गलत काम किया था और अब उसने यह गलती सुधारी है, तो उनकी अखलाकी ताकत और इज्जत बढ़ती है। इसीलिए मैं कहता हूँ कि इग्लैण्ड यह हिम्मत कर सकता है।

सिपाही अच्छे शान्ति-सैनिक बन सकते हैं

शेर को अगर इल्म हो जाय कि जगल के राजा का काम खाना नहीं, खिलाना है, तो वह हिरन, खरगोश को नहीं खायेगा। बिल्ली चूहे को नहीं खायेगी। जो शेर हिरन के सामने बहादुर बनता है, वह बन्दूक के सामने डरपोक बन जाता है, क्योंकि ये सारे डरपोक हैं। डरनेवालों का काम शान्ति-सेना मे नहीं है। लेकिन शेर को भी इल्म हो जाय, तो वह आगे बढ़ सकता है। उपनिषद् मे इसका जिक्र कई दफा आता है कि 'ब्राह्मण क्षत्रिय के पास ज्ञान के लिए जाते हैं।' कारण यही है कि जिन्होंने अपनी जान हथेली पर ली है, वे ही ब्रह्मविद्या को, आत्मविद्या को पहचानते हैं, अपने जिगर को अलग करके पहचानते हैं। यह आदत एक अनुशासन के तौर पर फौज मे हो जाती है। इसलिए मैं तो मानता हूँ कि सिपाहियों मे से अच्छे शान्ति-सैनिक बन सकते हैं। इसके मानी यह नहीं है कि शान्ति-सैनिकों को पहले सिपाही बनना चाहिए। लेकिन जिनको तजुरबा है, वे उस खूबी के साथ शान्ति-सैनिक बन सकते हैं।

शान्ति-सैनिक सतत काम करेगा

जब कोई जग छिड़ जायगा, तभी शान्ति-सैनिक की जरूरत है, ऐसी बात नहीं है। शान्ति-सैनिक रोजमर्रा सेवा करेगा, लोगों का खिदमतगार बनेगा। इस तरह जो लोगों के दिलों मे पैठ सके हैं, लोगों के दिलों पर कब्जा कर चुके हैं, वे ही खिदमत कर सकते हैं। जिन्होंने खिदमत नहीं की, प्यार हासिल नहीं किया, वे शान्ति सेना के काम मे कामयाब हों, यह नामुमकिन है। यहाँ 'सीज फायर लाइन' है। इसमे कभी लडाई छिड़ जाय, तो यहाँ के सिपाहियों को काम मिलेगा। आज क्या काम है? यही कि टहलना और जाप्ता रखना! लेकिन जो शान्ति-सैनिक है, उसे सिर्फ दंगा फसाद होगा, तभी काम मिलेगा, ऐसा नहीं है। दङ्गा-फसाद नहीं होगा, तब भी सेवा का काम शान्ति-सैनिक कर सकता है। वह तो दिनभर खिदमत करेगा। समाज मे बच्चो की, बूटों की, बीमारों की सेवा करेगा। लोगो की दुश्वारियाँ सुनेगा। यह बात नहीं है कि लोगों की हर मुश्किल, दुश्वारी वह हल कर सकेगा, दूर कर सकेगा। यह ताकत उसकी नहीं है। फिर भी वह दिलासा देगा, हमदर्दी दिखायेगा। उनकी दुश्वारियाँ गाँववालों के सामने रखकर सबकी मदद से हल निकालने की कोशिश करेगा। वह मुकदमे, झगड़े, भाई-भाई के विवाद वगैरह कोर्ट मे नहीं जाने देगा। 'हमारे हाथों गलत काम नहीं होगा, अशान्ति का काम नहीं होगा, अमन के खिलाफ काम नहीं होगा' ऐसी प्रतिज्ञा लोगों से कराकर उन्हे घर-घर सर्वोदय पात्र रखने के लिए कहेगा।

कामयाब नम्बर एक और दो

शान्ति-सैनिक की कामयाबी इसीमे है कि वहाँ दगा-फसाद ही न हो। अगर कहीं दगा फसाद हुआ और वहाँ शान्ति-सैनिक पहुँचा और उसने दगे को रोक दिया, तो वह उसकी अव्वल दर्जे की कामयाबी नहीं

हुई। लेकिन जिस मैदान में वह काम कर रहा है, वहाँ दंगा न होना, यही उसकी अव्वल दर्जे की कामयाबी कही जायगी। सिर फुड़वाने का मौका न आये और कुछ फोड़ना ही हुआ, तो शान्ति-सैनिक वहाँ नारियल फोड़ेगा। यह उसकी कामयाबी मानी जायगी। कहीं अँधेरा है और वहाँ लालटेन ले गये। फिर लालटेन ने अँधेरे पर हमला किया—प्रकाश और अँधेरे की लडाई हुई, आखिर अँधेरे को प्रकाश ने खतम किया—ऐसा कभी नहीं होता। ऐसा हुआ, तो वह 'रोशनलाल' नाम मात्र का ही होगा। शान्ति-सैनिक नम्बर एक तो वह है, जिसके रहते दगा-फसाद ही नहीं होता। यह हुआ, तो कामयाबी न० १ हुई। और कहीं झगडा हुआ और उसे रोकने के लिए पुलिस को आने नहीं दिया, शान्ति-सैनिक ने ही उसे शान्त कर दिया, तो यह भी बड़ा काम है। यह कामयाबी न० २ हुई।

सम्मान और अपमान समान मानें

शान्ति-सेना का यह विचार बडा ही दिलचस्प है। जम्मू-कश्मीर में हमें रोजमर्रा शान्ति-सेना में ५०-५० नाम मिल रहे हैं। इस पर उधर हिन्दुस्तान के लोग कहने लगे कि "यह क्या बेवकूफों की जमात है?" हमने कहा, आओ भाई! देखो कसौटी करके। तमाचा लगाकर देखो, लेकिन मारने पर भी मनुष्य खामोश रह सकता है। मेरे जैसों को तो मार खाने की आदत ही पडी रहती है। हम बचपन में शरारत करनेवाले थे। अक्सर देखा गया है कि बचपन में शरारत करनेवाले आगे चलकर शरीफ बनते हैं और दुनिया का काम करते हैं। मैं कह रहा था कि हमें मार-पीट का डर नहीं है। जिसे पिताजी ने कभी पीटा ही नहीं, उसे इसकी आदत नहीं होती। इसलिए मारने पर उसे गुस्सा आता है। लेकिन इतने से सही परख नहीं होती। यह तो आसान है। किन्तु कोई सम्मान करे, तो मनुष्य फूला नहीं समाता। पर अपमान होने पर भी शान्त रहना

चाहिए, गुस्सा नहीं करना चाहिए। इसी तरह परीक्षा होती है। बात यह है कि जिसका भगवान् पर भरोसा है, उसे गुस्सा नहीं आयेगा।

भगवान् के गुण ग्रहण करने की कोशिश ही भक्ति

आज हमने एक भाई से कहा कि शान्ति-सैनिक को निर्भय और निर्वैर बनना चाहिए। इस पर वह बोला कि "यह तो भगवान् का वर्णन है। हम इस तरह कैसे बनें?" मैंने कहा : **'विनु गुण कीने भगति न होई।'** (जपुजी)—यानी परमात्मा के गुण हासिल न करेंगे, तो भक्ति नहीं होगी। परमेश्वर दयालु है और हम निष्ठुर बने रहे, तो इबादत नहीं होगी, भक्ति नहीं होगी। इबादत करना यानी परमात्मा के गुणों का एक हिस्सा हमें मिलना चाहिए। वे दयालु हैं और पूरे दयालु हैं। हमें उसका एक हिस्सा तो हासिल करना चाहिए। वे सत्यनिष्ठ हैं, निर्भय हैं, तो हमें भी उन गुणों को हासिल करना, उन्हें अपने अन्दर महसूस करना—यही भक्ति है। इसलिए ऐसी गलतफहमी में मत रहिये कि भगवान् कहीं परले गोशे में हैं। वे सर्वत्र, सब जगह हैं। बड़े-बड़े योगी सालों तक गुफा में रहते हैं और बड़े शान्त! क्योंकि वहाँ खाना-पीना सब समय पर मुफीद मिल जाता है, शान्ति रहती है और किसीसे टक्कर नहीं होती। लेकिन जहाँ वह गाँव में आया, वहीं बच्चों के रोने-चिल्लाने से उसे तकलीफ होती है, गुस्सा आ जाता है। उसका दिमाग इतना हल्का, नरम 'सेन्सिटीव', नाजुक बन जाता है। जरा कहीं आवाज हुई, तो उसकी समाधि भंग हो जाती है। लेकिन ऐसी समाधि किस काम की?

भगवान् यहाँ दिल में भी हैं, उस पेड़ में भी हैं और उस पत्थर में भी हैं—यह जिसने पहचाना, उसे दीदार, दर्शन हो चुका। यही भक्ति का लक्षण है। सत्य, दया, प्रेम, करुणा ये सारे उसके गुण हममें आने चाहिए। इसीलिए कहा जाता है कि परमात्मा के उन गुणों का बयान करते करते एक दिन वे गुण हममें आ जायेंगे। उनमें गुण पूरे हैं, उससे थोडी मात्रा में

क्यों न हो, हममे आने चाहिए। एक चम्मचभर दूध और एक लोटा-भर दूध ! दोनो की ताकतो मे फर्क है। लेकिन जायका वही है, स्वाद वही है। वैसे ही इस रूह मे, जीव मे जो गुण हैं, वे चम्मचभर दूध हैं और भगवान् के जो गुण है, वे लोटाभर दूध हैं, पर जायका वही है। वह निर्भयता का सागर होगा, तो हमारी चम्मचभर निर्भयता मे भी जायका वही होगा। इसलिए भगवान् के जो गुण हैं, वे ही भक्त मे होते हैं और होने चाहिए। भगवान् दयालु है, तो भक्तों को भी दयालु बनना चाहिए। भगवान् सबके साथ बराबरी से रहता है, तो भक्तों को भी इसी तरह रहना चाहिए। हमे इन गुणों का मश्क, अभ्यास करना चाहिए।

भगवान् के भरोसे शांति-सेना का काम

लोग मुझसे कहते हैं कि क्या तू शाति-सैनिक बनेगा ? क्या तेरी यह हिम्मत होगी कि कोई तेरा गला काटे, तो भी तू शान्त रहे ! मैं कहता हूँ, मेरा यकीन मेरी शक्ति पर नहीं है, भगवान् की शक्ति पर है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ, तो मुझमे वह ताकत भर देता है। दिल मे जो अहकार है, उसे हटाकर भगवान् को जगह मैंने कर दी है। इसलिए उसीके भरोसे मेरा सब काम चलता है। वैसे शाति-सेना का काम भी वह मुझसे इसी तरह करायेगा।

नौशेरा

२०-६-'५९

: २१ :

फौजी भाइयों से

हर काम से मोक्ष संभव

हिंदुस्तान मे एक बहुत बड़ा विचार हमारे पुरखों ने हमारे सामने रखा कि समाज के अदर जिसे जो काम सौंपा गया है—समाज के लिए जो जरूरी है—वह काम जो मनुष्य करेगा, उस पर परमेश्वर कृपा कर सकता है, उसे उसका दर्शन भी हो सकता है। अगर हम ईमान रखें, नेक रहें, किसी पर जुल्म न करें और खुदगर्ज न बनें, समाज के फायदे के लिए काम करें, मान-अपमान को समान समझें, खुदा की निगाह मे सब समान है यह समझें, तो परमेश्वर हमे मोक्ष हासिल करने के लिए साधन देगा। यह बहुत बड़ा विचार है।

भगवान् के दरबार मे सब समान

कोई ब्राह्मण वेदाध्ययन करे, लेकिन अपने लिए कोई ख्वाहिश रखे, तो बावजूद इसके कि वह वेदाध्ययन करता है, मोक्ष नहीं पायेगा। इससे उलटे कोई मामूली सिपाही—यहाँ तक कि कोई मेहतर या भगी भी—समाज की, सेवा के खयाल से काम करे, तो वह मोक्ष पायेगा। ब्राह्मण भी मोक्ष पायेगा, अगर समाज की सेवा के खयाल से वेदाध्ययन करे। साराश, चाहे ग्रथ पढने का काम हो, चाहे लड़ने का, चाहे व्यापार-व्यवहार का काम हो, चाहे खेती का, चाहे शिक्षक हो, चाहे भगी हो—समाज की खिदमत की दृष्टि से कोई भी काम करता हो, तो उसमे कोई दर्जा नहीं है। कोई ऊँचा नहीं, कोई नीचा नहीं। भगवान् के दरबार मे सभी को समान इज्जत होगी।

सभी एक साथ प्रार्थना करें

आप सारे देश की सेवा मे सिपाही बनकर ड्यूटी लगाये रहते हैं। कभी भी काम पड़ जाय, इसलिए हमेशा तैयार रहते हैं। भगवान् आपसे यह एक बहुत बड़ी सेवा ले रहा है। आपको एक मौका मिला है। हिंदुस्तान के सभी सूबों, सब धर्मों और सब जातियो के लोग यहाँ हैं। सभी दोस्त बनकर रहें, कोई किसीको नीची निगाह से न देखे। सब साथी हैं, सब एक ही हैं, यह भावना रहे। आप सबका खाना पीना, खेलना-कूदना—सब कुछ एक साथ चलता ही होगा। मानो एक कुनबा ही बन गया है। जैसे खाना-पीना एक साथ होता है, वैसे ही सबको भगवान् का नाम भी एक ही साथ लेना चाहिए। आज मैंने सहज ही पूछा कि क्या यहाँ कोई सत्सग चलता है, तो मुझे बताया गया कि हाँ, हिंदू, मुसलिम, ईसाई, सिख—सब अलग-अलग अपनी प्रार्थना करते हैं। इस पर मेरे मन मे सहज विचार आया कि खाने, खेलने और लड़ने मे हम सब एक साथ रहते हैं, लेकिन जहाँ भगवान् का नाम लेने का मौका आया कि बँट जाते हैं, यह ठीक नहीं। मानो यह भगवान् बड़ा कम्बख्त है, जिसके नाम से हम बँट जाते हैं। दरअसल होना यह चाहिए कि और कामों मे चाहे हम बँटे रहे, पर जहाँ भगवान् का नाम लेना हो, वहाँ सभी एक हो जायँ। इसके लिए कोई तरकीब ढूँढनी चाहिए। गीता, कुरान, गुरुग्रथसाहब—इनमे से कुछ अंशों का एक साथ पाठ होना चाहिए। यह ऐसी चीज नहीं, जो मुफीद नहीं है। यह भी ठीक है कि गुरुग्रथ, जपुजी, गीता, कुरान आदि के अध्ययन और पठन के लिए आप अलग-अलग भी बैठें। यह भी दिल को मजबूत बनाता है। लेकिन ऐसा भी होना चाहिए कि सब एक साथ बैठें, चद मिनट खामोश प्रार्थना की जाय और फिर तुलसी-रामायण के कुछ अश पढ़े जायँ। कुरान की कुछ आयतें, गुरुग्रथ के और बाइबिल के कुछ वचन पढे जायँ। ये सभी हमे प्रिय होने चाहिए। यह सब मिलकर ही हमारा दिल और हमारा धर्म बनता

है। जैसे सा, रे, ग, म आदि सप्त स्वर मिलकर सुंदर संगीत बनता है, वैसे ही यह है। जैसे मिली-जुली संगत, जैसे मिली-जुली पंगत, वैसे ही यह भी मिला-जुला होगा, तो हमारा विचार ऊँचा बनेगा।

जो एक साथ खाते नहीं, वे एक साथ कैसे लड़ेंगे?

पानीपत की लड़ाई में एक बाजू अहमदशाह अब्दाली और दूसरी बाजू मराठों की फौज थी। जैसे अभी आप आमने-सामने खड़े हैं, वैसे ही वे एक दूसरे के आमने-सामने खड़े थे। वे एक दूसरे को देखना चाहते थे, एकदम हमला करना नहीं चाहते थे। अब्दाली चाहते थे कि मराठों को खाना न मिले, फिर एकदम हमला करें, तो वे खत्म हो जायेंगे। एक दिन शाम को अहमदशाह अब्दाली ने देखा कि सामने मराठों की फौज में छोटी-छोटी आगें जल रही हैं। उसने अपने सेनापति से पूछा : "यह क्या हो रहा है?" उसने जवाब दिया कि "इन लोगों में जातिभेद है। ये एक-दूसरे के हाथ का खाना नहीं खाते। इसलिए अलग-अलग रसोई बना रहे हैं।" यह सुनकर अहमदशाह ने अपने साथी से कहा : "अगर ऐसा है, तब तो हमने जीत लिया।" कहने का सार यह है कि जो एक साथ नहीं खाते, वे एक साथ कैसे मरेंगे? लेकिन आप तो खाना एक साथ खाते हैं। खेलते भी एक साथ हैं। लेकिन भगवान् का नाम एक साथ नहीं लेते, तो अजीब बात हो जाती है। मेरा यह सुझाव है कि सब एक साथ थोड़ी देर बैठकर भगवान् का नाम लें। अलग-अलग भी लें, लेकिन एक साथ भी लें। हमारे साथ भी अलग-अलग धर्मवाले लोग रहते हैं, लेकिन प्रार्थना में सब एक साथ हो जाते हैं।

हम सब एक हैं

सामनेवाले को आप 'दुश्मन' कहते हैं। 'उस तरफ दुश्मन है' ऐसा बोला जाता है। फिर वे भी आपको 'दुश्मन' कहते होंगे। लेकिन हमारे अन्दर एक ऐसी चीज है, जो सिखायेगी कि हम सब एक हैं। विज्ञान के

जमाने में 'हम सब एक हैं' यह भावना रहेगी, तभी हम टिक पायेंगे। आज क्या बड़े राष्ट्र और क्या छोटे राष्ट्र, सभी एक-दूसरे से डर रहे हैं। हिंदुस्तान और पाकिस्तान, अमेरिका और रूस दोनों एक-दूसरे से डरते हैं। सर्वत्र भय छाया है और सभी फौज के लिए खर्चा बढा रहे है। फौज बिलकुल तैयार रखी जाती है। इन्सान को इन्सान का डर है, भय है। बडे-बडे शस्त्रास्त्र, Neuclear weapons बढ रहे है। इन आणविक अस्त्रों को रोकना होगा। नहीं तो इन्सान की बरबादी होगी। इसलिए इस जमाने मे 'जय जगत्' ही बोलना होगा। सब दुनिया की जय हो, सबका भला हो, यही खयाल रखना होगा।

हर नागरिक दुनिया का नागरिक हो

मैं यह जो सारा बोल रहा हूँ, इसके मानी यह नहीं है कि आप कोई बेकार काम कर रहे हैं। आपका जो काम है, वह इस परिस्थिति मे जरूरी है और वही आप कर रहे हैं। लेकिन आप और हम तब कामयाब होंगे, जब आपके देश मे उनको और उनके देश मे आपको जाने मे कोई रुकावट न होगी। किसी भी देश मे दूसरे देशवाले को रोका नहीं जायगा। जैसे बम्बई का नागरिक सारे हिन्दुस्तान का नागरिक होता है, वैसे ही हिन्दुस्तान का नागरिक कुल दुनिया का नागरिक हो। याने किसी भी देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने। यही हमें करना है और इसके लिए दिल को वसी-व्यापक बनाना होगा।

धर्मयुद्ध की मर्यादाएँ

अगर लड़ने का मौका आया, तो हम लड़े। अपना फर्ज समझकर लड़ें, लेकिन मन मे वैर न हो। अर्जुन और द्रोणाचार्य के बीच ऐसा ही युद्ध हुआ। अर्जुन के लिए द्रोणाचार्य बाप की जगह थे। उसने भगवान् से पूछा कि "मैं इनके साथ कैसे लड़ूँ ?" भगवान् ने कहा : "पहले उनके पॉव के पास वदन के लिए, प्रणाम करने के लिए बाण फेंक।" अर्जुन ने उनके पाँव

के पास बाण छोडा, जिससे वदन हो गया। फिर लडाई शुरू हो गयी। याने पहले उनकी इज्जत करके फिर लड़ना शुरू किया। यह अजीब बात दीखती है। लेकिन धर्म मे, धर्मयुद्ध मे ऐसा ही होता है। उसमे सामनेवाले के लिए मन मे इज्जत होनी चाहिए।

खलीफा उमर की कहानी

खलीफा उमर की कहानी है। उनका एक भाई के साथ द्वद्व चल रहा था। दोनों मजबूत थे। आखिर लड़ते-लड़ते खलीफा उमर की फतह होने के आसार दीखने लगे। एक मौका ऐसा आया, जब उसकी छाती पर खलीफा चढ़ बैठे। तलवार ऊपर उठा ली, उसे मारनेवाले ही थे कि इसी बीच वह शख्स, जिसकी छाती पर वे बैठे थे, उनके मुँह पर थूका। दूसरे ही क्षण खलीफा उमर ने अपनी तलवार खींच ली और वे उठ गये। साथियों ने उनसे पूछा : "यह आपने क्या किया? अच्छी तरह वह आपके हाथ मे आ गया था, कत्ल करने के बजाय आपने उसे ऐसे ही क्यों छोड़ दिया?" इस पर उमर ने जो जवाब दिया, वह बडा ही सुन्दर है। उन्होंने कहा : "जब वह शख्स थूका, तो मुझे गुस्सा आ गया और गुस्सा आ जाने से वह धर्मयुद्ध नहीं रहा। इसलिए मैंने उसे छोड़ दिया।" छोटी-सी कहानी है, पर इससे बड़ी अच्छी नसीहत मिलती है।

निर्वैर होकर लड़ो

हम सामनेवाले से लड़ें, लेकिन उसके लिए मन मे दुश्मनी न हो। आप देश के लिए लड़ रहे हैं। अब देश के लिए लड़ना ठीक है या बेठीक है, यह तो वे ही जानें, जिन्होंने यह तय किया है। उन्हीं पर श्रद्धा रखकर आप लड़िये। उनकी गलती निकालना हमारा काम नहीं। फिर भी हम फर्ज के लिए लड़ रहे हैं, जब्त के साथ लड़ रहे हैं, सयम के साथ लड़ रहे हैं, मन मे वैर नहीं है, ऐसा होना चाहिए। गीता ने यही कहा है—लड़ना है तो लड़ो, लेकिन निर्वैर होकर तटस्थ बुद्धि से शात होकर

लडो । हम तो मानते हैं कि जैसे-जैसे विज्ञान बढ़ेगा, वैसे-वैसे यह ध्यान मे आयेगा कि अगर क्रोध आयेगा, दिमाग ठढा नहीं रहेगा, तो निशाना गलत होगा । इसलिए विज्ञान के लिए और धर्म के लिए भी दिमाग शांत रखकर काम करना लाजिमी होता है । फिर वहाँ प्यार शुरू होता है । राम-रावण का युद्ध हुआ । रावण की हार हुई । वह मर गया, तो राम ने उसके श्राद्ध की व्यवस्था की थी । मतलब यह कि जिसके साथ लड़ना है, उसके लिए मन मे प्रेम और इज्जत होनी चाहिए । तभी वह धर्मयुद्ध होता है । इसलिए दिल और दिमाग शात रखें ।

आप हमसे बहुत नजदीक

बहुत खुशी हुई कि हमे आपसे मिलने का यह मौका मिला । हम शाति-सेना का नाम लेते हैं । उसके लिए आप ज्यादा लायक हैं । क्योंकि शौर्य, धैर्य, साहस, हिम्मत आदि जो गुण उसके लिए चाहिए, वे सब आपमे मौजूद है । इसलिए आप हमारे नजदीक-से-नजदीक हैं । इसके अलावा एक कारण और है । आज दुनिया मजहबों और राजनैतिक दलों के झगडो से तग है । लेकिन फौज की कोई पार्टी नहीं होती । इसीलिए वह देश की फौज बनती है । हम जो सर्वोदय-समाज बनाना चाहते हैं, वह भी पक्षमुक्त समाज होगा । इसलिए भी आप हमारे नजदीक-से-नजदीक हैं । परमेश्वर आप सबको उत्तम बुद्धि दें, ज्ञान दें, शाति दें और प्रेम दें ।

नौशेरा
२०-६-'५९

: २२ :

भगवान् मदद कब देता है ?

पिछले महीने की २२ तारीख को हमने जम्मू-कश्मीर मे कदम रखा था। आज उसे एक महीना पूरा हो रहा है। इस बीच हमें बहुत कुछ देखने, सुनने और सीखने को मिला। कुल मिलाकर बहुत खुशी हुई। यहाँ के सब तबकों के लोगो के साथ हमारी मुलाकातें हुई। सभी लोग बेरोक-टोक हमसे मिलते थे। मुख्तलिफ पार्टियों के लोग अपनी-अपनी बात हमारे सामने रखते थे। हमने देखा, अपनी बातें रखने मे उन्हें किसी प्रकार की न कोई अदरूनी और न बाहरी रुकावट महसूस हुई। सबका दिल हमारे सामने खुला। जमातों से भी हमारी बातें हुई और अनफरदा हुई। उन सबका और यहाँ जो देखा, उसका हम पर काफी असर रहा।

प्रेममय क्रान्ति के आसार

हम समझते हैं कि इस सूबे में अमन और प्यार के तरीके से एक इन्किलाब होने जा रहा है और अपने भाइयों को अपने साथ करने मे लोगों के दिल खुल रहे हैं। हमारे देश के दिल मे हमेशा के लिए यह बात रही है कि हम अपने पड़ोसी पर प्यार करें, मिल जुलकर रहे, उसके साथ झगड़ा न करें। ये बातें पहले से ही हमारी तमद्दुन मे हैं। बीच मे १०-१२ साल पहले जरूर कुछ हैवानियत आयी थी। लेकिन वह थोड़े दिनों के लिए आयी और चली भी गयी। फिर से इन्सानियत कायम हुई। बात ऐसी है कि इन्सान के दिल मे बीच बीच में बुराई आती है, लेकिन वह टिकती नहीं। इन्सान की फितरत मे जो अच्छाई है, वही कायम रहती है। फिजा बिगड़ जाने की वजह से बीच-बीच मे बुराई आती है।

आज की बहुत सारी कशमकश बनावटी

आज दुनियाभर मे कशमकश चल रही है। उसमे से बहुत सारी बनावटी है। चद लोगों ने अपने खयालों के लिए उन्हे खड़ा किया है। उनमे खुदगर्जी है, बहुत-सी गलतफहमी है और कुछ असलियत भी है। असलियत यह है कि अभी भी हमारे देश में गरीबी मिटी नहीं, बल्कि कायम है। हमने उसमे कुछ फर्क तो जरूर किया है, लेकिन बहुत ज्यादा फर्क नहीं किया है। हमें बहुत-सी मुश्किलातों का सामना करना पडा था। इस पर सोचते हुए हमने कुछ तरक्की तो की है, लेकिन जितनी करनी चाहिए, उतनी नहीं की। देश मे जो गरीबी है, उसका फायदा उठानेवाले पड़े हैं। यूरोप, अमेरिका मे हमारे जैसी गरीबी नहीं है, फिर भी वहाॅ झगड़े कम नहीं हैं। वहाॅ गरीबी के नहीं, अमीरी और खुशहाली के मसले हैं। जैसे गरीबी के मसले होते हैं, वैसे ही खुशहाली भी इन्सान के लिए मसला बन जाती है। अमीरी हो तो इन्सान का दिल, जिसे कुरानशरीफ मे 'हयातुद दुनिया' कहा है, उसमे याने इस चद रोज की दुनिया मे फॅस जाता है। फिर दिमागी बुराइयाँ और बीमारियाँ बढ़ जाती हैं। यूरोप, अमेरिका मे बाहरी तरक्की खूब हुई है। वहाॅ खाना, पीना, कपडा खूब है। ऐशोआराम के तरह-तरह के साधन मौजूद है, फिर भी एक चीज की कमी है। वहाॅ दिल मे सुकून, शान्ति, तसल्ली नहीं है। वहाॅ के डॉक्टरों के सामने दिमागी बीमारियों का मसला पेश है। वहाॅ तरह-तरह के पागलपन है। इन्सान के दिमाग पर एक जज्बा हावी हो जाता है। कभी गुस्सा हावी हो जाता है और वह अपने दिमाग पर काबू नहीं कर पाता।

अमीरी में भी खतरा

इसलिए समझना चाहिए कि सिर्फ गरीबी मिटने से मसले हल नहीं होंगे। वह तो जरूर मिटनी ही चाहिए। लेकिन इन्सान पर अमीरी का हमला होता है, तो वह गलत रास्ते पर जाता है। इसलिए बीच की राह

लेनी चाहिए। न गरीबी हो, न अमीरी, बल्कि मसावात हो। आखिर हमारी जिंदगी का मकसद खाना, पीना और बाल-बच्चे पैदा करना ही नहीं है, बल्कि परमात्मा के पास पहुँचकर उनका दीदार हासिल करना है। हमें इस दुनिया में ऐसा काम करना चाहिए, जिससे हम परमात्मा की आजमाइश में फेल न हों और उनके पास इज्जत के साथ पहुँचें। जहाँ गरीबी होती है, वहाँ इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है। उसमें सोचने की ताकत नहीं रहती, जिससे तरह तरह की उलझनें पैदा होती हैं। अमीरी हो, तो भी तरह-तरह के मसले पैदा होते हैं। इस तरह गरीबी में भी खतरा है और अमीरी में भी। इन्सान को परमेश्वर ने ऐसा पैदा किया है कि उसे न तो इधर झुकना चाहिए और न उधर ही। बल्कि सीधी राह लेनी चाहिए, जिसे कुरानशरीफ में 'सिरातुल मुस्तकीम' कहा है। इसलिए हमें सोचना चाहिए कि हमें अपने मुल्क में क्या करना है।

टीले की मिट्टी खोद गढ्ढे में भरो

बड़ी खुशी की बात है कि यहाँ के लोगों के दिल इस बात के लिए तैयार हैं कि हम अपने गाँव का एक कुनबा बनायें, गाँव के लिए योजना बनायें। यहाँ के आपके नुमाइन्दा कह रहे थे कि हम ईमान की बात को मानते हैं। इन्सान का एक ईमान होता है और वह चाहता है कि हम ईमान पर कायम रहें, हमारा ईमान न टूटे। लेकिन अगर इन्सान अपना दिमाग खो बैठता है, तो उसका ईमान टूट जाता है। इसलिए यह जरूरी है कि न तो ज्यादा गरीबी हो और न ज्यादा अमीरी ही। मैं किसीको ज्यादा अमीर देखता हूँ, तो मुझे दुःख होता है। मैं अपने अमीर मित्रों से कहता रहता हूँ कि खबरदार रहो, जैसे दुःख में खतरा है, वैसे ही सुख में भी। चढ़ाई में खतरा है, तो उतराई में भी है। उतराई हो, तो बैल जोर से दौड़ना चाहते हैं। उस समय उन्हें काबू में न रखा जाय, तो गाड़ी गड्ढे में गिरने का खतरा रहता है। जैसे उतराई पर बैल बेकाबू होते हैं,

वैसे ही सुख मे, ऐशो-आराम मे इन्सान दौड़े जाता है और पता नहीं चलता कि वह किस गड्ढे मे गिरेगा। जैसे चढ़ाई पर बैल आगे बढ़ना ही नहीं चाहते, उन्हें पीछे से ढकेलना पड़ता है, वैसे ही दुःख मे हमारी इन्द्रियाँ आगे बढ़ने से इनकार करती है। चढ़ाई और उतराई दोनों हालत मे इन्सान को सावधान रहना ही पडता है। हाँ, लेकिन जहाँ ऊँचा-नीचा न हो, बिलकुल समान, सीधा रास्ता हो, वहाँ सावधान रहने की जरूरत नहीं पडती। ऐसे रास्ते पर बैल आगे बढ़ते रहते हैं और गाड़ीवाला सो भी जाता है। इस तरह यूरोप-अमेरिका का अनुभव दिखा रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा सुख होता है, वहाँ भी खतरा है। अपने देश का अनुभव बता रहा है कि जहाँ बहुत ज्यादा दुःख—गरीबी होती है, वहाँ भी खतरा है। टीले और गड्ढे हों, तो वहाँ खेती नहीं हो सकती। इसलिए करना यह चाहिए कि टीले की मिट्टी खोदकर गड्ढे मे भरनी चाहिए, तभी खेती होगी।

हमें ग्रामदान करना है

हमे अपने देश मे यही करना होगा और समझ-बूझकर करना होगा। हमारे पास ज्यादा सुख है, तो अपने दुःखी पड़ोसी के लिए उसका हिस्सा देना चाहिए। इसीको ग्रामदान कहते हैं। हम अपने गाँव की जमीन की मालकियत मिटाकर जमीन सबकी बना दें और यह तय करें कि हम अपनी जरूरियात की चीजें गाँव मे ही पैदा करेंगे। आज गाँव के लोग सारा कपड़ा बाहर से खरीदते हैं। लेकिन अगर वे तय करें कि हम गाँव मे चरखा चलायेंगे, तो घर-घर मे थोड़ी-थोड़ी दौलत आयेगी। जैसे बारिश बूँद-बूँद गिरती है, लेकिन सब दूर गिरती है, इसीलिए थोडे समय मे ही कुल जमीन तर हो जाती है, वैसे ही चरखा हर घर मे बूँद-बूँद दौलत पैदा करता है। लेकिन मिलों से वैसी ही हालत होती है, जैसे बडा नल होने पर एक ही जगह खूब पानी मिलता है, लेकिन बाकी सारा सूखा ही रह जाता है। हमे अपने गाँव मे यही सब करना है।

ये सर्वोदय-सन्देश के प्यासे

पहले हमें यहाँ ग्रामदान की बात कहने मे डर मालूम पड़ता था। हमे लगता था कि हम जम्मू कश्मीर के लोगों की हालत नहीं जानते। १० साल पहले यहाँ काफी आफतें आयी थीं। उससे एक जज्बा था। इसलिए न मालूम यहाँ के लोग हमारी बात कबूल करेंगे या नहीं। लेकिन हमने यहाँ एक अजीब बात देखी। हमने देखा कि यहाँ के लोग हमारी बातें सुनने के लिए बिलकुल प्यासे हैं। जैसे धूप से तपी हुई जमीन हो, तो वह पहली बारिश का पानी चूस लेती है, वैसे ही यहाँ के लोग बिलकुल तपे हुए थे और अब उन्हे लग रहा है कि बारिश बरस रही है।' वे चाहते ही थे कि सर्वोदय-विचार यहाँ आये। मजहब, पार्टी, जबानें ये सब चीजे दिल के टुकड़े करती हैं। लेकिन सर्वोदय-विचार सबको जोड़नेवाला है। इससे सबके दिल को तसल्ली हो रही है। इसलिए अब मै यहाँ बिलकुल बेखटके घूम रहा हूँ। पहले मुझे लगता था कि यहाँ सँभल-सँभलकर चलना होगा। लेकिन अब लगता है कि उसकी कोई जरूरत नहीं, यह अपना ही मुल्क है। यहाँ के लोग सर्वोदय का सदेश सुनने के लिए इन्तजार मे ही हैं।

अच्छा बोलो, तो खुदा इमदाद देगा

यहाँ भाइयों ने मुझसे कहा कि यहाँ ग्रामदान हो सकता है। जहाँ उन्होंने कहा कि बनेगा, वहाँ वह भगवान् का कौल हो गया। अपनी जबान से अच्छा शब्द निकला, तो भगवान् मदद करता है। वह तो मदद देने के लिए तैयार बैठा ही है और देख रहा है कि कौन मदद माँगता है। लेकिन तुम कहोगे कि मुझे बुराई मे दिलचस्पी है और हे खुदा ! मुझे तेरी मदद की दरकार है, मैं पड़ोसी का खेत लूटना चाहता हूँ, मुझे इमदाद दो, तो वह इमदाद नहीं देगा। अच्छा कौल बोलोगे, तभी वह इमदाद देगा।

ताकत से बाहर की भी बोलो

दूसरी बात यह है कि जब तुम अपनी ताकत के बाहर का काम उठा-

ओगे, तभी वह इमदाद देगा। अगर तुम अपनी ताकत के अन्दर की बात कहोगे, तो वह इमदाद नहीं देगा। वह कहेगा कि "तुम अपनी ताकत से काम करो।" कोई लड़का भगवान् से माँगे कि "हे खुदा! मुझे परीक्षा मे पास करो", तो भगवान् कहेगा कि "इसमे मेरी मदद की जरूरत नहीं, तुम पढाई करो।" इस तरह अच्छा काम हो और वह इतना ऊँचा हो कि अपनी ताकत के बाहर का हो, तभी भगवान् मदद देता है। ग्राम-दान करना है, भलाई से बदलना है, शान्ति-सैनिक बनना है, ऐसी बात कहोगे, तो भगवान् कहेगा कि मै मदद दूँगा।

निजी अनुभव

वैसे किताबों ने, शास्त्रो ने यही कहा है, लेकिन मै अपने अनुभव की बात कह रहा हूँ कि वह मदद देने के लिए तैयार बैठा है। भूदान-यज्ञ इसी तरह शुरू हुआ। यहाँ सीलिंग हुआ, तो भी लोग दान दे रहे है याने अपना पेट काटकर दे रहे है। परमात्मा सबसे दिला रहा है। यह मेरे अनु-भव की बात है कि परमात्मा पर भरोसा रखकर अपनी ताकत के बाहर की बात उठाने पर वह जरूर पूरी होती है। अपनी ताकत से नहीं, उसकी ताक़त से होती है।

आप ग्रामदान करेगे, तो जम्मू-कश्मीर मे एक बुनियादी इन्कलाब होगा और ऐसे तरीके से होगा कि सबको सब किस्म का फायदा होगा। किसीको कोई नुकसान नहीं होगा। यहाँ के लोगों ने हमे यकीन दिलाया है कि यहाँ ग्रामदान होगा और हम करके ही रहेगे। तब हमे एहसास हुआ कि हम यहाँ आये है, तो यहाँ के लोगों की खिदमत मे हम कुछ कर सकते है और भगवान् के भरोसे वह होकर रहेगा।

नारियाँ
२१-६-'५९

: २३ :

खिलाकर खाना ही इन्सानियत है

दो बयान

आज सुबह हमने यहाँ के लोगों से कहा था कि कुरान पढनेवाले हमारे पास आये। हम किरात सुनना चाहते हैं। कुछ भाई आये थे और हमने उनसे घण्टाभर कुरान की किरात सुनी। फिर उनके साथ कुछ बात-चीत भी की। हमने उनसे पूछा कि आपका कैसा चल रहा है? एक भाई बोले कि ठीक चल रहा है। सब लोग मुहब्बत से रहते हैं। कोई खास झगडा नहीं है। लोग अपनी-अपनी मेहनत, मशक्कत से जिंदगी बसर कर रहे हैं। दूसरे भाई ने कहा कि यहाँ पर बहुत बड़ी जमात ऐसी है, जो जहालत में पड़ी है, वह कुछ जानती नहीं है और जाननेवाली एक छोटी जमात है, जो सबका खून चूसती है। उन्होंने कहा कि कुछ ऐसे लोग हैं, जो दूसरो को चूसते हैं। उन दोनों की बातें सुनकर हमें बड़ा ताज्जुब हुआ। हम सोचने लगे कि कुरानशरीफ लेकर आनेवाले दोनों शख्स इस तरह का मुख्तलिफ बयान देते हैं, तो आखिर असलियत क्या है? हमने समझा कि दोनों बातें सही हैं। दोनों में कुछ हिस्सा सही है।

ऊपर देखने से हसद, नीचे देखने से रहम

इन्सान का अपना अपना नजरिया होता है। जब इन्सान ऊपर देखता है, तो उसके दिल में हसद, जलन, ईर्ष्या पैदा होती है। लखपती, करोड़पती की तरफ देखता है, तो दु:खी होता है। वह सोचता है कि मेरे पास तो सिर्फ लाख ही रुपये हैं। दूसरे के पास करोड़ रुपये हैं। वह कितना खुश-हाल है। इस तरह वह अपने को कमजोर पाता है और उसके मन में

हसद पैदा होती है। जो शख्स नीचे की तरफ देखता है, उसे दुःखी जमात दिखाई देती है। वह देखता है कि लोग कितने गरीब हैं, गये-बीते हैं। उनकी फिक्र करनेवाला कोई नहीं है, तो वह समझता है कि इनसे मैं बहुत खुशहाल हूँ। मुझे ५० रुपये मिल रहे हैं। दुनिया मे कई लोग ऐसे हैं, जिन्हे कुछ भी नहीं मिलता है। यों सोचकर वह अपने ५० रुपये मे से ५ रुपये खैरात के लिए निकालता है। इस तरह नीचे देखने से ५० रुपये-वाले के दिल मे हमदर्दी, रहम पैदा होती है और ऊपर देखने से ५ लाख पानेवाला भी दुःखी होता है।

कुरानशरीफ मे कहा है **'मिम्मा रजक़ना हुम् युन् फिक़ून'**। अल्लाह ने तुम्हे जो भी रिज्क दिया है, उसमे से थोड़ा हिस्सा दूसरों को देना चाहिए। वह अपना फर्ज है।

पहाड़ पर पानी गिरता है, तो नीचे की तरफ जाता है। यहाँ भी लोटाभर पानी डाला जाय, तो वह नीचे की तरफ ही दौड़ेगा। पहाड़ के खयाल से यहाँ की जमीन निचान पर ही है। लेकिन यहाँ का पानी इससे भी निचान की तरफ दौड़ता है। दुनिया का कुल पानी सबसे नीचे जो समुद्र है, उसकी तरफ दौडता है। यहाँ का पानी यह नहीं सोचता है कि समुद्र की तरफ जाना तो पहाडवाले पानी का काम है, मेरा नहीं। पानी की यह सिफत हमे लेनी चाहिए। जैसे पानी हमेशा निचान की तरफ दौड़ता है, वैसे ही हमे उससे सबक़ लेना चाहिए कि हमे भी समाज मे जो सबसे दुःखी हैं, गरीब हैं, उनकी इमदाद मे दौड़ना चाहिए। मुझे दो रोटी की भूख है और मेरे पास एक ही रोटी है, तब भी उसमे से एक टुकड़ा दूसरे को देना चाहिए और फिर बची हुई रोटी खानी चाहिए, यही इन्सान का फर्ज है। इसीमे इन्सानियत है। अगर ऊपर देखा करोगे, तो दिल में खयाल आयेगा कि हमे और ज्यादा मिलना चाहिए। इस तरह हवस को बढ़ाते जाना—यह इन्सानियत नहीं है। यह तो इन्सान के जिस्म मे छिपी हुई हैवानियत है।

कश्मीर पर अल्लाह का फज्ल

मैं देख रहा हूँ कि कश्मीर के लोगों के दिल तैयार हैं। जमीन तपी हुई हो, तो पहली बारिश होने पर वह पानी को चूस लेती है, क्योंकि वह प्यासी होती है। वैसे ही यहाँ प्रेम की प्यास है। मुझे यहाँ अजीब तजुरबा हो रहा है। पहले मुझे इतना खयाल नहीं था कि मै कश्मीर जाऊँगा, तो इतनी हमदर्दी, इतना नरम दिल दीखेगा और इतने प्रेम के प्यासे लोग मिलेंगे। यहाँ मुझे जो तजुरबा हो रहा है, उससे मुझे लगता है कि अल्लाह का फज्ल इस मुल्क पर है। इससे यहाँ बहुत काम बनेगा।

खामोशी की ताकत

यहाँ पर हम सबने मिलकर खामोशी मे भगवान् की प्रार्थना की। इस तरह सब मजहबवालों को इकट्ठा होकर प्रार्थना करनी चाहिए। खामोशी मे एक रूहानी तजुरबा होता है कि चाहे हम सब बाहर से अलग-अलग दीखते हों, तो भी अन्दर से एक हैं। इसीलिए हमने खामोशी का, मौन का तरीका रखा है। जहाँ मुख्तलिफ मजहबवाले लोग होते है, वहाँ उन सबको इकट्ठा बैठकर खामोशी मे, भगवान् मे गोता लगाना चाहिए। उसका दिल पर बड़ा असर होता है और दिल की ताकत बढती है। भगवान् का नाम लेकर हमे अलग-अलग नहीं होना चाहिए।

रजौरी
२३-६-'५९

: २४ :

'घायल की गत घायल जाने'

वहाव के खिलाफ न जाइये

यहाँ जमीन की माँग बहुत है। हमारे पास बेजमीनो की ओर से कई अर्जियाँ आयी हैं। उन्हे तो जमीन देनी चाहिए, लेकिन उनसे भी ज्यादा जमीन की जरूरत उनको है, जो लिखना नहीं जानते और यह भी नहीं जानते कि जमीन की माँग कैसे की जाती है। आज बेजमीनों की तरफ कोई भी ध्यान नहीं दे रहा है। इस हालत मे अमन कायम नहीं रह सकता है। उसी तरह परमात्मा राजी न हो, तब भी अमन नहीं रहता है। दोनों एक ही चीज है—एक बाहर की, दूसरी अन्दर की। हमारे हर काम मे परमेश्वर की रजामन्दी होनी चाहिए। हम उस तरफ ध्यान नहीं देते, इसीलिए गलतियाँ होती हैं। कुरानशरीफ मे कहा है कि नदी के वहाव के खिलाफ जो जायगा, उसका बदतर हाल होगा और जो अल्लाह की मर्जी के खिलाफ जायगा, उसका भी बदतर हाल होगा। इसलिए बहाव किधर जा रहा है, यह आप पहचान लें।

हिन्दुस्तान-पाकिस्तान अवाम की भलाई में पैसा खर्च करें

आज यहाँ के कारीगर, जो लकड़ी का काम बहुत अच्छी तरह मे करते हैं, हमसे मिलने आये थे। जब पाकिस्तान की तरफ से यहाँ हमला हुआ और बाद मे हिन्दुस्तान की फौज आयी, तब उन्हे दोनों तरफ से तकलीफें झेलनी पड़ीं। हमलावर तो तंग करना चाहते हैं, लेकिन बचानेवाले, जो कि मदद करना चाहते हैं, वे भी तबाह करते हैं। हमलावर और बचानेवाले दोनों ने मिलकर कोरिया को तबाह किया। उसके दो टुकड़े हो गये।

इसीलिए हमारा कहना है कि तशद्दुद हिंसा से मसले हल नहीं होंगे। आज हिंसा इतनी खौफनाक बनी है कि हिंसा से मसला हल करना 'गुनाह बेलज्जत' होगा। अब कोई देश वैसे अफवामी मसले तशद्दुद से हल करने जाय, तो वह बेवकूफी होगी। आज फौज पर हिन्दुस्तान तीन सौ करोड़ और पाकिस्तान दो सौ करोड रुपया खर्च कर रहा है। दोनों भाई भाई हैं, लेकिन एक दूसरे के डर के कारण इतना खर्च कर रहे हैं। अगर यही खर्च अवाम की भलाई के लिए किया जाय, तो कुल गरीबों को, बेजमीनों को इमदाद मिल सकती है। मै चाहता हूँ कि यहाँ के कारीगरो को जमीन दी जाय, ताकि उनकी तकलीफें दूर हों।

तब इनकी लाशे बाहर आयेंगी

मुझे यह सुनकर दुःख हुआ कि यहाँ पर जिन मजदूरों ने सड़के बनाने का काम किया, उनकी अभी तक मजदूरी नहीं मिली। मजदूरों को इस तरह परेशान किया जाता है, इसके माने यह नहीं कि हमारे दिल मे हमदर्दी नहीं है, बल्कि यह है कि हम मजदूरों की हालत जानते नहीं। जब हम जान-बूझकर गरीबो की जिन्दगी जियेंगे, तभी उसका खयाल होगा। मैने खुद आठ-आठ घटा मजदूरी की है, इसलिए मै उनकी हालत को अच्छी तरह से जानता हूँ। एक कहावत है कि पानी मे मछली कैसे रहती है, इसका पता तभी चलता है, जब हम मछली का जनम लेगे। मजदूरों के घर मे अनाज और पैसे का ढेर नहीं होता है, जिससे कि बिना मजदूरी मिले ही वे अपना काम चला ले। इसलिए जब मैने सुना कि इन मजदूरों को दो महीने के बाद मजदूरी मिलेगी, तो मुझे लगा कि दो महीने बाद इनकी लाशें बाहर आयेंगी।

थाना मडी
२५-६-'५९

: २५ :

माली और अखलाकी तरक्की साथ-साथ

पाँच नमाज

सुबह चलते समय हमारी काफी चर्चा चलती है, जिससे इलम बढ़ता है, जो हमारी पहली नमाज है। हम सुबह की तकरीर मे प्रेम की बातें करते हैं और शाम की तकरीर मे इलम की, ज्ञान की बातें करते हैं। तो सुबह की तकरीर दूसरी नमाज हो जाती है। ग्यारह बजे हम कुरान शरीफ पढते और सुनते है। वह तीसरी नमाज हो जाती है। दोपहर को अक्सर बूढे ज्यादे मिलने आते हैं, जो हमारे साथ पैदल चल नहीं सकते हैं। जवानो को हम पैदल यात्रा मे ही समय देते हैं। दोपहर की मुलाकातें याने चौथी नमाज और शाम की सभा याने पाँचवीं नमाज हो जाती है।

सिर्फ पैदावार बढ़ाने मे तरक्की नहीं

आज एक भाई ने कहा कि अपने मुल्क का जो मकसद है पैदावार बढाने का, क्या वह भूदान से सधेगा ? हमने जवाब दिया कि हम जरूर चाहते है कि पैदावार बढ़े, क्योंकि हमारे मुल्क मे पैदावार बहुत कम होती है। चीन और जापान मे यहाँ से तिगुनी फसल होती है। इसलिए यह ठीक है कि हम नये-नये तरीके सीखें और पैदावार बढायें। लेकिन सिर्फ पैदावार बढ़ाने से, खाना-पीना खूब मिलने से इन्सान के दिल को तसल्ली नहीं होती। अमेरिका मे खाना, पीना, कपड़ा आदि सब चीजें खूब कसरत से मिलती है। परन्तु बहुत ज्यादा पैदावार होती है, तो उसका भी दिमाग पर खराब असर होता है। वहाँ पर जिस्मानी बीमारियाँ कम हैं, लेकिन दिमागी बीमारियाँ बढी हैं। तरह-तरह के ऐसे पागलपन बढ़े हैं, जिनका डॉक्टरों को कोई

अन्दाजा नहीं था। हमारे यहाँ जिस्मानी बीमारियाँ ज्यादा हैं, क्योंकि खाना कम मिलता है और लोगों को इल्म भी नहीं है कि क्या खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कैसे पकाना चाहिए। अमेरिका मे होश कम है और जोश ज्यादा है। खुदकुशियाँ भी बढ रही हैं। अनाज के दाम न गिरे, इसलिए वहाँ पर खडी फसल को जलाते हैं, जो एक किस्म का पागलपन ही माना जायगा। इसलिए समझना चाहिए कि यहाँ पर हम सिर्फ अमेरिका का नमूना बनायें और पाँचसालाना मसूबे बनायें, तो तरक्की नहीं होगी। पैदावार बढाना जरूरी है, लेकिन सिर्फ उतना करने से न तरक्की होगी, न अमन रहेगा, न दिल को तसल्ली हासिल होगी।

खुशहाली और तसल्ली

हमे समझना चाहिए कि अखलाकी और माली तरक्की दोनों साथ-साथ होनी चाहिए। अगर हम बेवकूफ हैं और हमारी थैली खाली है, तो उतना खतरा नहीं है, लेकिन थैली भरी हुई है, तो ज्यादा खतरा है। कानून से जमीन का बँटवारा हो, तो कुछ तो तरक्की होती है, लेकिन अखलाक नहीं बढता है। भूदान मे प्यार से जमीन दी जाती है और प्यार से ली जाती है, इसलिए दोनो का दिल वसी बनता है। दोनों मे प्यार पैदा होता है, तो अखलाक बढता है और ताकत पैदा होती है। अखलाकी तरक्की के साथ साथ माली तरक्की हो, तो इन्सानियत बढती है, नहीं तो इन्सान खत्म हो जाता है। इसलिए समझना चाहिए कि उपज बढाना पहली मजिल है। हमारा आखिरी मकसद तो यह है कि हम सब एक हों, एक-दूसरे के सुख से सुखी और दुःख से दुःखी हों, एक दूसरे के लिए मर मिटने के लिए राजी हो। हमे ऐसा समाज बनाना है, जिसमे किसी किस्म की मुखालिफत न हो, बल्कि प्यार हो। यह सब काम पाँचसालाना मनसूबे से नहीं होगा।

सूरनकोट
२८-६-'५९

: २६ :

'पहुँच' नगरी से प्यार का पैग़ाम

बहुत खुशी की बात है कि हम यहाँ आ सके। इस शहर का नाम तो बहुत दिनों से सुनते रहे। इसका नाम बहुत दिनों से सारे भारत मे मशहूर हुआ है—कोई आपकी करनी से नहीं, परमात्मा की करनी से। हमारी ख्वाहिश थी कि कभी जम्मू-कश्मीर की यात्रा करेंगे, तो पूँच जरूर देख लेंगे और वहाँ के लोगों की हालत देखेंगे।

सभी किताबों में एक चीज : रूहानियत

आप सभी जानते हैं कि हिन्दुस्तान मे मुख्तलिफ जमातें रहती हैं और आज तक बहुत प्यार से रहती आयी है। आज भी हिन्दुस्तान की मुख्तलिफ जमातो मे काफी प्यार है। मैं असम छोड़कर सारा हिन्दुस्तान देख आया हूँ। इसलिए जानता हूँ कि हिन्दुस्तान के देहातों मे जमातें बहुत प्यार से रहती है। फिर भी जहालत (मूर्खता) की वजह से कभी-कभी कुछ बातें हो जाती हैं। उसका यही इलाज है कि हम एक होकर मिल-जुलकर रहे और समझ लें कि अल्ला का पैगाम उसके सब रसूलो ने कहा है। हर जमात में रसूल हो गये हैं—हिन्दुस्तान मे, अरबस्तान मे और यूरोप मे भी। भगवान् गौतम बुद्ध, राम, कृष्ण, इब्राहिम, मूसा, ईसा—इन पैगम्बरो को तो सभी जानते है। लेकिन और भी कई नबी, वली तथा साधु-सन्त हो गये हैं, जिन्हे सभी लोग नहीं जानते। परमात्मा का फज़्ल है कि हर देश मे ऐसे लोग आये हैं। उन्होने जो किताबे लिखी है, उन्हे लोग पढते हैं। कोई कुरान पढता है, तो कोई बाइबिल, कोई वेद, कोई रामायण, गीता या गुरुग्रन्थ साहब पढ़ता है। लेकिन मै इनमे से हर

किताब पढता हूँ। सब किताबो का मुताला मै कई बार कर चुका हूँ। इन सभी किताबो मे मुझे एक ही चीज मिलती है—रूहानियत। फिर भी इन किताबवालो ने इन किताबों को झगडा करने का एक साधन, एक जरिया बना लिया है। किताबों के नाम से ही झगड़े होते है। लेकिन इन किताबो के नाम से कोई झगडा करेगा, तो बिलकुल बेवकूफ माना जायगा। आज विज्ञान बहुत बढा हुआ है। इन्सान के साथ इन्सान एक हो रहा है। बडे-बड़े देश १५-२० मिनट के फासले पर आ गये हैं। यहाँ से रूस का फासला आधा घटे का है। चीन का एक घटे का है। इन दिनों मेरे जैसे पैदल चलनेवाले हैं, लेकिन दुनिया मे काम करनेवाले दूसरे लोग पैदल नहीं चलते हैं, हवाई जहाज से जाते हैं। लाखों की फौज हवाई जहाज से इधर-उधर भेजी जाती है। पुराने जमाने मे अग्रेज यहाँ आये, तो उन्हे छोटी किश्तियों मे ७ ८ हजार मील का लम्बा समुद्र पार करना पडता था और उसमे ४-६ महीने चले जाते थे। इतनी तकलीफ उठाकर वे यहाँ आये, उन्होने तिजारत की और यहाँ का राज्य हासिल किया। लेकिन अब इग्लैंड का फासला एक दिन का ही है। जो समुद्र पहले देशों को तोडनेवाले थे, वे अब जोड़नेवाले बन गये हैं। पहले समुद्र ने अमेरिका को जापान से अलग किया था, लेकिन अब समुद्र ने उन्हे जोडा है। दोनो देश पडोसी बन गये हैं। उनके बीच सिर्फ दस हजार मील लम्बा समुद्र है। जिस दुनिया मे कुल दुनिया के लोगो का एक-दूसरे के साथ ताल्लुक आ रहा है, उस जमाने मे भी जो किताबो के नाम लेकर झगडे करेंगे, वे खुद तो खत्म हो ही जायँगे, बल्कि किताबो के साथ खत्म हो जायँगे।

धर्म के नाम पर फसाद करने मे दोहरा पाप

ये लोग किताबें नहीं पढते, इसीलिए झगड़ते है। मैंने कुरान शरीफ पढा है और उसमे अनमोल रत्न पाये हैं। गीता मे गोता लगाया है और वहाँ से जवाहर पाये हैं। बाइबिल पढ़ी है और उसमे बहुत अच्छी नसीहत

पायी है। इन दिनों पंजाब में मैंने गुरु नानक की किताबें पढ़ीं। झगड़ा करनेवाले झगड़ा करें, लेकिन मैंने देखा कि गुरु नानक, मुहम्मद पैगंबर, ईसामसीह, मूसा, बुद्ध भगवान्, राम, कृष्ण—ये सब लड़नेवाले नहीं थे। फिर भी उनके भगत कहलानेवाले आपस में लड़ते रहते हैं, एक-दूसरे को उभाड़ते रहते हैं। कौमों में फसाद, झगड़ा करना एक पाप है, लेकिन धर्म के नाम पर फसाद करने में दोहरा पाप होता है।

सभी धर्म-ग्रन्थों का अध्ययन करें

मैंने आज गीता-भवन के भाइयों से, जो मुझसे मिलने आये थे, कहा कि सच्चे दिल से गीता-प्रचार करो। रोज सुबह ११ बजे मैं कुरान शरीफ सुनता हूँ। मैं चाहता हूँ कि यहाँ के मुसलमान गीता भी पढ़ें और हिन्दू कुरान पढ़ें। लोग एक-दूसरे की किताबें पढ़ेंगे, तो दिल के साथ दिल जुड़ जायगा। मैं अपने तजुर्बे से कहता हूँ कि हम एक-दूसरे की किताबें पढ़ेंगे, तो बहुत ही अच्छा होगा। चार गवाह एक ही बात कहते हैं, तो वह पक्की हो जाती है। हम दूसरों की किताबें भी पढ़ेंगे, तो हमारे ध्यान में आयेगा कि जो बात मुहम्मद पैगंबर ने कही, वही भगवान् बुद्ध ने, राम ने, कृष्ण ने, गुरु नानक ने और ईसामसीह ने कही है। मैं जन्म से ही हिन्दू हूँ, लेकिन मैंने कुरान शरीफ पढ़ा है, गौतम बुद्ध पर किताब शाया की है। अभी एक महीने तक मैंने जपुजी पर तकरीरें कीं। आज मैंने गीतावालों से कहा है कि सिर्फ संस्कृत मत सिखाओ, गीता के साथ सिखाओ। हरिजनों को भी गीता सिखाओ। यहाँ के लोगों से मैं अर्ज करता हूँ कि हम लोग गीता, कुरान और गुरुग्रन्थ का मुताला करें और मिली-जुली जमात बनायें, तो हमारा बहुत काम होगा। हम मजहबों में फर्क करेंगे, हमारी-तुम्हारी कहेंगे, तो कुरान शरीफ में जो बात कही है, उसे भूलेंगे। उसमें कहा है कि 'उम्मतुँ वाहिद।' अरे रसूलो! तुम जिस किसी मुल्क में पैदा हुए हो, सभी एक जमात हो। तुम्हारी इज्जत एक-

सी है। इसका मतलब यह हुआ कि जितने अच्छे, भले और नेकी की राह पर चलनेवाले लोग हैं, सारे एक ही हैं। हमें सचाई पर चलना चाहिए। एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। दुखियों के लिए हमदर्दी, रहम रखनी चाहिए। ये बातें जिनकी जिदगी में आयीं, वे सब एक ही जमात के हैं। लेकिन हम समझते हैं कि ये हिन्दू हैं, वे मुसलमान हैं, वे सिख हैं, यह बात छोड देनी चाहिए।

हिन्दुओं में जाति-भेद बने हैं, जो गलत हैं। जातियाँ जो बनीं, धधे की वजह से बनीं। खेती करनेवाले किसान, तेल बनानेवाला तेली, जूते बनानेवाला चमार, इस तरह धन्धों के नाम से जातियाँ बनीं। उसमें ऊँच-नीच का कोई ख्याल नहीं था। परमात्मा की निगाह में सब एक हैं। **'नानक उत्तम नीच न कोई'** गुरु नानक ने और कहा है कि **'जिस हथ जोर करी देखै सोई।'** जिसके हाथ में जोर है, उसका चलता है और उसका जिस पर फज्ल है, वह ऊँचा बनता है और जिस पर उसका गजब है, गुस्सा उतरता है, वह नीच बनता है। अपने में कोई उत्तम या नीच नहीं है। यही बात हर मजहब ने और हर किताब ने कही है।

ईमान के साथ नेक काम जरूरी

मैं चाहता हूँ कि इस खूबसूरत नगरी में दिल की खूबसूरती दिखाई दे। यहाँ रहकर हम अपनी जिंदगी बदसूरत बनायेंगे, तो कैसे चलेगा? जब हम समझेंगे कि हम सब इन्सान हैं और इन्सानियत की नसीहत कबूल करेंगे, तभी हमारी जिन्दगी खूबसूरत बनेगी। हमारी सभी किताबों में हमेशा ईमान पर जोर दिया गया है और ईमान के साथ-साथ नेक आमाल, अच्छे काम पर भी जोर दिया है। कुरान शरीफ में कहा है : **'अल्लजीना आमनु व आमिनुस्सा लिहात व तवासौ बिल्हक व तवासौ बिस्सब्र।'** भले लोग वे होते हैं, जो अल्ला पर ईमान रखते हैं और नेक काम करते हैं (नेक काम न करें, तो ईमान रखने का कोई मानी ही नहीं

है), एक दूसरे को हुक्म पर चलने की हिदायत देते रहते हैं, एक-दूसरे को जगाते रहते हैं, कहीं कोई गलत रास्ते पर जाय, तो एक-दूसरे को बचाते है, एक-दूसरे को सब्र देते हैं। कहीं मेरा सब्र टूट जाता है, तो आप मुझे बचाते हैं और आपका टूट जाता है, तो मै बचाता हूँ। मतलब यह कि ईमान रखना, नेक काम करना और एक-दूसरे को बचाना, यह थोड़े मे कुरान शरीफ का अर्थ है। मैं चाहूँगा कि आपकी इस सुन्दर नगरी में आपके दिल एक हो जायँ। वे हो सकते हैं। इसमे कोई मुश्किल नहीं है। आप पक्का यकीन कर लें कि हम एक होकर रहेंगे और मजहब के नाम से कोई फर्क नहीं करेंगे।

मजहब है सिखाता, आपस मे प्यार करना

एक शायर का मशहूर जुमला है : 'मजहब नहीं सिखाता, आपस मे वैर रखना।' मैं इसे बहुत ज्यादा अहमियत नहीं देना चाहता। बल्कि मैं कहना चाहता हूँ कि 'मजहब है सिखाता, आपस मे प्यार करना।' सिर्फ वैर मत करना, इतना ही काफी नहीं है, प्यार भी करना चाहिए। सब पर प्यार करने के वास्ते मजहब निकला है। कुरान शरीफ मे कहा है कि अरबों के लिए हमने अरबी जबान बोलनेवाला रसूल भेजा है, ताकि आप उसका पैगाम समझें। अल्ला ने हर कौम और हर जबान बोलनेवालों के लिए रसूल भेजे हैं। मराठी, बगाली, हिन्दी वगैरह जबानें जाननेवालों के लिए अल्ला ने उस जबान मे बोलनेवाले रसूल भेजे हैं और कहा है कि हम रसूलों मे कोई फर्क नहीं करते : 'ला नफर्रिकु बैन अहदिम् मिर रसुलिह।' कुरान शरीफ मे कुछ रसूलो के नाम दिये है। जैसे : दाऊद, नूह, मूसा, ईसा। आखिर मे कहा है कि 'इनके अलावा और बहुत-से रसूल हो गये हैं, जिनका नाम तुम नहीं जानते।' कश्मीर मे ६०० साल पहले लल्लेश्वरी हुई थी, जिसके वचनों का अग्रेजी मे तर्जुमा मैंने अभी पढा, तो ताज्जुब रह गया। आखिर लल्ला ने कश्मीरी जबान मे ही तो लिखा। कश्मीर के लोगों

को अल्ला का पैगाम सुनाने के लिए अल्ला ने रसूलों को भेजा। इसलिए हम रसूलों के नामों पर लड़ते रहेंगे, तो हमारी जिन्दगी नापाक बनेगी और हम बर्बाद हो जायँगे। अगर हम पूँछ शहर में अच्छी जिन्दगी बनायेंगे, तो वह चीज सर्वत्र पहुँच जायगी। इसका नाम पूँछ नहीं, 'पहुँच' है। इसलिए यहाँ पर हम नेक काम करेंगे, तो उसका असर हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत सर्वत्र होगा।

ग्रामदान ही अकेला इलाज

मेरे पास हरिजन, शरणार्थी, भूतपूर्व सिपाही आदि कई जमातों के लोग आते हैं और अपना-अपना दुःख सुनाकर जमीन माँगते हैं। हरिजनों को मकान बनाने के लिए थोड़ी-सी जमीन चाहिए। आप जितना दान दे सकते हैं, दें, ताकि इन सबको जमीन दी जाय। जब आप अपने भाइयों के लिए जमीन देंगे, तब कहा जायगा कि आपने रूहानियत का नजरिया समझा है। एक बात याद रखिये कि हमें अपने-अपने दुःख नहीं रोना चाहिए। हम हरिजन, हम मुजाराएँ, हम बेजमीन, इस तरह नहीं सोचना चाहिए। बल्कि पूरे गाँव के बारे में सोचना चाहिए, जो ग्रामदान से ही हो सकता है। आप जमीन की मिल्कियत मिटाकर जमीन गाँव की बनायेंगे, तो आपके बहुत-से सवाल हल हो जायँगे। ग्रामदान होने पर हरिजन, शरणार्थी, वापस आनेवाले फौजी सिपाही, सबको जमीन का हिस्सा मिल सकता है। आज जो भाई यहाँ से पाकिस्तान गये हैं, वे वापस आयें, तो उन्हें भी गाँव के कुनबे में जगह मिलेगी।

मेरे दिल में सबके लिए जगह

जैसे बच्चे आपस में लड़ते हैं, लेकिन माँ के पास सभी पहुँचते हैं, माँ किसी बच्चे को आने से रोक नहीं सकती, या जैसे हर नदी-नाला समुदर में जाता है, समुदर नाले को यह कहकर इनकार नहीं करता कि तेरा पानी गन्दा है, वैसे ही सब जमातों के, पार्टियों के लोग बड़े प्यार से हमारे पास

आते हैं, तो हमारे दिल मे भी सबके लिए जगह है। डॉक्टर कहते हैं कि हमारा दिल छोटा सा है। उपनिषदों मे भी कहा है : 'अंगुष्ठमात्रः पुरुषः।' दिल अँगूठे जितना है, तो पूछा जा सकता है कि इतने छोटे से दिल मे सबके लिए जगह कैसे हो सकती है? मैं कहना चाहता हूँ कि जो भी कोई अपने दिल से अपने को हटा ले, तो फिर उसके दिल मे सब कोई पैठ सकते हैं। अपने को वहाँ रखने से अड़ंगा लगता है। इन्सान कहता है कि 'मैं इस जिस्म का मालिक हूँ।' अरे बेवकूफ! तू इस जिस्म का मालिक कैसे हुआ! तू मरेगा, तो लोग इस जिस्म को जलाने या दफनाने के लिए ले जायँगे। जिसने माना कि यह जिस्म मेरा नहीं है, सबका है, उसके दिल मे सबके लिए गुंजाइश है। आठ साल से हमारी पैदल यात्रा आप सबके दर्शन के लिए चल रही है। आप लोगो का दर्शन पाकर हमे बहुत खुशी होती है और यही तजुर्बा होता है कि हमे अपने इन सब भाइयों मे अपना ही चेहरा दीख रहा है। आपमे हम अपना ही रूप देखते हैं। आपमे-अपने मे कोई पर्दा नहीं देखते। इसीलिए सब हमारे पास आते हैं।

कुत्ते का स्वागत-प्रवचन

आज हम यहाँ आ रहे थे, तो एक कुत्ता हमारे साथ चल रहा था। रास्ते मे देहात के कुत्ते भूँकने लगे। मैंने कहा कि आप जो समझना चाहे, समझें। लेकिन मैं तो समझता हूँ कि ये कुत्ते मेरे स्वागत मे भूँक रहे हैं। 'इस्तकबालिया कमेटी' (स्वागत कमेटी) की तरफ से भूँकते हैं और कहते हैं कि "आओ, आओ" इस तरह हम महसूस करते हैं कि इन्सान हो या दूसरा कोई जानवर, हम सब बराबर हैं। इन्सान, कुत्ते, गाय, बिल्ली ये सब एक ही सर्किल पर, अलग-अलग जगहो पर खड़े हैं और अल्लामियाँ बीच मे खडा है। इसलिए वे सबसे समान फासले पर हैं और सब पर प्यार करते हैं। लेकिन कोई अल्ला की तरफ मुँह न कर दूसरी तरफ मुँह करे, तो

उसे अल्ला का प्यार कैसे मिलेगा? एक कुत्ता भी अल्ला की तरफ मुँह करेगा, तो उसका प्यार पायेगा और इन्सान भी दूसरी तरफ मुँह करेगा, तो उसका प्यार न पायेगा। हमारी निगाह में जानवर और इन्सान सब हमारे साथी हैं। इसलिए जानवरों पर भी प्यार होना चाहिए। उन्हें बेरहमी से मारना-पीटना गलत है।

मेरे लिए अल्लाह से दुआ माँगिये

हम यहाँ से जायँगे, तो पता नहीं, दुबारा कब यहाँ आयेंगे। पैदल चलनेवाला यह दावा नहीं कर सकता कि दुबारा आऊँगा। भगवान् ने चाहा, तो वह हमें वापस यहाँ भी ला सकता है और उसने चाहा, तो यहाँ हमारी कब्र भी बन सकती है। हम चाहते हैं कि पीर पचाल लाँघकर कश्मीरवादी में जायँ। लेकिन उसने हमें यहीं से उठा लिया, तो हमें जरा भी दुःख न होगा। हम यह नहीं कहेंगे कि "अल्ला, तुमने मुझे क्यों उठाया? मुझे भूदान में यह करना था, वह करना था।" मेरी अपनी कुछ भी ख्वाहिश नहीं है कि यह हो या वह हो। इसलिए भगवान् ने चाहा, तो हम पीर पचाल लाँघकर कश्मीर जायँगे। नहीं तो 'पीर पूँच' भी बन सकते हैं। इसलिए जैसे यह आपकी और हमारी पहली मुलाकात है, वैसे ही मुमकिन है कि यह आखिरी मुलाकात भी हो। तो आप हमारे लिए अल्ला से दुआ माँगें, भगवान् से प्रार्थना करें कि यह शख्स सबके दिल जोड़ने का काम करना चाहता है, तो वह काम बने।

पूँच
३०-६-'५९

: २७ :

फौज नहीं, शान्ति-सेना चाहिए

फौज पर दारोमदार रखने मे खतरा

आज सुबह मै सीज फायर लाइन देखने गया था। ७॥ मील जाना और ७॥ मील आना हुआ। कुल मिलकर १५ मील चलना हुआ। वहाँ मैने देखा था कि इधर हिन्दुस्तान की फौज खड़ी है और उसके सामने ही उधर पाकिस्तान की फौज खडी है। कोई भी कौम तरक्की करती है, तो वह अपनी हिम्मत पर ही करती है, लश्कर की हिम्मत पर नहीं। अगर लश्कर पर ही सारा दारोमदार रहा, तो लोग बुजदिल बनेंगे, डरपोक बनेंगे। हिंदुस्तान की तवारीख मे देखिये। पलासी की लड़ाई मे हिंदुस्तान के नसीब का फैसला हुआ। चन्द घंटों मे लड़ाई हुई और फैसला भी चंद घंटों मे हुआ। उस लडाई मे क्लाइव की फौज जीती और दूसरी फौज हारी। इतने मे कुल बंगाल क्लाइव के कब्जे में आ गया। बंगाल क्या था? ५ करोड़ लोगो का प्रदेश! एक मैदान मे ही वह अंग्रेजों के हाथ मे चला गया। बड़ी ताज्जुब की बात है। क्या बंगाल मनुष्यों का था या जानवरो का? अगर वहाँ ५ करोड़ भेड़ें होतीं, तो ऐसा होता, यह ठीक था। लेकिन लश्कर पर सारा दारोमदार होने से ऐसी हालत हुई। आज भी लश्कर पर ही सारा दारोमदार है। जब तक ऐसी हालत रहेगी, तब तक लोगों की ताकत नहीं बढेगी। लोगो की जिस्मानी और रूहानी दोनों ताकतें बढनी चाहिए। जिस्म अच्छा रहा, तो रूहानी ताकत बढेगी। जिस्म बीमारी से भरा हो, तो वह ताकत नहीं बढेगी। दोनों साथ-साथ बढती हैं। मैं कह यह रहा था कि अगर लश्कर पर दारोमदार रहा और अपनी ताकत पर न रहा, तो हम बचनेवाले नहीं है। अब साइन्स का जमाना आ रहा है।

शस्त्रास्त्र बढ रहे हैं। लेकिन लोगो की हिम्मत नहीं बढ़ रही है। लश्कर खड़ा है, उसके सहारे हम यहाँ हैं। यह हमारी कमजोरी है। इससे हम मजबूत बननेवाले नहीं हैं। इसलिए हमारा कहना है कि इस वक्त शाति-सेना की सख्त जरूरत है। इस कस्बे मे शाति-सेना जरूर खड़ी होनी चाहिए। ये सिपाही बेकार होते हैं, वैसे शाति सैनिक बेकार नहीं होगे। ये सिपाही इसलिए हैं कि कहीं हमला हो जाय, तो रक्षण करे, हिफाजत करें। इसलिए उन्हे चौकन्ना रहना पडता है। लेकिन शाति-सैनिक रोज सेवा का काम करेगा।

शान्ति-सैनिक क्या करेगा ?

यह 'पूँच' याने 'पहुँच' है। यहाँ से कुल दुनिया मे हमारी ताकत पहुँच सकती है। इस शहर मे १५-२० हजार की आबादी होगी। यहाँ तीन ऐसे सेवक चाहिए, जो हर घर मे जाकर बराबर जानकारी प्राप्त करें। उनसे पहचान करे। मौके पर सबके पास मदद के लिए पहुँचें। सेवा का काम सतत करते रहे। ऐसे सेवकों की भी फिर एक बड़ी जमात होनी चाहिए। मैने बहनों से कहा है कि आप लोग ऐसी जमात बनाइये, जो रोज २-३ घटा सेवा में दे। कहीं कोई बीमार हो, तो उसके पास पहुँचना, ताकि उन तीन मनुष्यों को भी काम मे मदद हो जाय। गाँव के हर मनुष्य के साथ परिचय रखें। पहचान रखें। हर घर के नाम जान ले। याद रखें। प्यार बढायें। ऐसे सेवको की फौज यहाँ खडी होनी चाहिए, जो हर घर से वाकफियत रखेगी। ताल्लुक रखेगी। ऐसे सेवकों का जत्त रहेगा। कहीं कोई फसाद हुआ, तो इनकी हाजिरी से ही दगा शात होगा। अगर ऐसा न हुआ, तो यह सेवक वहाँ जायेंगे, मार खायेंगे, मर मिटने के लिए तैयार होगे। यह फौज के सिपाही भी मर-मिटने के लिए रहते हैं। उनके हाथ मे शस्त्र रहता है। लेकिन सिपाही सामनेवालो को मारते भी हैं। शाति-सैनिक कभी किसीको नहीं मारेगा।

हर देश के अवाम में प्यार है

अब रूहानी ताकत के दिन आये हैं। जहाँ रूहानी ताकत के दिन आये, वहाँ बहनों का काम आता है। उनके लिए मैदान खुलता है। उनको आगे आना चाहिए। बहनों को मदद करने के लिए भाइयों को भी आगे आना चाहिए। बहनों के लिए हमने एक काम शुरू किया है—सर्वोदय-पात्र। सर्वोदय के दिन आये हैं। सर्वोदय मे अपने हाथ मे हुकूमत लेने की बात नहीं है। लेकिन हुकूमत को कहे मे रखें, उस पर असर डालें, ऐसी बात है। इसलिए सर्वोदय को रोज वोट देने के लिए पात्र मे बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज रोज डालना है। अशान्ति के काम मे हिस्सा नहीं लेंगे, शान्ति की फिजा रखने मे मदद करेंगे, यूँ तय करके सर्वोदय-पात्र हर घर रखा जायगा। मौका आया, तो शान्ति-सैनिक मर मिटेंगे। उनका समाज पर जब्त रहेगा। इस तरह शान्ति की ताकत पैदा होगी। लोगों मे, अवाम में यह हिम्मत होनी चाहिए कि हम लश्कर पर अपना दारोमदार नहीं रखेंगे। अपने पाँव पर खड़े होंगे। पाकिस्तान की अवाम को भी यह हिम्मत करनी चाहिए। मै जानता हूँ, हिन्दुस्तान का किसान और पाकिस्तान का किसान —दोनों मे प्यार है। द्वेष, मत्सर नहीं है। कहीं भी अवाम मे द्वेष, मत्सर नहीं। अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, चीन—सब जगह अवाम मे प्यार है। लेकिन डर छाया है और यह डर सियासत के कारण छाया है। यह डर खत्म होगा—अगर जगह-जगह शान्ति-सेना खडी होगी। कभी भी पुलिस की जरूरत शाति के लिए नहीं रहेगी। अवाम निर्भय, निडर होकर रहेगी। यह बनेगा, तो मुल्क की, देश की अन्दरूनी ताकत बढ़ेगी। सिर्फ फौजी ताकत से देश की तरक्की नहीं होती है।

पूँच
३-७-'५९

: २८ :

मेरी खुसूसियत—रहम

मैं जहाँ पर जाता हूँ, लोग हमारा स्वागत करते हैं। कुछ लोग समझते हैं कि यह बड़ा आलिम है, विद्वान् है। वैसे मैं कुछ जानता तो हूँ। कई जबान जानता हूँ। अनेक धर्म-ग्रथ भी पढे हैं, शास्त्रों का मुताला किया है, लेकिन ये सारी बड़ी चीजे नहीं हैं। बहुत पढे हुए लोग दुनिया मे कम नहीं हैं। हम इसे अपना मुख्य गुण नहीं समझते। कुछ लोग समझते हैं कि बाबा बड़ा फकीर है, त्यागी है, सब छोड़कर निकला है। यह भी बात सही है, लेकिन इसे हम बड़ी चीज नहीं मानते हैं। हमारी जो मुख्य चीज है, जो हमे घुमा रही है, वह है रहम, जिसे सस्कृत मे करुणा कहते हैं। हिंदुस्तान मे जो गुर्बत है, वह हमसे देखी नहीं जाती है। हम चाहते हैं कि खाना-पीना, कपडा-लत्ता, मकान आदि चीजें सबको मुहय्या हों। उसके बाद किसीके पास ज्यादा रहे, तो किसीको हसद नहीं होगी। अल्लाह ने इसान को सबसे बड़ी चीज जो बख्शी है, वह है इसानियत। यह चीज जिस शख्स मे जितनी होगी, उतना उसकी जिंदगी मे इतमीनान और सुकून होगा। कुरान शरीफ मे कहा है कि तुम रोजा रखो और किसी वजह से नहीं रख सके, तो गरीबों को खिलाओ। जो गरीबों को नहीं खिलाता है, वह चाहे जितनी किताबें पढता हो, बहुत बडा आलिम हो, तो भी जिसके दिल मे हमदर्दी नहीं है, उसमें इसानियत नहीं है। जिसमे इसानियत नहीं है, उसकी शक्ल-सूरत भले ही इसान की जैसी हो, तो भी वह इसान नहीं है। नमक मे खारापन न हो, तो वह नमक नहीं कहा जायगा। इसान का यह तजुर्बा है कि जब वह प्यासे को पानी पिलाता है, तो पीनेवाले से पिलानेवाले को ज्यादा

खुशी होती है। पानी पीनेवाले को तो जिस्मानी तसल्ली होती है, लेकिन पिलानेवाले को रूहानी तसल्ली।

आज इसान ही इंसान से डरता है। एक-दूसरे के लिए हमदर्दी नहीं रखता है। इस जम्मू-कश्मीर राज्य मे सीमा पर इधर ८० हजार फौज खड़ी है, तो उधर पाकिस्तान ने भी ऐसी ही फौज खडी की है। एक-दूसरे का इतना डर छाया हुआ है। इसान ने इसान के डर से ऐसे हथियार ईजाद किये हैं, जैसे शेरों के लिए इस्तेमाल करने की इसे जरूरत नहीं महसूस हुई थी। शेर के खिलाफ एटम बम की जरूरत नहीं महसूस हुई थी। इतना डर और सगदिली की बुनियाद मे लालच है।

आज आपसे मिलना हुआ, इससे मुझे खुशी हुई। आपने ही हमारा सारा बोझ उठाया था। पीरपचाल लाँघते वक्त ही हमने दो भाइयों का सहारा लिया था। उस वक्त हमे जो तजुर्बा हुआ उससे हमने समझा कि इसमे भगवान् का इशारा है। हम पहाड़ लाँघ सके, इसमे उसका हाथ है। वह कहता है कि कश्मीर मे जा और मेरा काम कर। उसीकी ताकत पर भरोसा रखकर मै निकल पड़ा हूँ।

गोरवन
१४-७-'५९

: २९ :

काशमेरु दुनिया का मरकज

यद्यपि इस राज्य मे हमने करीब दो महीने पहले ही प्रवेश किया था, फिर भी अब तक हमारी यात्रा जम्मू-विभाग मे ही हुई। जिसे 'कश्मीर-वादी' (घाटी) कहते हैं, वह यहाँ से ही शुरू हो रही है। आप खयाल कर सकते हैं कि तेरह महीने से हम जिसका जप कर रहे थे, वहाँ पहुँचने पर आज हमे कितनी खुशी हो रही होगी।

कश्मीर दुनिया का मरकज

आपने मेरा स्वागत करते हुए कहा था कि यहाँ से सारी दुनिया को रोशनी मिली है। यह सिर्फ लफ्जों की बात नहीं है। हमारे पुराणों मे इसका जिक्र है। हमारे पुरखाओं ने माना है कि दुनिया का मरकज या मध्यबिंदु मेरु है। मेरु कहाँ है? आज पता चलता है कि मेरु याने कश्मीर है—काश-मेरु याने प्रकाश-मेरु, जहाँ से चारों ओर प्रकाश फैलता है। इसी 'काशमेरु' को बोलचाल की भाषा मे 'कश्मीर' कहते हैं। देवता कहाँ रहते हैं, इसका जवाब पुराणों मे दिया है कि वे मेरु के स्थान मे रहते थे, याने आजकल की जबान मे कश्मीर मे रहते थे। इसमे कोई शक नहीं कि हमारे पुरखा बहुत पुराने जमाने से यहाँ रहते होंगे और यहाँ से चारो ओर फैले होंगे। लोकमान्य तिलक ने कहा था कि हमारे पुरखा उत्तरी ध्रुव पर रहते थे और वहाँ से आगे बढ़े। कुछ लोगों का खयाल है कि हमारे पुरखा 'एशिया माइनर' मे रहते थे। लेकिन मेरा अपना खयाल है कि एक जमाने मे कश्मीर सारी दुनिया का मरकज रहा होगा। यहाँ से चीन जा सकते हैं, हिंदुस्तान जा सकते है, पश्चिम एशिया भी जा सकते हैं। इस लिहाज से कश्मीर की तवारीख शायद दस हजार साल की होगी।

इसकी खुसूसियत यह थी कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती थीं। आज भी कश्मीर में जम्मू के इलाके में हिंदू ज्यादा हैं, लद्दाख के इलाके में बौद्ध ज्यादा, तो कश्मीर-वादी में मुसलमान ज्यादा हैं। इस तरह दुनिया के तीन बड़े मजहब यहाँ इकट्ठा हो जाते हैं, जो हमारे लिए बहुत खुशी की बात है।

मैं एकमात्र ईश्वर के इशारे पर

अब मैं कश्मीर-वादी में आया हूँ, तो यहाँ क्या खिदमत कर सकूँगा, यह नहीं जानता। मैं केवल ईश्वर के इशारे पर चलता हूँ। नौ साल पहले उसीके इशारे से मेरे मन में घूमने की बात आयी थी और उसीके इशारे पर आज आठ सालों से घूम रहा हूँ। मेरा अपना कोई इदारह (संस्था) नहीं है, मेरी कोई पार्टी नहीं। मेरे कोई खास साथी नहीं हैं कि उनकी मदद से मैं इतना बड़ा काम उठाऊँ। पाँच करोड़ एकड़ जमीन हासिल करने का काम इन्सान सिर्फ अपनी ताकत से नहीं, बल्कि सबकी मदद से ही कर सकता है। किन्तु सबकी मदद कब मिलेगी? उसकी इफ्तेदाह (आरंभ) तो यही है कि परमेश्वर ने कहा कि 'तू यह काम कर।' उसीके फज्ल (कृपा) से काम होगा। मैं मानता हूँ कि कश्मीर में वह मुझसे खूब काम लेगा, क्योंकि यह मेरी तमन्ना है।

सब्र के बाद खुशखबरी

अभी हम पीर-पंचाल लाँघकर आये हैं। उसके उस पार मण्डी लोरेन है। बारिश की वजह से हमें मण्डी में छह दिन रुकना पड़ा। वहाँ हमारे दिल में खयाल आया कि इसी तरह बारिश रही और हम पहाड़ लाँघ न सके, तो उसे परमात्मा का इशारा समझकर कश्मीर न जायँगे, वापस पंजाब लौट जायँगे। हम तो उसीके इशारे पर चलते हैं। इसलिए हमने तय किया कि अगर हम पहाड़ के रास्ते न जा सके, तो दूसरे तरीके से कश्मीर न जायँगे। लेकिन आखिर बारिश रुक गयी और हम पहाड़ लाँघकर यहाँ आ पहुँचे। जब हम पहाड़ पर थे, उन दिनों हमने

एक तमाशा देखा। दो दिन आसमान बिलकुल साफ था। कुछ थोडी तकलीफ तो उठानी ही पड़ती है, लेकिन तकलीफ के साथ साथ खुशी भी होती है। कुरान शरीफ मे कहा है कि जो तकलीफ उठाता है, उसीको कुछ खुशखबरी सुनने को मिलती है : 'वश्शिरिस्साबिरीन्।' हमे यहाँ आने का मौका मिला, यह परमात्मा के फज्ल से ही हुआ है।

लोरेन इबादतगाह बने

यह गुलमर्ग तो आरामगाह बन गया है। वैसे मेरे मन मे आया कि उधर जो लोरेन गॉव है, वह इबादतगाह (पूजास्थान) बन सकता है। यहाँ गुलमर्ग मे दुनियाभर के लोग आयेंगे, यहाँ का नजारा देखेंगे और खुश होकर जायँगे। लेकिन लोरेन ऐसी जगह बनायी जा सकती है कि जहाँ लोग इबादत के लिए जायँगे। ऐसे जो स्थान होते हैं, वहाँ दो चीजें होनी ही चाहिए। उनके बिना कोई भी भक्त, फकीर, योगी वहाँ नहीं आ सकते, ध्यान नहीं कर सकते। ऐसे स्थानों मे गुर्बत (गरीबी) नहीं होनी चाहिए और ऐशो-आराम भी न होना चाहिए। उधर लोरेन मे खाली गुर्बत है और यहाँ ऐशो-आराम और उसके साथ-साथ गुर्बत भी है। वहाँ से वह गुर्बत हटनी चाहिए। उसके लिए वहाँ कुछ दस्तकारियाँ दी जायँ, कुछ मकान भी बनाये जायँ, आराम के नहीं, बल्कि सादे मकान। यह सब होगा, तो लोरेन एक अच्छा स्थान बनेगा। तवारीख मे भी उसका नाम आता है। मुहम्मद गजनवी, जिसने सत्रह दफा हिन्दुस्तान पर हमला किया था, कश्मीर पर भी हमला करना चाहता था। वह लोरेन तक पहुँचा। लेकिन वहाँ उसे जो मुकाबला करना पड़ा और उसने सामने जो पहाड़ देखा, उसकी वजह से वह वापस लौट गया—यह भी तवारीख की याददाश्त है। इसलिए उसे विकसित किया जा सकता है।

गुलमर्ग
१५-७-'५९

: ३० :

जंगल से नसीहत

कल मैं जगल के रास्ते से आ रहा था। उस जगल मे मुख्तलिफ किस्म के दरख्त थे। हमारे साथ रेंजर थे। उन्होंने कहा कि जिस जगल मे एक ही किस्म के पेड होते हैं, वह जगल बढ़ता नहीं और जिस जगल मे मुख्तलिफ किस्म के दरख्त होते हैं, वह जगल तरक्की करता है। मुझे एकदम सूझा ' ' और मैंने कहा : "भारत ऐसी हालत मे है। भारत मे भी मुख्तलिफ जमाते रहती हैं ' ' वेद के जमाने से आज तक यहाँ के लोगों को एक तजुर्बा है और सिलसिलेवार खेती की तहजीब मिली है और एक सभ्यता बनी हुई है। जोरदार और शानदार ऐसी १४ (चौदह) जबानें यहाँ फली हैं, फूली है। ऐसा कौनसा देश है, जो ऐसी शान दिखा सकता है ?

मै कश्मीर की खिदमत के लिए आया हूँ

अब मैंने कश्मीर में कदम रखा है। चाहता हूॅ कि हम सब एक हों। कश्मीरवाले यह न समझें कि हम कश्मीर के बाशिंदे हैं या हिंदुस्तान के बाशिंदे हैं। बल्कि हम यह समझें कि हम दुनिया के बाशिंदे हैं। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। मैं यहाॅ अच्छा खादिम बनकर आया हूॅ, खिदमत में मुरब्बी बना हूॅ। उसका मश्क मुझे हुआ है। आठ साल हिन्दुस्तान घूमकर मैं यहाँ आया हूॅ, तो मुझे कुछ फन हासिल हुआ है। इसलिए मैं कुछ खिदमत कर सकता हूॅ। मैं बचपन से ही अपने दोस्तों से कहा करता हूॅ कि मैं तो 'डिक्शनरी' (कोश) हूँ, लुगत हूॅ। आपको जरूरत हो, तो 'रिफरेन्स' के लिए आप 'डिक्शनरी' खोल सकते हैं।

गुलमर्ग

१५-७-'५९

: ३१ :

कश्मीर कब दुनिया को रोशन करेगा ?

सीज फायर लाइन के मानी

आज दुनिया मे हर कोई अपनी अपनी अलग-अलग मिल्कियत रखता है। जाती तौर पर ही नहीं, बल्कि मुल्क भी अपनी-अपनी मिल्कियत मानते हैं। एक मुल्क से दूसरे मुल्क मे जाना हो, तो पासपोर्ट और विसा की जरूरत पड़ती है। मेरी निगाह मे यह निकम्मी बात है। भगवान् ने दुनिया सबके लिए बनायी है। जापान जापानियों का, हिन्दुस्तान हिंदुस्तानियों का, यह सब बाते अब पुरानी हो गयी है। जब तक हम यह नहीं मानते हैं कि सारे मुल्क दुनिया के हैं, तब तक झगड़े कायम ही रहेगे। फिर चाहे कभी वह जाति के झगड़ों का रूप लेगे, तो कभी वर्गो के झगडों का। यहाँ पर Cease Fire Line के इस तरफ हिन्दुस्तान की अस्सी हजार फौज खड़ी है, तो उधर पाकिस्तान की उतनी ही फौज खडी है। Cease Fire Line के मानी है Keep ready for Fire Line जिस क्षण हुक्म होगा, उस क्षण गोली चलाने के लिए तैयार रहो। इस तरह छोटे छोटे दिल बनाकर हम एक-दूसरे का डर खरीदते हे।

डरखाते नही, प्रेमखाते खर्च हो

आज दुनिया मे जितना डर है, उतना पहले कभी नहीं था। बड़े मुल्क भी डरते है और छोटे भी। एक-दूसरे के डर से रूस और अमेरिका फौज पर बड़ा भारी खर्च कर रहे हैं। हिन्दुस्तान भी पाकिस्तान के डर से फौज रखता है और पाकिस्तान कहता है कि पता नहीं, हिन्दुस्तान की नीयत कैसी है, कहीं वह हमला कर दे, तब हम क्या करेंगे ? इसलिए हमे तैयार रहना पडता है। हमे समझना चाहिए कि यह इन्सानियत नहीं है। हमारी समझ मे नहीं आता है कि क्या वजह है कि पाकिस्तान के लोग खुले आम इधर

नहीं आ सकते और इधर के उधर नहीं जा सकते। मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ कि यह खयाली डर है। इसका भी एक सबब है, लेकिन उस सबब को हमे उखाड़ना होगा। आज हम करीब तीन सौ करोड़ रुपया हर साल लश्कर पर खर्च कर रहे है और पाकिस्तान सौ करोड। दोनों का मिलकर चार सौ करोड़ रुपया खर्च हो रहा है। डरखाते जो खर्च होता है, वही प्रेमखाते क्यो नहीं हो सकता है ?

हमलावर के साथ असहयोग

लेकिन यह मामला यहीं पर रुका हुआ है कि इसकी शुरुआत कौन करे। एक दूसरे पर एतबार हो, तो यह कदम उठाने की हिम्मत होगी। एतबार के लिए हिम्मत भी चाहिए और हिकमत भी। मै कश्मीरवालों से पूछना चाहता हूँ कि यदि यहाँ से फौज हटायी जाय, तो क्या आप हिम्मत हारेंगे ? क्या आपके दिल मे धड़कन पैदा होगी ? समझना चाहिए कि जो शख्स फौज के भरोसे हिम्मत करता है, बहादुरी दिखाता है, उसकी बहादुरी निकम्मी है। हर नागरिक मे यह हिम्मत होनी चाहिए कि कितना भी बड़ा मसला खड़ा हो, तो भी हम उसका मुकाबला अदम तशद्दुद से करेंगे। कोई मारने आयेगा, तो उसके साथ सहयोग नहीं करेंगे। एक दिन तो हमे मरना ही है, इसलिए हम मरेंगे, लेकिन न उसे मारेंगे, न उसके साथ सहयोग करेंगे। लोग कहते हैं कि यह नामुमकिन है। इन्सान इतना ऊँचा नहीं उठ सकता है। इस पर मैं कहता हूँ कि जिस जमाने मे कुत्ता भी आसमान मे चला गया, जो पहले कभी किसीने मुमकिन नहीं माना था, उस जमाने मे क्या इन्सान इतना नहीं कर सकेगा ? हमे समाज को यह बहादुरी की तालीम देनी होगी। इसके लिए बहुत जरूरी है कि जमीन की मिल्कियत मिटाकर गाँव का एक कुनबा बनाया जाय।

हमे समझना चाहिए कि जब तक हम तीन बाते नहीं करते हैं—बैनुल अक्वामी, मैदान मे एक-दूसरे पर एतबार और प्यार करने की तैयारी, गाँव का कुनबा बनाना और हमलावर से न सहयोग करना, न उसे मारना—

तब तक दुनिया के दुःख नहीं मिटेंगे। इसकी तालीम समाज को देनी होगी। हमारी तहरीक इसीके लिए चल रही है। वह सिर्फ जमीन का मसला हल करने के लिए नहीं चल रही है।

मदद के लिए दुनिया दौड़े

खुशी की बात है कि इस गुलमर्ग मे दुनियाभर के लोग ऐशो-आराम के लिए आते हैं। इसी तरह लोगो को दूसरे देशों मे सेवा के लिए भी जाना चाहिए। होना यह चाहिए कि किसी देश पर मुसीबत आयी, तो दुनियाभर के लोग मदद मे दौड़े जाते हैं और मसला फौरन हल हो जाता है। किसी देश मे फसल ज्यादा हुई, तो दुनियाभर मे अनाज बाँट दिया, ऐसा क्यों नहीं हो सकता है ? आज तो दाम कायम रखने के लिए अमेरिका मे फसल को जला देते हैं। होना तो यह चाहिए कि कश्मीर मे सैलाब आया है, तो दुनियाभर की मदद यहाँ पहुँचनी चाहिए।

अमेरिकी बहन का पत्र

विज्ञान के जमाने मे इन्सान के सामने दो ही रास्ते हैं—मिट जाओ, फनाह हो जाओ या एक हो जाओ। भूदान तहरीक यही कहती है, इसीलिए दुनियाभर के लोग इस काम को देखने आते हैं। आज ही एक अमेरिकन बहन का पत्र आया है। वह कहती है कि "आप पुरुष है, मैं बहन हूँ, आप हिन्दुस्तान के है, मैं अमेरिका की हूँ, आप हिन्दू है, मैं ईसाई हूँ। मै भगवान् का काम करना चाहती हूँ और आप भगवान् का काम कर रहे हैं। इसलिए मैं आपके लिए, आपके काम के लिए भगवान् से दुआ माँगती हूँ।"

अब मै यहाँ हूँ और वह वहाँ बैठे-बैठे प्रार्थना करेगी। यह तहरीक अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र के लिए है। सारे मुल्कों के लिए है। और यह पहला ही पत्र नहीं है। ऐसे कितने ही पत्र आते रहते हैं।

दुनिया मे आज अमन और प्यार की प्यास है। इसलिए जहाँ कहीं ऐसे काम लोग देखते हैं, जिस काम से अमन और प्यार की आशा, उम्मीद

बढ़ती है, वहाँ नजर एकदम चिपक जाती है। शायद कोई ऐसा देश नहीं है, जहाँ इस काम की जानकारी नहीं है। मैंने तो वहाँ जाकर Propaganda नहीं किया है। आज यहाँ आयी हुई एक जर्मन लड़की हमसे कह रही थी कि इस तहरीक के बारे में उसने जर्मनी में ही सुना है। चारों ओर जब आग हो, वहाँ ठण्डक पहुँचाने की चीज दिल खींच लेती है। गाधीजी ने कहा था कि कश्मीर से दुनिया को आशा की किरणें मिलेगी। हम चाहते है कि यहाँ से दुनिया को प्रकाश मिले, किरणे मिले। यहाँ तो घर बैठे गगा आयी है। याने यहाँ पर दुनिया के 'टूरिस्ट' आते हैं। आज वे यहाँ के गुल, पहाड़, पेड़, झरने के गुण वहाँ जाकर गाते हैं! आगे जाकर वे ऐसा कहेंगे कि वहाँ सिर्फ गुलवाले पेड़ नहीं हैं, वहाँ के इन्सान भी गुलवाले हैं—खूबसूरत हैं। जितनी खूबसूरत कुदरत वहाँ है, उतना खूबसूरत इन्सान भी वहाँ है। याने ये सारे टूरिस्ट अपने खर्चे से यहाँ आयेंगे और वहाँ जाकर Propaganda करेंगे। मुफ्त मे Propaganda हो जायगा। याने आपके हाथ मे कुन्जी है। दुनियाभर मे आपकी कीर्ति पहुँचेगी। आज यह सैलाब आपको सिखा रहा है। उसने किसीके खेत की, घर की पर्वाह नहीं की। सब हमवार कर दिया है। सबको बराबर डुबो दिया है। कोई फेर नहीं रखा है। आप लोगो को एक दूसरे को मदद देने का काम करना होगा, तो सरकार का काम आसान होगा। जो सबसे अधिक जरूरतमन्द है, उन्हे ढूँढ़ना होगा, क्योंकि ऐसे लोग सामने नहीं आते हैं। दरख्वास्त लिखवाना भी नहीं जानते है। बाबा यहाँ आया है। यह भी वे नहीं जानते है। उन्हे ढूँढना होगा। ढूँढने का काम करना होगा। तो यह सैलाब आपको नसीहत दे रहा है कि एक हो जायँ। यह एकता आप कश्मीर मे लायेंगे, तो घर बैठे ही गगा आयेगी, दुनिया मे एक इन्कलाब होगा और दुनिया को यहाँ से प्रकाश मिलेगा।

गुलमर्ग

१७-७-'५९

: ३२ :

मैं आपके वतन में कब तक रह जाऊँ !

[गाँववालों ने विनोबाजी के स्वागत में कश्मीरी तथा फारसी गाने सुनाये। पहला कश्मीरी लोकगीत था, जिसमें कहा कि "आप हमारे मुल्क मे आये है, तो वापस जाने के लिए नही, बल्कि यहाँ रहने के लिए आये हैं। हम आपसे ताकत और प्रकाश चाहते है।" दूसरी फारसी गजल थी, जिसमे कहा था "तोते को उस्ताद पढाता है। लेकिन जगल की मैना को मुहब्बत करना किसने सिखाया ? मैना की तरह हम भी बिना सिखाये ही मुहब्बत कर रहे हैं। मुहब्बत की दुनिया के बादशाह ने अपना जरीन ताज फकीर के हवाले कर दिया है।"]

प्यार भरे गीत भारत के ओर-छोर तक

अभी आप लोगों ने जैसे दिल्कश गाने प्यार से हमें सुनाये, वैसे ही हिन्दुस्तान के बहुत सारे सूबों मे हम सुनते आ रहे हैं। बगाल मे इतने गाने सुने कि हमे लगा कि इससे ज्यादा कहीं भी सुनने को नहीं मिलेगे। लेकिन जब हम उड़ीसा गये, तो वहाँ भी लोगों ने प्यार से गाने सुनाये। तब हमे लगा कि बगाल से उड़ीसा भी कुछ कम नहीं है। फिर हमने दक्षिण के चार सूबों मे यात्रा की, तो देखा कि हर सूबे मे लोगों ने उसी तरह प्यार से गाने सुनाये। फिर गुजरात, महाराष्ट्र मे भी मैंने वही पाया। पजाब मे तो बहनें भी इकट्ठा होकर भजन गाती हैं। गाना, नाचना और प्यार से भगवान् का नाम लेना—यह बात कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक और द्वारका से लेकर असम तक कुल हिन्दुस्तान मे मिलती है।

जहाँ प्यारे दोस्त, वही मेरा वतन

एक गाने मे आपने गाया कि आप इस वतन मे बैठने के लिए आये हैं। आपकी ख्वाहिश हमें अच्छी लगी। अगर हमसे पूछा जाय कि

आपका मादरे वतन कौन-सा है, तो (मेरी माँ का वतन कौन सा है, यह तो मै जानता हूँ, लेकिन अगर मुझसे पूछा जाय तो) मै कहूँगा कि जहाँ भी प्यारे दोस्त मिलते हैं, वही हमारा वतन है। दुनिया के किसी भी गोशे मे जाने पर हम यह महसूस नहीं करते कि हम किसी दूसरे वतन मैं पहुँच गये हैं। हर जगह हम यही महसूस करते है कि यह हमारा ही वतन है। हर जगह हमने ऐसे ही प्यारे दोस्त पाये हैं। ये सियासतदाँ (राजनीतिज्ञ), ये झगड़ा करनेवाले लोग न हो, तो दुनिया मे प्यार ही प्यार रहेगा। यह ठीक है कि झगड़ा करनेवालों की बात दुनिया मे ज्यादा नहीं चलती। फिर भी इन सियासतदाँ लोगों ने दुनिया को इतना तग किया है कि उनकी क़रामात से दुनिया बेजार है। वे कृपा कर हट जायँ, तो आप देखेंगे कि इन्सान का इन्सान के साथ मेल मिलकर ही रहता है।

इन्सान को प्यार सिखानेवाला

इन्सान को प्यार सिखानेवाला बैठा ही है। उसने प्यार सिखाने की बराबर तजवीज कर रखी है। प्यार सिखाने का काम उसने स्कूलों पर नहीं छोडा, हर इन्सान को उसने माँ की गोद से ही सिखला दिया है। जिस दिन बच्चा पैदा होता है, उसी दिन से उसे दूध पिलाया जाता है और प्यार भी। अगर अल्लाह ने प्यार की तालीम हुकूमत पर छोड़ी होती, तो करोड़ों की योजना बनानी पड़ती। भगवान् ने यह अहम तालीम अपने हाथ मे रखी और बच्चे को माँ की गोद मे पैदा किया।

माँ को प्यार करना किसने सिखाया ? अभी आपने गाना गाया कि 'तोते को हम सिखाते है, लेकिन मैना को किसने सिखाया ?' खैर, 'तोते को हम सिखाते हैं' यह भी एक घमण्ड ही है। हमे भी किसीने सिखाया है, हम सिर्फ बीच मे एक जरिया बनते हैं। माँ-बाप बच्चों को पैदा करते हैं, यह मानना भी घमण्ड ही है। उन्हे पैदा करनेवाला दूसरा ही है। ऐसे ही तोते को हम पढ़ाते हैं, यह मानना गलत है। लेकिन घड़ीभर वह मान

लें, तो भी मैना को, कोयल को कौन सिखाता है ? हम सबको प्यार सिखानेवाला बैठा है, यह मान लें, तो दुनिया में कोई दगा, झगड़ा फसाद नहीं रहेगा ।

मालकियत : कुदरत के खिलाफ बगावत

अभी मैं कश्मीर आया हूँ और चाहता हूँ कि आप मेरा जितना फायदा उठाना चाहें, उठा लें । मैं इशारे के तौर पर एक बात कहना चाहता हूँ कि हमने अपनी तरफ से मालिक, मुजारे, बेजमीन यह जो सारा बनाया है, वह अल्लाह ने नहीं बनाया है, वह अल्ला की कुदरत के खिलाफ है । उसने जितनी चीजें बनायी हैं, सबके लिए खोल दी हैं । सूरज की धूप आपको हासिल है, मुझे भी हासिल है । बादशाह को हासिल है और सबको हासिल है । कोई उसका मालिक नहीं है । हवा, पानी, सूरज की रोशनी, आसमान—ये सारी चीजें खुदा ने सबके लिए पैदा की हैं । हमने उनकी मालकियत बनायी, यह एक बहुत बड़ा पाप किया है । अल्लाह की कुदरत के खिलाफ यह हमारी बगावत है । यह बगावत जब तक जारी रहेगी, तब तक हम खुशहाल नहीं रह सकते । अच्छी तरह से जिन्दगी बसर नहीं कर सकते, किसी न किसी प्रकार की तकलीफ लाजिमी ही है ।

संकट का सहारा ग्रामदान

आखिर तो हमें जमीन की मालकियत मिटाकर उसे गाँव की बनाना ही है । अगर गाँव-गाँव में ग्रामदान हो और गाँवसभा बने, तो ऐसी मुसीबतों के जमाने में गाँवों को बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा । बिहार में जब सैलाब आया था, तो हम वहाँ घूम रहे थे । हमने देखा कि सरकार मदद पहुँचाना चाहती थी, लेकिन जिन्हें मदद की जरूरत नहीं थी या कम जरूरत थी, उन्हें वह पहले मिल जाती थी और जिन्हें सचमुच जरूरत थी, उन्हें वह नहीं मिलती थी । पता ही नहीं चला था कि किसे जरूरत नहीं है, किसे कम है या किसे ज्यादा है । इसलिए मदद का ठीक

बँटवारा नहीं हो पाता था। अगर आप जमीन की मालकियत कायम रखेंगे, तो वही हाल यहाँ हो सकता है। गाँव मे जिसका ज्यादा नुकसान हुआ है, उसे ज्यादा मदद दी जाय, जिसका कम नुकसान हुआ है, उसे कम दी जाय, यह तमीज रखनेवाला आज गाँव मे कोई नहीं है। गाँव के मुखिया, नम्बरदार गैरजानिबदार बनकर सबको तमीज के साथ मदद तक्सीम नहीं कर सकते। इसलिए ग्रामदान होने पर बाहर से मदद पहुँचाना भी आसान होगा।

आप ग्रामदान पर सोचिये। लेकिन उसकी इफ्तेदाह के तौर पर मुझे भूदान दीजिये। आप चाहते हैं कि मैं आपके वतन मे ठहर जाऊँ, तो मुझे यहाँ ठीक से बिठाइये। नाश्ता-खाना दीजिये।

मिट्टी मिला दूध बहुत मीठा !

लोरेन के पास एक गाँव मे एक नम्बरदार के घर मे हम रास्ते मे ठहरे थे। वह हमारे लिए दूध लाया। किसीने कहा कि बाबा को सिर्फ दूध नहीं भाता। उसने पूछा कि क्या उसमे शक्कर डालूँ ? तो हमारे भाई ने कहा कि बाबा को दूध के साथ मिट्टी चाहिए। तब वह भाई समझ गया। उसने चालीस कनाल के दानपत्र के साथ दूध दिया, तो वह हमे बहुत मीठा लगा। अगर दूध के साथ मिट्टी न मिलती, तो दूध मीठा नहीं लगता।

साराश, हम सारे हिन्दुस्तान मे २५ हजार मील घूमकर यहाँ आये है, तो आप हमारे पेट के लिए कुछ दें, इससे हमे खुशी नहीं होगी। इसलिए आप अपने अपने गाँव के बेजमीनों के वास्ते जमीन दीजिये और अपने वतन में हमे बराबर बिठाइये। आपने हमारे लिए कुर्सी रखी है। लेकिन हम कुर्सी पर नहीं, दान मे मिली हुई जमीन पर बैठते है।

बाबारेपि
२०-७-'५९

: ३३ :

नूह या तूफाने-नूह

सैलाब क्यों आया ?

यहाँ के बच्चों ने हमे यह सवाल पूछा कि बाबा, सैलाब क्यो आया ? हमे देखकर खुशी हुई कि बच्चों के दिमाग मे ऐसा सवाल पैदा हुआ। क्योंकि अल्ला, जो कि हर बात पर कादिर है, मेहरबान भी है। इसलिए जो मेहरबान है, वह इस तरह से सैलाब क्यों लाता है? इसमे उसकी क्या मेहरबानी है? बच्चों ने यह एक ऐसा सवाल पूछा है, जैसा कि बड़े-बड़े नहीं पूछ सकते। हमने उन्हे जवाब दिया कि हमारा तो यह एतबार है कि हम लोग कुछ-न-कुछ बुरे काम करते है, उन्हीं का नतीजा है सैलाब। हमारा यह एतबार बिल्कुल पक्का है। हम इसके लिए न कोई सबूत पेश कर सकते और न पेश करनेवाले ही है।

जमीन की मिल्कियत कुफ्र है

मेरी निगाह मे हम गलत बातें बहुत करते है। उनमे सबसे बुरी बात जमीन की मिल्कियत है, जो नहीं होनी चाहिए। जमीन के हम मालिक कैसे हो सकते है? उसका मालिक तो खुदा ही हो सकता है। अगर हम उसकी मिल्कियत का दावा करेंगे, तो वह शिर्कत होगी, जिसे हम 'कुफ्र' समझते है। जमीन की मिल्कियत का हक अल्ला का ही है, हमारा नहीं। हम तो उसके खिदमतगार ही बन सकते हैं। जमीन की खिदमत करने का नसीब हमे हासिल है और वह हमारा फर्ज है। आठ साल से हम जगह-जगह जाकर यही समझा रहे हैं कि अपने भाइयो के लिए जमीन का हक दो।

हिन्दोस्ताँ ही नहीं, सारा जहाँ हमारा

जब सैलाब आता है, तो कोई तफ्रका नहीं करता, जितनी भी जमीन है, सबको वह डुबो देता है। आसमान से आफत उतरती है, तो सभी पर उतरती है। कुरानशरीफ मे 'तूफाने-नूह' का किस्सा आता है। नूह एक बड़े पैगम्बर थे, जो सबको अच्छी नसीहत देते थे। लेकिन लोगों ने उनकी बात नहीं मानी, तो एक बड़ा सैलाब आया। फिर अल्ला ने लोगों से पूछा

कि तुम नूह की सुनते हो या 'तूफ़ाने-नूह' की ? कदीम जमाने की यह कहानी ध्यान मे लेने की है। अभी यहाँ पर ऐसा ही सैलाब आया है। इसलिए जो लोग बेघर बने हैं, उन्हे फौरन दूसरे घरो मे जगह मिलनी चाहिए। इस तरह एक-दूसरे का एक-दूसरे पर प्यार होना चाहिए। इसमे जाति, मजहब, सूबा, मुल्क वगैरह भेदों का खयाल नहीं होना चाहिए। इन्सान का ही खयाल होना चाहिए। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते है। सिर्फ हमारे देश की ही जय नहीं, बल्कि दुनिया की जय ! बड़ी खुशी की बात है कि गॉव-गॉव के लोग हमारी बात समझते है और यहॉ के बच्चे भी 'सारे जहॉ से अच्छा हिन्दोस्ताँ हमारा' के साथ-साथ गाते हैं 'सारा जहाँ हमारा'। हमे समझना चाहिए कि हम सारे जहॉ के हैं। यह ठीक है कि हम जहॉ बसते हैं, वहॉ हमे अड़ोस-पडोस के लोगों की खिदमत करनी चाहिए। लेकिन हमारा दिल इतना वसी होना चाहिए कि उसमे कुल दुनिया के लिए गुन्जाइश हो।

दिल में जोश, दिमाग मे होश

आज यहाँ की डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स (विरोधी पक्ष के कुछ भाई हमसे मिलने आये, जो बहुत अच्छे जवान थे। उनकी बातें हमने सुनीं। कुछ लोग उनकी बातो को गलत मानते है। सियासत (राजनीति) दिलों के टुकड़े करती है। इसीलिए मैंने कहा था कि दुनिया के मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत (आध्यात्मिकता) से ही हल होगे। लेकिन जहाँ सियासत चलती है, अलग-अलग पार्टियॉ बनती हैं, वहॉ एक बात ध्यान मे रखनी चाहिए कि हम आपस में वैर न करें। एक दूसरे की बातें सुनते हुए दिल मे जजबा पैदा न होने दे। अगर दिल मे जजबा या खौफ पैदा हुआ, तो इस विज्ञान के जमाने मे हम बिलकुल गये बीते साबित होंगे। होना तो यह चाहिए कि दिल मे आग हो और दिमाग में बर्फ। दिल मे तड़पन, तमन्ना हो, लेकिन दिमाग ठंढा हो। विज्ञान के इस जमाने मे लड़ाइयॉ भी जजबे से नहीं होतीं। इसलिए सिर्फ जोश से काम

नहीं बनता, जोश के साथ होश भी चाहिए। दिल मे जोश और दिमाग मे होश! लड़नेवाले सिपाहियों को भी दिमाग ठढा रखना पड़ता है।

बुजुर्ग कमान और जवान तीर

मैने देखा कि आज जो जवान मुझसे मिले, उनके दिल मे समाज मे आज जो चल रहा है, उसके बारे मे नाखुशी है। यह अच्छा है और लाजिमी भी है। बुजुर्ग जिस हालत मे है, उससे जवान कुछ आगे बढते है, तभी तरक्की होती है। लेकिन बुजुर्गो को बनना चाहिए कमान और जवानों को बनना चाहिए तीर! आगे तीर दौडेगा, कमान नहीं। लेकिन तीर का कमान के साथ लगाव नहीं रहा, तो तीर काम का नहीं। इसलिए जवानों को आगे बढना चाहिए और बुजुगो के साथ लगाव भी रखना चाहिए। तभी देश आगे बढेगा।

जवान पार्टी न बनाये, कुल बने

जवान आगे जाने की बात करते है, तो हमे खुशी होती है। जवान जितना आगे जाना चाहते हैं, उतना आगे जाने के लिए बाबा तैयार है। बाबा ने तो ऐसी बात बतायी है, जैसी कि बिलकुल अगुवा जवान भी मुश्किल से बोलते है। बाबा कहता है कि जमीन की मिल्कियत मिटा दो। मैं जब केरल गया था, तो वहाँ के जवान कम्युनिस्ट दोस्त हमेशा हमारी यात्रा मे साथ आते थे। उन्होंने हमसे कहा कि आप बोल रहे है, वह हम भी नहीं बोल सकते। मै कहना यह चाहता हूँ कि सबसे आगे बढे हुए जो जवान है, उनसे भी बाबा दो कदम आगे है। मैं जवानों को समझाना चाहता हूँ कि मेरा तरीका सीखो। तुम पार्टी मत बनाओ। पार्टी याने पार्ट–टुकड़ा। तुम जुज मत बनो, कुल बनो। सबको हजम करने की काबिलियत सीखो। जैसे समुन्दर मे सब नदी-नाले मिल जाते है, वैसे ही अपने विचार मे सबको हजम करने की ताकत बनाओ।

यहाँ पर 'नेशनल कॉन्फ्रेन्स' (सरकारी पक्ष) अच्छे काम करती है और तुम 'डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स' वाले उससे भी अच्छा काम करना

चाहते हो, तो यह बहुत अच्छी बात है। लेकिन वह काम टकराकर नहीं होगा। तुम्हे एक-एक दिल मे पैठना होगा और एक एक दिल का कब्जा करना होगा। इस तरह दिल मे पैठकर दिल जीतते जाओगे, तो तुम्हारी ही जीत होगी। आगे तुम्हारा ही जमाना है।

आज सुबह हम जब यहाँ आये, तो उन भाइयों ने पुलिस की ज्यादती के खिलाफ कुछ नारे लगाये और फिर हमे भी कुछ बातें सुनायीं। इसमे कुछ बात होगी। लेकिन मैंने उन्हें समझाया कि मेरे स्वागत मे ऐसी बाते नहीं होनी चाहिए। वे भाई समझ गये। इस तरह हम समझदारी से काम लेते है, तो सबके दिल जुड़ जाते है।

मैं कश्मीर से यह चाहता हूँ कि जिसके पास जितनी जमीन है, वह उसका एक हिस्सा गरीबों के लिए दे। जम्मू-विभाग मे लोगों ने हमे खूब दान दिया। अब हम कश्मीर घाटी मे आये है। हमारे पहले सैलाब आया और फिर हम आये। सैलाब कहता है कि हमवार (समान) बनाओ। बाबा का यही सन्देश है। इसलिए कश्मीर से हमे खूब जमीन मिलनी चाहिए। और प्यार से जमीन देनेवाले सामने आयेंगे, तो जोर-जबर्दस्तीवाली, कानूनवाली बात नहीं रहेगी। मेरा मानना है कि हिन्दुस्तान प्यार से जमीन का बँटवारा कर लेगा, तो वह यहाँ पर समाजवाद, साम्यवाद इन सबको हजम कर लेगा। इसलिए वहाँ (जम्मू मे) जो दान का सिलसिला जारी हुआ था, वह यहाँ भी जारी रहे और कसरत से जारी रहे। यह नहीं होना चाहिए कि ग्रामदान मे देरी हो, तो लोग भूदान भी न दें। भूदान से दिल नर्म बनता है और ग्रामदान से दिल के साथ दिल जुड जाता है। इसका भी दिल सख्त और उसका भी सख्त हो, तो दिल कैसे जुड़ेंगे? दिल जुड़ने के लिए यह लाजिमी है कि पहले दिल नर्म बने। इसलिए किसीके पास जो भी जमीन है, उसका एक हिस्सा वह दान मे दे।

मागाम
२१-७-'५९

हुकूमतपरस्ती नहीं, खिदमतपरस्ती चाहिए

हम अपने दोष देखें, दूसरों के नहीं

कश्मीर में कई राजनैतिक पार्टियाँ हैं। एक है—'नेशनल कान्फ्रेन्स' और दूसरी है 'डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्स'। आज कुछ डेमोक्रेटिक कान्फ्रेन्स के लोग हमसे मिलने आये थे। उनसे बातें हुईं। उनकी एक-दो बातें हमें जँच गयीं। उन्होंने पहली बात तो यह कही कि "हम इस्लाम के माननेवाले हैं। इसलिए हम मानते हैं कि यह जो सैलाब आया है, वह हमारी बुराइयों का नतीजा है। यह इस्लाम का एक अकीदा (विश्वास) है कि जब हम खुदा को भूल जाते हैं, तभी ऐसी आफतें आती हैं। यदि हम उसे न भूलें, तो कभी तबाही नहीं हो सकती।"

यह सही बात है कि हमारी बुराइयों के कारण अल्ला का गजब हम पर उतरता है। जब हम यह बोलते हैं, तब सिर्फ तोते की तरह बोलते ही हैं, इस पर एतबार नहीं करते। सही माने में यह बात हमारी जबान पर तो है, पर दिल में नहीं है। क्योंकि दरअस्ल हम ऐसा मानते, तो अपने अन्दर दिल में पैठते और यों सोचते कि हममें क्या बुराइयाँ हैं? तब हम दूसरों की नहीं, अपनी ही नुक्ताचीनी करेंगे, जरा अपने को जाँचेंगे कि क्या मैं ठीक काम कर रहा हूँ और बजाय इसके कि हम दूसरों के दोष देखें, हम अपने दोष देखा करेंगे, तो इन्सान कुछ सुधर सकता है।

मिल्कियत मिटने से कशमकश मिटेगी

हमारा यह मानना है कि अल्ला का गजब तब तक जारी रहेगा, जब तक हम मिल्कियत कायम रखेंगे। आज दुनिया में जितने दुःख हैं, उनकी वजह है—मिल्कियत। यह घर, यह खेती, यह दौलत सब 'मेरी' 'मेरी' कहते हैं। यह 'मेरी' ही हमें तकलीफ देती है। इस तकलीफ को और

दुनिया की कशमकश को मिटाने के लिए आप सिर्फ 'मेरी' की जगह 'हमारी' दाखिल कर दीजिये। आप यों कहना सीखिये कि यह घर हमारा है, यह खेती हमारी है, यह दौल्त हमारी है और ये सभी चीजें हमारी हैं। 'मेरी' कुछ नहीं, सब 'हमारी' है। यहाँ तक कि यह जिस्म भी मेरा नहीं, सबका है, सबके लिए है, जो सिर्फ मेरे सुपुर्द किया गया है, ताकि इसके जरिये सबकी खिदमत की जा सके। इस तरह हम सोचेंगे, तो कुल कशमकश खत्म हो जायगी। एक भाई ने हमसे पूछा कि यह जद्दोजहद कायम ही रहेगा या मिटेगा ? हमने कहा कि अगर इसकी वजह मालूम करके उसे मिटाया जाय, तो मिट सकेगा। इसकी वजह है मिल्कियत।

सियासत दिलों को तोड़ती है

आज यहाँ एक भाई ने कुछ दान दिया है। और भाई भी देंगे। जब हमने जम्मू-कश्मीर स्टेट में प्रवेश किया था, तब रोज दान मिल्ता था। लेकिन यहाँ हर रोज नहीं मिल्ता। पहले हर रोज दान मिलने की वजह यह थी कि हमारा विचार समझे हुए लोग जनता के पास पहुँचते थे, लोगों को विचार समझाते थे और दान पत्र लाते थे।

यहाँ मैं देखता हूँ कि लोग मुझे ही अपनी सियासत (राजनीति) समझाते हैं। क्या चाहते हो सियासत को ? क्या उससे लोगों के दिल जुड़नेवाले हैं ? यहाँ कश्मीरवादी में सिर्फ बीस लाख लोग हैं। सियासत की वजह से उनके भी टुकडे-टुकडे हो जायेंगे। कुछ लोग इस पार्टी में हैं, कुछ उस पार्टी में। जहाँ ऐसे टुकड़े-टुकड़े हो, वहाँ ताकत कैसे बनेगी ? मैं आठ साल तक घूमने के बाद यहाँ आया हूँ, तो क्या ये सियासत की बातें सुनने के लिए ? इसीलिए जरा दिल वसी बनाओ और सोचो कि हम दुनिया के लिए, कश्मीर के लिए क्या कर सकते हैं ? मैं चाहता हूँ कि गाँव-गाँव के लोग अपनी ताकत को पहचानें।

हुकूमतपरस्त सियासतदाँ

आप यह निश्चित समझ लीजिये कि जब तक आप पर कोई न कोई

सियासी पार्टी हुकूमत चलाती रहेगी, तब तक गॉव की ताकत मजबूत नहीं बन सकेगी। हुकूमत करनेवाली वह पार्टी अच्छी रही, तो लोग सुखी बनेंगे और अच्छी न रही, तो लोग दुःखी बनेंगे। अकबर बादशाह आया, तो जनता सुखी बनी और औरगजेब आया, तो दुःखी। इस तरह हम पहले एक आदमी के हाथों मे अपना नसीब सौंप देते थे। लेकिन अब वैसा नहीं करते। इसलिए अब जम्हूरियत (लोकशाही) आयी है। सारी सत्ता लोगों के हाथों मे है। फिर भी आज दुनिया मे जहॉ-जहॉ जम्हूरियत आयी है, वहॉ सच्ची जम्हूरियत नहीं आयी है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हुकूमत चन्द लोगों के हाथो मे आ गयी है। वे चन्द लोग अच्छे होते है, तो काम अच्छा होता है और बुरे होते है, तो बुरा होता है। इसलिए पार्टीवाली जम्हूरियत रहेगी, तब तक दिलों के टुकड़े होते रहेगे। इसकी वजह यह है कि जहॉ पार्टी पॉलिटिक्स चलता है, वहॉ एक पार्टी के हाथ मे हुकूमत आती है और दूसरी पार्टी के हाथ मे हुकूमत नहीं होती। दूसरी पार्टी पहली पार्टी के साथ झगड़ती रहती है, वह भी हुकूमत अपने हाथों मे लेना चाहती है। दोनों पार्टियॉ हुकूमतपरस्त (सत्ता-पूजक) होती हैं। दोनो का सारा नाचना कूदना हुकूमत के इर्दगिर्द होता है। इसलिए दोनों मे कशमकश जारी रहती है। हुकूमतवाली पार्टी के लोग अपनी खूबियों को, कारनामों को बढा चढा-कर लोगो के सामने रखते है, तो विरोधी पार्टीवाले उनके कसूर और उनकी कमियॉ बढा-चढाकर लोगों के सामने रखते, दिखलाते हैं, जाहिर करते है। दोनों हुकूमतपरस्ती की वजह से एक-दूसरे के गुण-दोष कहने-सुनने मे ही लगे रहते है। नतीजा यह होता है कि खिदमतगार कोई नहीं रहता। हर कोई यही कहता है कि हमारे हाथ मे हुकूमत रहेगी, तो हम आपको 'जन्नत' मे ले जायॅगे, इसलिए आप हमे चुन दीजिये, अगर दूसरी पार्टी के हाथ मे हुकूमत जायगी, तो वे आपको 'जहन्नुम' मे ले जायॅगे। इसलिए उन्हें वोट मत दीजिये। कोई लोगों को यह नहीं कहता कि 'जन्नत' और 'जहन्नुम' खुद आपके हाथों में है।

अपनी ही ताकत काम देगी

हमें 'जहन्नुम' या 'जन्नत' मे ले जानेवाला हमारे सिवा दूसरा शख्स नहीं हो सकता। अपनी जिम्मेवारी है। कुरानशरीफ मे कहा है कि "कोई शख्स दूसरे की जिम्मेदारी नहीं उठा सकता। हरएक को अपना-अपना बोझ उठाना पड़ेगा।" क्या हमारा बोझ बक्शी साहब उठायेंगे ? अल्लामियाँ के सामने मैं भी खड़ा रहूँगा और बक्शी साहब भी। मुझे क्या पूछा जायगा ? मेरे कारनामे। और बक्शी साहब को ? उनके कारनामे। मुझसे बक्शी साहब के कारनामे नहीं पूछे जायेंगे और न बक्शी साहब को मेरे कारनामे। सभी को अपने-अपने कारनामे पूछे जायँगे। फिर वह जबान से नहीं बताना पड़ेगा, ऐसे ही मालूम हो जायगा।

कुछ तो खिदमतपरस्त हो

इसलिए यह समझ लीजिये कि गाँववालों को अपनी-अपनी ताकत पहचाननी होगी और खड़ी करनी होगी। 'कुल गाँव हमारा कुनबा है' यह ताकत हम पैदा करेंगे, तभी पैदा होगी। इसके वास्ते कुछ लोगों का खिदमतपरस्त (सेवा-परायण) होना जरूरी है। मैं तो चाहता हूँ कि सब लोग खिदमतपरस्त हों। लेकिन मेरी कौन सुनेगा ? दुनिया मे मेरी नहीं चलेगी। इन्सान की हर ख्वाहिश पूरी नहीं होती। इसलिए कम-से-कम कुछ लोग तो ऐसे खिदमतपरस्त रहे, जिनकी जबान पर लोग भरोसा रख सकें। आज लोगों को किसी पर ऐसा भरोसा नहीं है। इस पार्टीवाले उस पार्टी की निन्दा करते है और उस पार्टीवाले इस पार्टी की निन्दा करते हैं। जनता दोनों की निन्दा सुनती है और दोनों पर भरोसा करना छोड़ देती है।

आज जम्हूरियत कहीं नहीं पनपती

आज सुबह जो लोग आये, वे कह रहे थे कि यहाँ जम्हूरियत (लोकशाही) पनपनी चाहिए। दुनिया मे जम्हूरियत है, लेकिन वह कहाँ पनप रही है ? क्या वह अमेरिका मे पनप रही है ? नहीं। मैं कहना चाहता

हूँ कि अमेरिका में भी जम्हूरियत पनपी नहीं है। वहाँ भी पूरी ताकत चन्द लोगों के हाथ में है। कल अगर 'आइक' का दिमाग बिगड़ जाय या खराब हो जाय, तो वह कुल दुनिया को तबाह कर सकता है। आज आइक, मेकमिलन, खुश्चेव आदि कुछ ही ऐसे लोग हैं, जिन पर सारी दुनिया की जिन्दगी का दारोमदार है। अगर अल्लामियाँ ने चाहा और उनका दिमाग बिगाड़ दिया, तो हम सब खत्म हैं, यही समझना होगा। आप दुआ माँगते हो कि ऐ खुदा! हमें अक्ल दे। लेकिन अब ऐसी दुआ माँगिये कि ऐ खुदा! आइक, मेकमिलन, खुश्चेव आदि को अक्ल दे। मैं ऐसी ही दुआ माँगता हूँ।

अल्ला के बीच मुल्ला

इस सबकी वजह यही है कि प्रातिनिधिक लोकतन्त्र से हमारे खुद के हाथ में ताक़त नहीं होती। हम चन्द मुल्लाओं के हाथों में मजहब सौंप देते हैं। आज अल्ला और हमारे बीच है—मुल्ला। हम सबकी तरफ से इबादत का काम मुल्ला करेगा और खिदमत का काम करेगा नुमाइन्दा! हमने उन्हें चुनकर सरकार में भेज ही दिया है। तब फिर हम क्या करेंगे? खायेंगे, पीयेंगे और रोयेंगे! जब तक हम इबादत और खिदमत जैसी जिन्दगी की महत्त्व की बातें तर्जुमान तथा नुमाइन्दों पर रखेंगे, तब तक सुखी नहीं बन सकते। अगर इत्तफाक से हम सुखी बन भी गये, तब भी वह गलत होगा। दूसरे की अक्ल से सुखी या दुःखी बनना, दोनों ही गलत है।

खिदमतगार जमात जरूरी

डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेन्सवालों ने हमारे सामने दो बातें रखीं: (१) यहाँ हिन्दुस्तान के चुनाव आयोग का और (२) सुप्रीम कोर्ट का जुरीडेक्शन (अधिकार क्षेत्र) लागू हो। इससे गैरजानिबदार (निष्पक्ष) न्याय मिलेगा। मैंने दोनों सुझाव पसन्द किये और कहा कि ठीक है। ऐसा ही होना चाहिए और यही होगा। अब यह जितना जल्दी हो सके, उतना अच्छा, ऐसा ये लोग मानते हैं।

खुदा के चेहरे : चुनाव !

मैंने यह बात तो मानी। लेकिन मैं यह नहीं मानता कि इतने से जम्हूरियत पनपेगी या अच्छी होगी। ऐसा तो तब होगा, जब इन जानिबदार पार्टियों के अलावा तीसरा ऐसा समाज होगा, जो खिदमत में लगा रहेगा। इसके मानी यह नहीं है कि पार्टीवाले कुछ भी खिदमत नहीं करते। वे भी खिदमत करते हैं। किन्तु उनकी नजर 'इलेक्शन' पर रहती है।

कुरानशरीफ में आया है कि "खुदा के चेहरे के दर्शन के लिए हमें दान देना चाहिए।" इन पार्टीवालों के लिए 'खुदा के चेहरे' 'चुनाव' है। चुनाव के लिए दान ! चुनाव के लिए खैरात !! खिदमत करेंगे और ये नापते रहेंगे कि हमने इतनी खिदमत की, तो कितना पाया ? ये पक्के बनियाँ हैं। दो पैसे की खिदमत के चार पैसे चाहते हैं। जरा-सी खिदमत करेंगे और केमरा से फोटो खिंचवायेंगे। इस तरह से बदले की अपेक्षा रखकर खिदमत करनेवाले लोग खिदमत में जहर मिला रहे हैं।

इन पार्टीवालों के आगे-पीछे, अन्दर-बाहर सभी जगह चुनाव का विचार रहता है। यहाँ तक कि बाबा जिनके चुनाव-क्षेत्र (Constituency) में घूमता है, वहाँ भी वे लोग दौडे-दौड़े पहुँच जाते हैं। चाहे उस वक्त पार्लमेंट हो, तब भी वे आते है, साथ रहते हैं और दान भी दिलवाते हैं। नहीं तो फिर चुनाव के समय लोग उनसे पूछते हैं कि बाबा आया, तब आप कहाँ थे ? पद-यात्रा में क्यों नहीं आये ?

पद-यात्रा के दो मानी है। एक तो यह कि पाँव से चलना यानी पैदल चलना, पद यात्रा। और दूसरा मानी है—पद-प्राप्ति के लिए पद-यात्रा। पद-प्राप्ति के लिए तमगा मिलना चाहिए, इसीलिए यात्रा करते हैं।

अवाम खिदमतगार से वाकिफ

यह मैं इसलिए कह रहा हूँ कि अच्छा काम भी आप जिस मकसद

से करते है, उसी पर उसकी कीमत निर्भर रहती है। अवाम (जनता) अपढ़ है, लेकिन अक्लवाला है। थर्मामीटर जैसे बराबर हरारत को नापता है, वैसे ही अपढ लोग भी नापते है कि कौन सच्चे खिदमतगार है? इसमे कितनी हरारत है, यह ये ठीक नापते है। इनको कोई ठग नहीं सकता। क्योकि हिंदुस्तान मे कदीम जमाने से सन्त पुरुष इनकी खिदमत करते आये हैं।

जम्मू-कश्मीर स्टेट मे हमने प्रवेश किया, तब हमे एक किताब भेट दी गयी थी—'लल्ला-वाक्यानि' (लल्ला के वचनों का अंग्रेजी तर्जुमा)। लल्ला (कश्मीर की सन्त स्त्री) छह सौ साल पहले हुई। लेकिन आज भी जनता उसे भूली नहीं है। इस बीच कितने बादशाह आये और गये, पर लोगों ने किसे याद रखा? मैं आपको एक किस्सा सुनाऊँ? दिल्ली के नजदीक गुडगॉव जिले मे हमारी एक मीटिंग थी। सुननेवाले ज्यादा-तर मुसलमान थे। मै उनको फिर से बसाने (री हेबिलिटेशन) का काम कर रहा था। वे मेव लोग थे, जिनके घर-बार उजड़ गये थे। मैंने उनसे पूछा कि अकबर हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा बादशाह हो गया। क्या आप उसे जानते है? उसका नाम सुना है? आम जनता का वह जल्सा था। वे कहने लगे कि नहीं सुना। दिल्ली के नजदीक २०-२५ मील की दूर की यह बात है। फिर मैंने पूछा कि क्या तुमने अकबर लफ्ज ही नहीं सुना? उन्होंने कहा : सुना है, 'अल्ला हो अकबर'। खत्म! इतना बड़ा अक-बर बादशाह हो गया, फिर भी लोग उसे याद नहीं रखते, जानते भी नहीं। बड़े-बड़े बादशाहों की आज यह हालत है, लेकिन कश्मीर की एक सन्त महात्मा लल्ला का नाम आज भी सबको याद है। कबीर को लोग याद करते है, क्योकि वे अपने सच्चे खिदमतगार पहचानते हैं। इसीलिए जम्मू-कश्मीर स्टेट मे कदम रखते ही मैंने कहा था कि कश्मीर का, हिन्दु-स्तान का और दुनिया का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

पट्टण
२२-७-'५९

: ३५ :

खुद और खुदा

जब हमने कश्मीर मे कदम रखा, तो कहा था कि हम एक मिशन लेकर आये है। यहॉ हम चार काम करेगे : देखेंगे, सुनेगे, सोचेंगे और प्यार करेगे। प्यार के लिए, विचार समझाने के लिए जितना बोलना पड़ेगा, उतना ही बोलेंगे।

जिन्दगी खुद और खुदा के हाथ में

बड़ी खुशी की बात है कि जो मिशन लेकर हम यहॉ आये हैं, यहाँ के लोग उसे जरूरी मानते और समझते हैं। वह कामयाब हुआ, तो बहुत बड़ा काम होगा। आखिर कश्मीर का नसीब किसके हाथ मे है? सियासतदॉ (राजनीतिज्ञ) कहते हैं कि आपका नसीब उसके या इसके इस पार्टी या उस पार्टी के हाथ मे है। कोई यह नहीं कहता कि आपका 'जन्नत' और 'जहन्नुम' आपके ही हाथ मे है, दूसरे किसीके हाथ मे नहीं है। कहा जाता है कि कश्मीर का फैसला यहॉ के बड़े लोग करेंगे। कश्मीर के मसले का हल देहली में हो या दुनिया मे और कहीं। लेकिन आप यह समझ लीजिये कि अगर अपनी जिन्दगी किसीके हाँथ मे है, तो खुद के और खुदा के हाथ मे है। खुद और खुदा इन दो के सिवा तीसरे किसीका उसमे दखल नहीं है।

हमारी लकीर के दो नुक्ते

पहली बात यह है कि हम अपने हाथ-पॉव और दिल-दिमाग पर भरोसा करें, नेक काम करे और एक होकर काम करे। हम ऐसा करते हैं,

तो हमारा नसीब एक हद तक हमारे हाथ मे रहता है। उस हद के बाद वह और किसीके हाथ मे है, तो खुदा के, हुकूमत के या दूसरे किसीके हाथ मे नहीं। खुद और खुदा—ये दो नुक्ते मजबूत बनाओ। दोनों को जोड़नेवाली जो लकीर होगी, वही हमारा रास्ता, सबील होगी। लकीर दो नुक्तों से बनती है। एक नुक्ता है वह, जहाँ अभी हम है और दूसरा वह है, जहॉ हमे जाना है। उन दोनों को जोड़ने से हमारे लिए रास्ता बन जाता है। पहला नुक्ता हम खुद है, जहॉ हम काम करते हैं और दूसरा नुक्ता खुदा है, जहॉ हमे पहुँचना है।

'खुद' की तफसीर

'खुद' के मानी क्या है, ठीक से समझ लीजिये। 'खुद' के मानी मैं अकेला, इस जिस्म मे रहनेवाला छोटा-सा जीव नहीं है। बल्कि 'खुद' याने हमारा गॉव। हम एक गॉव मे इकट्ठा रहते है और हमारे कई छोटे देहात कदीम जमाने से बने है। तवारीख मे देहली, काशी जैसे ५-७ शहर है, जिनके नाम हम पुराने जमाने से सुनते आये हैं। लेकिन हम आपसे कहना चाहते है कि वे शहर उतने पुराने नहीं, जितने पुराने ये छोटे-छोटे गॉव हैं। अभी मैं आपके सामने 'खुद' की तफसीर बयान कर रहा हूँ। 'खुद' याने मै अकेला, मेरा जिस्म या मेरा छोटा सा कुनबा नहीं। बल्कि हम जिस गॉव मे रहते है, वह सारा गॉव मिलकर 'खुद' बन गया है और हमे अपनी मिली जुली ताकत बनानी है।

ताकतें टकराने से सिफ्र ही बनता है

मैं बार-बार कहता हूँ कि आपके बीच एक ऐसी चीज पैठ गयी है, जो आपको तोड़ती है—आपके दिलों को, आपकी जिन्दगी को तोड़ती है। वह चीज है, मिल्कियत। इस मिल्कियत के बोझ को पटक दे, तो आप देखेंगे कि आपकी जिंदगी आसान बनेगी और आपकी ताकत बढेगी। हमने आज मिल्कियत का बड़ा भारी बोझ अपने सिर पर उठा रखा है। यहॉ की

सरकार ने बाईस एकड़ का सीलिंग बनाया है, तो हम समझते है कि अब हम उतनी जमीन के कानूनी मालिक बन गये हैं। मगर ऐसी मिल्कियत को क्या चाटना है ? क्या अंग्रेजों के पास कानूनी हक नहीं था ? वे हिन्दुस्तान पर हुकूमत चलाते थे। कहा जाता था कि उनका राज्य दुनिया-भर फैला है, जिसमे सूरज कभी नहीं डूबता। लेकिन आखिर हमने देखा कि उनके राज्य मे भी सूरज डूबा और उन्हे यहाँ से बोरिया-बिस्तर बाँधकर जाना पड़ा। अंग्रेजों का बहुत बड़ी ताकत थी। उन्होंने जग मे जर्मनी को भी हराया था। लेकिन यहाँ उनके कदम नहीं टिक सके, क्योंकि वे बहाव के खिलाफ काम करते थे। बहाव के खिलाफ कोई नहीं टिक सकता। राजा-महाराजा भी नहीं टिके। इसलिए समझ लीजिये कि जमाने का बहाव किस तरफ है ? यह भी समझ लीजिये कि हम मिल्कियत का दावा करेंगे, तो मार खायेंगे और हार खायेंगे। उससे गाँव के दिल और दिमाग के टुकड़े पड़ जायेंगे, गाँव की ताकत टूट जायगी।

मान लीजिये, मेरी ताकत चार सेर और आपकी तीन सेर है। अगर हम दोनों की ताकतें मिलती है, तो सात सेर बनती हैं। लेकिन ताकते टकराती हैं, तो नतीजा यह होता है कि मेरी नाम की जीत होती है, लेकिन दुनिया को सिर्फ एक सेर ताकत का ही फायदा मिलता है। मेरे दो हाथ और आपके दो हाथ मिल जाते है, तो चार बनते है। लेकिन एक-दूसरे के खिलाफ जाते हैं, तो आप मेरे हाथों को काटते है, मैं आपके हाथों को काटता हूँ और [२ — २ = ०] 'सिफ्र' (शून्य) बच जाता है। अभी हमारे समाज मे दूसरा हिसाब चल रहा है, ताकतें टकराती है और सिफ्र बनता है।

जमीन की मिल्कियत कुफ्र

जो सियासतदाँ हैं, उनका नजरिया तग रहता है। उनका दिमाग वसी नहीं होता, इसलिए वे पार्टियाँ बनाते है। हम लोगों मे पहले ही तफ्रके

(भेद) कम नहीं है। उसमें उन्होंने और एक 'पार्टी' वाला भेद पैदा किया है। वे इन्सानियत पैदा नहीं होने देते। पार्टी के नाम पर वे गाँव-गाँव के लोगों को बहकाते हैं। होना तो यह चाहिए कि हम गाँववालों को समझा दें कि हवा, पानी और सूरज की रोशनी की तरह जमीन भी अल्ला की पैदा की हुई चीज है। इसलिए जमीन की मिल्कियत नहीं हो सकती। हम जमीन को छोड़कर चले जाते हैं और वह यहीं पड़ी रहती है। आश्चर्य की बात है कि फिर भी हम उसके मालिक बन गये हैं!

मैं कहना चाहता हूँ कि हम जमीन के मालिक बनते हैं, तो उसका मतलब यह हुआ कि हम अल्ला के साथ 'शिर्कत' करते हैं। इसे मैं 'कुफ्र' समझता हूँ। समझना चाहिए कि 'मालिक' अल्ला ही हो सकता है, हम नहीं। हम तो जमीन के 'खादिम' ही हो सकते हैं। इसलिए गाँव-गाँव में लोग जमीन की मिल्कियत मिटायें, बाँटकर खायें, मिल-जुलकर काम करें और यह समझें कि जमीन 'मेरी' नहीं, 'हमारी' है, गाँव की है। याद रखिये कि हम 'खुद' याने हमारा गाँव। हम खुद और खुदा, इन दो के सिवा तीसरी बात बीच में मत आने दीजिये।

ये बहकानेवाले सियासतदाँ!

गाँववालों के पास जाकर उनकी ताकत बनाने के बजाय ये सियासतदाँ उनकी ताकत तोड़ते हैं। जिन्होंने कभी देहातों का मुँह भी नहीं देखा, वे भी चुनाव के वक्त देहातों में जाते और कहते हैं कि "हमें वोट दीजिये। हम यह करेंगे, वह करेंगे।" इस तरह बढ़ा-चढ़ाकर वादे करते हैं। वे कहते हैं कि "हमें वोट देंगे, तो आपको कोई फिक्र नहीं करनी पड़ेगी, आपकी तरक्की का कुल जिम्मा हम उठायेंगे।" इस तरह लोगों को बहकाया जाता है।

केवल 'इल्म' ही नहीं, 'अमल' भी चाहिए

होना तो यह चाहिए कि गाँववालों को समझाया जाय कि आपकी तरक्की का जिम्मा आप पर ही है, बाहरवाले तथा सरकार भी सिर्फ थोड़ी

इमदाद (मदद) दे सकती है। हम हाथ पर हाथ धरे बैठे रहेंगे, तो अल्ला के बारिश बरसाने पर भी फसल नहीं, घास ही उगेगी। याने अल्ला भी फसल नहीं, घास ही पैदा कर सकता है। अल्ला की बारिश का फायदा हमें तब मिलेगा, जब हम खेत में बोयेंगे, मेहनत-मशक्कत करेंगे। अल्ला भी आलसी को मदद नहीं करता। हम बबूल बोयेंगे और अल्ला का नाम लेकर उससे कहेंगे कि हमें आम दो, तो वह आम नहीं, बल्कि बबूल ही देगा। इसलिए सिर्फ अल्ला का नाम लेने से कुछ नहीं होगा। नाम के साथ काम भी करना होगा।

आज जो भाई हमसे मिले, उन्होंने कहा कि हमारी कोई खास शिकायत नहीं है। जो वादे किये गये हैं, उन पर अमल नहीं हो रहा है—यही शिकायत है। इस तरह सारा मामला अमल पर रुका हुआ है। 'इल्म' है, लेकिन 'अमल' नहीं है। चावल कैसे पकाना इसका इल्म तो है, लेकिन अमल नहीं किया, चूल्हा नहीं सुलगाया, चावल नहीं पकाया, तो क्या फायदा हुआ? उसूल जरूरी है, लेकिन उन उसूलों पर अमल भी होना चाहिए।

दौलत और गुर्बत : आजमाइश के ही लिए

कुरानशरीफ में कहा है कि अल्ला हमारी आजमाइश करता है। वह किसीको दौलत या गुर्बत देता है, तो उसकी आजमाइश करने के लिए ही देता है। वह किसीको दौलत देता है, तो देखता है कि क्या वह पडो-सियों पर प्यार करता है? अगर आदमी अपनी दौलत का हिस्सा बाँटता है, तो उस आजमाइश में पास होगा। और अगर दूसरों को लूटता है, चूसता है, तो फेल होगा। जो फेल होगा, उसे वह आग में ले जायगा और जो पास होगा, उसे बाग में ले जायगा। लोग समझते हैं कि जिसे अल्ला ने गुर्बत दी, उस पर वह नाराज है और जिसे दौलत दी, उस पर राजी है। लेकिन यह खयाल गलत है। अल्ला किसीको गुर्बत भी देता है, तो

आजमाइश के लिए ही देता है। वह देखता है कि जिसे गुर्बत दी है, क्या वह चोरी करता है, झूठ बोलता है या हाथ फैलाकर भीख माँगता है? अगर वह यही सब करता है, तो फेल होगा। लेकिन अगर वह दोनों हाथों से मेहनत करता है, झूठ नहीं बोलता, चोरी नहीं करता, लाचार और दब्बू नहीं बनता, हिम्मत और सब्र रखता है, अल्ला का नाम लेता है और जो भी थोड़ा-सा मिलता है, उसमें खुश रहता है—उसे दो रोटी की भूख है और एक ही हासिल हुई हो, तो उसमे से भी थोड़ा-सा हिस्सा दूसरे को देता है—तो इम्तहाम मे पास होगा। इस तरह अल्ला दौलत या गुर्बत देकर अपने बंदों की आजमाइश करता है, उन्हे कसता है। अल्ला कभी खौफ पैदा क़रता है, कभी भूख की तकलीफ देता है, तो वह सब आजमाइश करने के लिए ही। जरा सब्र रखो। सब्र रखनेवाले को खुशखबरी सुनने को मिलती है।

एक बनें और खुदा को याद करें

मैं आपको खुशखबरी सुना रहा हूँ कि दो बाते याद रखिये : १. सारा गाँव मिलकर हम 'खुद' बन जायँ। हम सारी जमीन, दौलत, अक्ल गाँव की बनायें। हमारे गाँव मे बेजमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा, कोई न होगा। चाहे गुर्बत हो या दौलत—जो कुछ भी हो, बाँटकर खायें। २. खुदा को याद करें। बीच मे किसीको दखल न देने दे। जो सियासतदाँ होते हैं, वे 'दाँ' कहलाते हैं। लेकिन वाकई मे होते हैं वे 'नादाँ'। उनका दिल, दिमाग तग होता है। वे सोचते नहीं कि विज्ञान का जमाना कितनी रफ्तार से आगे बढ रहा है और दुनिया मे कौन-सी ताकतें काम कर रही है। वे तग नजरिये से ही देखते हैं। इसलिए मैं कहता हूँ कि हमारे मसले 'सियासत' से नहीं, 'रूहानियत' से ही हल होंगे।

कश्मीरी में 'अल्ला' और 'लल्ला'

मै चाहता हूँ कि कश्मीर की यात्रा मे कश्मीरी सीखूँ। यहाँ के

तालीम के मन्त्री से हमने कहा कि कृपा करके कश्मीरी किताबे नागरी और उर्दू—दोनों रस्मूलखत (लिपि-अक्षर) मे छापा कीजिये। इससे कश्मीरी के आगे बढने मे काफी मदद मिलेगी। मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी खूब पढे। लोग कहते हैं कि कश्मीरी मे किताबें नहीं हैं, साहित्य नहीं है। किन्तु मैं मानता हूँ, यह विचार ठीक नहीं है। जिस जबान मे ४०० साल पहले 'लल्ला' हो गयी, उस जबान मे क्या कमी है ?' लल्ला' है और 'अल्ला' है, तो फिर तीसरा कौन कल्ला चाहिए ? कश्मीरी साहित्य को आप खूब बढा सकते हैं। जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत है, वहाँ बड़े-बड़े शायर पैदा हो सकते हैं। आप यह न समझे कि कश्मीरी मे जान नहीं है। कश्मीरी मे खूब जान है। उसने सस्कृत, फारसी, अरबी, पजाबी वगैरह सभी भाषाओं से माल लिया है और वह मालामाल हुई है। उसके साथ-साथ उसकी अपनी भी चीजे हैं। इसलिए कश्मीरी मे बहुत कुछ लिखा जा सकता है।

दिलना
२३-७-'५९

: ३६ :

सियासत को तोड़ना होगा

कश्मीर के दान की कद्र

अभी यहाँ पर हमारे एक भाई ने हमारा इस्तकबाल करते हुए एक बात कही कि यहाँ जमीन पर सीलिंग हुआ है, इसलिए दान मे जो जमीन मिलती है, उसकी अपनी खुसूसियत है। दूसरे सूबों मे जो जमीन मिलती है, उसकी बनिस्बत हम यहाँ के दान को कुछ अहमियत दे। भाई ने यह माँग ठीक ही रखी है। हमने पहले ही कहा था कि जम्मू कश्मीर मे जो दान मिलता है, उसकी हम बहुत कद्र करते हैं। लेकिन अल्लाह की यह कुदरत है कि जो दिल खोलकर देते है, उनसे और भी माँगा जाता है। माँ बच्चो की खूब खिदमत करती है, तो बच्चे माँ से और माँगने मे कतरते नहीं, वे माँगते ही चले जाते हैं और माँ देती चली जाती है। मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आप भी उसी तरह देते चले जायँ।

भगवान् के दर्शन के लिए दान

दान देने मे आप यह चाह न रखें कि उसकी कोई कद्र करे। कुरान-शरीफ मे कहा है कि वे लोग सच्चे इबादत करनेवाले होते है, जो अल्लाह के बन्दे होते हैं। वे देते चले जाते है। अल्लाह के चेहरे के दर्शन के लिए नहीं देते, लेकिन वे 'वजूहल्लाह' के लिए देते है। अगर यह पूछा जाय कि अल्लाह का कोई चेहरा है, तो कहा जायगा, नहीं। लेकिन कुरान-शरीफ में दो लब्ज आते है, 'वजूहल्लाह' और 'यदुल्लाह'। याने अल्लाह का चेहरा और अल्लाह का हाथ। वैसे अल्लाह को हाथ, पाँव, चेहरा नहीं है, फिर भी इन्सान के सामने बोलता है, तो ऐसी जबान बोलता है,

जो इन्सान समझ सकता है। नहीं तो अगर हम ऐसे अल्लाह की बात सामने रखेंगे, जिसका तसव्वुर (चित्र) ही नहीं कर सकते है, तो सारा कहना बेकार होगा। इसलिए वजूहल्लाह कहना पड़ता है। मैं आपसे कहना यह चाहता हूँ कि आप दान देने मे यह चाह न रखें कि आपके दान की कोई कद्र करे। बल्कि वजूहल्लाह की चाह रखें। फिर आपके ध्यान मे आयेगा कि छिटपुट दान से कुछ नहीं होगा।

अमेरिका भी डरता है

आज कुछ भाई मेरे पास आये थे, जिन्होंने कुछ सियासी मसले मेरे सामने रखे। मैं कहना चाहता हूँ कि दुनिया मे ऐसा एक भी देश नहीं है, जहाँपर सियासी मसले नहीं है। वैसे होना तो यह चाहिए कि अमेरिका में सियासी मसले न हों, क्योंकि दुनिया की आधी दौलत वहाँ पर है, वहाँ की जमीन जरखेज है, सिर्फ ४०० साल से जोती हुई है। वहाँ साइन्स प्रगति कर चुका है। वहाँ किसी चीज की कमी नहीं है। तिसपर भी वहाँ पर डर छाया हुआ है। फौज पर अरबों रुपयों का खरचा किया जा रहा है। नये-नये हथियार ईजाद हो रहे है। आज दुनिया मे जिधर देखो, उधर डर छाया हुआ है। हर किसीकी छाती मे धड़कन है। रूस अमेरिका से डरता है और अमेरिका रूस से डरता है। क्या रूस मे शेर-भेड़िया रहते हैं? दोनों देशों मे हमारे जैसे ही दो हाथ, दो पैरवाले जानवर रहते है, जिनको दिल भी हासिल है। दोनों देशों के लोग अपने बाल-बच्चों मे रहते हैं, उन पर प्यार करते है। इस तरह रूस के प्यार करनेवालों से अमेरिकावाले डरते है और अमेरिका के प्यार करनेवाले लोगों से रूसवाले डरते है। अब तो रूस के पास ऐसे हथियार है कि वे घर बैठे-बैठे कहीं भी फेंके जा सकते है। अमेरिका के नागरिक शिकायत करते है कि अमेरिका उस मामले में पिछड़ रहा है। अभी हमने पेपर मे पढ़ा कि अमेरिका का आसमान में उड़नेवाला जहाज दूर तक नहीं गया, तो अमेरिकावाले घबड़ा गये हैं।

लेकिन वहाँ का एक नामानिगार (सवादवाता) लिखता है कि घबड़ाने की जरूरत नहीं है। रूसवाले आई० सी० बी० एम० से जो काम कर सकते हैं, वही काम अमेरिका दूसरे हथियारो से कर सकती है। कहा जाता है कि अमेरिका का एक अड्डा पेशावर मे बन रहा है। यह समझ लीजिये कि पाकिस्तान अभी अमेरिका का बन्दा, चेला बन गया है। वह अमेरिका के कब्जे में है, इसमें किसीको शुबह नहीं होना चाहिए। जो कौम फौज की ताकत पर भरोसा रखेगी, उसे या तो रूस की या अमेरिका की कदमबोसी करनी पडेगी। वैसे अमेरिका जैसे मुल्क को डरने की जरूरत नहीं है, लेकिन वह भी डरता है। रूस और अमेरिका जैसे बड़े देश भी डरते हैं और हिन्दुस्तान, पाकिस्तान जैसे छोटे देश भी डरते है।

इस तरह सारी दुनिया मे जो डर छाया हुआ है, वह तब तक नहीं मिटेगा, जब तक हमारे दिमाग सियासत मे उलझे हुए रहेंगे। इसलिए सियासतदाँ से मैं कहना चाहता हूँ कि साइस के जमाने मे सियासत गयी-बीती चीज हो गयी है। अब आपको ऐसी ताकत, प्यार की ताकत ढूँढनी होगी, जिससे दिल के साथ दिल जोड़ सकें। जिनके दिल जुड़े हुए हों, उन पर कोई हमला नहीं कर सकता है।

ऍटम बम के सामने छुरी किस काम की ?

हम लोगो के पास रूस और अमेरिका के जैसे हथियार तो नहीं हैं, लेकिन हम कहते हैं कि हम एक छुरी रखेंगे। अब वह छुरी किस काम में आयेगी ? अपने ही भाई के पेट मे भोंकने के काम में आयेगी। रूस और अमेरिका के खिलाफ तो आपकी कुछ नहीं चलेगी। यह मत समझिये कि इस जमाने मे कोई मुल्क यहाँ आकर आप पर हुकूमत चलायेगा। दूसरे देशों मे जाकर हुकूमत चलाने की बात अब नहीं चल सकती है। रोम की सल्तनत १२०० साल तक चली, लेकिन अंग्रेजों की सल्तनत यहाँ मुश्किल से डेढ सौ साल चली। एक देश का दूसरे देश पर कब्जा

चले, यह बात साइन्स के खिलाफ है। क्योंकि उससे वर्ल्डवार का डर रहता है। इसलिए किसी देश का दूसरे देश पर हुकूमत चलाना, वहाँ का कारोबार अपने हाथ मे लेना, यह सब अब बनेगा भी नहीं और जरूरी भी नहीं है। लेकिन अब 'स्फियर आफ इनफ्लुएन्स', वजन के मैदान की बात चलती है। रूस और अमेरिका ने अपने-अपने वजन के मैदान बना रखे हैं। चीन भी उसकी तैयारी कर रहा है और दूसरे देश भी चाहते हैं कि हमारा कहीं वजन हो।

सियासत में ताकतवर की ही चलेगी

ऐसी हालत मे आप अपने छोटे दिमाग से सियासत चलाना चाहेंगे और इस छोटे से कश्मीर के ४ टुकड़े करेंगे, तो आपकी ताकत नहीं बनेगी, बल्कि ताकत टूट जायगी। आज एक सियासी जमात के भाइयों ने हमसे पूछा कि फिर हमें क्या करना चाहिए? मैंने कहा, सियासत को तोड़ने का काम करना चाहिए। गॉव-गाँव के लोग अपने गाँव का एक कुनबा बनाये। गॉव मे स्वराज्य कायम करें। अपना मसूबा गाँववाले खुद बनाये। देहात का मसूबा देहली न बनाये, बल्कि देहात बनाये। देहली उसमे कुछ मदद दे। यह सब हमे करना होगा। गाँव मे फूट डालने से ताकत नहीं बनेगी। लेकिन आप गॉव को एक बनाने का काम करेंगे, तो कश्मीर की, हिन्दुस्तान की और दुनिया की भी ताकत बढेगी। यह नहीं करेंगे, तो चन्द लोगों के हाथ मे ही दुनिया की हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ मे एटॉमिक वेपन्स होंगे। लेनिन ने कहा था कि हमने मासेस के इन्टरेस्ट मे हथियार उठाये हैं। मालदार लोगों को, 'व्हेस्टेड इन्टरेस्ट' को हम इन हथियारों से खत्म करेंगे और फिर उसके बाद यह हथियार अवाम के हाथ मे आयेंगे। लेकिन हम देख रहे हैं कि आज रशिया मे क्या चल रहा है? वहाँ पर हथियार आज भी चन्द लोगों के हाथ मे ही हैं, अवाम के हाथ में नहीं हैं। अवाम उन हथियारो का इस्तेमाल ही नहीं कर सकती है। इसलिए अगर आज

की हालत कायम रही, तो जिनके हाथ में एटॉमिक वेपन्स हैं, उन्हींकी हुकूमत चलेगी, फिर चाहे कैपिटलिस्ट हो या सोशलिस्ट हो या कम्युनिस्ट हो। इसलिए दोनों मिल्कियत के विचार छोड़ दीजिये।

नागपुर प्रस्ताव में कुछ नहीं है

यहाँ के नुमाइंदों ने और दूसरों ने मुझसे कुछ सवाल पूछे हैं, जिनमें एक सवाल यह है कि नागपुर कांग्रेस के कोऑपरेटिव फार्मिंग और सीलिंग के प्रस्ताव के बारे में आपकी क्या राय है? मैं कहना चाहता हूँ कि नागपुर का जो प्रस्ताव है, वह प्रस्ताव है ही नहीं। प्रस्ताव की जो कीमत होती है, वह उसके पीछे नहीं है। उसमें एक चाह का इजहार है, विशफुल थिंकिंग है। उसमें कहा गया है मुश्तरका खेती हो। लेकिन हम कानून से वह चीज लादना नहीं चाहते हैं, बल्कि सबकी रजामन्दी से काम करना चाहते हैं।

आज हिन्दुस्तान एक कुश्ती का अखाड़ा बना है, जिसमें बड़े-बड़े माने हुए बुजुर्ग कुश्ती के लिए खड़े हैं। एक बाजू राजाजी हैं और दूसरी बाजू पंडित नेहरू हैं। लेकिन उस प्रस्ताव में कुछ चीज ही नहीं है कि जिसके खिलाफ किसीको जाना पड़े। उसमें जो मुश्तरका खेती की बात है, उससे मिल्कियत तो कायम रहेगी और हरएक के पास जितनी जमीन है, वह उसीकी ही मानी जायगी और मिकदार के मुताबिक मुनाफा तकसीम होगा। इसमें बेजमीन ऐसे ही रह जायँगे। उनके पास कुछ भी नहीं रहेगा। नागपुर प्रस्ताव में तीन बातें हैं कि उसमें मिल्कियत कायम रहेगी, बेजमीनों को कुछ नहीं मिलेगा और वह चीज सबकी रजामन्दी से करनी पड़ेगी। याने ग्रामदान की दिशा में उसमें आधा कदम भी नहीं बढ़ाया गया है। अगर मेरी राय पूछो, तो मैं कहूँगा कि उस प्रस्ताव की मंशा अच्छी है, लेकिन उससे कुछ काम होनेवाला नहीं है।

कारखाने की मिल्कियत कैसे मिटेगी?

और एक सवाल पूछा गया है कि आप जमीन की मिल्कियत मिटाना

चाहते हैं, तो कारखानों की मिल्कियत मिटाने की बात क्यों नहीं करते हैं ? मैं कहना चाहता हूँ कि हम कारखानों की मिल्कियत भी जरूर मिटाना चाहते हैं। लेकिन हमें कदम-ब-कदम आगे बढ़ना है। जमीन की मिल्कियत मिट गयी, तो मिल्कियत की बुनियाद भी उखड़ जायगी। फिर 'लैन्ड स्लाइड' हो जायगा। दूसरा विचार यह है कि जमीन की असली कीमत है और पैसे की कीमत खयाली है। मेरे पास १०,०००) रुपये हैं और मै आपके पास दूध माँगने आया, लेकिन आपने कहा कि मैं दूध नहीं बेचूँगा, वह मेरे बच्चे के लिए है। फिर मेरे दस हजार रुपये बेकार हो जायँगे। दूध की असली कीमत है। पैसे की नकली कीमत है। पैसा तो छापेखाने में छपता है। ठप-ठप करके नोटे छापी जाती हैं। जितना चाहिए, उतना पैसा पैदा किया जा सकता है। एक ठप मे एक रुपये का नोट, तो दूसरे ठप मे हजार रुपये का नोट। इसलिए पैसे को हम बेकार बना सकते हैं। मान लीजिये कि गॉव के लोगों ने जमीन की मिल्कियत मिटा दी। ग्राम-स्वराज्य कायम किया और एक होकर यह तय किया कि हम गाँव मे दस्तकारियाँ खड़ी करेंगे, कपड़ा, तेल, गुड़ वगैरह चीजें गॉव मे ही बनायेंगे, तो फिर यह होगा कि गॉववालों को दूध, मक्खन जैसी चीजें बेचनी नहीं पड़ेगी। आज उन्हे कपड़ा, तेल जैसी हर चीज खरीदनी पड़ती है। इसलिए उनके पास जो चीजें हैं, बेचनी पड़ती हैं। लेकिन गॉव में स्वराज्य कायम होने पर श्रीनगरवालेको मक्खन खरीदने के लिए गॉववालों के पास आना पड़ेगा। श्रीनगर मे न मक्खन बनता है, न दूध, न फल, न तरकारी, न अनाज बनता है। वहॉ कुछ भी नहीं बनता। वहाँ सिर्फ पैसे का जाल है, गुरूर है। सफेद कागज पर काली स्याही से लिखा जाता है दस रुपया, सौ रुपया, हजार रुपया। ऐसे कागज उनके पास हैं और पीले पत्थर, लाल पत्थर, सफेद पत्थर हैं, जो सोना, मानक और हीरा कहे जाते हैं। जब गॉववाले मक्खन बेचने नहीं जायँगे, तो श्रीनगरवाले उनसे पूछेंगे कि आप मक्खन क्यों नहीं बेचते हैं ? तो गॉववाले जवाब देंगे कि मक्खन हमारे बच्चों के

पेट मे जाता है। वही उसके लिए बेहतरीन जगह है। जब यह होगा, तो श्रीनगरवालों के कागज और पत्थर बेकार बन जायँगे।

आज तो यह होता है कि बच्चा मक्खन मॉगता है, तो उसे मक्खन नहीं, बल्कि तमाचा मिलता है। मॉ कहती है कि मक्खन खाने की चीज नहीं है, बेचने की चीज है। लेकिन गाँववाले अपनी जरूरत की चीजें गॉव मे ही बनायेंगे, तो उन्हें ये सारी चीजें बेचनी नहीं पड़ेंगी। फिर श्रीनगर-वाले उनसे पूछेंगे कि क्या आप हमारे दुश्मन बने हैं? गॉववाले जवाब देंगे कि हम आपके दुश्मन नहीं बने हैं, लेकिन हमारे बच्चे मक्खन नहीं खायेंगे, तो मजबूत नहीं बनेंगे और देश की पैदावार घटेगी। इसलिए आपके लिए ही यह जरूरी है कि हमारे बच्चे मक्खन खायें। फिर श्रीनगर-वाले पूछेंगे कि क्या हमें कुछ भी नहीं मिलेगा? फिर गॉववाले कहेंगे कि हम थोड़ा-सा दे सकते हैं, लेकिन दस रुपया सेर मिलेगा। इस तरह बाजार-भाव गॉववालों के हाथ मे आयेगा। आज तो बाजार-भाव शहरवालों के हाथ में है। गॉववालों को अपनी चीज सस्ती बेचनी पड़ती है और खरीदने के वक्त शहर की चीज महॅगी खरीदनी पड़ती है। लेकिन बाजार-भाव उनके हाथ मे आने के बाद फिर यह भी होगा कि गॉववाले शहरवालो से कहेंगे कि हम आपको थोड़ा भी मक्खन नहीं दे सकते। हमारे पास इतना वक्त नहीं है कि आपके लिए गाय रखें और उसकी खिदमत करें। इसलिए आपका लड़का अगर गॉव मे आयेगा और गाय की खिदमत करने के लिए राजी होगा, तो हम उसे वह काम सिखा देंगे, फिर आपको मक्खन मिल सकता है। फिर श्रीनगरवाला कहेगा कि हमारा लड़का तो कॉलेज मे पढ़ता है, वह गॉव मे कैसे आयेगा? गॉववाले कहेंगे कि अगर वह कॉलेज मे पढता है, तो उसे हरफी (शाब्दिक) मक्खन मिल सकता है। लेकिन अगर वह सच्चा मक्खन चाहता है, तो आपको उसे गॉव मे भेजना पड़ेगा। आपको अपने एक लड़के को गॉव मे भेजना ही होगा। अगर उसे दूध दुहने का इल्म हासिल नहीं है, तो हम

उसे वह काम नहीं देंगे, गोबर उठाने का काम देंगे। जब ऐसा होगा, तो आज जो शहर का असर देहात पर पड़ता है, उसके बदले देहात का असर शहर पर पडेगा। आपके शहरों के कारखाने चलानेवाले मजदूर तो देहात से ही जाते हैं। लेकिन जब देहातों की जिन्दगी सुख-चैन की बनेगी, तो मजदूर शहर मे क्यो जायॅगे? फिर कारखानेवालों को मजदूरों की जरूरत पडेगी, तो उन्हे गाँववालों की शर्तें मजूर करनी पड़ेगी। गाँववाले कहेगे कि आप कारखाने की मिल्कियत मुश्तरका बनायेंगे, तभी मजदूर आपके पास आयेंगे। मैंने आपके सामने नाटक का एक अक रखा। यह नाटक हमें करना है। कारखानों की मिल्कियत मिटाने का यही तरीका है।

बाबा नहीं, मेहतर

आज यहाॅ के कुछ मेहतर हमसे मिले थे। मेहतर सस्कृत लफ्ज 'महत्तर' से बना है। उसके मानी है कि जो महान् से महान् है, वह मेहतर है। मेहतर सबसे अहम खिदमत करते हैं। पाकिस्तानवालों ने सिंध से सभी हिन्दुओं को भगाया। आज वहाँ दवा के लिए भी हिन्दू या सिख नहीं मिलेगा। लेकिन उन्होने वहाॅ के मेहतरों को जाने नहीं दिया। यों कहकर कि वह एसेंशियल सर्विस, जरूरी खिदमत है। मेहतरों के लिए मेरे दिल मे बहुत हमदर्दी है। इसकी वजह आपको मालूम नहीं है। मैंने वर्षों तक रोजाना एक घटा मेहतर का काम किया है। उस काम के लिए सूरज की ही मिसाल दी जा सकती है। जैसे सूरज रोज उगता है, वैसे ही मैं रोज वह काम करता था। या दूसरी मिसाल मेरी अपनी ही है। जिस नियमितता से मैं अभी भूदान का काम करता हूॅ, उसी नियमितता से मेहतर का काम करता था। एक दिन बहुत बारिश हुई, तो नदी का पानी चढ़ने की वजह से मैं उस गाॅव मे नहीं जा सकता था, जहाॅ पर मैं मेहतर का काम करता था। लेकिन मैं अपने तयशुदा वक्त पर फावड़ा लेकर नदी के पास गया और उस किनारे जो लोग खड़े थे, उनसे

मैंने कहा कि गॉव के मन्दिर मे जो भगवान् हैं, उनको इत्तला दे दो कि गॉव का मेहतर गॉंव की खिदमत के लिए आया था, लेकिन पानी की वजह से उसे वापस लौटना पड़ रहा है। फिर मैंने उन लोगों से पूछा कि आप क्या सुनायेंगे? उन्होंने कहा कि बाबाजी आये थे और वापस गये। मैंने कहा कि यह मत सुनाओ। आपके लिए मै बाबा हूॅ, लेकिन इस गॉव का मै मेहतर हूॅ।

मेहतरो को नजात मिले

इस तरह मैंने बहुत प्यार से मेहतर का काम किया है। दुःख की बात है कि जो सबसे अहम काम है, उसे नीच माना गया है। जब इस तरह माना जाता है, तो समाज हर्गिज तरक्की नहीं कर सकता। गिबन ने रोम की सल्तनत की गिरावट की वजह बताते हुए कहा है कि रोम के लोग मेहनत-मशक्कत को नीच समझने लगे, इसलिए उनकी सल्तनत खत्म हुई। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम मेहतरों के काम को नीच न मानें। उनकी सहूलियतों की तरफ ध्यान दें। आज उन्हें सिर्फ तीस रुपया वेतन मिलता है, जिनमे से तीन रुपया मकान के किराये के लिए लिया जाता है। इतने पैसे में उनका कैसे चलेगा? उनका वेतन तो बढ़ाना ही चाहिए, लेकिन मेरी सिफारिश है कि एक पॉंचसालाना योजना बनाओ और तय करो कि मेहतरों के लडकों से मेहतरों का काम लेना हम हराम समझेंगे। इसलिए उन्हें तालीम देकर दूसरा काम देंगे। इस तरह मेहतरों की नजात (मुक्ति) का काम हमे उठाना होगा। देहली मे श्री जगजीवनराम ने मेरी मौजूदगी मे कहा था कि मैं किसी काम को नीचा या ऊॅचा नहीं मानता हूॅ, लेकिन मेहतर का काम इन्सान को हर्गिज नहीं करना चाहिए। वह इन्सानियत को गिरानेवाला काम है। मैं मानता हूॅ कि उन्होंने लाजवाब दलील पेश की। इन दिनों हर धन्धे मे स्पर्धा चलती है। ब्राह्मणों ने चमड़े का काम भी लिया है। लेकिन मेहतर का काम करने

के लिए दूसरा कोई नहीं जाता। उसके मानी यह है कि वह काम इन्सान के लायक नहीं है। हमारे देश मे हम सचमुच में आजादी चाहते हैं, तो उन लोगों को हमे आजाद बनाना होगा। मेरे दिल मे इस काम के लिए तड़पन है। १५ अगस्त १९४७ के दिन मैंने एक घर में पिंजडे में तोता देखा, तो कहा कि आजाद देश के बाशिन्दों के घरो में पिंजड़े में तोते नहीं रह सकते। यों कहकर मैने तोते को रिहा कर दिया। हम आजाद है, तो दूसरे को गुलाम नहीं रख सकते। आजादी की दो अलामतें है। एक–हम किसीसे दबेंगे नहीं, डरेंगे नहीं और दो—हम किसीको दबायेंगे नहीं, डरायेंगे नहीं। इन दो सिफतों से इन्सान का दिल आजाद बनता है। जहाँ कोई जालिम है और कोई मजलूम, वह देश आजाद नहीं है। जालिम भी आजाद नहीं है और मजलूम भी आजाद नहीं है। मैं चाहता हूँ कि बारामुल्ला अच्छा गाँव बने। उसके लिए मेहतरों को आजाद करना होगा।

बारामुल्ला
२४-७-'५९

: ३७ :

कुरानशरीफ की तालीम

आज सुबह ११ बजे हमने भाइयो को बुलाया था, कुरानशरीफ की तिलावत (पढाई) करने के लिए। तिलावत करनेवाले बहुत निकले और लोग भी बहुत आये थे। बहुत से लोग कुरान पढना जानते थे और कुछ बेचारे नहीं जानते थे। इसलिए गलतियाँ भी कुछ होती थीं। लेकिन अल्ला तो 'गफूरुर् रहीम्' कहलाता है। इसलिए वह तो मुआफ कर ही देगा। बच्चा जब ठीक नहीं बोलता, तब भी उसकी टूटी-फूटी जबान माँ को प्यारी लगती है। इसी तरह से अल्ला को भी वह सारा प्यारा लगा होगा। मुझे बडी खुशी हुई कि बहुत से लोगों ने इसमे हिस्सा लिया। ऐसा प्रोग्राम मैं इसलिए करता हूँ कि यहाँ के भाइयों से वाकिफ हो जाऊँ।

'सूरे-हश्र्' सबका प्यारा

मैंने देखा, करीब १३-१४ शख्स होंगे, जिन्होंने तिलावत की। सबसे पहले जिन्होने तिलावत की, उन्होंने 'सूरे-हश्र्' मे से की। जब से इस प्रकार तिलावत करना शुरू किया है, तब से मैंने देखा कि हर मजलिस मे 'सूरे-हश्र्' का जिक्र हुआ ही है। इस बात की मुझे बेहद खुशी होती है। इससे जाहिर होता है कि कौन सी चीज लोगों के दिलो को प्यारी लगती है। वैसे पैगम्बरो और नबियो ने दूसरी जगहो पर भी जो नसीहतें दी हैं, वे सबकी भलाई के लिए ही दी हैं। इसलिए किसीकी कीमत कम, किसीकी ज्यादा, ऐसा तौल नहीं कर सकते। कुछ बातें किसीके काम आती हैं, तो कुछ बातें किसी दूसरे के काम आती हैं। इसका मतलब यह है कि कुछ बाते मेरी गरज के लिए होती हैं और कुछ दूसरे की गरज के लिए। कुछ ऐसी भी होती हैं, जो सबके काम की होती हैं और वे सबको प्रिय होती हैं, प्यारी होती हैं।

यह प्रोग्राम मैंने पूँच की तरफ से शुरू किया। वैसे इसके पहले भी—

१० साल पहले—जब मैं हिंदुस्तान मे मेवात के मुसलमानों को बसाने का काम करता था, तब भी तिलावत का यह काम करता था। बहुत थोड़े प्रोग्राम ऐसे हुए, जिनमे 'सूरे-हश्र्' न गाया गया हो।

अल्ला के लाताअदाद नाम

—'सूरे-हश्र्' मे अल्ला के लाताअदाद नाम आते हैं। वे उनके विशेषण है। उनकी जितनी सिफतें (गुण) हैं, उतने ही नाम है। पर अल्ला की सिफतो की गिनती हो ही नहीं सकती। उसके गुण, उसकी सिफत जबान पर भी नहीं ला सकते। उनको हम नाप नहीं सकते।

हिन्दू-धर्म मे व्यासजी ने 'महाभारत' नाम का एक ग्रन्थ लिखा है। उसमे 'विष्णुसहस्रनाम' आता है। याने भगवान् के सहस्र नाम हैं। मुसलमानों ने अल्ला के ९९ नाम माने हैं। क्या वाकई मे अल्ला के नाम ९९ तक ही महदूद (सीमित) है? नहीं! लेकिन ऐसी सिर्फ गिनती मान रखी है। इसी तरह 'सूरे-हश्र्' मे अल्ला के नाम इकट्ठे किये हैं और वह हिस्सा लोगो को बहुत ही प्यारा है। इसलिए हर प्रोग्राम मे कोई-न-कोई उसे गानेवाला निकल ही आता है। यह बताता है कि हिन्दुस्तान के लोगों मे अक्ल है। किस चीज की क्या कीमत है, इसे वे अच्छी तरह जानते है। इस तरह परमात्मा के नाम की अहमियत सब धर्मों मे गायी गयी है। यह ठीक है कि बौद्ध-धर्म मे बुद्ध का याने एक महापुरुष का नाम गाया है। खैर! लोग किसीका भी नाम लें। आखिर इन्सान को बचानेवाला है कौन, यह पूछा जाय, तो नाम ही है। इसके सिवा दूसरी चीज इन्सान के पास नहीं है, जो उसे खौफ से बचा सके।

अल्ला की बड़ी देनें : मीजान और रहम

अल्ला ने इन्सान को अक्ल और मुहब्बत दी है। अल्ला का यह फज्ल (कृपा) है। उसने जो नियामते दी हैं, वे 'सूरे-हश्र्' मे आती हैं। उसमे ऐसा कहा है कि कौन-सी ऐसी अल्ला की नियामत (देन) है, जो आप

कबूल नहीं करते। उसमें अल्ला की नियामतें गिनी हैं। यों उसकी गिनती तो नहीं हो सकती, लेकिन कुछ फेहरिस्त जरूर दी है।

अल्ला ने जो कुछ पैदा किया है, उसका जिक्र करते हुए उसमें यह कहा गया है कि अल्ला ने इन्सान को 'मीजान' याने तराजू दिया है। इसीलिए वह ठीक ठीक वजन, नाप, तौल करता है। अल्ला ने जो चीजें पैदा कीं, उनमें जमीन, आसमान, पहाड, दरख्त, फूल, फल, अनाज आदि कई नाम आते हैं और अजीब बात यह है कि उनमें 'तराजू' का भी नाम आता है, 'मीजान'। और फिर नसीहत दी गयी है कि अल्ला ने जो नियामतें दी हैं, उनका पूरा फायदा उठाना हो, तो अपनी तराजू जरा ठीक रखें। उसमें कम-बेसी न होने दें। मेरे प्यारे भाइयो, तराजू हमने अपने पास इसलिए रखा है कि न्याय में कभी भी फर्क न हो, न्याय ठीक ठीक दे सकें। तराजू से भी बढ़कर कोई चीज हो सकती है, लेकिन वह तराजू (इसीलिए) है कि हम जिंदगी में तौलकर काम करें। जीने के लिए अच्छी चीज मिलेगी, लेकिन हमारा नापना-तौलना कम न हो।

सबसे बड़ी चीज अल्ला ने जो हमें दी है, वह है 'रहम'। अल्ला का नाम है 'अल्रहमान'। मुहम्मद पैगम्बर यह नाम लेता है। उसने कहा है कि दूसरे तीसरे मा'बूद (पूज्य ईश्वर) नहीं हैं। अल्ला एक ही है। लेकिन वह 'अल्रहमान' यह नाम भी लेता है। कुरानशरीफ में आता है कि एक दिन मीटिंग में एक शख्स ने मुहम्मद पैगम्बर से पूछा कि "आप कभी 'रहमान' कहते हैं, कभी 'अल्ला' कहते हैं, तो क्या ये दो शख्स हैं? आप तो कहते हैं कि इबादत के लायक एक ही है।" इस पर पैगम्बर ने जवाब में कहा कि "अरे, जो अल्ला है, वही रहमान है और जो रहमान है, वही अल्ला है।"

क्या हमारी जिन्दगी में रहम है?

अल्ला का सबसे बड़ा नाम है 'रहमान' याने रहम करनेवाला। अगर अल्ला हम पर रहम करता है, तो हमारा फर्ज क्या है? अल्ला ने हमें 'तराजू'

दिया है, इसलिए जितना उसने दिया, उतना वापस हम करेंगे, यह तो कम-से-कम बात हुई। अगर इससे भी कम हम करें, तो इन्सानियत से भी नीचे गिर जायँगे। लेकिन अल्ला ने हमारे सामने एक मिसाल रखी है। आप जितना देते हैं, उससे ज्यादा ही वह आपको देता है। आपके सामने किसान की मिसाल है। किसान एक दाना बोता है, लेकिन वापस कितना पाता है? यह जाहिर है कि बनिये की तरह अल्ला तौलकर नहीं देता। वह एक के बदले एक नहीं देता। वह ऐसा नहीं करता कि आपने मुझे एक दाना दिया है, इसलिए मै भी आपको वह एक दाना ही वापस करता हूँ और सूद के तौर पर और एक, इस प्रकार दो बीज देता हूँ। वह तो एक के बदले सौ देता है। आपके प्यार के बदले मे भर-भरकर देता है, खूब-खूब देता है।

कुरानशरीफ मे एक जगह आया है कि "कोई शख्स अच्छा काम करेगा, तो अल्ला उसे दसगुना देगा और अगर बुरा काम करेगा, तो उसे उतना ही देगा।" इसमे मीजान कहाँ रह गया? वह उसका इस्तेमाल ही नहीं करता। जहाँ बुरा काम किया गया, वहाँ वह उतना ही देगा और जहाँ अच्छा काम किया, वहाँ वह दसगुना देगा। याने प्यार बरसाने के लिए वह तैयार बैठा है। आखिर मे अल्ला की हमारे लिए सबसे बडी मिसाल है 'रहम'। मै आपसे पूछना चाहता हूँ, क्या वह रहम भी जिन्दगी मे रहा है? वह तराजू भी नहीं रहा है। जितना दिया, उससे ज्यादा पाने की नीयत है। एक सेर पाया, तो पौन सेर लौटाने की नीयत है। लोग तो अल्ला को भी ठगना चाहते है। वह १ बीज के बदले १०० देता है, तो ये लोग उससे कहते हैं कि "हमारे १ के बदले तू १०० देता है, तो हम कुछ भी नही दें—सिफ्र दें, तो तू हमे ९९ दे।" अल्ला कहता है : "तू मुझे बेवकूफ मत बना। प्यार की अलामत (निशानी) मुझे मिलनी चाहिए, इसीलिए मैं तुम्हें १०० गुना देता हूँ। यह ध्यान रख कि १ का १०० गुना १०० होता है। लेकिन सिफ्र का १०० गुना भी सिफ्र ही होता है। ०×१०० =०, १×१००=१०० होता है। ऐसी दया, रहम अल्ला ने सब पर

चलायी। कोई अच्छा काम करेगा, तो अल्ला खूब देगा। कोई मेहमान आये, तो बाप अपने बेटे के थोडे-से काम की खूब तारीफ उसके पास करता है। माँ-बाप का यह दिल कुदरत के पास है। वह इन्सान को भर-भरके देती है।

खूबसूरत कुदरत, बदसूरत इन्सान

यहाँ जितनी खूबसूरत कुदरत है, उतना ही बदसूरत इन्सान हमने देखा। हम लोरेन गाँव मे गये थे। वहाँ से पीर पचाल का पहाड़ लाँघकर यहाँ आये। लोरेन मे बडा ही सुन्दर नजारा देखने को मिला। आँखो के लिए सुकून (शान्ति), आँखो के लिए भोजन वहाँ मिलता है। लेकिन हमने देखा, जहाँ ज्यादा-से-ज्यादा खूबसूरत जगह है, वहाँ इन्सान ज्यादा-से-ज्यादा बदसूरत हैं। आपके जितने ब्यूटी स्पॉट्स (सुन्दर जगहे) है, उतने ही डर्टी स्पॉट्स (भद्दे धब्बे) भी है। वहाँ गुर्बत (गरीबी) भी खूब देखी। गरीबो की ओर कुछ भी ध्यान नहीं दिया जा रहा है।

पीर-पचाल के उस पार मडी-राजपुरा मे हम छह दिन रुके थे। सैलाब के कारण वहाँ रुकना पडा। जमीन खिसकने (लैण्ड-स्लाइड) के कारण एक मकान गिर गया। उसके नीचे सात शख्स मर गये, आठवाँ जिन्दा निकला। हमारे साथियों ने वहाँ जाकर खोदा, लाशों को निकालना, दफनाना कुल-का-कुल काम किया। मुसल्मानो को दफनाने का काम हिन्दुओं ने किया। एक जो जिन्दा लड़का निकला था, उसकी भी तीन दिन तक खिदमत की, पर वह तीसरे दिन मर गया। यह सारा वहाँ हुआ। हम कुछ न कर सके, तो भी दुनियाभर मे उसकी खबर पहुँची। हम वहाँ रुके, इसलिए दुनिया का ध्यान उस तरफ गया। सोचा जाने लगा कि अब बाबा का क्या होगा? लेकिन जिनकी फिक्र नहीं की जाती, उनकी फिक्र करनी चाहिए। बाबा की फिक्र तो सभी करते हैं। हमने देखा, वहाँ मजदूर कहते थे: "आप हमे पैसा न दीजिये, अनाज दीजिये।" ऐसी गुर्बत वहाँ है। इस सैलाब की वजह से यह आफत आयी, यह अलग बात

है। फिर भी वहाँ बहुत गुर्बत है। इधर गुलमर्ग में दुनियाभर के लोग देखने आते हैं। इतनी सुन्दर कुदरत वहाँ है। लेकिन वहाँ जो मजदूर हैं, उनकी हालत बहुत ही खराब है। अचरज की बात है कि जहाँ इतनी खूबसूरत कुदरत हो, वहाँ का इन्सान इतना संगदिल! इतना तंगदिल बना है! कुरानशरीफ में 'सूरे बकर' में आता है कि "तेरा दिल पत्थर जैसा है।" बाद में कहा है, "लेकिन ऐसा कहना भी गलत है, क्योंकि दूसरे ऐसे कितने ही कीमती पत्थर होते हैं, जिनसे तेरा दिल ज्यादा सख्त है।" आश्चर्य है कि हमारा दिल इतना सख्त बन गया है।

प्यार को महदूद करने का नतीजा

फिर भी अल्ला की क्या करामात है? उसने मनसूबा किया और हरएक को प्यार की तालीम बचपन से ही दी है। सरकार अक्ल की तालीम देती है। लेकिन मुहब्बत और प्यार की तालीम हर बच्चे को मिले—ऐसी तजवीज अल्ला ने की है। हरएक बच्चा माँ की गोद में जन्म लेता है, चाहे वह अमीर हो या गरीब। प्यार और मुहब्बत की तालीम—इतनी बड़ी तालीम अल्ला ने उसे दे रखी है। हम प्यार से जनमते हैं, प्यार से ही बढ़ते हैं। इतना सारा प्यार अन्दर-बाहर, ऊपर-नीचे, आगे-पीछे मिलता रहता है। फिर भी हम कैसे सख्त बन जाते हैं! घर में प्यार करते हैं और पड़ोसी के प्रति पत्थर का दिल बनाते हैं। इस तरह प्यार को हमने घर में महदूद किया है, कैदी बनाया है। प्यार को बहने नहीं दिया है। पानी को बहने नहीं दिया, तो पानी गन्दा बन जाता है, उसमें कीड़े पड़ते हैं, वैसे ही घर में 'मेरी बीबी', 'मेरे बच्चे'—याने बाकी और जो हैं गाँव में, वे 'मेरे नहीं'—ऐसा हो जाता है, तो प्यार की भी वही हालत हो जाती है। उसे फिर प्यार का रूप नहीं रहता। जैसे वह पानी पीने लायक नहीं रहता, गन्दा हो जाता है, वैसे ही जो प्यार सिर्फ घर में रहता है, वह प्यार नहीं रहता, वह शहवत (काम-

वासना), हवस बन जाती है। कुरान में एक जगह आया है—'नहन्नफ्स अनिलहवा।' बड़े-बड़े नबी, बड़े-बड़े सन्त सत्पुरुषों ने प्यार किया है और खिदमत की है। वह प्यार गंगा का पानी है। उनमें प्यार था, इसलिए उन्होंने दुनिया की खिदमत की। लेकिन प्यार को रोका जाय, तो जिन्दगी बरबाद होगी, बिगड़ जायगी।

कबीर की नसीहत

हम अपना आलीशान मकान बनाते हैं, जब कि आसपास झोपड़े भी होते हैं। हमारी जिन्दगी के लिए सारा सामान मुहैया है, फिर हमारे घर के लिए कोई खतरा न हो, इसलिए हथियार लेकर रक्षा के लिए, बचाव के लिए हम सन्तरी खड़े करते हैं। इस तरह हमारा अपना घर भरा है। कबीर का एक शेर है—

'पानी बाढ़ो नाव में, घर में बाढ़ो दाम।
दोनों हाथ उलीचिये, यही सयानो काम॥'

किश्ती में पानी भरा, यह खुशखबरी नहीं, डर है, इसलिए उसे दोनों हाथों से उलीचना चाहिए। जिस घर में पैसा भर गया, उसकी भी हालत उस किश्ती जैसी हो जाती है। पानी चाहिए, पर किश्ती के बाहर-नीचे, अन्दर नहीं। वैसे ही पैसा, धन, दौलत चाहिए जरूर, पर घर में नहीं, घर के बाहर, समाज में। दौलत को घर में कैद कर रखें, तो खतरा है। दौलत इस हाथ से उस हाथ में जानी चाहिए। जैसे फुटबॉल का खेल होता है। अगर मैं गेंद न फेकूँ, अपने ही हाथ में लिये रहूँ, खुदगर्ज बनूँ, तो खेल खत्म हो जायगा। जहाँ गेंद हाथ में आयी, तो उसे फौरन लात मारकर आपके पास भेज दिया जाता है, वैसे ही दौलत एक के हाथ से दूसरे के हाथ में, समाज में बहती रहनी चाहिए, दौड़ती रहनी चाहिए, फैलती रहनी चाहिए। ऐसा करने से ही समाज की जिन्दगी अच्छी, खुश-हाल बनती है।

जकात और रहम की जरूरत

हमने क्या किया है? बहनों के कान मे, नाक मे अल्ला ने छेद नहीं बनाया, पर हमने बनाया। वैसे ही मोती मे भी छेद नहीं था, वह भी हमने बनाया। उसके अन्दर सोने का धागा पिरोया और कान तथा नाक मे लटका दिया। हमने कई बार कहा है कि गहनों ने बहनों को दबाया है, गुलाम बनाया है। कान मे बेड़ी, नाक मे बेड़ी, हाथ मे बेड़ी, पाँव मे बेड़ी! ऐसी बेडी से ही बहने डरपोक बनती हैं। वे सारी हमारी बैंक बनती हैं, तो दूसरे की नजर उन पर जाती है।

रेल की मुसाफिरी मे हमारे खाने पर किसीकी नजर न जाय, इसलिए हम पीठ फेर लेते और खाना खाते हैं, क्योंकि दूसरे की नजर हमारे खाने पर पडी, तो खाना हजम नहीं होगा। यह कौन सी नजर है? क्या माँ खाने को बैठती है, तो बच्चे की नजर उस पर पड़ती है? नहीं, क्योंकि वह बच्चे को पहले खिलाकर बाद मे खुद खाती है। माँ बच्चे को दिये बिना नहीं खाती। हम दूसरे को न दें और खुद मेवा मिठाई खायें, तो वैसी हालत मे हमारे खाने पर उसकी नजर पडने पर वह खाना हमे हजम नहीं होता। इसलिए बड़ी बात तो यह है कि खुद खाने के पहले समाज के लिए कुछ न कुछ देना चाहिए—देकर ही खाना चाहिए। आपके पास कुछ भी नहीं, सिर्फ एक रोटी है। यह भी माना कि उसकी आपको जरूरत है। फिर भी जो एक है, उसका भी एक हिस्सा, थोड़ा-सा टुकड़ा पहले दूसरे को दे, फिर खुद खाये। गरीबों को भी देना लाजिमी है, सभी को कुछ न कुछ जरूर ही देना चाहिए। दिये बिना नहीं रहना चाहिए।

कुरानशरीफ मे आता है—'वयुअतुजजकात।' जकात देनी चाहिए। 'मिम्मा रजकना हुम युनफिकून।' जो भी थोड़ा है, उसीमें से देना चाहिए। देना धर्म है और धर्म सभी को लागू होता है, इसलिए गरीबों को भी देना चाहिए। जो भी थोड़ा मिलता है, उसीमें से पेट काटकर देना चाहिए। देने का यह फर्ज हरएक को अदा करना चाहिए।

किसान क्या करता है ? फसल आयी, तो बोने के लिए उसमें से अच्छे-से-अच्छा, उत्तम-से उत्तम बीज निकालकर रखता है, क्योंकि दिये बगैर खाना नहीं चाहिए। इसीलिए थोड़ा गल्ला हो, तो भी उसमें से किसान बोने के लिए निकालकर रखता है। खाने को कम हो, तो भी वह नहीं खाता। यह एक तरह से उसकी कुर्बानी है। इसलिए भगवान् खुश होते हैं और दसगुना देते है। इसलिए हम भी अपना फर्ज अदा करें, रहम करें और इन्साफ रखें। अगर हम इन्साफ भी न करें, तो इन्सान गिरेगा। इसलिए 'मीजान' रखें, 'तराजू' रखें। इन्साफ दें और ज्यादा रहम करें। आज रहम की सख्त जरूरत है।

आठ साल से लगातार यही बात दुहराते हम चले आ रहे हैं। फिर जैसा सुननेवाला मिलता है, वैसा सुनाते है। कभी कुरान को माननेवाले मिलते हैं, तो कुरान के नाम से अपनी बात रखते हैं। वेद के नाम पर चलनेवाले मिलते हैं, तो वेद के नाम से रखते हैं। बाइबिल के नाम पर चलनेवाले मिले, तो बाइबिल के नाम से रखते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि जन्नत मे हमारे लिए सीट रिजर्व हो, इस खयाल से कोई कुरान पढता हो, तो उसका कुरान पढना बेकार है, अगर उसमें रहम नहीं है।

ईमान के साथ अमल हो

"जो ईमान रखते हैं, वे नेक अमल भी करें।" इसका मानी यह है कि ईमान की कसौटी अमल ही है। इसलिए 'तिलावत करेंगे और जन्नत मे जायँगे'—ऐसा मानना गलत है। संस्कृत में कहावत है : 'श्रुतं हरति पापानि।' सुन लिया और पाप मिट गये। लेकिन सुननेभर से पाप खतम नहीं होते। उसके लिए तो अमल करना चाहिए। अल्ला से हमने भर-भरकर रहम पाया है। इसलिए हमारा भी फर्ज है कि हम भी इन्साफ करें, रहम करें। यह सूझ सूझती है अल्ला का नाम लेने से ही। इसलिए 'सूरे-हश्र' की तिलावत करते हैं। अल्ला 'अल्हक' है, तो हमें भी सचाई से चलना चाहिए। वह 'अर्रहमान' है, तो हमें भी रहम करना चाहिए।

जो-जो गुण, जो-जो नाम अल्ला के हम गाये, उनका अमल हमें हमारी अपनी जिन्दगी में भी करना होगा। हमें उन सिफतों (गुणों) को अपनी जिन्दगी में लाना चाहिए। उसकी रहम बेहिसाब है। हमारी छोटी कूवत है। फिर भी हम जो नाम ले रहे हैं, इसका अमल जिन्दगी में करना चाहिए। आज की तिलावत से हमें बड़ी खुशी हुई। 'सूरे हशूर !' अल्ला का नाम लिया करो। ऐसा करने से इन्सान जरूर ऊपर उठता है।

आखिरी लमहे के लिए सारी कोशिश

आखिरी लमहा (क्षण) अच्छा हो, इसलिए हाथ से नेक काम होना चाहिए। आखिरी क्षण हम अल्ला का जिक्र करते रहेंगे, उसका नाम लेते रहेंगे, तो हमने पा लिया। नहीं तो हमने जिन्दगीभर सब कुछ किया, लेकिन सब खो दिया। वह आखिरी क्षण, लमहा अच्छा हो, इसलिए यह कोशिश हो रही है। जिंदगीभर हमने बहुत त्याग किया, तकलीफ उठायी, पर आखिरी क्षण में उसे याद न कर सके, तो हमने सब कुछ खो दिया।

रोते हुए आये, हँसते जायँ

जब तू इस दुनिया में आया, तब रोते-रोते आया। तू रोता था और लोग हँसते थे। अब जब तू जायगा, तब हँसता रहे और लोग रोते रहें, ऐसा होना चाहिए। 'सब का प्यारा था'—ऐसा लोग कहें, तो जानेवाला हँसते-हँसते जाय। "मैंने 'मेरा' 'मेरा' नहीं किया। भगवान् ने जो चोला पहनाया था, वह उसके बन्दों की खिदमत के लिए था। मैंने खिदमत की। अब जा रहा हूँ हँसते-हँसते"—ऐसा होगा, तभी तो कुछ कमाया, यह कहा जायगा। जाते समय हम इतमीनान से गये, तब तो हमने कमाया। नहीं तो यह खेत, क्या यह दौलत कोई कमाई है? नहीं! इसलिए यहाँ हैं, तब तक खिदमत करें। ऐसा करेंगे, तभी अल्ला फज्ल करेगा।

हिदवारा
२६-७-'५९

: ३८ :

भारत के दो सिरों पर एक ही पैग़ाम

आज हम हिन्दुतान के बिलकुल एक सिरे पर पहुँचे है, जो हिन्दुस्तान का शुमाली सिरा है। सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी मे दूसरे सिरे पर थे, जो जनूबी सिरा था। वह भारत का पाँव है और आज जहाँ बैठे हैं, वह हिस्सा भारत का सिर है। कन्याकुमारी मे समुद्र का पानी लेकर हमने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक हिन्दुस्तान में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना नहीं होगी, तब तक हमारी पैदल यात्रा जारी रहेगी।

यहाँ पर हम उसी काम के लिए आये हैं, जिस काम के लिए कन्याकुमारी गये थे। वह काम है दिलों का जोडना। उसके लिए हमें कारकूलों की जरूरत है। हम कहाँ से कारकूल लायेगे। हमारे पास कोई जखीरा नहीं है। हम मानते हैं कि आप जो सारे लोग यहाँ बैठे है, वे सब हमारे कारकूल हैं। आज यहाँ पर बहुत सारे कारकूल मुख्तलिफ सियासत पार्टियों मे बँटे हुए हैं, जो एक-दूसरे से टकराते हैं। एक गाडी को दो बैल जोडे हों और दोनों एक-दूसरे पर बोझ डालते हों, तो गाडी आगे नहीं बढेगी। हमारे देश मे भी सियासी पार्टियों के बैल एक-दूसरे पर बोझ ढकेलते हैं, इसलिए देश की गाडी रुक गयी है। ऐसे टकरानेवाले कारकूल हमें नहीं चाहिए। प्यारवाले कारकूल चाहिए। हमारा कोई इरादा नहीं है। जिनको हमारी बात जँचेगी, वे हमारे कारकूल बनेंगे। लडनेवाले सियासतदाँ से हम कहते हैं कि तुम नादान मत बनो, गरीबों के काम के लिए एक हो जाओ।

वटलब

२८-७-'५९

: ३९ :

कुदरती और रूहानी सैलाब का पैग़ाम

[दिनभर कश्मीर के भिन्न-भिन्न धर्मों तथा विचारों के प्रतिनिधि पू० विनोबाजी से मिले और उन्होंने अपनी-अपनी बातें सुनायीं ।—स०]

हर कोई दूसरे की गलतियाँ बताता है

आज दिनभर खूब सुनकर भी मुझे कुछ भी जानकारी नहीं मिली । जब हर कोई अपना-अपना कसूर बतायेगा, जान-बूझकर या अनजान मे अपने से जो भी गलतियाँ हुई हो, उन्हे बतायेगा—झूठ नहीं, सही बतायेगा, तभी जानकारी हासिल होगी । अपने को सुधारने का यही तरीका है । इन्सान दुनिया को सुधारने की कोशिश करता है, लेकिन अपने को सुधारने की कोशिश नहीं करता । आज कुछ लोगो ने तो गाधीजी की बात भी मेरे सामने रखी, मानो वे गाधीजी को मुझसे भी ज्यादा जानते हों और कहा कि "गाधीजी दिलों को पलटाने की, हृदय-परिवर्तन की बात करते थे ।" हमे समझना चाहिए कि हृदय-परिवर्तन अपने से शुरू होता है । मैं अपने दिल को सुधारूँ, तभी फिर दूसरे का सुधार हो सकता है । जो भी मेरे पास आते हैं, वे अपनी-अपनी निगाह मे अपनी जो गलतियाँ है, उन्हे बतायें, तो मै भी कुछ बता सकूँगा कि उन्हे दुरुस्त कैसे किया जाय ! आज तो जो भी आते है, वे सोचते हैं कि मेरी खुद की तो कोई गलती होती ही नहीं । लेकिन मेरे लिए यह मानना बडा मुश्किल हो जाता है । हर कोई दूसरे की गलती बताता है । अगर यहाँ दो ही पार्टियाँ होतीं, तो हम यह करते कि एक कान एक को देते और दूसरा दूसरे को । लेकिन ५-६ पार्टियाँ है, तो हमारे लिए मुश्किल हो जाता है, क्योंकि हमारे ५-६ कान है ही नहीं । इसलिए

कुल मिलाकर आज का मेरा वक्त बेकार ही गया। मुझे केवल इतनी ही जानकारी मिली कि अभी तक लोग आपस मे मिल-जुलकर काम करने की बात नहीं सीखे है। सभी के अपने-अपने जज्बे उन पर हावी है। इसके अलावा सामनेवाले की बात कोई नहीं सोचता।

दिमाग ठंडा रखिये

मैं कहना यह चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने मे यह बात बहुत खतरनाक है कि हम जज्बा पैदा करे। इस जमाने मे जज्बा कतई पैदा नहीं करना चाहिए, ठडे दिमाग से सोचना चाहिए। दिल मे जोश रहे, क्योकि उसके बिना कोई काम नहीं कर सकता। लेकिन उसके साथ दिमाग मे होश भी रहे। लेकिन यहाँ तो दिल मे भी जोश और दिमाग मे भी जोश है। जिस गाड़ी को गार्ड का डिब्बा ही न हो, दोनों तरफ इजन ही हो, तो वह गाड़ी कहीं भी गिर सकती है। जब इन्जन के साथ गार्ड भी हो, तो वह गाड़ी को बराबर काबू मे रखता है। वैसे ही इन्सान को अपने पर जब्त रखना चाहिए और दिमाग बिल्कुल ठडा रखना चाहिए। जब मै देखता हूँ कि सामनेवाला जोश मे बात कर रहा है, तो मैं समझता हूँ कि अब उसकी बात मे कुछ भी ध्यान देने लायक नहीं है। यू० एन० ओ० मे जोश से बात करे, तो अपना मामला खत्म हो जायगा। वहाँ तो होश से बात करनी चाहिए। लेकिन ये सियासतदाँ लोगो मे जज्बा पैदा करते हैं और उस जज्बे के सरमाये पर, पूँजी पर अपनी सारी तिजारत चलाते है, यह गलत बात है।

काजी मत बनो

आज कइयो ने मुझसे गाधीजी की बात कही। लेकिन समझना चाहिए कि गाधीजी की सबसे बडी बात यह थी कि उनसे जब कोई गलती हुई, तो उसका इजहार करने मे उन्हे जरा भी हिचक नहीं मालूम हुई। लोगो ने उनकी गलती को उतना बड़ा नहीं समझा, जितना उन्होंने समझा। उन्होने तो कहा कि मुझसे हिमालय जितनी बड़ी गलती हुई। उसी तरह हम भी

जरा अन्दर देखें कि क्या हमसे भी कोई गलती हुई है ? नेशनल कान्फ्रेंस, डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फ्रेंस, प्लेबिसाईट फ्रण्ट के भाई, पण्डित वगैरह बहुतों की बाते हमने सुनीं, लेकिन सबने एकतरफा बातें पेश कीं। ऐसी हालत मे मेरे जैसा क्या कर सकता है ?

जज को तो आपने तैनात ही किया है कि लोग उसे ठगें और उन ठगो की बातें सुनकर वह सही फैसला करे। दोनों तरफ के वकील सच्ची बातें दबायेंगे, छिपायेंगे। पर उन सबमे कौन सही है, यह देखना जज का काम है। लेकिन मैं न ऐसा जज बनने के काबिल हूँ, न बनना ही चाहता हूँ। मेरे लिए ईसामसीह का कौल मुफीद है : "जज नाट, दैट यी नाट बी जज्ड" यानी तू काजी मत बन, ताकि तेरा कोई काजी न बने। दुनिया का काजी बनकर फैसला मत दो, नहीं तो तुम्हारा फैसला होगा। इसलिए मैं काजी नहीं बनता, न फैसला देता हूँ, बल्कि जानकारी चाहता हूँ। बड़ी खुशी की बात है कि किसीने मेरे सामने साफ बात रखने मे कोई झिझक नहीं महसूस की। बल्कि अदब के साथ बात करनी चाहिए थी, वह भी नहीं की। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई।

इधर ताले लगे, उधर जब्त नहीं

यह तालीम का सवाल है। लोगो को ऐसी तालीम मिलनी चाहिए कि अपनी जबान पर जब्त रखे। जहाँ पार्टियाँ होती है, वहाँ हुकूमतवाली ा के मुँह पर ताले लगते हैं। उस पार्टी के लोग अपनी पार्टी की गल- याँ नहीं बता सकते। नतीजा यह होता है कि वे लोग समाज मे जाकर अपनी पार्टी के रवैये का बचाव ही बचाव करते हैं। उनके लिए कोई दूसरा घघा ही नहीं रहता। लेकिन विरोधी पार्टीवालों की जबान पर जब्त नहीं रहता, इसलिए वे बढ़ा-चढ़ाकर बातें रखते हैं। सच-झूठ का खयाल नहीं करते और सुनी हुई बातों पर यकीन रखते हैं। ये दोनों ही बाते गलत हैं। होना तो यह चाहिए कि जिनके मुँह पर ताले लगे हैं, वे

जरा अपने ताले खोलें और अपनी पार्टी की जो गलतियाँ हुई हों, उनका इजहार लोगों मे करें। उससे उनका कोई नुकसान नहीं होगा। विरोधी पार्टीवालों को भी जरा अपने मुँह पर जब्त रखना चाहिए। यही सही तालीम का काम है।

एक बनकर कुदरती सैलाब रोकें

आपको समझना चाहिए कि कश्मीर की बड़ी आजमाइश होनेवाली है। मैं कुरानशरीफ का जिक्र नहीं करना चाहता, क्योंकि एक भाई ने मुझे सावधान, खबरदार करते हुए कहा है कि "तुम्हे जो कुछ कहना है, अपने नाम से कहो।" मैं मानता हूँ कि अल्ला हम सभी की आजमाइश करता है। मेरे आने से पहले यहाँ एक सैलाब आया और उसके बाद मै आया। वह था सैलाब नबर एक और मै हूँ सैलाब नम्बर दो। अब इन दो सैलाबो का मुकाबला करने के लिए जितने भी पार्टीवाले हैं, उन सबको एक होना चाहिए। मै अभी पीर-पचाल लाँघकर आया हूँ। वहाँ की तसवीर मेरे सामने है कि वहाँ पर कितनी गुर्बत है। एक पार्टी के भाइयों ने मुझसे कहा कि हम सहयोग देना चाहते हैं, लेकिन हुकूमतवाली पार्टी उसे लेती नहीं। उस (हुकूमतवाली) पार्टीवाले कहते हैं कि हम सहयोग लेना चाहते हैं, लेकिन कोई देते नहीं। दोनों इकट्ठा होकर बोलें, तो कुछ होगा। सैलाब का मुकाबला करने के लिए आपको अपने तफरके (भेदभाव) मिटाने चाहिए और गरीबों की खिदमत मे लगना चाहिए। अगर आपने ऐसा नहीं किया, तो कहना पड़ेगा कि आपने अपना फर्ज अदा नहीं किया।

मेरा रूहानी सैलाब कबूल करें

दूसरा सैलाब मेरा है, जो कहता है कि आपके मसले सियासत या मजहबी तरीके से हल होनेवाले नहीं हैं, बल्कि रूहानियत से हल होंगे। इस पर आप गौर करें कि मैं सही कह रहा हूँ या नहीं? क्या आपके जो सियासत और मजहबी तरीके चल रहे हैं, उनसे आपकी ताकत बढ सकती

है ? आप मुत्तहिद (सयुक्त) हो सकते हैं ? मैं कहना चाहता हूँ कि इन सियासी और मजहबी तरीकों से आपकी ताकत हरगिज नहीं बढ सकती । हम आपस मे लडते-झगडते रहेंगे, तो दुनिया में उन्हींकी हुकूमत रहेगी, जिनके हाथ मे आणविक शस्त्र हैं । हम उनके हाथ की कठपुतली की तरह रहेंगे । आजादी का नाम भले ही रहे, लेकिन दूसरे देशों का ही कब्जा रहेगा । हम उस रास्ते से जायेंगे, तो हम पर किसी-न-किसीका कब्जा होगा । नाम तो रहेगा आजादी का, लेकिन रूप होगा गुलामी का । इस पर आप सोचिये । इसलिए हमे छोटे दिमाग से नहीं, बल्कि बड़े दिमाग से और बड़े दिल से सोचना होगा । जो छोटे-छोटे तफरके हैं और छोटी-छोटी गलतियाँ होती हैं, उन सबको छोडकर सारे समाज को इकट्ठा होना चाहिए और यह जो मेरा रूहानी सैलाब है, उसे आपको कबूल करना होगा और दूसरा सैलाब आया है, उसका मुकाबला करना होगा ।

रूहानी ताकत या गुलामी

इन सबके बावजूद आप अपना ही गाना गाते रहें, तो गाते रहिये और नाचते रहिये; लेकिन इससे ताकत नहीं बनेगी । आप एक-दूसरे से प्यार करने के बजाय नफरत करते रहेंगे, तो 'जय जगत्' कैसे होगा ? तब न 'जय जगत्' होगा, न 'जय हिन्द' और न 'जय कश्मीर' । बल्कि 'हार कश्मीर', 'हार हिन्द' एव 'हार जगत्' होगा । 'जय कश्मीर !', 'जय हिन्द !' और 'जय जगत्' तब होगा, जब हम सबके दिल एक होंगे । तब तक हमारी ताकत नहीं बन सकती ।

हमे सोचना चाहिए कि हम कौन-सी ताकत बना सकते हैं । क्या हम अमेरिका के मुकाबले की माली ताकत बना सकते हैं ? जब कि हिन्दुस्तान मे हर आदमी के पीछे ३/४ एकड़ जमीन है और अमेरिका मे १२ तथा रूस मे १५ एकड, तो हम कभी भी उनके मुकाबले की माली ताकत नहीं

बना सकते और न फौजी ताकत ही बना सकते हैं। तब हम कौन-सी ताक़त बना सकते हैं? अखलाकी रूहानी ताकत। लेकिन अगर आप वह नहीं बनाना चाहते, तो लिख रखिये कि आपको कायम के लिए गुलाम बने रहने के सिवा और कोई चारा नहीं रहेगा।

ग्रामदान और सामूहिक खेती

आज एक भाई ने पूछा कि ग्रामदान कम्युनिस्टों के 'कलेक्टिव फार्मिङ्ग' जैसा मालूम होता है, तो इन दोनों में क्या फर्क है? मैंने कहा: दोनों एक-से नहीं हैं। ग्रामदान के मानी है कि कोई अपनी जमीन न बेच सकेगा और न रेहन रख सकेगा। ये ही दो तरीके हैं, जिनसे गरीबों ने अपनी जमीन खोयी। इसलिए ग्रामदान के, मिल्कियत मिटाने के मानी हैं कि आप अपनी जमीन नहीं खो सकते। दूसरी बात यह है कि हर दस-बारह साल बाद ग्रामदानी गाँव की जमीन का फिर-फिर से बँटवारा होगा। ग्रामदानी गाँव में जमीन गाँव की रहेगी, स्टेट की नहीं। 'स्टेट-कंट्रोल'-वाली बात कम्युनिस्टों की है। उससे दुनिया में कभी शान्ति और इतमीनान पैदा नहीं हो सकता, क्योंकि जहाँ स्टेट कंट्रोल करने लगती है, वहाँ किसीको भी किसी तरह की आजादी नहीं रह सकती। इसलिए हम कहते हैं कि गाँव-गाँव की ताकत बने। इधर रहे देहात और उधर दुनिया। दोनों के बीच की सूबा, मुल्क जैसी—जो कड़ियाँ है, वे धीरे-धीरे खत्म होंगी और आगे यह सूरत आयेगी कि गाँव का सम्बन्ध सीधा दुनिया से होगा। आज बीच की कड़ियाँ मौजूद है, लेकिन हम चाहते हैं कि गाँव आजाद हो, अपने पाँवों पर खड़ा हो। इसीका नाम है ग्रामदान।

ग्रामदान में यह जरूरी नहीं है कि जमीन इकट्ठा की जाय या किसान का इनीशिएटिव (अभिक्रम) खत्म किया जाय। इसलिए ऐसी गलत-फहमी न करें कि ग्रामदान और कलेक्टिव फार्मिंग एक ही चीज है, हालाँकि वैसी गलतफहमी के लिए गुंजाइश है। घोड़े और गधे में गलतफ़हमी के

लिए गुंजाइश है, लेकिन दोनों में फर्क है। ग्रामदान में मिल्कियत सबकी रहेगी और हरएक को पूरी आजादी रहेगी। हर कुनबे को काश्त करने के लिए गाँव-सभा की ओर से जमीन मिलेगी। साल के आखिर में सब लोग अपनी फसल का एक हिस्सा गाँव के लिए दान देंगे, तो उसमें से गाँव की बैंक बनेगी, जिसमें से बेवा, बच्चे, बूढ़े, बीमार—इन सबके लिए दिया जायगा। इस तरह गाँव में स्वराज्य बनना चाहिए। देहात का मन्सूबा देहली नहीं, देहात ही बनायेगा। फिर देहली और श्रीनगर की हुकूमत देहात को मार्गदर्शन और मदद देगी।

बड़ी खुशी की बात है कि कश्मीर की हुकूमत ने तालीम मुफ्त कर दी है। लेकिन तालीम मुफ्त यानी बेकारी मुफ्त! आज की हालत में मुफ्त तालीम के मानी है, बेकार बनाने का कारखाना खुला हुआ है। जो भी उसमें आना चाहे, आ सकते हैं और बेकार बन सकते हैं। इसलिए जहाँ हम तालीम मुफ्त कर देते हैं, वहाँ तालीम का तरीका वह नहीं हो सकता, जिससे बेकार बनते हैं। आज की हालत में न अखलाकी तालीम है, न रूहानी और न जिस्मानी। सिर्फ दिमागी तालीम दी जाती है और तालीम मुफ्त हो, तो भी गरीब के बच्चे स्कूल नहीं जा सकते, क्योंकि वे घर के कमानेवाले मेम्बर होते हैं। आज किसान अपने बच्चे को इसलिए पढ़ाना चाहता है कि उसे जो मेहनत-मशक्कत करनी पड़ती है, उससे उसके बच्चे बच जायँ। अगर वे उससे बच जानेवाले होते, तो दूसरी बात थी। लेकिन तालीम पाये हुए लड़कों में से सिर्फ १० प्रतिशत को भी काम नहीं मिलता और बाकी बेकार रहते हैं, क्योंकि उन्हे कोई दस्तकारी नहीं सिखायी जाती। अगर वे खेत में काम करना चाहे, तो भी नहीं कर सकते, क्योंकि उन्हें जो तालीम दी जाती है, उसकी वजह उन्हें ठंढ, धूप, बारिश, हवा सहन करने की आदत नहीं रहती। इसलिए अगर तालीम में यह सब सहन करने की आदत डाली जायगी, तभी यह मुफ्त तालीम आपको फायदा पहुँचायेगी। नहीं तो यह आपको बरबाद करेगी।

जब मैं जवानों से कहता हूँ कि मेरे साथ घूमने आइये, तो वे कहते हैं कि हमसे नहीं बनेगा। अजीब बात है कि मेरे जैसा बूढा घूम सकता है, लेकिन ये जवान नहीं घूम सकते। इसलिए समझना चाहिए कि हमारी जिन्दगी मुलायम (Soft) बनी, तो कुल देश खतरे में है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि हमारे बच्चे खेलें-कूदें, वर्जिश (व्यायाम) करें, खेतों में कुदाली चलायें, जिससे जिस्मानी मजबूती आयेगी। उसके साथ-साथ रूहानी मजबूती भी आनी चाहिए। इस तरह तालीम में फर्क करना चाहिए। लेकिन कोई भी पार्टी इस तरफ ध्यान नहीं दे रही है। वे यही सोचते हैं कि हमें कितनी सीटें मिलेंगी और दूसरे को कितनी मिलेंगी। सीटों के सिवा दूसरी कोई बात ही नहीं है। आज हमसे जो लोग मिलने आये, उनमें हर कोई यही कहता गया। शरणार्थियों ने कहा कि सरकार में हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं हैं। शिया लोग भी यही शिकायत करते थे कि हमारी छोटी-सी जमात है, तो हमारे कोई नुमाइन्दे नहीं है। हरिजन, पंडित वगैरह सभी यही शिकायत करते थे। इस तरह एक एक जाति और मजहब देखकर नुमाइन्दे चुने जायँ, तो बडी आफत आयेगी। कोई नहीं कहता कि आज का जो तालीम का तरीका है, उससे नुकसान हो रहा है, वह बदलना चाहिए।

सोपोर
२९-७-'५९

: ४० :

प्यार बिजली है, एतबार बटन

परसों हम सोपोर मे थे, जो एक बहुत बडा सियासी मरकज है। वहाँ बहुत लोग आये थे। उन्होंने बड़ा प्यार, खूब मोहब्बत बरसायी।

प्यार के साथ गुर्बत क्यों ?

आज का यह छोटा-सा गाँव है, लेकिन यहाँ भी हमने वही मोहब्बत देखी। हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ सूबों में हमारी यात्रा हुई। हमने हर जगह ऐसा ही प्यार पाया। बिहार मे तो हमे ऐसा लगता था कि इतना ज्यादा प्यार कहीं हो ही नहीं सकता। लेकिन हर जगह वैसा ही प्यार पाया। गुज-रात मे तो इन्तहाई प्यार पाया। उसके बाद राजस्थान और पजाब मे हम गये। जहाँ-तहाँ हमने वैसा ही प्यार पाया। अब यहाँ भी वैसा ही प्यार हम देख रहे हैं। हमारे मन मे विचार आता है कि अल्लामियाँ ने इतना प्यार जहाँ बख्शा है, वहाँ इतने झगड़े, इतनी गुर्बत क्यों ? यह मेरे लिए एक सोचने की बात हो जाती है। इतना प्यार है, फिर भी काम क्यो नहीं बनता ? यह सोचता हूँ, तब मुझे बिजली याद आती है। घर-घर में बिजली पहुँची है। जरा बटन दबाया, तो झट बिजली घर को रोशन करती है। बिजली घर मे आयी है, फिर भी घर में अँधेरा है, क्योंकि बटन दबाया है।

एतबार का बटन दबाओ

वैसे ही प्यार हरएक के दिल मे खूब भरा है। उसे बाहर लाने के लिए बटन दबाने की तरकीब हाथ मे आ जायगी, तो कोई शख्स ऐसा नहीं मिलेगा, जो अपनी दौलत, मेहनत आपको नहीं देगा। उसके पास जो कुछ शक्ति है, उसे वह आपको जरूर देगा। इस पर मैं सोचता हूँ, तो

लगता है कि प्यार एक बिजली है और वतन है एतबार, विश्वास, यकीन, भरोसा। इस यकीन के साथ हम दूसरे के पास पहुँचेंगे, तो हमें उसके दिल में जगह मिलेगी। फिर हम उसकी गोद में सो सकते हैं। आज यह नहीं होता। हम एक-दूसरे की तरफ शक-शुबह से देखते हैं। अपने बेटे पर, भाई पर प्यार है। वह हम महसूस करते हैं। लेकिन वे तो हमारे कुनबे के हैं। क्या हम घर के बाहर किसी भाई पर यकीन रखते हैं? हम एकदम सोचने लग जाते हैं कि वह दूसरी पार्टी का है। दूसरे मजहब का है। न मालूम उसके मन में क्या होगा? इस तरह मन में शक-शुबह पैदा हो जाय, तो हम एक दिल नहीं बन सकते। दूरी-भाव कायम रहता है। और फिर झगडे भी पैदा हो सकते हैं। लेकिन अगर एतबार हो, तो जो भी हमें मिलेगा, हमारा प्यारा बन जायगा। हमारी बात देखिये। हमारा जनम तो यहाँ से कहीं दूर हुआ है। लेकिन मौत कहाँ होगी, पता नहीं। लेकिन आज अगर यहाँ मौत होगी, तो ऐसा नहीं लगेगा कि 'अरे! हमारे मादरे वतन में हमारी मौत नहीं हुई।' जहाँ हमारी मौत हुई, वहीं हमारा वतन होगा! 'यहाँ हमारे कोई लोग नहीं हैं'—ऐसा हमें कतई नहीं लगेगा, बल्कि 'हमारे ही लोग हैं, हमारा ही वतन है—उसमें हमारी मौत हो रही है' ऐसा ही हमें लगेगा। इस तरह जहाँ हम जाते हैं, वहाँ प्यार लेकर जाते हैं, एतबार लेकर जाते हैं और वह हमारा ही स्थान बन जाता है।

कश्मीर में भी दान मिल रहा है

हमें एक भाई ने कहा था कि "आप कश्मीर में जा रहे हैं, लेकिन वहाँ तो जमीन का मसला हल हो चुका है।" हमने कहा : "कश्मीर में जमीन मालिक और मुजाराओं के पास है।" तो उस भाई ने कहा : "तो फिर आपको जमीन कौन देगा?" मैंने कहा : "देनेवाला जरूर देगा।" और आप देखते हैं कि वे लोग दे रहे हैं। कल की मीटिंग में हमने गाना गाया। लोगों से भी गवाया। लोगों ने खूब प्यार से गाना गाया और दान

भी दिया। दस-पाँच मिनट कल लोगों ने प्यार का वह नजारा देखा, लोग गा रहे थे—'हमारे गाँव मे वे-जमीन कोई न रहेगा, कोई न रहेगा।' और दान दे रहे थे। हमे ऐसा एतबार होना चाहिए।

स्वामी रामतीर्थ की कहानी

स्वामी रामतीर्थ की मशहूर कहानी है। उसका हम पर बहुत असर हुआ है। बचपन मे हमने वह सुनी थी। आज भी हमे याद आती है। वे जा रहे थे अमेरिका। बदरगाह नजदीक आ रहा था। हर कोई अपना सामान इकट्ठा करने लगा, लेकिन वे ऐसे ही बैठे रहे और देखते रहे कि दूसरे लोग सामान कैसा इकट्ठा करते हैं, दौड़ते हैं। बदरगाह आया। जहाज किनारे लगा। उन्होंने देखा, बहुत बडा समूह वहाँ खड़ा था। रिश्तेदार आये हुए लोगों को 'रिसीव' कर रहे थे। इतना हो-हल्ला वहाँ हो रहा था। लेकिन वे ऐसे ही देखते रह गये, शात! खामोश! इतने मे एक जवान अमेरिकन लडकी वहाँ आयी। उन्हे देखकर उसे लगा कि "कैसा अजीब जानवर है, इसे कोई ख्वाहिश, तमन्ना है या नहीं?" उससे रहा नहीं गया और उनके पास जाकर पूछ ही बैठी: "आप कहाँ से आये हैं और कौन हैं?" स्वामीजी ने जवाब दिया: "मैं हिन्दुस्तान का फकीर हूँ।" "क्या यहाँ आपकी किसीसे वाकफियत है?" "जी हाँ।" "किससे है?" "आपसे!" "फिर आप मेरे घर चलेंगे?" "जी हाँ!" बस, यह वार्तालाप उनके बीच हुआ और वे उसके घर ठहरे।

यह जो एतबार है—मनुष्य का मनुष्य पर, वही प्रेम को खींचता है। प्रेम तो बिजली है। उस प्रेम से, उस बिजली से हर दिल भरा है। लेकिन एतबार कहाँ है? इसलिए वह प्यार काम मे नहीं आता। इसलिए मन मे जो शक-शुबह है, वह हम छोडें और पूरा एतबार रखें, तो प्यार दिल से बाहर आयेगा।

सिंगपुरा
२१-७-'५९

: ४१ :

सरकारी मदद का तरीका

एक भाई हमसे कह रहे थे कि दिल्ली से कश्मीर को पैसा तो बहुत मिलता है, लेकिन वह कहाँ गायब हो जाता है, पता नहीं। गरीबी और अमीरी का तफरका जो यहाँ है, वह बढ़ता ही है, कम नहीं होता है। क्योंकि जो मदद आती है, वह बीच मे ही खत्म हो जाती है। सही बात यह है कि पैसा ऊपर के तबकों मे पहले बँटता है और धीरे-धीरे नीचे आता है, तो बिल्कुल नीचे के तबके मे पहुँचते-पहुँचते वह खत्म हो जाता है। ऊपर से जब मदद मिलती है। तब नतीजा यही होता है। यह समझाने के लिए मै एक मिसाल देता हूँ। एक बाजू में खेत है और दूसरे बाजू कुआँ है। कुएँ से खेत को पानी पहुँचाने के लिए एक नाली बनायी है। खेत की सतह थोड़ी ऊँची है। तो जो पानी नाली से निकलता है, वह खेत में पहुँचते-पहुँचते नाली ही सारा पी लेती है। और अगर उसके बीच मे कोई गढा हो, तो गढ़ा ही पानी पी लेता है और खेत में पहुँचता नहीं है। इसी तरह हर जगह होता है। इसलिए जैसे बारिश बूँद-बूँद बरसती है, लेकिन हर जगह बरसती है, इसलिए सारी जमीन चारों ओर तर हो जाती है। अगर एक ही जगह बारिश बरसती, तो वह बारिश नहीं, नल कहलाती है। नल से बड़ी धार मिलती है, लेकिन एक ही जगह उसका पानी पड़ता है। गवर्नमेंट का तरीका याने नल का तरीका होता है। पहले जिनके पास मदद पहुँचती है, उनको ज्यादा मिलता है और फिर दूसरे के पास उससे कम जाती है। और फिर उससे कम होते-होते गरीबों के पास बिल्कुल ही नहीं के बराबर मदद पहुँचती है। इसलिए देहातों मे भी कई देहात ऐसे हैं, जहाँ मदद नहीं पहुँच सकती है।

शालटेंग

१-८-'५९

हिन्दुस्तान का सिर सर्वोदय का सिर बने

दस हफ्ते हुए, हमारी यात्रा इस खूबसूरत प्रदेश मे हो रही है। हमने देखा कि यहाँ के लोगों का दिल वसी है और आफत मे भी वे मस्त रहते हैं। यहाँ पर (कानून की वजह से) मालिकों के पास जमीन थोड़ी रही है, लेकिन वे उसमे से भी प्यार दिखाने के लिए कुछ-न-कुछ दे देते हैं। यह सब देखकर हमे बडी खुशी हुई। जहाँ ऐसी जिंदादिली हो, दिल मे मुहब्बत, रहम, हमदर्दी हो, वहाँ इन्सान और इन्सानियत की बहुत तरक्की हो सकती है। यह 'पोटेन्शियल' (गर्भित शक्ति) चीज पडी है, जिसे 'डेवलप' (विकसित) करना है। हमने देखा कि इन्सान की तरक्की के लिए जो सामान चाहिए, वह सारा यहाँ मौजूद है। खूबसूरत कुदरत है, तो इन्सान भी बदसूरत नहीं हो सकता। लेकिन हमने यहाँ पर जितने 'ब्यूटी स्पॉट्स' देखे, वहाँ इनकी गुर्बत भी देखी। वहाँ की ब्यूटी हमारे दिल को खींच नहीं सकी। खैर! गुर्बत मिटाने का मसला हम सबके सामने पडा है, सिर्फ कश्मीर के सामने ही नहीं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान के और करीब-करीब आधी दुनिया के सामने पडा है। यह खूब समझने की बात है कि हम एक नहीं होंगे, तो उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

तफरके मिटने से ही दुनिया सुकून पायेगी

मेरे आने के पहले यहाँ सैलाब आया, तो एक तरह से सैलाब ने हमारा मसावात का पैगाम पहुँचा दिया। सैलाब की वजह से जो मसले खड़े होते हैं, उनका मुकाबला हम अच्छी तरह से तभी कर सकते हैं, जब हम एक होंगे। मजहब, कौमें, जबानें वगैरह सब तफरके मिटाकर हम अपने

दिल को बसी बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिन्दुस्तान की ताकत बनेगी और वह ऐसी ताकत होगी, जिससे दुनिया का हर शख्स सुकून पायेगा।

'जय जगत्' नारा नहीं, कौल

'जय जगत्' को मैंने नारा नहीं कहा, कौल कहा, क्योंकि नारे एक-दूसरे की मुखालिफत कर सकते हैं, झगडे पैदा कर सकते हैं। 'जय जगत्' के पेट मे 'जय हिन्द', 'जय कश्मीर', 'जय गॉव' सब आ जाता है। पुराना तरीका यह था कि एक की जीत मे दूसरे की हार होती थी। लेकिन अब हमने नया तरीका निकाला है, जिसमे आपकी, हमारी, सामनेवाले की, सबकी जीत ही होती है। इसीलिए सर्वोदय का कौल है, 'जय जगत्'।

सर्वोदय-साहित्य घर-घर फैले

मैं चाहता हूँ कि श्रीनगर के हर घर मे सर्वोदय की किताबे पहुँचें और श्रीनगर मे ऐसा कोई घर न रहे, जहाँ यह श्री न पहुँचे। विचार से बढकर कौन श्री, शोभा, जीनत हो सकती है? यहाँ पर जो ५० हजार घर हैं, इन सबमे आप सर्वोदय-साहित्य पहुँचा देंगे, तो आपकी और मेरी सोहबत कायम के लिए बनी रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि श्रीनगर सर्वोदय नगर बन जाय और कश्मीर सर्वोदय स्टेट बन जाय।

लफ्जी नहीं, असली दान हो

जब मैंने जम्मू-कश्मीर मे कदम रखा था, तब बक्शीजी ने कहा था कि "दान मॉगने के लिए आप जैसे फकीर आये हैं, तो मैं सारे स्टेट का दान देने के लिए तैयार हूँ।" यह सिर्फ लफ्जी दान नहीं, बल्कि असली दान हो और यह सर्वोदय-स्टेट बने, जिसके मानी है कि यहॉ पर सबका भला हो। कश्मीर हिन्दुस्तान का सिर है, तो वह सर्वोदय का भी सिर बने।

श्रीनगर
२-८-'५९

: ४३ :

लोकनीति

कोई पचास साल पहले की बात है। मैं कॉलेज मे पढता था। मेरे दिल मे तमन्ना पैदा हुई कि परमेश्वर की खोज मे घर छोडकर निकल पड़ूँ। बहुत दिनो तक मै इसी विचार मे था। कॉलेज मे अध्ययन तो चलता ही रहा, पर अन्दर यही ख्वाहिश जोर कर रही थी। आखिर घर छोड़कर परमेश्वर की खोज मे मैं निकल ही पड़ा। १९१६ की बात है, उसे अब ४३ साल हो रहे हैं। चद दिनों बाद गाधीजी से सम्बन्ध आया। परमेश्वर की तलाश मे निकला और मैं पहुँच गया गाधीजी के आश्रम मे। तब से जब तक गाधीजी जीवित रहे, मैं उनके साथ रहा। मेरी तमन्नाएँ पूरी हुई। जब तक गाधीजी रहे, मैंने कताई, बुनाई, रसोई, पिसाई, सफाई आदि तरह-तरह के काम किये। साथ-साथ कुछ ध्यान भी किया। इस तरह से जिन्दगी के मेरे दिन बीते, ऐन जवानी के दिन बीते। अब गाधीजी की वफात के बाद महसूस हुआ कि मुझे देश मे घूमना चाहिए और देहात के भाइयों के पास पहुँचना चाहिए।

कोई मुझे चला रहा है

गांधीजी को गये करीब ११ साल हो रहे हैं। आप सब जानते हैं कि इन ११ सालों मे से ८ साल लगातार मेरी पदयात्रा मे बीते हैं। इतनी लम्बी यात्रा के बावजूद भी मुझे किसी प्रकार की कोई थकान महसूस नहीं हो रही है। अदर पूरा सुकून, इतमीनान है कि मै ठीक रास्ते पर चल रहा हूँ। सच तो यह है कि मैं नहीं जा रहा हूँ, कोई है, जो मुझे ले जा रहा है।

अभी जब बड़ा सैलाब आया हुआ था, तो हम पाँच-छह दिन के

लिए मढी राजपुरा में कैदी हो गये थे। सामने था पीर-पचाल पहाड़, जहाँ से महमूद गजनी को वापस लौटना पड़ा। इसलिए कोई नहीं कह सकता था कि हम उस पहाड़ को लाँघ सकेंगे। गजनी ने हिन्दुस्तान पर १७ दफे हमला किया था। आखिर में जब उसने पीर-पचाल पर लोरेन के पास हमला किया, तब उसकी फौज के लोग मार भगाये गये। लोरेन के बहादुर लोगों ने उनके छक्के छुड़ा दिये थे; वह मुश्किल पहाड़ लाँघना उसके लिए नामुमकिन हो गया।

अल्लाह के सामने सत्याग्रह

सामने ऐसा पहाड था और इधर बारिश और सैलाब! तब हमने भगवान् के सामने सत्याग्रह किया। वह सत्याग्रह हमने अपने साथियों और जनरल यदुनाथ सिंह, जो कि हमारे साथ हैं और शान्ति-सैनिक बने हैं, के सामने जाहिर भी कर दिया। हमने कहा कि अगर यह पीर पचाल हम लाँघ न सके, तो उसे ईश्वर का इशारा समझकर वापस पजाब चले जायँगे। हमने एक साल पहले जाहिर किया था कि हमें कश्मीर जाना है। कुल हिन्दुस्तान और पाकिस्तान भी जानता था कि बाबा कश्मीर जा रहा है। फिर भी हम पीर-पचाल न लाँघ सकते, तो वापस लौट जाते। लेकिन आखिर बारिश कम हुई, आसमान खुला, हम फौरन निकल पड़े। यह सब क्यों हुआ? इसलिए कि हम अल्ला के इशारे पर चलते हैं। आखिर उसीकी कृपा से हमारी यात्रा, इतनी तकलीफों के बावजूद भी जारी रही।

पहले दिन शाम को थोडी बारिश हुई। हम तम्बुओं में थे और उसने अपनी ताकत का, सिफत का एक नमूना दिखाया, लेकिन दूसरे और तीसरे दिन आसमान बिलकुल साफ रहा। दो दिन बारिश का नाम तक नहीं रहा। उन दो दिनों में बारिश हुई होती, तो हम कह नहीं सकते कि हमारी क्या हालत होती! हमारी फजीहत याने उसकी फजीहत! आखिर हम गुलमर्ग पहुँचे।

जिन्दगी का बेहतरीन तजुरबा

मैं कहना यह चाहता हूँ कि मैं २० साल की उम्र मे हिमालय जाने के लिए घर से निकला था और ६४ साल की उम्र मे वहाँ पहुँचा हूँ। उस पहाड पर जहाँ हमने छाया हुआ बरफ देखा, वहाँ हमे शकर भगवान् की याद आयी। कैलास पर बरफ पर बैठे हुए ध्यान कर रहे हैं, ऐसी शिवजी की तसवीर हमने देखी थी। हमने कहा, चलो, हम भी बरफ पर बैठकर ध्यान करेंगे। तो साथ के भाई ने कहा कि शकरजी बरफ पर बैठते थे, लेकिन बीच मे मृगचर्म रखते थे और उसी पर बैठकर ध्यान करते थे। मृगचर्म तो 'नान-कण्डक्टर आफ हीट' है। इस तरह का एक मजाक भी उन्होंने किया। हमने कहा : ठीक है, उनके पास हिरन का चमड़ा था, तो हम कम्बल बिछायेंगे। यों कहकर छोटा-सा कम्बल बिछाकर हमने २५ मिनट ध्यान किया। हमे उसका जो तजुरबा हुआ, उसका बयान हम लफ्जो मे नहीं कर सकते। सवा दो साल पहले हम कन्याकुमारी मे थे। समुद्र की लहर हमारे सिर पर उड़ती थी। हमने हाथ मे समुद्र का पानी लेकर प्रतिज्ञा की थी कि जब तक हिन्दुस्तान में ग्राम-राज्य नहीं होता, याने हिन्दुस्तान के गाँव अपने पाँव पर खडे नहीं होते और जब तक बाबा के पाँव मे ताकत रहेगी, तब तक बाबा को यह पदयात्रा जारी रहेगी। इस तरह उधर समुद्र के किनारे ध्यान किया और इधर पीर-पचाल पर भगवान् वजी की मूर्ति सामने रखकर कुछ भजन गाये और पाँच मिनट ध्यान किया। हमारी जिन्दगी मे जिन-जिन तजुरबों (अनुभूतियों) से हमे ताकत मिली है, उन सबमे सबसे बेहतरीन तजुरबा हमे इस वक्त हुआ। हमने उससे बहुत ताकत पायी, दौलत पायी। वही दौलत लेकर हम आपके पास पहुँचे हैं। हम अपने मे ताकत महसूस करते हैं और यह भी महसूस करते हैं कि इस दुनिया मे कोई ताकत ऐसी नहीं है, जो हमारे मार्ग मे रोडे डाल सके।

असली तीर्थ : जनता-जनार्दन

आपके दर्शन से हमें बहुत खुशी होती है। किसीने कहा कि क्या बाबा 'अमरनाथ' नहीं जायेंगे ? हमने कहा : हम 'अमर' हो गये हैं। अमरनाथ जाने का पहले 'हाँ' हो गया, बाद में 'ना' भी। आखिर सोचने की बात है कि हम किसके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं ? क्या हम काशी या रामेश्वर की यात्रा कर रहे हैं ? हम तो आपके दर्शन के लिए यात्रा कर रहे हैं। जो चेहरे हम सामने देखते हैं, वह कोई मिट्टी के पुतले हैं, ऐसा भास हमें नहीं होता। वह तो अल्ला का नूर (प्रकाश) है, ऐसा हम महसूस करते हैं। इसीलिए हम आपके दर्शनों के लिए घूम रहे हैं। हमें 'अमरनाथ' जाने की जरूरत नहीं है। पीर-पंचाल भी इसीलिए लाँघा कि दूसरा रास्ता नहीं था। वह पहाड़ लाँघना ही था। मेरे प्यारे भाइयो, आपके दर्शन से हमें जो तसल्ली मिलती है, वह किसी भी तीर्थ के दर्शन से नहीं मिलती। यद्यपि हम जानते हैं कि एक जर्रा भी ऐसा नहीं है, जहाँ अल्ला की रोशनी नहीं है। यह हमारा सिर्फ 'इलमुल यकीन' नहीं, बल्कि 'आयनुल यकीन' भी है।

वह हमारे साथ है

आप जानते हैं कि मुहम्मद पैगम्बर अपने एक साथी के साथ जंगल में भाग रहे थे। उनके पीछे दुश्मन की फौज आ रही थी, जिससे वे दुश्मनी नहीं करते थे। भागते-भागते वे बचने के लिए एक गड्ढे में उतर गये। उनका साथी घबड़ा गया। वह कहने लगा : "अब हमारा क्या हाल होगा ? हमारा पीछा फौज कर रही है और हम सिर्फ दो हैं !" तब मुहम्मद ने कहा : "तुम ऐसे गुरूर में, ऐसे भ्रम में मत रहो कि हम सिर्फ दो हैं। हम दो नहीं, तीन हैं। वह तीसरा मजबूत, ताकतवर है। वह दीखता नहीं, अदृश्य है, लेकिन हमारा तीसरा साथी है। इसलिए हमें घबराने की कोई जरूरत नहीं है।" यही हम भी महसूस करते हैं कि जहाँ भी हम गये, पहाड़ों में,

जगलों मे, धूप मे, बारिश मे, ठंड मे, वहाँ-वहाँ भगवान् हमारे साथ हैं। इसलिए हम ताकत महसूस करते है।

हर जगह हमारी अपनी !

हमने काम भी ऐसा अजीब उठाया है—५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान हासिल करने का ! कुछ लोग कहते हैं, अरे भाई ! क्यों ऐसी जबान बोलते हो ? जरा थोड़ा कम बोलो। ५ करोड़ एकड़ जमीन और ५ लाख ग्रामदान की बात करते हो, पर क्या तुम कभी कामयाब होओगे ? हम कहना चाहते हैं कि हम कामयाब नहीं होना चाहते, नाकाम-याब होना चाहते हैं, पर कोई छोटी चीज बोलना नहीं चाहते। हम पूर्ण चाहते हैं '**पूर्णमदः पूर्णमिदं।**' यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है। हम कुल चाहते है, जुज नहीं। इस वास्ते इतना बड़ा काम लेकर निकले है। इस बडे काम का हम पर कोई बोझ नहीं है। इसलिए शाम को जब सोने जाते हैं, तो नींद आने मे दो मिनट की भी देरी नहीं लगती। हमे किसी प्रकार की फिक्र नहीं होती। हम बिलकुल बेफिक्र सोते हैं। अगर अल्ला ने चाहा और आज की रात ही हमारे लिए आखिरी साबित हुई, तो भी हमे दुःख नहीं होगा। आप हमारे शरीर का दहन, दफन या जो चाहे, सो कीजियेगा। हमारे मन मे कतई यह खयाल नहीं रहेगा कि हम किसी ऐसी दूसरी जगह हैं, जो हमारी नहीं है। जिस जगह हमारी मौत होगी, वही हमारी जगह है। जहाँ हम जनमे, वह हमारी जगह नहीं है, बल्कि जहाँ हमारी मौत हुई, वह हमारी जगह है। इसलिए हमारा इस जमीन पर उतना ही प्यार है, जितना किसी भी जमीन पर हो सकता है।

'जय हिन्द' से 'जय जगत्'

इसीलिए हमने 'नारा' नही कहा, हमारा 'कौल' 'जय जगत्' कहा है। कहने मे बड़ी खुशी होती है कि हिन्दुस्तान की हर कौम ने इसे उठाया है। दस साल मे हम 'जय हिन्द' से 'जय जगत्' तक पहुँचे हैं, इतनी तरक्की

की है। तरक्की बाहरी नाप से नहीं नापी जाती। रोशनी के सामने अन्धेरे का ढेर टिक नहीं सकता। इसलिए हम समझते हैं कि यह चीज ऐसी है, जो चलेगी। आज बच्चा-बच्चा 'जय जगत्' बोलता है।

इंग्लैण्ड की अखलाकी ताकत बढ़ी

एक इंग्लैण्ड के भाई हमसे मिलने आये थे। अहिंसा पर बात हो रही थी। उन्होंने पूछा : "अहिंसा का चमत्कार दिखाने का पराक्रम कौन करेगा? हमें लगता है कि हिन्दुस्तान करेगा। आपकी क्या राय है?" मैंने कहा : "जी हाँ! हिन्दुस्तान भी कर सकता है और इंग्लैण्ड भी।" यह सुनकर वे भाई ताज्जुब में रह गये। कहने लगे : "क्या इंग्लैण्ड भी कर सकता है?" मैंने कहा : "जी हाँ!" उन्होंने सबब पूछा। मैंने कहा : "बहुत-से लोग इन दिनों मानते हैं कि इंग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान का कब्जा छोड़ा, तो इंग्लैण्ड का दर्जा नीचा हो गया। लेकिन हम इससे उलटा मानते हैं। हम मानते हैं कि इंग्लैण्ड ने हिन्दुस्तान का कब्जा छोड़ा, तो उसकी अखलाकी ताकत, अखलाकी दर्जा बढ़ गया। आज की वैज्ञानिक दुनिया में इन्सान को हिलाने और डुबानेवाली कोई अगर चीज है, तो वह उसकी दौलत नहीं है, अखलाकी ताकत है। तवारीख (इतिहास) में यह इज्जत के साथ लिखा जायगा कि अंग्रेजों ने तय किया था कि एक तारीख मुकर्रर कर हम निकल जायँगे, पर हिन्दुस्तान के लीडरों (नेताओं) ने आग्रह किया कि लार्ड माउण्टबैटन को रोका जाय। पहले आपने 'क्विट इण्डिया' ('भारत छोड़ो') कहा और जब उन्होंने भारत छोड़ने की तैयारी की, तो फिर से माउण्टबैटन से प्रार्थना की गयी कि कृपा करके हमारे हित के लिए आप थोड़े दिन और रुकिये। कितनी इज्जत बढ़ गयी उनकी! इंग्लैंड अपनी यह अखलाकी ताकत महसूस करे, तो अहिंसा का पराक्रम करके दिखा सकता है।"

दिल पुराना, दिमाग नया

'जय जगत्' याने क्या? 'सारी दुनिया की जय हो।' एक के 'जय'

मे दूसरे की भी 'जय' हो। सबकी 'जय' हो। 'जय जगत्' मे 'जय हिन्द' भी आ गया, 'जय कश्मीर' भी आ गया। अगर आप उतनी कोशिश करेंगे, तो 'जय जगत्' में 'जय श्रीनगर' भी आयेगा। यह सिर्फ बोलने की बात नहीं, करने की है। इसके लिए क्या करना होगा? आज हमारा दिमाग बहुत बड़ा बना है, पर दिल छोटा है। इसलिए दिल भी उतना बडा बनाना होगा। आज ये जो सारे झगड़े चल रहे हैं, वे सब बड़े दिमाग और छोटे दिल की पैदाइश हैं। उसीके कारण जद्दोजहद और कशमकश चल रही है। इस समय दिमाग है 'मॉडर्न' और दिल रह गया है पुराना—सग और तग।

एक जमाना था, जब दुनिया के एक कोने मे क्या होता था, यह दूसरे लोग नहीं जानते थे। अकबर के दरबार में इग्लैण्ड के एक भाई आये, तब उसे पता चला कि इंग्लैण्ड नाम का भी कोई देश है। और आज? एक स्कूल के बच्चे को अकबर बादशाह से भी भूगोल का ज्यादा ज्ञान होता है। हमारा दिमाग इतना बड़ा बन गया है। जापान 'फार ईस्ट' और अमेरिका 'फार वेस्ट' कहलाता था। बिलकुल दो सिरो मे थे दोनों, लेकिन आज वे पड़ोसी बन गये हैं। दोनों के बीच मे सिर्फ १२ हजार मील लम्बा समुद्र है। जो समुद्र तोड़ने का काम करता था, वही आज जोड़ने का काम कर रहा है। अमेरिका और जापान को किसने तोडा? समुद्र ने। और आज जोड़ा किसने? उसी समुद्र ने। एक जमाने मे जो चीज तोड़नेवाली थी, वही आज जोड़नेवाली बन गयी है। आज हमारा, दुनिया का ज्ञान भी बढ़ा है।

यह जमाना 'साइन्स' (विज्ञान) का है। आये दिन साइन्स बढ़ रहा है। जिस जमाने मे कुत्ता भी हजारों मील ऊपर जाता है, उस जमाने मे आदमी इतना नीचे, जमीन पर ही रहेगा? यह हिन्दू, मुसलमान, ऐसे फिरके बढायेगा?

पंडित खिदमत से ही महफूज रहेंगे

जब से हम कश्मीर में आये हैं, तब से हम क्या देख रहे हैं? कभी हमसे नेशनल कॉन्फ्रेंस के भाई मिलते हैं, कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेंस के भाई मिलते हैं, कभी रायशुमारी (प्लेबिसाइट फ्रण्ट) वाले मिलते हैं, कभी प्रजा-परिषद्‌वाले मिलते हैं। सिख, हिन्दू, शिया, सुन्नी भी मिले। हाँ! एक मैं भूल गया—कश्मीरी पण्डित भी मिले हैं। सब अपना-अपना दुखड़ा गाया करते हैं। पंडितों की कहानी सुनकर मुझे नेपोलियन बोनापार्ट की याद आयी। नेपोलियन लड़ाई के लिए जाता था, तो अपने साथ पण्डितों को भी ले जाता था, दिल बहलाने के लिए और इल्म (ज्ञान) की चर्चा करने के लिए। और सामान ढोने के लिए कुछ गधों को भी ले जाता था। जब लड़ाई का मौका आता था, तब फौज को हुक्म देता था—"फार्म ए स्क्वेयर एसेस एण्ड दि वाइज इन दि मिडिल।" गधे और पंडित महफूज (सुरक्षित) रखने चाहिए, इसलिए इन्हें बीच में रखो। मैंने कश्मीरी पंडितों से कहा कि तुम जरा खिदमत करो, तो महफूज रहोगे। पारसियों की एक छोटी-सी जमात है। कुल हिन्दुस्तान में एक लाख पारसी हैं। उन्होंने अपने को महफूज रखा। उनमें दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता, जमशेदजी टाटा जैसे लोग निर्माण हुए। उन्होंने सिर्फ पारसी कौम की सेवा, खिदमत नहीं की, सारे देश की खिदमत की। इसलिए वह जमात हिन्दुस्तान में महफूज रही। पण्डितों को भी यह अक्ल होनी चाहिए। आपको समझना चाहिए कि खिदमत के बगैर कोई कभी महफूज नहीं हो सकता।

मैं कह रहा था कि हर प्रकार की अलग अलग जमात हमसे मिली और उन्होंने अपनी बातें दिल खोलकर रखीं।

मसलों की वजह तंगदिल

इन दिनों होता यह है कि हर पार्टी एक दूसरे के खिलाफ होती है।

यह उसे गाली देती है, तो वह इसे। लोग दोनों की गालियाँ सुनते हैं और दोनों को निकम्मा समझते हैं। ऐसी हालत क्यों है? कश्मीर में मसला है, ऐसा कहते हैं। लेकिन हम इधर-उधर देखते हैं, तो हमें कोई मसला नजर नहीं आता। हमारी माँ ने बचपन में हमें नसीहत दी थी। उसने कहा था : "विन्या, भूत नहीं होता। अगर तुम लालटेन लेकर जरा नजदीक चले जाओ, तो भूत की जगह तुम्हें पेड़ या टहनी जैसी चीज नजर आयेगी। इसलिए भूत से डरो मत!" बचपन में यह सबक सीखा ही था, इसलिए यहाँ के मसलों को हम जरा लालटेन लेकर देखने लगे। जम्मू में, बारामुल्ला में और श्रीनगर में ढूँढ़ने चले गये। किसी गुफा में, खोह में १० हजार साल का अँधेरा हो, वहाँ लालटेन लेकर जायँ, तो एक मिनट में वह खत्म हो जाता है। इसी तरह जहाँ हम रोशनी लेकर देखने जाते हैं, वहाँ वह मसला भाग जाता है। लोग कहते हैं कि "नहीं भाई, यहाँ मसले तो हैं।" हम कहते हैं : "हैं तो तुम देखा करो। ये सारे मसले छोटे छोटे दिलों ने पैदा किये हैं।"

मसले सियासत से नहीं, रूहानियत से हल होंगे

आज छोटे दिल और बड़े दिमाग की टक्कर हो रही है। पुराने जमाने में दिमाग भी छोटा था और दिल भी। आज भी वैसा ही होता, तो हमारा निभ जाता। पर वैसा है नहीं। अब हम अपने दिल ऐसे ही तग रखेंगे, छोटे रखेंगे, तो मसले कतई हल तो होंगे ही नहीं, बढ़ जरूर जायँगे। इन दस सालों में हमने कितने मसले हल किये और कितने पैदा किये? पुराने मसले कायम ही हैं और नये नये पैदा हो रहे हैं। कोरिया का मसला, इराक, मिस्र, दक्षिण अफ्रीका, मोरक्को आदि के सारे मसले कायम हैं। अब तिब्बत का नया मसला पैदा हुआ। इस तरह उसमें इजाफा हो रहा है। हमने कहा है कि कोई भी मसला सियासत से हल होनेवाला नहीं है। सियासत से दुनिया के मसले हल होने के दिन लद गये हैं। पुराने जमाने

के मसले लड़ाई से हल होते थे। लड़ाई में बंदूक तथा खंजर आदि का इस्तेमाल होता था। आज अणुशस्त्र का उपयोग किया जायगा। एक-दूसरे पर भरोसा न रखनेवाली सियासत से क्या होगा? इसलिए जब मैंने कश्मीर में कदम रखा, तभी कहा था कि कश्मीर का मसला रूहानियत से हल होगा, सियासत से नहीं।

सियासत के जूते बाहर रखो

अभी पंजाब में क्या हो रहा है? सिखों की मजबूत जमात, जो गुरु नानक और गोविंदसिंह ने बनायी, के टुकड़े-टुकड़े हो रहे हैं। गुरुद्वारा के चुनाव के झगड़े चल रहे हैं। उसमें सियासत, अकलियत, अकसरियत (अल्पमत बहुमत) की बात ला रहे हैं। धर्म के झगड़ों में भी सियासत दाखिल हो गयी है।

मैंने एक दफा विनोद में एक कहानी बतायी थी। एक स्कूल में मास्टर ने लड़कों को गणित का हिसाब करने को दिया। एक लड़के का जवाब ठीक हुआ, लेकिन २५ लड़कों का जवाब गलत निकला। क्लास में एक मजाक करनेवाला लड़का था। वह उठकर खड़ा हुआ और बोला: "सर, क्या एक की बात सही और बाकी २५ लड़कों की बात गलत हो सकती है?" अकलियत और अकसरियत में यही होता है। धर्म के झगड़ों में सियासत लायी जायगी, तो लोगों के दिमाग ज्यादा उलझेंगे, सुलझेंगे नहीं। मैंने सिख भाइयों से कहा कि भाई, आप गुरुद्वारा में जाते हैं, तो जूते बाहर रखकर अंदर जाते हैं न? वैसे ही इस गुरुद्वारा के मामलों में भी सियासत के जूते बाहर रखो। मेरे प्यारे भाइयो, यह सियासत जहाँ भी पैठेगी, फूट पैदा करेगी। हमें एक-दूसरे पर भरोसा, विश्वास रखना होगा। साइन्स के जमाने में यह सियासत नहीं टिकेगी। इसलिए हम कहते हैं कि राजनीति के बदले अब लोकनीति आनी चाहिए।

प्रातिनिधिक लोकतन्त्र के दोष

कई दफा यह 'डेमोक्रेसी' (लोकतन्त्र) 'फार्मल' (औपचारिक) बन

जाती है। होता यह है कि हम अपने नुमाइदे भेज देते है और उनके जरिये समाज-सेवा का काम कराना चाहते हैं। हमने सारा धर्म, धर्म के ठेकेदारों को सौप दिया और उन्हे कह दिया है कि हमारी तरफ से आप धर्म का काम कीजिये, हम आपको दक्षिणा दे देंगे। इससे हमे सवाब (पुण्य) हासिल हो जायगा। नुमाइदो (प्रतिनिधि) को समाज-सेवा का कुल काम सौप दिया। खेती-सुधार वे करेगे, दस्तकारियाँ वे बढायेगे, तालीम वे देंगे, सगीत एकेडेमी वे खोलेंगे, साहित्य को उत्तेजन वे देंगे, समाज-सुधार, शादी के कानून, विरासत के कानून—इन्सान की जिंदगी के सब काम वे करेंगे। फिर इस समाज-सेवा का काम नुमाइदो का और धर्म का काम मुल्ला-मौलवियो का होगा, तो हम क्या करेगे ? हम मेहरबानी करके खायेंगे, पीयेंगे। पूरा खाना नहीं मिला, तो सरकार की निदा करेंगे और मिला, तो उसकी तारीफ करेंगे। निदा और तारीफ के सिवा हमारा दूसरा धंधा ही नहीं है। यह जो 'डेलिगेटेड डेमोक्रेसी' (प्रातिनिधिक लोकतन्त्र) है, नुमाइदों के जरिये काम करने का तरीका है, इससे इन्सानियत नहीं पनपती।

मानवता का दर्द

यहाँ सैलाब (बाढ) आया, तो अल्ला की फज्ल (कृपा) से श्रीनगर बच गया और देहात तबाह हो गये। पर क्या श्रीनगर के नागरिको ने सोचा कि आसपास के देहातों को हम क्या मदद पहुँचा सकते है ? क्या काम कर सकते हैं ? यहीं की बात नहीं, हर जगह यही होता है। मेरा भी नसीब कैसा है ! जहाँ जाता हूँ, वहाँ मुझसे पहले सैलाब पहुँच जाता है। यहाँ आनेवाला था, तो पहले सैलाब आ गया। बिहार मे गया, तो वहाँ भी बहुत बड़ा सैलाब आया था। उससे पहले कभी इतना बड़ा सैलाब नहीं आया था। जहाँ सैलाब था, उसी हिस्से मे हमारी यात्रा चली। दरभंगा, सहर्षा, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर—ये चारों जिले पानी के अन्दर थे और उन्हीं जिलों मे कमर तक पानी में हमने पदयात्रा की।

वहाँ भी क्या देखा ? सीतामढ़ी से ५ मील दूर पर जो देहात थे, पानी मे डूबे हुए थे और सीतामढी में सिनेमा चल रहा था। 'रिलीफ' (सहायता) का काम कौन करे ? 'प्राइममिनिस्टर्स रिलीफ फण्ड' (प्रधानमंत्री सहायता कोष) है ही। उसीमे से सरकार मदद पहुँचायेगी। लेकिन क्या लोगो का कोई फर्ज नहीं है ? जब अंग्रेजों की हुकूमत थी और बिहार मे जलजला हुआ, तो देश के नेताओ ने अपील की थी और सैकड़ों लोग मदद मे पहुँच गये थे। पर अब स्वराज्य मे क्या हुआ ? लोग समझते है, सैलाब में जिनको तकलीफ हुई, उनको मदद करने का काम सरकार का है। हॉ भाई ! सरकार का काम तो है ही, नहीं है, तो वह सरकार काहे को बनी है ? लेकिन हमे भी तो कुछ करना चाहिए। हमारा भी तो कुछ फर्ज है या नहीं ? अगर हम कुछ नहीं करेगे, तो 'डेलिगेटेड डेमोक्रेसी' में इन्सानियत नहीं पनपेगी।

उसमे क्या होता है, देखिये ! फौज है, तो क्या बहादुरी की जरूरत नहीं ? अस्पताल हैं, तो हमदर्दी की जरूरत नहीं ? याने हमदर्दी की जगह अस्पताल ने ली और बहादुरी की जगह फौज ने ! फौज है, यह ठीक है, लेकिन नागरिकों मे भी तो बहादुरी होनी चाहिए या नहीं ? रहम होनी चाहिए या नहीं ? मैं अभी कोई जम्हूरियत पर, डेमोक्रेसी पर टीका करने नहीं बैठा हूँ। आज तक जो सिस्टम (शासन पद्धतियाँ) चलीं, उनमे सबसे बेहतरीन कोई सिस्टम है, तो जम्हूरियत ही है। लेकिन वही जम्हूरियत 'फार्मल' बन जाती है, तब दरअसल गॉव-गॉव गुलाम बन जाते है, आजादी का सिर्फ नाम रहता है।

आज आजादी कहाँ है ?

क्या कश्मीर मे, क्या हिंदुस्तान में, क्या अमेरिका मे और क्या रूस मे, कहीं भी आजादी नहीं है, गुलामी है। किसीको अपनी ताकत पर कोई एतबार नहीं है। लोग जितना अल्लामियाँ का नाम नहीं लेते, उतना सरकार का नाम लेते हैं। एक भाई मुझसे बात करने आये। उनके हर

वाक्य मे 'सरकार' लफ्ज आता था। मैंने कहा : 'सरकार' लफ्ज छोड़कर बात कीजिये, तो उनका बोलना ही खत्म हो गया। उतना एक लफ्ज छोडकर 'डिक्शनरी' के कुल लफ्ज बोलने की इजाजत उनको दी थी, लेकिन 'सरकार' शब्द का उपयोग किये बिना वे बोल ही न सके। आज बात बात मे 'सरकार' का जो नाम लिया जाता है, वह हालत मुझसे देखी नहीं जाती। कोई सरकार प्रजा को सुखी बनाती है, तो भी मैं कहता हूँ कि बड़ा खतरा है और कोई प्रजा को दुःखी बनाती है, तो भी बड़ा खतरा है! मैं कहूँगा कि जहाँ लोगों की ताकत नहीं बनती, वहाँ खतरा ही होता है।

आज के पाँच साल पुराने पचास साल के बराबर

डेमोक्रेसी मे आप चुने हुए लोगों के हाथ मे ५ साल के लिए हुकूमत सौंपते है। इस जमाने के ५ साल पुराने जमाने के ५० साल होते है। इसलिए पुराने जमाने के ५० साल मे जितना काम कोई बादशाह कर सकता था, उतना भला या बुरा काम ये लोग ५ साल मे कर सकते हैं। फिर उसका नतीजा भी सहन करना पड़ता है। केरल मे क्या हुआ? ३१ जुलाई की शाम को ६ बजे कम्युनिस्टों की हुकूमत खत्म हुई और उसी दिन, उसी समय ६ बजे राष्ट्रपति की हुकूमत शुरू हुई। क्या औरगजेब ऐसा कर सकता था कि एक हुक्म दिल्ली मे बैठकर वह देता, तो उसका फौरन अमल होता? मराठी मे कहावत है : 'मियाँ बोले दाढी हाले' (मियाँ बोलता है, तो सिर्फ उसकी दाढी हिलती है)। असम के ८-९ को कोई हुक्म देना होता, तो औरगजेब बादशाह का पैगाम, हुक्म वहाँ पहुँचते पहुँचते दो महीने लगते। और पहुँचने पर भी उसने देरी से जवाब दिया या हुक्म न माना, तो दिल्ली से उठकर वहाँ जाकर उस पर हमला करना और जबरदस्ती उसे मनवाना—यह सारा कितना कठिन काम था! लेकिन आज की हालत मे केरल की हुकूमत रद करने मे क्षण की भी देर नहीं लगी।

ताले खुलें, जब्त लगे

हम 'सोपोर' गये थे, जो एक सियासी मरकज है। वहाँ हमने कहा था कि पार्टी इन पावर (अधिकारारूढ पार्टी) गलतियाँ नहीं करती, ऐसा नहीं। लेकिन उन गलतियों को वह कबूल नहीं करती। अपनी सरकार की आलोचना नहीं करती। जाहिरा तौर पर बोल नहीं सकती। उसके मुँह पर ताला लगा है। इधर विरोधी पार्टीवालों का मुँह खुला हुआ है, इसलिए वे चाहे जो बक सकते हैं। इससे नतीजा कुछ नहीं निकलता। वे कहते रहते हैं कि हमारी हालत खराब है, हमें इन्साफ नहीं मिलता और अधिकारारूढ पार्टी अपनी गलतियाँ जाहिरा तौर पर कबूल नहीं करती। इसलिए मैंने वहाँ सुझाव रखा कि सरकारवालों को चाहिए कि वे अपने मुँह का ताला थोड़ा खोलें और कुछ गलतियाँ हों, तो आलोचना करें, कन्स्ट्रेक्टिव क्रिटिसिज्म (विधायक आलोचना) करें। दूसरी पार्टीवालों से मैं कहना चाहता हूँ कि तुम्हारा मुँह खुला है, इसलिए जरा जब्त रखो। लेकिन आज होता क्या है? न तो उनका ताला खुलता है और न इनके मुँह पर जब्त होता है। बढ़ा-चढ़ाकर बातें की जाती हैं, इसलिए विरोधी पार्टी कैरेक्टिव (सुधारनेवाली ताकतें) नहीं बनती। जो लोग हुकूमत में होते हैं, वे बँधे रहते हैं। इस वास्ते एक ऐसी जमात चाहिए, ऐसा एक समाज चाहिए, जो सियासत से अपने को अलग रखे और गाँव-गाँव जाकर लोगों की खिदमत करे और उनकी रूहानी ताकत खड़ी करे। ऐसी ताकत बनाने की हिम्मत करोगे, तो प्रत्यक्ष लोकतन्त्र आयेगा।

राजनीति के बदले लोकनीति

मैं मानता हूँ कि जब ताकतें टकराती हैं, तब दिल और दिमाग की टक्कर होती है। बड़ा दिमाग और छोटा दिल। हमारा दिल भी हम बड़ा बनायेंगे, तब दुनिया में अमन और शान्ति होगी। मुख्य बात यह है कि लोगों को, अवाम को अपनी ताकत महसूस करनी चाहिए।

आज होता यह है कि जिस सरकार को आपने चुना है, उसे पाँच साल के लिए खिदमत करने के लिए चुना है। सरकार चलानेवाले आपके नौकर हैं, लेकिन जब इस नौकर के नौकर का नौकर (पुलिस) गाँव मे जाता है, तो जनता घबराती है। गाँव के लोग बादशाह हैं और सरकार है नौकर। लेकिन बादशाह नौकर से डरता है! यह मैं सिर्फ कश्मीर की बात ही नहीं कर रहा हूँ, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान मे भी यही चल रहा है।

पाकिस्तान मे तो अजीब तमाशा है। वहाँ अयूब खॉ हर कसूर के लिए चौदह साल की सजा दे देता है। मैं सोचता रहा कि यह चौदह साल का प्यार उसे कहाँ से आया? तब ऐसा लगा कि शायद वह रामायण का भक्त हो! रामायण मे रामचन्द्र को चौदह साल का वनवास हुआ था। यह अयूब भी किसी भी कसूर के लिए चौदह साल की सजा देता है। नतीजा यह हुआ कि जिस दिन उसके हाथ मे सत्ता आयी, उस दिन पाकिस्तान मे कुल पॉलिटिकल पार्टीज (राजनीतिक पार्टियों) के दफ्तरों पर ताला लग गया।

मैं किसी पर टीका करने के लिए यहॉ नहीं बैठा हूँ। मैं तो अपने अन्दर सबके लिए प्यार ही महसूस करता हूँ। मैं यही चाहता हूँ कि लोग अपनी ताकत महसूस करें और अपना-अपना काम उठा लें। अपने-अपने पॉव पर खडे हो जायें। साइन्स के जमाने मे सियासत से अलग रहकर रूहानियतवाली जनशक्ति, लोकशक्ति हम खड़ी करें, इसे मैं सर्वोदय की भाषा मे रखूँ, तो कहूँगा कि राजनीति के बदले अब हमें लोकनीति लानी चाहिए।

श्रीनगर
२-८-'५९

: ४४ :

सर्वोदय की अर्थनीति

विज्ञान के इस जमाने मे छोटे-छोटे सियासी विचार नहीं चल सकेंगे, इसलिए हमारी यही कोशिश है कि राजनीति की जगह लोकनीति लायी जाय। वह कैसे लायी जाय, यही सवाल है। बहिश्त का वर्णन तो सभी कोई करते है, लेकिन बहिश्त तक पहुँचने के लिए सीढी कहाँ है? हमारे विचारों को समझनेवाले अक्सर यही कहते हैं कि ये विचार अच्छे हैं। याने उसके अच्छे होने मे किसीको शुबहा नहीं है, लेकिन क्या ये प्रेक्टिकल (व्यवहार्य) हैं, आज की हालत मे क्या वे अमल मे लाये जा सकते हैं, यही सवाल पेश होता है। जबसे 'सर्वोदय' शब्द निकला, तभी से लोगों के मन मे यह था कि यह शब्द, विचार अच्छा है, लेकिन शायद चलनेवाला नहीं है। लेकिन हमारे आठ साल के काम का नतीजा यह हुआ कि लोगों के दिल मे थोडा शक पैदा हुआ है कि शायद यह विचार कुछ अमल मे भी लाया जा सकता है।

सह-अस्तित्व नहीं, सहयोग

पहले जो चीजें तोड़नेवाली थीं, वे ही विज्ञान के जमाने में जोड़नेवाली बन गयी है। इसलिए देशों की सीमाएँ टूटनेवाली हैं और टूट भी रही हैं। अब यह नहीं हो सकेगा कि छोटी-छोटी जमातें या देश अपने को अलग-अलग मानकर अपना चूल्हा अलग पकायें, दुनिया से कोई ताल्लुक न रखें और यह कहे कि दुनिया जिस ढग से जाना चाहे जाय, हम अपने ढग से जायेंगे। इन दिनों एक शब्द चलता है, को-एक्जिस्टेंस (सह-अस्तित्व), जो बिलकुल नाकाफी है। इतने से काम नहीं चलेगा। अब तो

को-आपरेशन (सहयोग) चाहिए। हम और आप अलग-अलग रहें, यह तो अब चल सकनेवाला ही नहीं है। जापान, हिन्दुस्तान और कई देश सोचते हैं कि अपने देश मे आबादी बढ गयी है, तो क्या किया जाय? लेकिन रूस सोचता है कि अपने देश के पास बहुत ज्यादा जमीन पड़ी है, इसलिए आबादी बढ़नी चाहिए। वह आबादी बढाने के लिए उत्तेजन भी देता है याने दुनिया के एक हिस्से मे आबादी न बढ़े, इसकी कोशिश चल रही है, तो दूसरे हिस्से में उसे बढाने की। लेकिन यह ज्यादा दिन चल सकनेवाला नहीं है।

दुनिया एक बनने से ही विज्ञान-युग को तसल्ली

हमारी यात्रा मे आस्ट्रेलिया के एक भाई आये थे। उनसे हमने कहा कि जमीन की मालकियत किसीकी भी नहीं हो सकती, यही भूदान-यज्ञ का बुनियादी उसूल है। हवा और पानी की तरह जमीन भी सबकी है। भूदान-यज्ञ के मानी है, आस्ट्रेलिया की जमीन पर चीन का और जापान का हक! मेरी यह बात सुनकर वह भाई खुश हुआ। लेकिन उसने पूछा कि क्या ऐसा होगा? क्या हमारे आस्ट्रेलियावाले इसे कबूल करेंगे? मैंने जवाब दिया कि वे कबूल करेंगे या नहीं, यह आपको देखना होगा। लेकिन यह समझ लीजिये कि अगर यह बात कबूल नहीं हुई, तो विज्ञान के जमाने को तसल्ली नहीं होगी। विज्ञान कुल दुनिया को एक करके ही छोड़ेगा। अगर ऐसा नहीं होगा, तो मानव जाति को खत्म होना होगा। आज जैसे हमारे यहाँ एक सूबे का नागरिक सारे हिंदुस्तान का नागरिक है, वैसे ही एक देश का नागरिक सारी दुनिया का नागरिक बने, यही हमे करना है। ये सारी सीमाएँ टूट जायँगी। वीसा, पासपोर्ट वगैरह कुछ नहीं रहेगा। इन्सान दुनिया में कहीं भी जा सकेगा और प्यार से खिदमत करके अपनी जिंदगी बसर कर सकेगा। इस तरह की दुनिया बनेगी, तभी विज्ञान के जमाने का समाधान होगा।

विज्ञान पर सर्वोदय का ही हक

लोग जानते हैं कि मेरे कुल विचारों की बुनियाद अदम तशद्दुद, अहिंसा पर है। मै अहिंसा पर इतना प्यार क्यों करता हूँ ? इसका जवाब यही है कि मेरा विज्ञान पर प्यार है, इसीलिए अहिंसा पर भी है। मै चाहता हूँ कि विज्ञान खूब बढे और वह बढनेवाला है ही। उसे कोई नहीं रोक सकता। अगर हम चाहते हैं कि विज्ञान बढे, तो विज्ञान के साथ अहिंसा का होना भी लाजिमी है। विज्ञान और हिंसा, तशद्दुद इकट्ठा हो जाय, तो इन्सान का खात्मा हो जायगा। मैं उस दिन की राह देख रहा हूँ, जब एटॉमिक इनर्जी (अणुशक्ति) हासिल होगी और हर गॉव मे पहुँचेगी। वह एक डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) ताकत हो सकती है, जो गाँव को अपने पाँवों पर खड़ा कर सकती है। बहुतों का खयाल है कि सर्वोदय दकियानूस, पुराने जमाने का विचार है, जो विज्ञान को पसद नहीं करता। लेकिन यह बिलकुल ही गलत खयाल है। मैंने बार बार कहा है कि विज्ञान पर अगर किसीका हक है, तो सर्वोदय का ही, दूसरों का नहीं। अगर दूसरों के हाथ मे विज्ञान की ताकत जायगी, तो वह मनुष्य को खत्म करनेवाली साबित होगी। अगर वह ताकत सर्वोदय के साथ जुड़ जायगी, तो इन्सानियत पनपेगी, इन्सान का भला होगा।

जय ग्रामदान, जय जगत्

आज जो छोटे छोटे देश बने हैं, वे इसके आगे नहीं टिकनेवाले हैं। अब कुल दुनिया एक होनेवाली है। इसलिए सारी दुनिया एक है, यह सोचकर हमे अपना कारोबार चलाना चाहिए। फिर चाहे हम देश का कारोबार चलाते हो या सूबों का या जिलों का। हमे इसी ढग से कारोबार चलाना होगा। हमे समझना होगा कि हम कुल दुनिया के जुज हैं और इसी नाते देश को डेवलप (विकसित) करना होगा, तभी देश का काम चलेगा। नहीं तो हम अपने देश को विकसित नहीं कर सकेंगे। दुनिया से

अलग रहकर अपनी तरक्की करने की कोशिश करनेवाले हार खायेंगे और मार खायेंगे। हम विज्ञान का स्वागत, इस्तेकमाल करते हैं और उसका इन्सान की जिन्दगी की तरक्की के लिए अच्छा उपयोग करना चाहते है। लेकिन विज्ञान का अच्छा उपयोग तभी हो सकेगा, जब उसके साथ अहिंसा जुड़ेगी और डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) योजना जुड़ेगी।

मैं तो कहता हूँ कि एक बाजू गाँव रहेगा और दूसरी बाजू दुनिया। दोनों के बीच की जो कड़ियाँ है, वे मजबूत नहीं रहेंगी, ढीली हो जायँगी। मजबूत चीज होगी, एक बाजू वन वर्ल्ड (एक विश्व), जय जगत् और दूसरी बाजू गाँव, जय ग्रामदान। दोनो के बीच की स्टेट, सूबा आदि जो कड़ियाँ है, वे फैलती रहेगी, दिन-ब दिन आगे बढ़ती जायँगी।

दुनिया को मद्देनजर रख मन्सूबा बनायें

कौमियत, मजहब, जबानें वगैरह चीजों का इन्सान के साथ ताल्लुक है, उनका हमे उपयोग करना पड़ता है। ये हमारे हाथ के औजार हैं, लेकिन हम उनके हाथ मे नहीं जायँगे। आज हम शकराचार्य के टीले* पर गये थे। वहाँ से हमने आठ हिस्सो मे बँटे हुए श्रीनगर शहर को देखा। यहाँ बैठकर वैसा कुछ भी दर्शन नहीं होता। ऊपर जाने पर कुल का दर्शन होता है, तो नीचे रहकर जुज (अंश) का ही। अगर हम ऊपर नहीं चढते, नीचे ही रहते हैं, तो हमारी नजर तग बन जाती है। अगर हम ऐसी नजर को तंग रखकर प्लानिंग (योजना) करेंगे, तो बिलकुल गलत प्लानिग करेंगे। इसलिए प्लानिंग करनेवालों को सेक्रेटरिएट मे नहीं बैठना चाहिए। शंकराचार्य के टीले पर बैठकर प्लानिग करनी चाहिए। प्लानिंग करने के बाद फिर काम करने के लिए नीचे उतरना होगा। टीले पर खेती नहीं

---

* श्रीनगर में एक ऊँचे टीले पर शिवजी का मदिर है, जिसकी स्थापना शकराचार्य ने की थी, ऐसा कहा जाता है। उस टीले को 'शकराचार्य-हिल' कहते हैं। विनोबाजी सुबह उसी टीले पर घूमने गये थे।

हो सकती, इसलिए खेती करने के लिए नीचे आना होगा। लेकिन सोचने के लिए ऊपर ही चढना होगा। खुदा ने इन्सान की शक्ल ऐसी ही बनायी है। उसका दिमाग ऊपर, आसमान मे है और पॉव है नीचे, जमीन पर। इन्सान के जिस्म का जितना कम हिस्सा जमीन को छूयेगा, उतना वह ऊँचा उठेगा।

अगर इन्सान सोयेगा, तो उसका सारा जिस्म जमीन के साथ जुड़ा रहेगा। तब वह कलियुग मे जायगा। वेदों मे कहा है कि 'कलि. शयानो भवति।' जब वह बैठता है, तो उसके जिस्म का ज्यादा हिस्सा आसमान म और थोड़ा जमीन पर रहेगा। तब वह द्वापर युग मे जायगा। 'संजिहानस्तु द्वापर:।' फिर जब वह खड़ा हो जाता है, तो सिर्फ उसके पॉव जमीन को छूयेंगे याने कम-से-कम हिस्सा छूयेगा और ज्यादा हिस्सा आसमान मे रहेगा, इसलिए वह राम के युग मे चला है 'उत्तिष्ठन् त्रेता भवति।' आखिरी युग, आदर्श युग है—कृतयुग। इन्सान जब चलता है, तब कृतयुग मे चला जाता है। 'कृतं संपद्यते चरन्।' इसीलिए बाबा रोज चलता है और चलते समय एक सेकड, क्षण ऐसा आता है, जब दोनों पॉव आस मान मे आ सकते हैं और दौड़ने मे तो दोनों पॉव आसमान मे आते ही हैं। चलना दिमाग के लिए बड़ा मुफीद है। मैं अपने अनुभव से कहता हूँ कि चलने से दिमाग साफ, तेज बनता है, क्योंकि सारा जिस्म आसमान मे आता है और जमीन से कम-से-कम ताल्लुक रहता है। इसीलिए सोचने के लिए शकराचार्य के टीले पर जाना चाहिए और काम करने के लिए नीचे उतरना चाहिए। खिदमत तो अपने देश की, सूबे की, जिले की या गॉव की करनी चाहिए, लेकिन जब प्लानिंग करने बैठेंगे, तो कुल दुनिया को सामने रखकर, अपने को दुनिया का बादशाह समझकर मन्सूबा (प्लान, योजना) करना चाहिए, तभी मन्सूबा ठीक बनेगा। जो देश छोटी नजर रखकर मन्सूबा बनायेगा, उसका मन्सूबा ठीक नहीं बनेगा।

पूर्णो का सहयोग

इसीलिए सर्वोदय मे हम कहते है कि गॉव एक परिपूर्ण, मुकम्मिल

चीज है, टुकड़ा नहीं है। गॉव-गॉव टुकडा है और ऐसे मुख्तलिफ टुकड़े इकट्ठा करके पूरा देश बनेगा, ऐसा नहीं, बल्कि 'पूर्णमदः पूर्णमिदम्'। यह भी पूर्ण है, वह भी पूर्ण है और सब मिलकर परिपूर्ण बनाना है। यही सर्वोदय का मन्सूबा है। हम कहते हैं कि हर गॉव अपना मन्सूबा बनाये। देहात का मन्सूबा देहली नहीं बनायेगी, देहात ही बनायेगा। इस पर सवाल पैदा होता है कि क्या ऐसा हो सकता है? आज हमारी युवराजजी (युवराज कर्णसिंह, सदरे-रियासत) से बातें हो रही थीं। उन्होंने कहा कि "ऐसा हो, तो बहुत अच्छा होगा, लेकिन क्या नीचे ताकत दी जा सकेगी?" मैंने कहा कि नीचे ताकत दी नहीं जा सकेगी, ताकत ली जायगी। आजादी कभी दी नहीं जा सकती, ली जा सकती है। आप कौन हैं किसीको आजादी देनेवाले? इसलिए इन्सान को इसके लिए तैयार करना होगा कि तुम अपनी जगह मुकम्मिल हो, इसलिए मुकम्मिल बनकर अपना मन्सूबा बनाओ। इसका मतलब यह नहीं कि एक गॉंव का दूसरे गॉंव से ताल्लुक ही नहीं रहेगा।

चीनी फिलॉसफर (दार्शनिक) लाओत्से ने गॉव के लिए अच्छा मन्सूबा बनाया, जिसमे कहा कि गॉंव अपनी सब जरूरतें पूरी कर लेता है, दूसरे गॉवो पर मबनी (निर्भर) नहीं। दूसरे गॉववाले बड़े खुशहाल हैं, लेकिन उन्हे पता चलता है कि नजदीक कोई गॉव है, क्योकि रात को उन्हें दूर से कुत्तों के भौंकने की आवाज सुनाई देती है। जहॉ कुत्ते होते हैं, वहॉं इन्सान होना ही चाहिए, इसलिए वे अदाजा लगाते हैं कि नजदीक ही कोई गॉव होना चाहिए। याने उन्होंने उस गॉव को देखा भी नहीं। इतने 'सेल्फकन्टेन्ट' गॉव की जो तस्वीर उन्होने खींची है, वह हमारी तस्वीर नहीं है। हम को-ऑपरेशन (सहयोग) चाहते हैं, लेकिन लॅंगड़े और अधे का सहयोग नहीं चाहते। अधपंगुन्याय के मुताबिक अधे के कधे पर लॅंगडा बैठता है। अधा चलता है और लॅंगडा उसे मार्गदर्शन करता है। आज दुनिया मे यही चल रहा है। शहरवाले लोग लॅंगड़े हैं और

देहातवाले अंधे। शहरवाले देहातवालों के कंधों पर बैठे हैं और देहातवाले भी समझते हैं कि शहरवालों के बिना हमारा नहीं चलेगा। वे हमारे कंधे पर बैठें। यह भी एक क़िस्म का सहयोग है। अंधे और लॅंगड़े में मुख्तलिफ़ सिफ़त है। दोनों अधूरे हैं और दोनों मिलकर पूरे बनते हैं। लेकिन सहयोग का दूसरा भी तरीका है। वह यह है कि दोनों पूरे हों और उनका सहयोग हो। हम अंधे और लॅंगड़े का सहयोग नहीं चाहते। हम सहयोग जरूर चाहते हैं, लेकिन साथ साथ यह भी चाहते हैं कि गॉंव-गॉंव अपने पॉंव पर खड़ा हो जाय और अपना मन्सूबा खुद बनाये। यह तभी हो सकेगा, जब गॉंव में जमीन की मिल्कियत मिटेगी और गॉंव का एक कुनबा बनेगा।

जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए मेरा जन्म

मैंने माना है कि यही चीज फैलाने के लिए, जमीन की मिल्कियत मिटाने के लिए ही मेरा जन्म हुआ है। जब तक वह मिटती नहीं, तब तब धर्म नहीं पनपेगा। इन्सान जमीन का मालिक नहीं हो सकता। मैं इस्लाम की भाषा में कहता हूॅं कि हम जमीन के मालिक बनने का दावा करते हैं, तो अल्ला के साथ शिर्कत करते हैं। इसीलिए जमीन के मालिक बनने का दावा करना कुफ्र है, नास्तिकता, अधर्म है, यह मैंने जाहिर किया है। मैं मानता हूॅं कि इस चीज को हमें कबूल करना होगा।

विज्ञान और रूहानियत की एक ही मॉंग

जमीन की मिल्कियत मिटाने के मानी क्या हैं, जरा समझ लीजिये। मेरा यह कतई इरादा नहीं है कि कलेक्टिव फार्मिंग (सामूहिक खेती) या को-आपरेटिव फार्मिंग (सहयोगी खेती) लादी जाय। मेरा इरादा है कि को-आपरेशन (सहयोग) हो, जो एक गुण, सिफ़त है, अखलाकी चीज है। जो रूहानियत के साथ जुड़ी है, उसके बिना हम टिक नहीं सकते। एक बाजू से विज्ञान सहयोग की मॉंग करता है और दूसरी बाजू से रूहा

नियत कहती है, 'मैं-मेरा' छोड़ो, 'हम-हमारा' कहो। 'मैं-मेरा' कहने से तुम टुकड़ा, जुज बनाते हो। उससे अहकार बढ़ता है। उसमे तुम बहुत खोते हो, इसलिए उसे छोड़ो। विज्ञान यही चीज कहता है कि तुम विज्ञान की ताकत को इस्तेमाल करना चाहते हो, उसका फायदा उठाना चाहते हो, तो तुम्हे अलग-अलग खिचड़ी पकाना छोडना होगा। इस तरह 'मैं-मेरा' वाली वात पर एक बाजू से रूहानियत हमला करती है और दूसरी बाजू से विज्ञान। विज्ञान कहता है कि 'मेरा खेत, मेरा घर' यह सब छोडकर 'हमारा' कहो, तभी विज्ञान का गॉव-गॉव को उपयोग हो सकता है और उसके जरिये हम जिन्दगी का अच्छा नमूना पेश कर सकते है। उसको हम जैसा विकसित करना चाहते हैं, कर सकते हैं।

विज्ञान बढ़ा, तो न्यूयार्क पर हल चलेगा

कुछ लोग कहते हैं कि हमारा आदर्श यह है कि गॉव गाँव मे डॉक्टर हो। मैं कहता हूँ कि आदर्श गाँव मे डॉक्टर का मनहूस चेहरा देखने को नहीं मिलेगा। गॉव-गॉव मे डॉक्टर हो, इसके मानी है कि घर-घर मे बीमारी हो। क्या विज्ञान के जमाने में बीमारी रहेगी? विज्ञान के जमाने मे हर बीमारी के लिए दवा तैयार रहेगी, लेकिन बीमारी तैयार नहीं रहेगी। आज न्यूयार्क, वाशिंगटन के बड़े लोग 'वीक एण्ड' (सप्ताहान्त) के लिए शहर छोडकर अपने फार्म (खेत) पर जाते और वहाँ खुली हवा मे कुदरत के साथ दो दिन बिताते हैं। यह एक बहुत अच्छी बात है। जब विज्ञान आगे बढ़ेगा, तब उनके ध्यान मे आयेगा कि 'वीक एण्ड' नहीं, बल्कि पूरा 'वीक' (हफ्ता) ही खेत पर बिताना चाहिए। न्यूयार्क मे पचास मजिलवाले मकान मे रहना पड़ता है, जहाँ न अच्छी हवा मिलती है, न सूरज का दर्शन होता है। मैं जब जेल मे था, तो वहाँ का जेलर मुझे हमेशा खुश देखता था। एक दिन उसने मुझसे कहा : "आप तो बिलकुल बादशाह जैसे रहते है। आपको कोई दुःख नहीं है?" मैंने उनसे कहा कि आपकी

कृपा से मुझे और कोई दुःख नहीं है, सिर्फ एक दुःख है। जब उन्होंने पूछा कि क्या दुःख है, तो मैंने कहा कि आप ही इस पर सोचिये और सात दिन बाद मुझे बताइये। सात दिन बाद उन्होंने कहा कि मुझे नहीं सूझता, आप ही बताइये। मैंने कहा कि यहाँ पर मुझे केवल एक ही दुःख है कि सूरज को उगते और डूबते नहीं देख सकता। जिस जिन्दगी मे सूरज के उगने और डूबने का दर्शन नहीं होता, उस जिन्दगी पर लानत है। शहरवालों को वह दर्शन नहीं होता, इसलिए वे अपने घर मे सर्योदय के फोटो रखते हैं और अपने टेबुल पर कागज के फूल रखते हैं। मैं कहना यह चाहता हूँ कि जब विज्ञान का ज्यादा खयाल आयेगा और वह हर मनुष्य के पास पहुँचेगा, तब खुली हवा की अहमियत ध्यान मे आयेगी। फिर शहरवाले पूरा 'वीक' (हफ्ता) ही खेतों पर बितायेंगे। जब ऐसा होगा, तब न्यूयार्क और वाशिंगटन पर हल चलेगा। क्योंकि वहाँ के पचास मंजिलवाले मकानों मे कौन रहेगा ? जब लोग विज्ञान को समझेंगे, तब सभी लोग माँग करेंगे कि हम खुली हवा में कुदरत के साथ रहना चाहते हैं।

किस चीज का स्टैण्डर्ड बढ़े ?

लोग मुझे आर्थिक सवाल पूछते हैं कि आपके प्लानिंग मे 'स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग' (जीवन-स्तर) बढेगा या घटेगा ? हम जवाब देते हैं कि आपका सवाल अधूरा है। किस चीज का स्टैण्डर्ड बढाना चाहिए और किसका घटाना, इसकी तमीज (विवेक) इन्सान के लिए जरूरी है। इन ५० सालों मे देश मे सिगरेट ज्यादा खपने लगी है, तो क्या इसके मानी यह है कि हिन्दुस्तान की तरक्की हुई ? हवा का स्टैण्डर्ड घटे और कपडे का बढे, तो हम घाटे में हैं या नफे मे ? स्टैण्डर्ड जरूर बढना चाहिए, लेकिन दूध, फल, शहद, मेवे, तरकारी वगैरह चीजों का बढना चाहिए और सिगरेट, शराब जैसी चीजों का घटना चाहिए।

अँधेरे को भी आग लगा दी

यहाँ मुझे उत्तम-से-उत्तम मकान मे ठहराया गया है, लेकिन देहात

के मकान मे मुझे जो आनन्द हासिल होता है, वह यहाँ नहीं हुआ। मै कल रात सोया तो इधर दीये, उधर दीये, चारों तरफ दीये ही दीये थे। मुझे उनसे अपनी ऑख बचा-बचाकर सोने की कोशिश करनी पड़ी। परमात्मा ने सुदर अँधेरा पैदा किया, जिसमे हमे आनद, शान्ति, सुकून महसूस हो, हम आसमान के चमकीले सितारे देख सकें। लेकिन इन लोगों ने अँधेरे को भी आग लगा दी। याने आग लगाने की भी हद हो गयी। यह ठीक है कि जहाँ रोशनी की जरूरत हो, वहाँ वह रहे। कुरानशरीफ मे कहा है कि "खुदा कभी दिन देता है, तो कभी रात।" वह कायम के लिए दिन ही दिन या रात ही रात दे, तो क्या अच्छा लगेगा? लेकिन दिन के बाद रात और रात के बाद दिन देता है, तो वह हमारे लिए अच्छा है। समझना चाहिए कि इन्सान को जितनी जरूरत रोशनी की है, उतनी ही अँधेरे की भी है। लेकिन हम इसे महसूस नहीं करते और रात मे भी चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश करते हैं, तो क्या यह स्वर्ग की निशानी है? कोई भी 'साइन्टिफिक माइण्ड' (वैज्ञानिक मस्तिष्क) यह कबूल नहीं करेगा कि रात को सोने के समय दीये जले हों। उस समय अँधेरा ही चाहिए। यह भी होगा कि रात को ट्रेनें नहीं चलेंगी। भगवान् ने रात सोने के लिए, ध्यान-चिंतन के लिए दी है।

सिनेमा : गाँवों के लिए अभिशाप

एक दफा सर्वोदय सम्मेलन के समय मुझसे किसीने पूछा कि रात को दो घण्टे सास्कृतिक कार्यक्रम होगा, तो क्या आप उसमे आयेंगे? मैंने कहा कि दो घण्टे का सास्कृतिक कार्यक्रम मेरे लिए नाकाफी है। मेरा तो ६॥ घण्टे का सास्कृतिक कार्यक्रम चलता है। रात को ८॥ बजे मैं सो जाता हूँ और ३ बजे उठता हूँ। इन्सान के लिए गाढ़ निद्रा से बढ़कर कोई सास्कृतिक कार्यक्रम नहीं हो सकता। जब हरएक के पास विज्ञान पहुँचेगा, तो हर कोई कहेगा कि मेरा रात को सोने का हक है। फिर सब कोई रात को सिनेमा नहीं देखेंगे, बल्कि भगवान् ने आसमान मे जो

सितारे बनाये हैं, उनको देखेंगे, जिससे दिल पाक बनता है। फिर बच्चे, बूढ़े, भाई, बहनें सब कहेंगे कि रात को हमें अच्छी निद्रा चाहिए। कुछ लोग कहते हैं कि विज्ञान बढ़ेगा, तो गाँव-गाँव में सिनेमा और डॉक्टर होंगे। हम कहते हैं कि आज चन्द शहरों को ही आग लगी है। लेकिन क्या आप गाँव-गाँव में सिनेमा पहुँचाकर गाँव-गाँव को आग लगाना चाहते हैं? आज विज्ञान उतना बढ़ा नहीं है, इसलिए लोग ऐसा गलत आदर्श रखते है। गाँवों में अच्छी चीजें ले जानी चाहिए, बुरी नहीं। 'लिटिल नॉलेज इज ए डेन्जरस थिङ्ग, ड्रिंक डीप ऑर टेस्ट नॉट' (थोड़ा ज्ञान बड़ी खतरनाक चीज है। गहराई में उतरो या उसे छूओ ही मत)।

विज्ञान से जिंदगी में सादगी बढ़ेगी

विज्ञान बढेगा, तो जिन्दगी कॉम्प्लेक्स (व्यामिश्र) नहीं, बल्कि सिम्पुल (सरल) बनेगी। हमारे साथ एक अग्रेज मित्र डोनाल्ड ग्रूम थे। उनसे हमने पूछा कि जैसे हमारे यहाँ हर दूकान में रेडियो चिल्लाता है, क्या लदन में भी यही होता है? उन्होंने कहा: "लदन में तो उसकी मनाही है।" वहाँ विज्ञान काफी आगे बढ़ा है और हमारे यहाँ अभी आया है, इसलिए ऐसा होता है। विज्ञान के जमाने में आज के ढग नहीं टिकेंगे। इसके जमाने में प्लानिंग में नम्बर एक की अहमियत इसको मिलेगी कि हर आदमी को खाने के लिए पूरा आसमान मिलना चाहिए। नम्बर दो में हवा, तीन में सूरज की रोशनी, धूप, चार में पानी, पाँच में अनाज, छह में काम करने के लिए औजार, कपड़ा, घर और फिर नम्बर सात में एण्टरटेनमेण्ट (मनोरजन) की चीजें, भजन आदि मिलनी चाहिए। रवीन्द्रनाथ ठाकुर कोई हिन्दुस्तान के जानिबदार (पक्षपाती) नहीं थे, बल्कि सारी दुनिया को एक समझनेवाले थे, उनका दिल और दिमाग बड़ा था। लेकिन उन्होंने हिन्दुस्तान और यूरोप के मजदूरों की तुलना करते हुए कहा कि हमारे देश के मजदूर दिनभर के

काम की थकान मिटाने के लिए रात को भजन करते हैं और यूरोप के मजदूर थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीते हैं। मैं रूहानियत के खयाल से नहीं, बल्कि विज्ञान के खयाल से पूछ रहा हूँ कि रात को परमात्मा के सुन्दर भजन गाकर सोना ज्यादा साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) है या शराब पीना ? बाबा की विज्ञान पर इतनी श्रद्धा है कि इसका जवाब विज्ञान जो देगा, वह बाबा को मजूर है। रात को आखिरी चीज क्या होनी चाहिए, यह साइकोलॉजी (मानस-शास्त्र) का सवाल है। रात की नींद याने इन्सान की एक दिन की मौत है। इसके बाद दूसरे दिन वह फिर से जागेगा, तो नया जन्म लेगा। मौत के वक्त जो विचार बलवान् होता है, उसके मुताबिक आगे गति मिलती है, ऐसा मानस शास्त्र भी कहता है। रात को सोने के पहले सिनेमा देखें, तो आँखों पर बुरे चित्रों का हमला होता है। फिर गहरी नींद नहीं आती। डिस्टर्बड् स्लीप (अस्वस्थ निद्रा) आती है। रात को सोने के पहले परमात्मा को याद करना और दिल को शान्त करना चाहिए, ताकि ख्वाब न आये, गहरी नींद आये। इन दोनों मे से क्या ज्यादा साइन्टिफिक (वैज्ञानिक) है ?

जिन्दगी की असली जरूरतें

इस तरह विज्ञान के जमाने मे जिन्दगी सादी होनेवाली है और चीजों की अहमियत ठीक से ध्यान मे आनेवाली है। आज इन्सान समझता है कि जिन्दगी की अहम चीज है--सोना और मोती। वह समुद्र से मोती निकालता है और उसे कान मे पहनता है। अल्ला ने कान मे सूराख नहीं पैदा किया, तो ये लोग सूराख बनाते है और मोती को सूराख नहीं होता, तो उसमे भी सूराख बनाते है। कान मे सूराख पैदा करना याने अल्ला के खिलाफ 'वोट ऑफ सेंशर' (अविश्वास का प्रस्ताव) है। कान फट जाय, तो उसमे क्या जीनत है ? लेकिन ये लोग उसे जीनत ही समझते हैं। ये चीजें विज्ञान के जमाने मे टिकनेवाली नहीं है। जिंदगी मे मोती, हीरा ये काम

की चीजे नहीं हैं। अनाज, दूध, फल ये चीजें अहम हैं, जो बढनी चाहिए और शराब, सिगरेट जैसी चीजें घटनी चाहिए। ठंड के लिए जितना कपड़ा जरूरी है, उतना मिलना चाहिए और जो जरूरी नहीं है, उसे छोड़ना चाहिए। अपने जिस्म की जो शर्म है, वह गलत है। विज्ञान के जमाने मे यह टिकनेवाली नहीं है। इन दिनों बच्चों को नंगे नहीं रहने देते, पैदा होते ही उन्हे कपड़े पहना देते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि उनके जिस्म के कुछ हिस्से को सूरज की रोशनी मिलती ही नहीं। फिर उनकी 'रिकेटी फ्रेम' बन जाती है और 'कॉड् लिवर आईल' पिलाना पड़ता है। कुल जिस्म को ढॉकने की बात विज्ञान के जमाने मे नहीं टिकेगी। विज्ञान कहेगा कि जिस्म को खुली हवा और धूप मिलनी चाहिए।

जब मुझसे पूछा जाता है कि आपके प्लानिंग मे 'स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग' (जीवन-स्तर) बढेगा या नहीं, तो मैं कहता हूँ कि यह सवाल अधूरा है। जो अच्छी चीजें हैं, उनका स्टैण्डर्ड बढेगा और जो बुरी हैं, उनका घटेगा।

सहयोगी खेती नहीं, सहयोग चाहिए

विज्ञान के मुताबिक हमे गॉव-गॉव मे अच्छी जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इसके लिए गॉव की जमीन की मिल्कियत मिटानी चाहिए और गॉव का एक कुनबा बनाना चाहिए। उसके लिए यह जरूरी नहीं कि 'को ऑपरेटिव फार्मिंग' (सहयोगी खेती) ही हो। गॉववाले अपनी मर्जी से चाहे जो इन्तजाम कर सकते हैं, अलग अलग खेती कर सकते हैं, २-४ किसान इकट्ठा हो सकते हैं या सहयोगी खेती भी कर सकते हैं। मुख्य बात यह है कि को-ऑपरेशन (सहयोग) का गुण जरूरी है, जिसके बिना रूहानियत और विज्ञान दोनों नहीं बढेंगे। हवा, पानी और सूरज की रोशनी के समान जमीन की भी मिल्कियत नहीं हो सकती, इस उसूल पर गॉव गॉव मे एक मुकम्मिल जिंदगी का नमूना पेश करना चाहिए। इधर 'वर्ल्ड स्टेट' (विश्व राज्य) रहेगा और उधर ग्रामराज्य। दोनों के बीच की कड़ियाँ

'लूज' (ढीली) हैं। ज्यादा-से-ज्यादा ताकत देहात मे रहेगी और 'वर्ल्ड स्टेट' 'मॉरल गाइडेन्स' (नैतिक मार्गदर्शन) देगा। बीच की कड़ियाँ को ऑर्डिनेटिंग (जोडनेवाली) होगी।

विज्ञान और विकेन्द्रीकरण

मुख्य सवाल यह है कि क्या यह होगा ? मैं कहना चाहता हूँ कि विज्ञान के जमाने मे यह जरूर होगा। विज्ञान के जमाने मे 'डीसेंट्रलाइज्ड पावर' (विकेन्द्रित शक्ति) हासिल होनेवाली है, वैसे बिजली भी काफी डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) है, फिर भी वह कुछ सेंट्रलाइज्ड (केन्द्रित) है। मैं भविष्य कहना चाहता हूँ—आप लिख रखिये कि आगे एटामिक इनर्जी (अणु-शक्ति) आनेवाली है, वह गॉव-गॉव जायगी और उसकी मदद से हम गॉव-गॉव मे डीसेंट्रलाइज्ड (विकेन्द्रित) तौर पर मुकम्मिल जिन्दगी का नकशा पेश करेंगे। उसके लिए यह जरूरी नहीं है कि ५०-१०० घरवाला छोटा-सा गॉव हो। गॉव थोड़ा बड़ा हो। इस तरह गॉव-गॉव आजाद और स्वयपूर्ण बनेगा, तभी सच्ची आजादी आयेगी। आज सच्ची आजादी न इस देश मे है, न दुनिया के किसी दूसरे देश मे। यह सब विज्ञान की मदद से होगा। विज्ञान जब गॉव-गॉव पहुँचेगा, तब वह ज्यादा विकसित होगा। विज्ञान शहर मे नहीं, बल्कि जहॉ कुदरत है, वहीं बढेगा। फिर किसान का लड़का वैज्ञानिक बनेगा।

पण्डित लोग क्षमा करें

कल की तकरीर मे मैंने पण्डितो के बारे मे एक मजेदार कहानी सुनायी थी 'गधे और पण्डित बीच मे'। उससे कुछ पण्डितों के दिल को दु.ख हुआ। वे कृपा करके मुझे मुआफ करे। यह मुझसे कभी नहीं बनेगा कि मैं किसीका दिल दुखाऊँ। यह आखिरी चीज है, जो मुझसे होगी। लेकिन 'सेन्स ऑफ ह्यूमर' (विनोद-बुद्धि) तो होना ही चाहिए, जिसके बिना जिन्दगी मे मजा नहीं रहता। इसीलिए उस कहानी की तरफ विनोद की दृष्टि से

देखना चाहिए। फिर भी उससे जिनको दुःख हुआ, उनके दिल मे मै बैठा हूँ, वे मेरे है, मैं उनका हूँ। यहाँ की पण्डित जमात अकलियत (अल्पमत) मे है। वे यहाँ महफूज हो सकते हैं। उसका एक ही तरीका है कि वे सबकी सेवा करे। मैने पारसियो की मिसाल देते हुए कहा था कि वह एक छोटी सी जमात है, लेकिन उसमे सेवा करनेवाले कितने निकले! इस पर पण्डितो ने हमे लिखा कि हममे भी सेवक पैदा हुए हैं। उन्होने पण्डित जवाहरलाल नेहरू का नाम दिया। खैर! यहाँ के पण्डितों को पण्डित जवाहरलाल पर अपना हक साबित करना है, तो वे करें। वह दावा पण्डितजी को मजूर है या नहीं, मुझे पता नहीं। पर मैं मानने को राजी हूँ। पण्डित जवाहरलाल का नाम क्यों लेते हो? क्या मैं जानता नहीं कि कश्मीर के पण्डितों ने प्राचीन काल से बड़ी सेवा की है, बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे हैं। शैव सिद्धात का प्रचार यहाँ से और उधर तमिलनाड से हुआ है, दोनों का देश पर असर है। शकराचार्य यहाँ के पण्डितों से चर्चा करके उन्हे विचार समझाने के लिए आये थे। यहाँ के पण्डितों ने तवारीख मे खूब काम किया है। लेकिन पुराने सरमाये पर काम नहीं चलेगा, नया सरमाया चाहिए, यद्यपि पुराना भी काफी है। इसीलिए मैंने पण्डितो को सलाह दी कि वे सेवा करे। लेकिन मेरे किसी शब्द से किसीका दिल दुखा हो, तो वे मुझे कृपा करके मुआफ करें।

श्रीनगर
३ ८-'५९

: ४५ :

उस्ताद क्या करें ?

जब इन्सान का दिमाग ठडा और दिल गर्म रहता है, तब वह तरक्की करता है। दोनों ठडे हो, तो सारा मामला ठडा हो जायगा और दोनों गर्म हों, तो सब कुछ जल ही जायगा, कुछ भी बाकी न रहेगा। पुरानी पीढी के लोगो के दिल और दिमाग दोनों ठडे होते हैं और नयी पीढी के दोनों गर्म होते हैं। इसलिए इनका मामला ठीक नहीं रहता है और उनका भी। दोनों के बीच बेहद फासला हो जाता है। इसलिए पुरानी पीढी का ठडा दिमाग और नयी पीढी का गर्म दिल, दोनो इकट्ठा हो जायँ, तो समाज की तरक्की की रफ्तार बहुत बढेगी और दोनो के बीच का फासला कुछ कम हो जायगा। याने होश भी हो और जोश भी हो। होश तब होता है, जब दिमाग ठडा रहता है और जोश तब होता है, जब दिल गर्म होता है।

उस्ताद पुरानी और नयी पीढ़ी को जोड़ें

सवाल यह है कि यह हमें कैसे सधे ? पुरानी पीढी को यह हरगिज नहीं सधेगा। कोशिश करने पर भी वे अपने दिल को गर्म नहीं कर सकेंगे। बूढों का दिमाग ठडा होता है और आखिर मे जिस्म भी ठडा पड़ जाता है। आखिर बूढे को गर्म कैसे रखा जाय, यही मसला रहता है। इसी तरह नयी पीढी को अपना दिमाग ठडा रखना मुश्किल मालूम होता है। यह उस्तादों का काम है कि पुरानी पीढी का दिमाग और नयी पीढी का दिल, दोनों को जोड़ दें। दुनिया को और समाज को उस्तादों की यही गरज है। अगर उस्ताद न रहे, तो पुरानी और नयी पीढी को जोड़नेवाला कोई नहीं रह जायगा। उस्तादों पर यह जिम्मेवारी है कि पुरानी पीढी के तजुर्बे नयी

पीढी के पास पहुँचा दें और नयी पीढी का जोश कायम रखें। उस्तादों का यह खास धर्म है।

हमारी हालत यह है कि हम पहले से आज तक विद्यार्थी भी रहे और लगभग शुरू से आज तक उस्ताद भी रहे हैं। दोनों रिश्ते हममे इकट्ठा हुए हैं। हम हर रोज कुछ न-कुछ सीखते ही रहते हैं। कई जबानें, कई विद्याएँ, कई शास्त्र हमने सीखे और अब भी सीखते रहते हैं। जैसे सीखते रहते हैं, वैसे ही सिखाते, समझाते भी रहते है। समाज को रोज नयी-नयी चीज देते रहते है। अगर समाज को कोई नयी चीज नहीं दी, तो हम महसूस होता है कि हम क्यों जीये ? आज के दिन के लिए अपने पास नया विचार होना चाहिए, यह मेरा तजुर्बा है।

आसमान मे खूब घूमें

मै उस्तादों को यह समझाना चाहता हूँ कि मेरे तजुर्बे से फायदा उठायें। उस्तादों को खुले आसमान में खूब घूमना चाहिए। कोई उस्ताद कहे कि मैं रोज दस मील घूमता हूँ, तो मेरी तसल्ली होगी और मैं कहूँगा कि यह अच्छा उस्ताद है। तुलबा (विद्यार्थियों) को पढाने के लिए उस्ताद को भी कुछ पढना चाहिए। जितना पढें, उससे दसगुना सोचना चाहिए। सोचने के लिए सबसे ज्यादा मदद अगर किसीसे मिलती है, तो आसमान से। कुरानशरीफ में और उपनिषदों में आया है कि दुनिया की सबसे बड़ी जीनत, शोभा जो है, वह आसमान मे देखने को मिलती है। वहाँ सात आसमानो का जिक्र है। जो परला आसमान है, वह बहुत दूर है। शायद ही कोई शख्स होगा, जिसका दिमाग वहाँ पहुँचेगा। लेकिन नजदीकवाला जो आसमान है, उसका मजा और मदद हमे मिलती है। आसमान से खूब नये नये विचार मिलते हैं, यह हमारा तजुर्बा है। इसीलिए हमे कभी गुस्सा नहीं आता। जब कभी हमे ऐसा लगता है कि अब क्या किया जाय, तो हम घूमने चले जाते हैं। किसीकी जिन्दगी में कोई दुःख हो, किसीसे बनती नहीं हो, किसी वजह से दिल में सुकून,

शान्ति न हो, तो घूमने निकल पड़ो और जरा खिल्कत (सृष्टि) मे जाकर देखो । खुले आसमान से दिल प्रसन्न हो जाता है, नये-नये विचार सूझते हैं और दिल मे भरे हुए सारे गलत खयाल वहाँ से भाग जाते हैं । आसमान के साथ ताल्लुक एक बहुत बड़ी बात है । इसलिए आप रोज समाज से जरा दूर घूमने जाइये । आठ-दस मील घूमना तो मामूली बात होनी चाहिए । जिस तरह तस्वीर खींचनेवाला तस्वीर खींचने के लिए नजदीक जाता है, लेकिन जरा दूर जाकर देखता है, तब उसे पता चलता है कि तस्वीर मे क्या खूबियाँ, क्या खामियाँ हैं और कहाँ क्या फर्क करना जरूरी है । उसी तरह उस्तादों को समाज की सेवा करनी है, तो चिंतन के लिए जरा दूर जाना चाहिए ।

किताबों का बोझ न उठाइये

उस्तादों का काम है कि तुल्बा की सेवा करें, बुजुर्गों के तजुर्बे उनके पास पहुँचायें । लेकिन तुल्बा उन पुरखों से बँध न जायँ, यह भी देखना होगा । नहीं तो हमारे पुरखाओं ने जो कहा, उससे हम एक कदम भी आगे जाने के लिए तैयार नहीं हैं, ऐसी हालत हो जायगी । किसीके दिमाग पर किताबों का बोझ पड़ा, तो उससे बदतर बोझ कोई नहीं हो सकता । अल्ला बचाये उन्हे ! अभी हम अपने साथियों से चर्चा कर रहे थे कि "हम अपना सामान कधे पर उठाते हैं, किन्तु सर पर क्यों नहीं उठाते ?" किसीने जवाब मे कहा कि "सिर पर बोझ उठाने से दिमाग पर बोझ पड़ता है ।" मैंने कहा कि "सामान का बोझ सिर पर उठायें, तो दिमाग उतना नहीं दबेगा, जितना किताबों के बोझ से दबेगा ।" फलानी किताब अच्छी है, तो पढो, लेकिन उसका बोझ क्यों उठाते हो ? पुराने लोगों ने जो तजुर्बे किये, वे ही अगर तुम्हे और हमे करने होते, तो भगवान् हमे यह जन्म क्यों देता ? अगर कोई नयी चीज करने को बाकी नहीं होती, तो वह हमे जन्म ही नहीं देता । लेकिन उसने हमे जन्म दिया है और आगे

भी बच्चे जन्म लेनेवाले हैं, तो हमें नयी चीज खोजनी ही चाहिए। पुराने तजुर्बों का फायदा जरूर उठाना चाहिए। नहीं तो युक्लिड ने जो खोजें कीं, वे सब हमें फिर से करनी पड़ेंगी। यह तो हद दर्जे की जहाल्त (मूर्खता) होगी, हमें वह नहीं करनी है। लेकिन पुराने लोगों से हम एक कदम भी आगे न बढ़ें, यह भी गलत है।

किताबें डाल पानी में

एक मुसलमान भाई बड़ी श्रद्धा से कुरानशरीफ पढ़ते थे। वे उसके मानी नहीं जानते थे और न जानने की जरूरत ही महसूस करते थे। उनके गुरु ने उन्हें मन्त्र दिया था कि "कुरान पढ़ो, फिर और कुछ पढ़ने की जरूरत नहीं है। जो पढ़ते हो, उसके मानी भी जानने की जरूरत नहीं है, कुरान ही बस है।" उसके इब्तेदाह (आरम्भ) में 'बिस्मिल्लाहिरह-मानिर्रहीम' और आखिर में 'नास' आता है। शुरू में 'ब' और आखिर में 'स' तो 'बस' हो गया। इससे ज्यादा जानने की कतई जरूरत नहीं है। मुल्ला भी यही कहता है और वेद पढ़नेवाला भी यही कहता है। कुरान के 'सूरे जुमा' में गधे की मिसाल दी है, जिस पर किताबें लादी हुई हैं। जो किताबों का बोझ उठाता है, लेकिन उस पर अमल नहीं करता, उसको गधे की मिसाल लागू होती है। इन्सान को किताबों की मदद जरूर होती है, लेकिन उस मदद की भी एक हद होती है। हम उस हद से ज्यादा उसमें फँस गये, तो खत्म हो जाते हैं। फिर तो यही कहना पड़ता है कि 'किताबें डाल पानी में। पकड़ दस्त तू फिरिश्तों का।' 'गुलाम उनका कहाता जा' के बदले हम कहते हैं 'साथी उनका कहाता जा'। यह जो विचारों की गुलामी है, उससे बदतर कोई गुलामी नहीं हो सकती। इसलिए हमें अपना दिल और दिमाग बिलकुल आजाद रखना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने तजुर्बा से फायदा न उठायें।

खुद को पहचानो

यह सब करना उस्तादों का काम है। उसके लिए उन्हें जरा दूर जाकर

देखना चाहिए। उसीके लिए आसमान मे घूमना चाहिए। अपना जो कुछ काम चलता है, उसे भूलकर, ताजा दिमाग लेकर घूमने जाइये। अपना घर, बच्चे, स्कूल, इम्तहान, पाठ्य-पुस्तकें आदि सब भूल जाइये। एक दफा अपने सारे लेबल छोड़कर घूमने निकलिये। मैं किसीका भाई, किसीका बाप, किसीका उस्ताद, किसीका किरायेदार, यह सब छोड़िये और सिर्फ 'मै हूँ' इतना ही याद रखिये। मैं 'फलाँ हूँ' यह सब फलानापन पटक दीजिये, 'मै हूँ' इतना ही लेकर आसमान मे घूमिये। दुनिया मैं इन्सान के पाँव मे यह एक जंजीर, बेडी कसकर बाँधी हुई है, जो उसे इधर-उधर जाने नहीं देती, सोचने नहीं देती, कुछ भी करने नहीं देती। इसलिए इन सबसे जरा दूर जाइये। घर-ससार से, सियासत से और इस जिस्म से भी अलग होकर देखिये, तब पता चलेगा कि 'मैं कौन हूँ', मेरा रूप क्या है। जब तक हमने नहीं पहचाना कि मै कौन हूँ, तब तक हम तालिबे इल्म (विद्यार्थी) भी नहीं बन सकते, तो उस्ताद क्या बनेंगे? इसलिए आप इस पर गौर कीजिये कि मै कौन हूँ। 'फलाने' का बोझ सिर पर रहेगा, तो काम नहीं होगा। जब तक तुम खुद को नहीं पहचानते हो, तब तक क्या 'टीचते' (पढाते) हो? मै कौन हूँ, यह सोचो और 'मैं' पर जितने पर्दे आ गये हैं, उन सबको हटा दो। दुनिया के झमेलों से, जिम्मेवारी से जरा अलग होकर अपने को परले आसमान मैं ले जाने की बात मे नहीं कर रहा हूँ, वहाँ तो सिर फूट जायगा। बल्कि मैं तो कहता हूँ कि अपने को नजदीकवाले आसमान मे ले जाओ।

परीक्षा विद्यार्थियों की नहीं, उस्तादो की होती है

आप कहेगे कि यह विनोबा हम पर क्यों नाहक जिम्मेवारी डाल रहा है। हमारे लिए तो सब ऊपर से लिखकर आता है कि क्या पढाना, कितना पढाना। हफ्ते मैं पन्द्रह घंटे अंग्रेजी, बारह घंटे गणित, नौ घंटे इतिहास, भूगोल—यह सारा तय होकर आता है और आखिर उसीके मुताबिक

विद्यार्थियों की परीक्षा भी लेनी होती है। शिक्षणमन्त्री से बात करते हुए मैंने कहा था : "आपको किसने बताया कि विद्यार्थियों की परीक्षा लेनी होती है। परीक्षा तो उस्तादों की लेनी होती है, विद्यार्थियों की नहीं। विद्यार्थी फेल नहीं होता, उस्ताद फेल होता है। एक विद्यार्थी बारह साल की उम्र में आपके पास आया, सालभर आपके पास पढ़ा और तेरह साल का बना, तो वह पास ही है। अगर वह ग्यारह साल का हुआ होता, तब फेल होता। लेकिन वह बढ़ गया, उसका दिमाग बढ़ गया, हड्डियाँ, जिस्म मजबूत हुआ, इस हालत में उसकी परीक्षा क्या लेनी है? परीक्षा तो उस्तादों की लेनी है।"

परीक्षा की दहशत

भारतन् कुमारप्पा हमारे साथ जेल में थे। मैंने एक दफा उनसे पूछा कि क्या आप रात में कभी ख्वाब देखते हैं? उन्होंने कहा : "कई बार देखता हूँ। मेरे दिल में कतई शुबहा नहीं है कि अब कोई मेरा इम्तहान लेनेवाला है। लेकिन ख्वाब में मैं यही देखता हूँ कि मैं इम्तहान दे रहा हूँ। पेपर कैसे लिखा जाय, इसकी फिक्र है। सामने जाँचनेवाले खड़े हैं। यही मुझे दहशत है। फिर मैं जाग जाता हूँ, तो फिक्र खत्म होती है। बचपन में परीक्षा की जो दहशत बैठ गयी, उसका दिल पर अभी तक असर है।" आँधी शुरू हो गयी है, इसलिए मैं आपका ज्यादा वक्त नहीं लेना चाहता। मैं जो कहना चाहता हूँ कि खूब घूमो, वही बात यह आसमान और हवा भी कह रही है।

श्रीनगर
४-८-'५९

: ४६ :

शान्ति-सेना

आप जानते हैं कि आज दुनिया मे जिधर देखो, उधर कशमकश चल रही है। दुनिया के किसी भी अखबार का पहला पन्ना देखिये, तो उसमे कशमकश की ही खबरें दीखेंगी। एक दूसरे की मुखालिफत करना और एक दूसरे की तरफ शक, शुबह की निगाह से देखना, यही चल रहा है।

'कोल्ड वार' और 'हॉट पीस'

जिसे बड़ी लड़ाई कह सकते हैं, ऐसी लड़ाई आज दुनिया मे जारी नहीं है, लेकिन छिटपुट लड़ाइयाँ चल ही रही हैं। इधर-उधर थोड़ी आग लगाना चल रहा है। 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) चल रहा है। 'यूनो' (राष्ट्रसघ) मे शाति के लिए टेबुल के इर्द-गिर्द बैठकर बहस मुबाहिसा चलता है, वह 'कोल्ड वार' (शीत-युद्ध) नहीं, बल्कि 'हॉट पीस' (उष्ण शाति) है। इस तरह कुछ 'कोल्ड वार' और कुछ 'हॉट पीस' चलता रहता है।

आज हमने अखबार मे पढा कि बडी कृपा करके क्रुश्चेव महाराज और आईक महाराज एक-दूसरे से मिलनेवाले हैं और आपके और मेरे नसीब का फैसला करनेवाले हैं। इस वक्त कुल दुनिया २-४ लोगों के हाथ में है। अगर इनके दिमाग मे कुछ फर्क आ गया, तो कुल दुनिया तबाह हो जायगी। इसलिए आपको, मुझे अल्लामियाँ से दुआ माँगनी चाहिए कि वह हमे अक्ल न दे, तो कोई परवाह नहीं, लेकिन आईक और क्रुश्चेव को अक्ल जरूर दे। उसने आपको और मुझे अक्ल नहीं दी, तो मेरा और आपका ही बिगड़ेगा। लेकिन आईक या क्रुश्चेव की अक्ल मे कहीं नुक्स

रह गया, तो आप और हम सभी खत्म हो जायँगे। इस तरह चन्द लोगों के हाथ में दुनिया को बनाने या बिगाड़ने की ताकत रखना सबसे खतरनाक चीज है, यह हमें अच्छी तरह समझ लेना चाहिए।

आज ब्राडकास्ट होता है, डीपकास्ट नहीं

डेमोक्रेसी (लोकशाही) पर मेरा यही आक्षेप है कि आज की डेमोक्रेसी फार्मल (औपचारिक) बन गयी है। उसकी अन्दरूनी चीज, असलियत, इसका 'कन्टेन्ट' डेमोक्रेसी का नहीं है। जो ताकत पुराने किसी भी बादशाह के हाथ में नहीं थी, विज्ञान के कारण आज वह मामूली डी० सी० के हाथ में आ गयी है। लोगों के हाथ में भी, पहले कभी जितनी ताकत नहीं थी, उतनी ताकत आज आयी है। इस तरह लोगों के हाथ में ज्यादा-से-ज्यादा ताकत तो आयी है, लेकिन आज दुनिया में डर भी ज्यादा-से ज्यादा छा गया है। इतना डर पहले कभी नहीं था। हमारे पुरखाओं के पास वे चीजें नहीं थीं, जो आज हमारे पास हैं। इस समय 'लाउड-स्पीकर' की वजह से मैं हजारों लोगों के पास अपनी बात पहुँचा रहा हूँ। ईसामसीह या बुद्ध भगवान् के पास इस तरह 'लाउड स्पीकर' नहीं था। ईसा के बारे में कहा है कि 'सीइग दि मल्टिटयूड ही ओपेन्ड हिज माउथ' (समुदाय को देखकर उन्होंने बोलना शुरू किया)। उसमें ज्यादा से-ज्यादा पचास लोग होंगे। आज हजारो लोग एक साथ सुन सकते हैं। आज 'ब्राडकास्ट' तो होता है, लेकिन 'डीपकास्ट' नहीं होता। विचार इधर-उधर खूब फैलता है, लेकिन गहरा नहीं जाता। पुराने जमाने में विचार ज्यादा फैलता नहीं था, लेकिन गहरा जाता था। भगवान् कृष्ण ने गीता एक ही शख्स को—अर्जुन को सुनायी थी, लेकिन आज वह चीज घर-घर पहुँच गयी है। इस तरह इफ्तेदाह (शुरुआत में) बिलकुल एक शख्स को सुनायी हुई बात बहुत गहरी जाती है। इन दिनों अक्सर बात गहरी नहीं जाती, इधर-उधर फैलती है।

आज सारी दुनिया भयग्रस्त

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमारे पास जो भौतिक ताकत है, वह बहुत बड़ी है। पुराने लोग उसका अन्दाजा ही नहीं कर सकते थे। आज भय जितना बढ़ा है, उतना पहले कभी नहीं था। रूस को अमेरिका का डर मालूम होता है और अमेरिका को रूस का। पाकिस्तान को हिंदुस्तान का डर मालूम होता है और हिन्दुस्तान को पाकिस्तान का। बड़े भी डर रहे हैं, छोटे भी और बीचवाले भी। डर आज हमारी जिन्दगी की एक मामूली चीज बन गयी है। क्या चिड़ियों को कभी समाधि लगती है? वे एकाग्र नहीं हो सकतीं। वे इधर-उधर देखती रहेंगी कि कहीं कोई परिन्दा आकर न झपटे! इसी तरह आज इन्सान की जिन्दगी में डर छाया है। इसीलिए हथियार बढ़ रहे हैं। 'पीस टाइम' (शान्ति के समय) में भी लाखों की फौजें बन रही हैं, फिर 'वार टाइम' (लड़ाई के समय) में तो करोड़ों की फौजें बनती हैं, कुल राष्ट्र ही उठ खड़ा होता है। जर्मनी में एक करोड़ की फौज बनी और सारे राष्ट्र ने 'यूनाइटेड एफर्ट' (सामूहिक प्रयत्न) किया। इस तरह जब कि हिंसा की कूवतें बहुत बढ़ रही हैं, हमें अब कोई ऐसी ताकत ढूँढ़नी चाहिए, जिससे मसले हल हो सकें और जिसे दुश्मन कहते हैं, उसका हम सामना कर सकें। प्यार से, निडरता से दुश्मन को दोस्त बना सकें। पुराने ब्राह्मण 'ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः' कहते थे। कुरानशरीफ में जिक्र आता है कि बहिश्त (स्वर्ग) में सब लोग एक-दूसरे को सलाम (शान्ति) कहते हैं।

शान्तिप्रेमियों की दुविधा

इन दिनों शान्ति का जप सिर्फ मजहबवाले ही नहीं करते, बल्कि आईक, ख्रुश्चेव, मैकमिलन वगैरह भी करते हैं। जप हो रहा है शान्ति का और काम हो रहा है हथियार बढ़ाने का। यह सब इसलिए हो रहा है कि फौजी ताकत बनानेवालों का फौजी ताकत पर विश्वास नहीं रहा है।

फौजी ताकत से दुनिया का कोई मसला हल होगा, ऐसा भी विश्वास नहीं रहा है और अहिंसा, प्रेम से मसला हल होगा, ऐसा भी यकीन पैदा नहीं हुआ है। याने इधर से तो यकीन उड़ गया है, पर उधर बैठा नहीं है, ऐसी डॉवाडोल हालत है। जनरल मॅकआर्थर ने गाधीजी की वफात (मृत्यु) के बाद कहा था: "गाधीजी ने जो विचार रखा था, उसीसे दुनिया के मसले हल होनेवाले हैं, फौजी ताकत से नहीं।" अभी मैने 'पीस न्यूज' में पढा कि वह 'पैसिफिस्ट' (शान्तिवादी) बना है। यह कोई अचरज की बात नहीं है। आजकल आईक, माइक वगैरह सबके सब 'पैसिफिस्ट' बन जाते हैं। क्योंकि उनका दिमाग अभी डॉवाडोल है, उन्हें कुछ सूझ नहीं रहा है। लेकिन दुनिया के किसी भी गोशे मे कोई छोटा-सा मसला भी प्यार से हल होगा, तो कुल दुनिया का ध्यान उधर खिंच जायगा।

दुनिया राह की तलाश में

'भूदान-यज्ञ' का काम देखने के लिए अब तक बीसों देशों के लोग मेरी यात्रा मे आये हैं। इसकी और कोई वजह नहीं है, सिवा इसके कि वे राह ढूँढ रहे हैं। वे हमसे यह नहीं पूछते कि आपको जमीन कितनी मिली और उसमे फसल कितनी पैदा हुई? ऐसे सवाल तो हिंदुस्तान के भिखारी ही पूछा करते हैं। फसल तो अमेरिका बहुत बढ़ा चुका है। वह इतनी बढी है कि वे फसल को खायें, इसके बजाय फसल ही उन्हे खा रही है। इसलिए भूदान से कितनी फसल बढी, इसमे उन्हे दिलचस्पी नहीं है। वे हमसे पूछते हैं कि भूदान मे जिन्होंने जमीन दी, उनके दिलों मे कोई फर्क पड़ा है या यह काम देखादेखी ही हुआ है? अगर उन्हें यह जवाब मिलता है कि लोगों के दिलों मे वास्तव मे फर्क आया है, अपने पडोसी को जमीन देनी चाहिए, यों सोचकर लोग दान देते हैं, तो उनके चेहरों पर रौनक आती है, क्योंकि वे एक तलाश मे हैं। जब मैंने कर्नाटक में कहा था कि

अहिंसा की ताकत बनाने का काम हिंदुस्तान कर सकता है और ब्रिटेन भी कर सकता है, दोनों 'यूनिलेटरल डिसआर्मामेंट' (एकपक्षीय निरस्त्रीकरण) कर सकते है, तो ब्रिटेनवालों को खुशी हुई। उन्हे लगा कि बाबा ने ब्रिटेन पर भी विश्वास रखा। वे लड़ाई का फल चख चुके हैं, इसलिए वे तलाश मे है कि ऐसी शान्ति की ताकत बढे। लेकिन अभी तक हमने प्यार से मसले हल करके नहीं दिखाये।

नयी राह निकालिये

स्वराज्य के बाद हम राज्य चलाने मे ही फँस गये। पहले हम सुनते थे कि हिन्दुस्तान मे ५२ लाख भिखारी हैं। अब सुनते हैं कि ५५ लाख सरकारी नौकर है। इस बात में हमे सबसे बड़ा खतरा मालूम होता है। इतने सारे लोग मिलकर क्या राज्य चलाते होंगे? इसका नतीजा यह होता है कि इस सियासत से अलग दूसरी कोई राह निकल सकती है, इसकी तरफ किसीका ध्यान ही नहीं जाता। यही माना जाता है कि जो कुछ करना है, सत्ता के जरिये ही किया जा सकता है, इसलिए सत्ता कब्जे मे करनी होगी। लेकिन इसमे हमारी क्या खूबी रहेगी? दुनिया में सब लोग 'पावर' (सत्ता) मे ही पड़े हैं, उसीके जरिये खिदमत करने की सोचते हैं और उसीके लिए लड़ते-झगडते हैं। हम भी वैसा ही करेंगे, तो क्या दुनिया को राह मिलेगी?

आप ही बताइये कि क्या हिंदुस्तान कभी भी अपनी माली (आर्थिक) ताकत और फौजी ताकत अमेरिका और रूस की बराबरी मे कर सकेगा? अमेरिका मे फी आदमी १८ एकड़ जमीन है और हिंदुस्तान मे सिर्फ ¾ एकड़ जमीन है। केरल मे उससे भी कम जमीन है। अभी केरल मे क्या तमाशा चल रहा है? उसमे बहुत गहरा सवाल है। वहाँ जमीन इतनी नाकाफी है कि वहाँ की आबादी जमीन के लिए बोझ है। इसलिए वहाँ झगडे होने ही वाले हैं, चाहे उनकी शक्ल कैसी भी हो। हमारे देश मे

जमीन कम है और आबादी बढनेवाली है। इस हालत में आप रूस, अमेरिका की बराबरी मे माली और फौजी ताकत कभी 'बिल्ड अप' (विकसित) नहीं कर सकते। उनके रास्ते पर जाकर आप उनके गुलाम या शागिर्द ही बन सकते हैं। इसलिए आपको नयी राह निकालनी चाहिए।

ऋषियो का देश आज क्या कर रहा है ?

मैं कश्मीर आया, तो सब तबकों ने, पार्टियों से मिला। यहाँ आपस मे काफी झगडे हैं। लेकिन मेरी यह खुशनसीबी है कि हर कोई मेरे पास दिल खोलकर बातें करता है, किसीको कोई हिचक नहीं मालूम होती। हम अगर छोटी-छोटी चीजों के लिए ही लड़ते रहेंगे, तो क्या वह ताकत पैदा कर सकेंगे, जो हमे करनी है? यहाँ हर कोई कहता है कि कश्मीर ऋषि-मुनियों का, वलीयों का, फकीरो का देश है। मै कहता हूँ कि बात तो ठीक है, लेकिन क्या उन ऋषियों के मुताबिक हम कोई ताकत बना रहे है? अगर कोई भिखारी कहे कि मेरा बाप लखपति था, तो बाप का नाम लेने से उसे क्या इज्जत हासिल होनेवाली है? लोग कहेंगे कि "तू तो भीख माँग रहा है।" बल्कि जब वह यह दिखावेगा कि मेरा बाप लखपति था, तो मैं करोडपति हूँ, तब उसे इज्जत हासिल होगी। वैसे तो सारा भारत ही ऋषि-मुनियो का देश है। भारत मे कौन-सा ऐसा प्रदेश है, जहाँ ऋषि सत नहीं हुए है? परमात्मा की हिंदुस्तान पर बड़ी कृपा है कि उसने इस प्रदेश पर ऋषि मुनियों की बारिश ही बरसायी है। लेकिन आज हम कौन-सी ताकत 'डेवलप' (विकसित) कर रहे है? गाधीजी आये और गये। फिर भी वही सियासत, वही कशमकश और वे ही झगड़े चल रहे हैं।

समाज-शास्त्र मे भारत यूरोप से आगे

राजनीति का सारा नमूना हम पश्चिम से लेते हैं, मगर सोचते ही नहीं कि भारत और इग्लैंड मे क्या कोई तुलना हो सकती है? इग्लैंड एक छोटा-सा देश है, तो भारत बड़ा देश है। वहाँ एक ही जबान है,

तो यहाँ चौदह जबानें हैं। वहाँ एक ही मजहब है, तो यहाँ ५, ६ बडे-बडे मजहब हैं। वहाँ जातिभेद नहीं है, तो यहाँ जातिभेद है। अजीब बात है कि इतना सारा फर्क होते हुए भी हम इंग्लैंड का सारा ढाँचा यहाँ लागू करते हैं और फिर कहते है कि हिन्दुस्तान पिछडा हुआ देश है, अभी उसे इग्लैंड की बराबरी मे आने मे देर लगेगी।

एक भाई ने कहा कि यहाँ फाँसी की सजा बन्द होनी चाहिए। दूसरे भाई बोले, इग्लैंड मे भी वह बन्द नहीं हुई, तो यहाँ कैसे होगी? याने हमारा 'आइडियल' (आदर्श) इग्लैंड है। लेकिन इग्लैंड तो सिर्फ ६०० साल का देश है और उसकी जबान भी कोई ७०० साल की है। कैंटरबरी से उसका साहित्य शुरू होता है। किन्तु यहाँ तो दस हजार साल से तमद्दुन चली आ रही है। फिर भी ये लोग इग्लैंड की मिसाल लेकर कहते है कि वह हमसे ज्यादा 'एडवान्स्ड' (प्रगतिशील) है। सोचने की बात है कि इग्लैंड विज्ञान मे आगे बढ़ा हुआ है, लेकिन समाज शास्त्र मे नहीं। यूरोप मे जबान की बिना पर छोटे छोटे देश बने है। वहाँ पर मजहब एक ही है, रस्मुलखत (लिपि) भी एक ही है। वहाँ की जबानें इतनी नजदीक हैं कि कोई भी शख्स पन्द्रह दिनों मे दूसरे की जबान सीख सकता है। मैंने भी पन्द्रह दिनों मे जर्मन सीखी है। उन देशों के बीच शादियाँ भी हो सकती है। इतनी नजदीकी होने के बावजूद जर्मनी और फ्रास के लोगों को यह दुःख है कि परमात्मा ने उन दो देशों के बीच कोई पहाड नहीं रखा। इसलिए एक ने 'सिगफ्रिड लाइन' बनायी, तो दूसरे ने 'मॅजिनो लाइन'। पिछले ९० साल से वे दोनों लड रहे हैं और उन लड़ाइयों को 'नेशनल वार्स' (राष्ट्रीय युद्ध) माना जाता है। दरअसल वे 'सिविल वार्स' (गृह-युद्ध) हैं, लेकिन वैसा मानते नहीं, क्योंकि वहाँ सारे अलग-अलग देश बने हुए हैं। वहाँ २४ करोड़ आबादी के छोटे-छोटे देश जबान की बिना पर बने हैं और हिन्दुस्तान मे तो चौदह जबानें इकठा हुई हैं। मुझे इसका बडा

फख है कि यहाँ पर हम चौदह 'डेवलप्ड' (विकसित) जबानों को इकट्ठा रख रहे हैं।

यूरोप में भी भारत-सी यात्राएँ चलेंगी

'पॉलिटिकल' (राजनीतिक) दृष्टि से यूरोप हिन्दुस्तान की बराबरी तब कर सकेगा, जब उसका 'फेडरेशन' (संघ) बनेगा। फिर वहाँ भी यहाँ जैसी यात्राएँ शुरू होंगी। जैसे यहाँ हम रामेश्वर का पानी लेकर काशी में अभिषेक करते हैं, वैसे ही वे 'वोलगा' का पानी लेकर 'टेम्स' तक यात्रा करेंगे और 'सेंट पीटर्स' चर्च पर अभिषेक करेंगे। कुछ देश एक हैं, यह लोगों के मन में बिठाने के लिए हमारे पुरखाओं ने ये यात्राएँ शुरू कीं।

क्या आप छोटी बात समझते हैं कि शंकराचार्य जैसा लड़का—वह मेरा लड़का ही माना जायगा, क्योंकि उसकी उम्र बत्तीस साल की थी और मेरी अब ६४ साल की है—केरल में पैदा हुआ और कश्मीर आकर उसने यहाँ के पण्डितों से चर्चा करके उनको जीता। फिर यहाँ के पहाड़ पर उसने लिंग की स्थापना की। १२०० साल से यहाँ के लोग उसकी पूजा कर रहे हैं। यह सारा इसलिए हुआ कि सारा हिन्दुस्तान एक था। ऋषियों ने उसे एक बनाया था। जिस जमाने में आमदरफ्त के साधन मुहैया नहीं थे, पैदल ही जाना पड़ता था, बीच में खतरनाक जंगल आते थे, उस जमाने में भी केरल का एक लड़का यहाँ आकर यहाँ के पण्डितों को जीतता है, यह बहुत बड़ी बात है। वह पैदा तो हुआ केरल में याने हिन्दुस्तान के एक सिरे पर और उसकी वफात (मृत्यु) हुई कैलास में, दूसरे सिरे पर। पता नहीं, यूरोपवालों को यह कब सूझेगा कि 'अपना देश एक बने।' जिन यूरोपवालों ने जबान की वजह से छोटे छोटे टुकड़े देश में बनाये, उन्हें हम 'पॉलिटिकली एडवान्स्ड' (राजनीतिक दृष्टि से प्रगतिशील) समझते हैं। हमें तो समझना चाहिए कि वे 'पॉलिटिकली बॅकवर्ड' (राजनीतिक दृष्टि से प्रतिगामी) हैं और 'ट्राइबल' (अनुसूचित) हैं।

इल्जाम बनाम इज्जत

हमारे यहाँ जबान के आधार पर सूबों की माँग की जाती थी, तब राजाजी ने कहा था कि यह 'ट्राइबॅलीजम' (पिछड़ापन) है। मैंने कहा था कि 'ट्राइबॅलीजम' देखना है, तो यूरोप मे जाइये, हिन्दुस्तान मे नहीं। हमारे यहाँ तो सिर्फ जबान के आधार पर अलग सूबे बनाने की माँग की गयी थी, अलग देश बनाने की नहीं। इस पर भी हमसे कहा जाता है कि हमें 'ट्राइबॅलीजम' से बरी होना चाहिए। मैं कहना चाहता हूँ कि हम 'ट्राइबॅलीजम' से कब के बरी हो चुके है। मगरिब (पश्चिम) के इतिहासकारों ने लिखा है कि अंग्रेज जब हिन्दुस्तान मे आये, तब यहाँ गृहयुद्ध चलते थे। क्या मराठे और राजपूतों के बीच की लड़ाइयाँ गृहयुद्ध थे, तो फ्रांस और जर्मनी के बीच की लड़ाइयाँ गृहयुद्ध नहीं थे? लेकिन वहाँ की लडाइयाँ राष्ट्रीय युद्ध माने गये। क्योंकि वहाँ अलग-अलग देश माने गये। लेकिन हमने अपना मुल्क छोटा नहीं, बड़ा माना। इसलिए मगरिब के इतिहासकारों ने हम पर जो इल्जाम लगाया था कि यहाँ गृहयुद्ध चलते थे, उसे मै कबूल करता हूँ और इज्जत की बात समझता हूँ।

हमें पश्चिम से पेटर्न नहीं लेना है

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमे मगरिब से 'पेटर्न' नहीं लेना है और अपनी ताकत बनानी है, जो फौजी या माली ताकत नहीं हो सकती। हिन्दुस्तान अपनी माली हालत सुधार सकता है, खुशहाल होकर जिंदगी बसर कर सकता है। लेकिन जैसे अमेरिका या रूस माली ताकत मे दुनिया पर गालिब (विजेता) हुए है, वैसे हिंदुस्तान बनना चाहेगा, तो भी नहीं बन सकता। हिंदुस्तान वे दो ताकतें नहीं बना सकता है, तो उसे कोई तीसरी ताकत बनानी होगी। नहीं तो उसे इस गुट में या उस गुट मे जाकर दूसरे का शागिर्द बनना पडेगा। फिर जहाँ आप किसी गुट मे गये, वहाँ गट्ट हो गये, खत्म हो गये।

पाकिस्तान अमेरिका के हाथ मे

आज पाकिस्तान की हालत क्या है ? वहाँ अयूबखान जोर मार रहा है, लेकिन अमेरिका के बल पर। वहाँ अमेरिका अपने अड्डे बना रहा है और वहाँवालों को फौजी ट्रेनिंग भी दे रहा है। और इसे वे आजादी कहते है। अगर इसे आजादी कहा जाय, तो गुलामी किस चिड़िया का नाम है ? आज किसी देश को अपने कब्जे में रखने के लिए उसका 'एडमिनिस्ट्रेशन' (कारोबार) हाथ मे लेने की तकलीफ उठाना कोई जरूरी नहीं है। अंग्रेजों ने १५० साल तक हिंदुस्तान की हुकूमत चलायी। ऐसी जहालत अब कोई नहीं करेगा। आज तो किसी देश पर अपना 'इन्फ्लुएन्स' (वजन) हो, तो काफी है। बाकी आपको आजादी हासिल है। आपको लड़ने की आजादी, फाका करने की आजादी बख्शी हुई है। सिर्फ आप पर हमारा वजन रहे और आपके बाजारों पर हमारा कब्जा हो।

हमें रूहानी ताकत बनानी होगी

दुनियाभर के लोग नयी देहली आते है और कहते हैं कि हिन्दुस्तान की तरक्की हुई है, क्योंकि नयी देहली आने पर इन्सान को भ्रम होता है कि कहीं मैं वापस लदन या पेरिस तो नहीं पहुँच गया ? लदनवाला और पेरिसवाला यहाँ आकर खुश होता है कि लदन मे और पेरिस मे जो माल मिलता है, वह नयी देहली मे मिलता है। लेकिन लदनवालों की अक्ल यह है कि वे अपनी दूकानो मे इग्लैण्ड का ही माल रखते हैं और नयी देहली की अक्ल यह है कि वहाँ लदन, पेरिस, न्यूयार्क सबका माल मिलता है। इसी पर से हमारी तरक्की नापकर बाहरवाले हमे सर्टिफिकेट देते हैं। लेकिन इससे आपकी तरक्की नापी नहीं जायगी। आप रूहानी, अखलाकी ताकत बनाते हैं, तो वही आपकी ताकत होगी और उसीसे दुनिया बचनेवाली है। अकाडमी-चकाडमी बनाने से हमारी तरक्की नहीं होगी और न ताकत ही बनेगी। अंग्रेजी भाषा मे हर साल दस हजार किताबें शाया (प्रकाशित) होती हैं। मै दो महीने से तड़प रहा हूँ कि कश्मीरी सीखूँ और उसके

लिए कश्मीरी का 'ग्रामर' (व्याकरण) और 'डिक्शनरी' (शब्दकोष) मिले। लेकिन अभी तक आपने वही नहीं बनाया, तो आप अंग्रेजी का क्या मुकाबला करेंगे ? मैने लोगों से कहा कि जब तक आप ईसाई मिशनरियों के पास तलाश नहीं करोगे, तब तक आपको ये दो चीजें नहीं मिलेंगी। अभी किसीने तलाश किया, तो उन्हींके पास ग्रामर मिली और पता चला कि उन्होंने ही डिक्शनरी भी बनायी है। ऐसे पराक्रमी लोगों से ज्यादा आप कौन-सा पराक्रम करके दिखानेवाले हैं ? माली, फौजी, सियासी मैदानों मे आप उनसे ज्यादा कौन-सा पराक्रम करनेवाले हैं ? इसलिए समझना चाहिए कि हमे अखलाकी, रूहानी ताकत ही बनानी होगी। हमे प्यार की ऐसी ताकत बनानी होगी, जिससे हम यह दिखा सकें कि बुरे लोगों का मुकाबला प्यार से भी कर सकते हैं। हिंदुस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस, अमेरिका वगैरह देश के लोग प्यार जानते है। प्यार से जिंदगी मे लज्जत, जायका, जीनत आयेगी। बिना प्यार के जीना दूभर होगा। लेकिन क्या प्यार की कोई ताकत बनेगी ? क्या प्यार से बुरे लोगो का मुकाबला कर सकते हैं, इसका जवाब अभी तक था 'जी, ना।' बचाने की ताकत फौजी ताकत ही है। प्यार के लिए घर, नाटक, सगीत, साहित्य, सस्कृति—ये सारे मैदान ठीक हैं। लेकिन अभी तक यह साबित नहीं हुआ कि प्यार से समाज का बचाव हो सकेगा। ऋषि, मुनि, वली, फकीरों के देशवासियों के नाते हमे यह करके दिखाना होगा।

प्यार की ताकत के दो पहलू

लोग हमसे पूछते हैं कि प्यार की ताकत को कैसे विकसित किया जाय ? मैं जवाब देता हूँ कि तशद्दुद (हिंसा) की ताकत दस हजार साल से बनती आयी है। उसे विकसित करने मे कितने आलिमों ने, कितने 'एडमिनिस्ट्रेटर्स' ने, कितने 'स्टेट्समैन' ने, सेनापतियों ने, साइन्सदॉ ने मदद की है ! इसलिए यकीन रखो, सब्र रखो। यह जमाने की मॉग है कि प्यार

की ताकत बने, जिससे दुनिया के मसले हल हो सकें और बुरे लोगों का मुकाबला किया जा सके। दुनिया को आज यही प्यास है।

हम अगर दुनिया में प्यार की ताकत से शांति रखना चाहते हैं, तो उसके दो पहलू हैं : १ बैनुल अकवामी मैदान (अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र) में किस तरह शान्ति रखी जाय यानी एक मुल्क दूसरे पर हमला करे, तो उसका मुकाबला कैसे किया जाय ? २ अंदरूनी शांति कैसे कायम रखी जाय ? इनमें जो बैनुल अकवामी मामला है, वह बाद का है और आसान है। कॉलेज की पढाई प्राइमरी स्कूल की पढाई के बाद आती है और उससे ज्यादा आसान भी है। पहले हमें यह साबित करके दिखाना होगा कि हिंदुस्तान में कहीं भी दंगा-फसाद हो, तो लोग प्रेम से वहाँ पहुँचते हैं और सबको रोकते हैं।

केरल के मामले में सभी गुनहगार

अभी केरल में लोगों में जज्बा पैदा हुआ और हुकूमत चलाना मुश्किल हुआ, इसलिए वहाँ की सरकार रद हो गयी। इसमें किसका कितना कसूर है ? ५०-५० है या ४०-६०, यह बँटवारा आप कर लीजिये। लेकिन उस गुनाह से कोई भी बरी नहीं है। वहाँ मेरे लोग काम करते हैं, जिनसे मुझे जानकारी मिलती रहती है। मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि उसमें सब गुनहगार हैं, चाहे कुछ कम बेसी हों। सोचने की बात है कि वहाँ हमने जो काम किया, उसे अहिंसा का, प्यार का काम नहीं कहा जायगा। जैसे हिंदू लोग परहेज करते हैं कि हम चार महीना बैंगन, प्याज वगैरह नहीं खायेंगे, वैसे ही वहाँ पर कुछ लोगों ने परहेज किया होता कि मार-काट, हिंसा नहीं करेंगे, तो ठीक होता। परन्तु वहाँ तो और जो जितना कर सकते थे, कुल किया है।

शान्ति-सेना की जरूरत

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हमने किसी भी सूबे में कोई प्यार की ताकत

बनायी है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। हिंदुस्तान मे आये दिन गोलियाँ चलती हैं और उधर से पत्थर भी मारे जाते हैं। अगर हम रेकार्ड देखेगे कि अंग्रेजों की हुकूमत मे और हमारी हुकूमत मे कितनी गोलियाँ चलीं और पत्थर मारे गये, तो हमे शर्मिंदा होना पडता है। गाधीजी के देश मे इतनी गोलियाँ चलती हैं और पत्थर मारे जाते हैं, यह क्या बात है? इसलिए हम कम-से-कम देश के अदर शाति, अमन की ताकत खड़ी करें, जिससे दगा-फसाद न हो और कहीं हो भी, तो पुलिस की जरूरत न पड़े। होना तो यह चाहिए कि हिंदुस्तान मे बहुत-सी बातो मे लोग एक-दूसरे की मुखालिफत करते हुए भी कहीं भी शाति का भग न होने दें और ऐसे तरीके से काम करें कि माहौल (वातावरण) अच्छा बना रहे। लोग होश मे रहे। यहाँ डराना, धमकाना, मार-पीटकर काम कराना, नहीं चलता— ऐसी ताकत हमे हिन्दुस्तान मे पैदा करके दिखानी होगी। इसीलिए सर्वोदय-वालो ने तय किया है कि हम शान्ति-सेना बनायेगे।

बहनें दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं

शान्ति-सेना मे सभी बहनें आ सकती हैं। बहनों को अब तक मौका ही नहीं मिला। जब तक मुल्क की हिफाजत का सारा दारोमदार तशद्दुद (हिंसा) पर होता है, तब तक बहनें सामने नहीं आ सकतीं। बहनों की और भाइयों की बराबरी नहीं हो सकती, यह बात तयशुदा है। लेकिन जहाँ प्यार की ताकत से काम करना है, खिदमत करनी है, वहाँ बहने सामने आ सकती हैं और दुनिया को अपना नूर बता सकती हैं कि वे सबको बचानेवाली है। वे अपने बच्चों पर प्यार करती हैं। वे दुनिया को प्यार से जीत सकती हैं। उनमें प्यार की यह जो ताकत छिपी हुई है, उसे बाहर लाने का मौका अब मिलेगा। शाति सेना ऐसी चीज है, जिसमे भाई और बहने दोनों बाहर आकर काम कर सकते है।

गाधीजी की एक अजीब सूझ थी। जब सवाल आया कि शराब की

दूकानों पर पिकेटिंग का काम कौन करेगा, तो गांधीजी ने कहा कि बहनें करेंगी। सुनते ही लोग घबडा गये। कइयो ने कहा कि शराब की दूकानो पर तो समाज का सारा कचरा इकट्ठा होता है, वहाँ सारे शराबी, बदमाश जाते हैं, वहाँ बहनें कैसे जायेंगी? लेकिन गाधीजी ने कहा कि "जहाँ सबसे ज्यादा अँधेरा हो, वहीं हम ज्यादा रोशनी लायेंगे। जहाँ सारे बदमाश इकट्ठा होते हैं, ऐसी जगहों पर अपने पास प्यार की जो बढिया से बढिया ताकत है, उसीको भेजना चाहिए।" और दुनिया ने तमाशा देखा बहनें वहाँ गयीं, उन्होंने पुलिस की लाठियाँ भी खायीं और आखिर शराबियों को शर्मिन्दा होना ही पड़ा। इस तरह बहनो ने करामात की। इसलिए आप सब बहनों को मेरी दावत है कि आप शाति सेना मे आइये और तय कीजिये कि हम शाति के लिए मर मिटेंगी। मारनेवाले के लिए हमारे दिल मे नफरत नहीं होगी। हम समझेंगी कि वे मूरख हैं, जो एक न एक दिन असलियत समझेंगे।

गैरजानिबदार कारकुन चाहिए

यह मत समझिये कि जैसे फौज बेकार रहती है और सिर्फ लड़ाई के मौके पर काम करती है, वैसे ही शाति-सेना का होगा। शाति-सैनिक शान्ति-काल मे खिदमत करेंगे और गैरजानिबदार (पक्षातीत) बनकर काम करेंगे। हिन्दुस्तान मे आज यही बात मुश्किल मालूम होती है, क्योंकि लोगों के दिमाग सियासत मे पड़े हैं। मुल्क में नयी-नयी सियासी जमातें खडी हो रही है। इससे मुल्क में एक जान है, ऐसा दीखता है, इसलिए मुझे वह भी अच्छा लगता है। लेकिन आखिर दुनिया के मसलो का हल इनसे नहीं होगा। आप पेड से नीचे उतरेंगे, तभी पेड को काट सकेंगे। इसलिए चन्द लोग तो ऐसे निकलें, जो कि दलीय राजनीति से अलग होकर काम करें। शाति-सेना में ऐसे लोग ही आ सकते हैं। दूसरे लोग आयेंगे, तो पहले से ही लोगों के दिलो में शक पैदा होगा कि ये पार्टीवाले पता

नहीं क्या करेंगे ! क्या गैरजानिबदार बनकर, पार्टियों से अलग होकर, उनकी खिदमत करनेवाले, सब पर समान प्यार करनेवाले लोग कश्मीर में नहीं मिलेंगे ?

मेरी माँग है कि कश्मीर वादी मे हर पाँच हजार लोगों के पीछे एक कारकून (कार्यकर्ता) के हिसाब से चार सौ ऐसे कारकून मिलने चाहिए। उनकी ट्रेनिंग वगैरह का इन्तजाम कीजिये और कहिये कि यह ऋषि-मुनियों का, लल्ला का देश है। तभी आपकी जबान मे जोर आयेगा।

शान्ति-सेना की स्वीकृति : सर्वोदय-पात्र

शाति-सेना किस बल पर काम करेगी ? उसके पीछे 'सैंक्शन' (स्वीकृति) क्या होगा ? आज आपकी फौज काम करती है, तो उसके पीछे सैंक्शन तलवार नहीं है। तलवार उनके हाथ मे है, लेकिन उनकी ताकत यह है कि आपने सरकार को चुना है, जिससे उन्हें सैंक्शन मिलता है। वही नैतिक ताकत है, जो फौज के पीछे है। आप टैक्स देते हैं और सरकार को कबूल करते है। इसी तरह शाति-सेना के लिए आप क्या टैक्स देंगे ? उसके पीछे आपके हर घर की ताकत न हो, तो वह कैसे काम करेगी ?

एक भाई ने हमसे पूछा कि आप हर घर से मदद चाहते है, तो कुल सर्वोदय-विचार के लिए चाहते हैं या सिर्फ शान्ति-सेना के लिए ? मैंने कहा कि शाति सेना के पीछे 'सिर्फ' नहीं लगता, वह कुल है, जुज नहीं। जैसे शान्ति-काल मे, मामूली वक्त मे फौज कवायद करती रहती है, वैसे ही शान्ति सेना मामूली वक्त मे खिदमत करेगी। शान्ति-सैनिक घर-घर जायेंगे और हर घर से वाकफियत रखेंगे। यह काम हमें कुल देश मे करना है। इसका नतीजा यह होगा कि जहाँ शान्ति-सैनिक काम करते होंगे, वहाँ दङ्गा-फसाद नहीं होगा। सिर्फ इतना ही नहीं होगा, बल्कि वहाँ के लोगों मे आपस मे इतना प्यार होगा कि वहाँ वकीलों की जरूरत नहीं रहेगी, वहाँ से कोई झगड़ा कोर्ट मे नहीं जायगा।

जब वकील हमारे पास आकर शिकायत करेंगे कि आपके दिल मे सबके लिए रहम है, लेकिन आप हमारे लिए बेरहम बन गये हैं, आपकी तहरीक की वजह से झगड़े नहीं होते और हमें कोई काम नहीं मिलता है, तब हम कहेंगे कि शांति सैनिक पास हो गया, कामयाब हो गया। फिर हम वकीलों से यही कहेंगे कि आप गाँव-गाँव जाकर उस्ताद बन जाइये और गाँव के लोगों को कानूनी सलाह देते रहिये, जिससे गाँव मे झगडे न हों। हमे हिन्दुस्तान के हर गाँव के लिए एक वकील याने चार लाख वकील चाहिए। उन्हें हम थोड़ी जमीन भी देंगे।

मै कहना यह चाहता हूँ कि शांति-सेना सिर्फ दगा फसाद के वक्त पर ही काम नहीं करेगी, बल्कि हर हमेशा काम करेगी। इसलिए उसे सर्वोदय-विचार से अलग नहीं कर सकते। हमे सर्वोदय-विचार के लिए, जिसका बड़ा हिस्सा शांति सेना है, हर घर से एक मुट्ठी चावल चाहिए। मै चाहता हूँ कि हर घर मे सर्वोदय-पात्र कायम हो। उसमें हम तब तक डालते रहें, जब तक खाते रहेंगे। बच्चे के हाथ से हर रोज सर्वोदय पात्र मे एक मुट्ठी चावल डालने से बच्चे को तालीम मिलेगी।

श्रीनगर
४-८-'५९

: ४७ :

तालीमी नजरिया

१५ अगस्त १९४७ के दिन हिन्दुस्तान को आजादी मिली। उस दिन एक तकरीर मे मैने वर्धा मे कहा था कि जैसे नया राज्य आता है, तो पुराना झंडा नहीं चल सकता, नये राज्य के साथ नया झडा ही होता है, वैसे ही जहाँ नया राज्य आता है, वहाँ पुरानी तालीम एक दिन भी नहीं चलनी चाहिए। अगर नये राज्य में भी पुरानी तालीम चलेगी, तो समझना चाहिए कि अभी पुराना राज्य चल रहा है।

नयी तालीम : मेरा जिन्दगी का विषय

यही चीज गाधीजी के मन में वर्षो से थी। दक्षिण अफ्रीका मे उन्होने तालीम के कुछ प्रयोग किये थे। यहाँ भी किये थे। उनके उन प्रयोगो में हम सब शामिल थे। मेरा तो यह जिंदगी का विषय रहा है। इसलिए मैने वर्षों से इस पर सोचा है और काफी काम भी किया है। मैं कॉलेज मे था, तब उस तालीम से मुझे कोई समाधान नहीं था, तसल्ली नहीं थी। नतीजा यह हुआ कि एक दिन मुझे कॉलेज छोड़ना ही पड़ा। मैं वहाँ था, लेकिन भागना ही चाहता था। उसमें मुझे कोई चीज ही नहीं दीखती थी, बिलकुल नाचीज मालूम होता था।

उसके बाद मैं गाधीजी के पास पहुँचा। नयी तालीम का काम मैं उन्हीं दिनो से करता आया हूँ। वहाँ नयी तालीम के बच्चे काफी अच्छा काम करते थे। मुझे काफी तजुरबा हुआ। हिन्दुस्तान को स्वराज्य हासिल हुआ, उसके दस साल पहले से ही नयी तालीम का मनसूबा गाधीजी ने तैयार किया था। वैसा का वैसा ही हम वह कबूल करें, ऐसा तो मैं कभी

नहीं कहूँगा। हमें अपने दिमाग से सोचना चाहिए। बुजुर्गों की सलाह लेकर, आज के हालातों के साथ ताल्लुक रखते हुए, जो चीज हमें अच्छी लगे, वही करें। फिर भी उन्होंने जरा दूर नजर रखकर नयी तालीम का नया विचार लोगों के सामने रखा।

जमीन और तालीम के बारे में सरकार नाकामयाब

स्वराज्य-प्राप्ति के दस साल बाद यह बात सरकार के ध्यान में आयी कि पुरानी तालीम देश को फायदा नहीं पहुँचायेगी। स्वराज्य को मजबूत करने के लिए, देश की ताकत बढाने के लिए पुरानी तालीम काम नहीं आयेगी। इसलिए नयी तालीम को बदले हुए रूप में ही क्यों न हो, कबूल करना होगा। और अब उन्होंने तय किया कि नयी तालीम चलानी है, फिर भी वह चलती नहीं है। हमारी सरकार के द्वारा कई अच्छे काम हुए हैं। उनके लिए मैं सरकार को धन्यवाद देता हूँ और तारीफ भी करता हूँ। दूसरे भी लोग तारीफ करते हैं। लेकिन तालीम और जमीन के बारे में किसी प्रकार की कोई तरक्की सरकार ने नहीं की है। यह दो विभाग ऐसे ही रह गये हैं कि जिनमें सरकार कुछ भी नहीं कर पायी है। देश में कई पुराने लोग हैं, जिन्हें पुरानी तालीम मिली है। उसकी वे इज्जत महसूस करते हैं और कहते हैं कि हम उसके (उसज) प्रोडक्ट हैं, उसीमें से बने हैं। वे यहाँ तक कहते हैं कि गांधीजी, लोकमान्य तिलक जैसे बड़े बड़े लोग भी पुरानी तालीम में से ही निकले हैं। उस तालीम में कुछ खराबियाँ हैं, परन्तु थोड़ी हैं। उनको सुधारा जा सकता है। इस तरह अब बड़े-बडे बुजुर्ग भी हिम्मत के साथ सामने आकर बोलने लगे हैं कि पुरानी तालीम में ज्यादा फर्क क्या करना है?

तालीम का ढाँचा बदलना अनिवार्य

मैं कहना यह चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान की तालीम का ढाँचा इतना दकियानूसी है कि उस पर विज्ञान का कोई असर नहीं। आज का समाज

बदला है, उस माहौल (वातावरण) का भी कोई असर नहीं है। फिर भी वह तालीम बेखटके चल रही है। तालीम याने प्लानिंग का एक विभाग (ऐटम) हो गया है। पढ़े-लिखे लोगों की बेकारी हटाने के लिए क्या-क्या करना है, यह पेश करते है—नये स्कूल खुलेंगे, तो इतने पुख्ता (परिपुष्ट) लोगों को नौकरियाँ मिलेगी। याने तालीम की ओर भी नौकरी (जॉब) देने के खयाल से देखना ही अच्छा समझा जा रहा है। पढ़े-लिखे बेकारो को नौकरियाँ तो मिलती है। लेकिन वे जिस फैक्टरी को चलाते हैं, वह फैक्टरी बेकारों की तादाद बढ़ानेवाली है, यह सोचने की बात है।

मुफ्त तालीम का बड़ों को फायदा

यहाँ बक्शीजी की सरकार ने एक बख्शीश दी है कि इस स्टेट (राज्य) मे युनिवर्सिटी तक तालीम मुफ्त मिलेगी। अब इसमे सोचने की बात है। इसके मानी यह है कि बडे लोगों के बच्चों को—मन्त्री के, पूँजीवादियों के, बड़े-बड़े सरमायादारों के, धनी लोगों के बच्चों को मुफ्त तालीम मिलेगी। फीस मुआफ होने पर भी गरीबों के बच्चे बहुत ऊपर तक सीखेंगे, यह नहीं मान सकते। मानी यही हुए कि बडों को एक और इनाम मिला। लेकिन इसके इतने ही मानी होते हैं, यह भी एक खैरियत ही है। सब बच्चे अगर बेकार तालीम हासिल करेंगे, तो देश को एक खतरा ही होगा। देश की यह खुशकिस्मती है कि मुफ्त तालीम में सब लडके ऊपर तक नहीं पढ़ेंगे। आज गाँव-गाँव के लोग स्कूल चाहते हैं। उनकी माँग पर सरकार उनको एक मकान बनवा देती है। स्कूल की माँग क्यों होती है ? इसलिए नहीं कि इल्म की प्यास है। बल्कि इसलिए कि वे चाहते हैं कि जो मेहनत-मशक्कत उनको करनी पड़ती है, जिस 'ड्रेजरी' मे वे रहते हैं, कम-से-कम उससे तो उनके बच्चे बच जायें। लेकिन ऐसी तालीम जितनी बढेगी, उतनी अनाज की पैदावार 'फूड प्रॉडक्शन' घटेगी। इस तालीम की अनाज की पैदावार के साथ मुखालिफत (विरोध) है।

ये लड़के जो सीखेंगे, उनमे हाथों से काम करने का माद्दा कितना है ? हमारे एक दोस्त कहते हैं कि इस तालीम मे सिर्फ तीन अँगुलियों का उपयोग होता है। वे लड़के नौकरी माँगेंगे। जिन्दगी मे क्या हासिल करेंगे ? नौकरी भी कितने लड़कों को मिलनेवाली है ?

बेकार मध्यम वर्ग

आज हिन्दुस्तान मे सरकारी नौकर पचपन लाख हैं। याने पचपन लाख परिवार को सरकार वेतन देती है। साढे सात करोड़ कुनबों, परिवारों की सेवा के लिए पचपन लाख सेवकों का इन्तजाम सरकार करती है। याने तेरह परिवारो की सेवा के लिए एक परिवार सरकार रख रही है। मतलब, इतना एक मध्यम वर्ग सरकार खड़ा कर रही है। यह वर्ग उत्पादन का काम कतई नहीं करेगा। यह ठीक है कि बेकारों को कुछ काम मिलता है, लेकिन देश को उसका फायदा नहीं होगा।

हमारे देश मे यह बात चल पड़ी है कि जो हाथों से काम करेगा, उसकी इज्जत कम होगी। शिक्षक, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील ये सब लोग हाथों से काम नहीं करेंगे, उपज नहीं बढायेंगे। लेकिन उनकी इज्जत ज्यादा होगी। वे जिस्मानी मजदूरी से नफरत करेंगे। भगत, बाबा, फकीर, साईं, सन्त, महात्मा ये भी कभी हाथो से काम नहीं करेंगे, उत्पादन के काम मे कतई भाग नहीं लेगे। यह पहले से चला आया है। अंग्रेजी सीखे हुए लोग भी कभी उत्पादन का काम नहीं करेंगे। याने एक उच्चतर मध्यम वर्ग खड़ा हुआ है, जो कायम के लिए समाज को पीसता रहेगा और कशमकश जारी रहेगी। इसलिए तालीम मुफ्त देने से कुछ नहीं चलेगा। आप क्या तालीम देंगे, इसी पर सारा निर्भर रहेगा।

तालीम का बना-बनाया ढाँचा

मैंने यहाँ के हाईस्कूल मे देखा, एक टाइम टेबुल तय रहता है। वह हफ्तेभर चलता है। एक ही 'पॅटर्न' (नमूना)! ऊपर से सारा

लिखकर आयेगा। उसमे जेर, जबर (अ, आ, इ) का भी फर्क नहीं कर सकते। हफ्ते में ४८ 'पीरिअड्स' होते हैं। उनमें १५ 'पीरिअड्स' अंग्रेजी, १२ 'पीरिअड्स' गणित, ९ 'पीरिअड्स' इतिहास और भूगोल! ये तीन अनिवार्य (कम्पलसरी) विषय हैं। बाकी १२ 'पीरिअड्स' में ५ ऐसे हैं, जिनमे से २ विषय (सब्जेक्ट) ले सकते हैं—हिन्दी या उर्दू, और संस्कृत, अरबी, फारसी, विज्ञान, ड्रॉइंग—इनमे से एक। इस प्रकार दो विषय लेने की बात है। अब इस जमाने मे कौन बेवकूफ होगा, जो विज्ञान नहीं लेगा? इसलिए विज्ञान तो विद्यार्थी लेंगे ही। फिर ड्रॉइंग भी कोई क्यों न लेगा? इतनी अच्छी कुदरत यहाँ है, तो ड्रॉइंग के लिए अनुकूल ही है। इस वास्ते ड्रॉइंग और विज्ञान लिया, तो रास्ता साफ (स्टीयर क्लियर) हो गया। सस्कृत और हिन्दी न ली, तो भी चलेगा। याने आप ऐसे लड़कों की जमात तैयार करेंगे, जो उर्दू और हिन्दी मे बात ही नहीं कर सकेंगे। कश्मीरी की तो बात ही नहीं। माँ कश्मीरी मे बोलेगी, बाप उर्दू बोलेगा, उस्ताद अंग्रेजी मे बोलेगा। माताएँ तो कश्मीरी के सिवा दूसरी भाषा कतई नहीं बोलेंगी। यह माताओं का फैसला है। वे (माताएँ) हमेशा राजाजी की पार्टी की (स्वतत्र पार्टी की) रहेंगी। अगर राजाजी कोशिश करें, तो बहुत सारी बहनें उनकी पार्टी में जा सकती हैं। याने ५० फी सदी वोट तो उन्हे हासिल हो ही जायँगे। मैं कहना यह चाहता हूँ कि वे अपनी चीज नहीं छोड़तीं। यह गुण भी है और दोष भी। इसके कारण कभी-कभी बुरी चीजें भी जड़ पकड़ लेती हैं, खैर!

आजाद हिन्दुस्तान मे अंग्रेजी नहीं चलेगी

आज हमारे बच्चो का क्या हाल होगा? १५ 'पीरिअड्स' अंग्रेजी क्यो पढानी चाहिए? कहते हैं कि बच्चों का अंग्रेजी का स्टैण्डर्ड गिरेगा, तो कैसे चलेगा? लेकिन आज वह गिरना लाजमी है। आजाद देश पर

आप अंग्रेजी लादना चाहेंगे, तो कौन लड़का उसे पकड़ेगा ? मैंने कहा, अंग्रेजी मजबूत करनी है, तो 'क्विट इण्डिया' (भारत छोड़ो) के बदले 'रिटर्न टु इण्डिया' (भारत वापस आओ) कहना होगा। इंग्लिश के लिए हफ्ते के १५ 'पीरियड्स' देने पर भी आप कहते हैं कि इंग्लिश अच्छी नहीं रही, तो इसके मानी यह है कि इंग्लिश को आप इतना वक्त नहीं देते, तो उर्दू, हिन्दी अच्छी कर सकते थे, वह नहीं होगी। यानी अंग्रेजी पढ़ाने की इतनी निगेटिव वैल्यू (अभावात्मक मूल्य) है।

मैं अंग्रेजी के खिलाफ नहीं हूँ। मैंने तो इसी यात्रा के दरमियान जर्मन और जापानी भाषा सीखी है। विदेशी भाषाओं की मैं कदर करता हूँ। मैं तो चाहता हूँ कि लड़के जापानी, चीनी, रूसी, जर्मन, फ्रेंच, फारसी, अरबी, इस तरह अपने अड़ोस पड़ोस के देशों की जबानें सीखें, जिन भाषाओं मे जो साहित्य है, उसे पढ़ें। जिसमें विज्ञान है, वह चंद लोग सीखें, उसमें माहिर हों। लेकिन थोड़ा-थोड़ा सबको दें, दो-दो तोला हरएक को मिले, इसके बजाय चन्द लोग अच्छी अंग्रेजी सीखें तो ठीक, नहीं तो 'सी, ए, टी, कैट, सी, ए, टी—कैट, डी, ओ, जी, डॉग' करने से क्या होगा ?

हम हाईस्कूल मे पढ़ते थे, तब क्लास मे प्रवेश करते समय 'मे आइ कम इन सर !' (महाशय, क्या मै अन्दर आ सकता हूँ !), इस तरह अंग्रेजी मे पूछना पड़ता था। मेरी और उस्ताद की मादरी जबान एक ही थी। उस पर भी उस्ताद को अंग्रेजी मे पूछना पड़ता था कि क्या मैं अन्दर आऊँ ? कोई सवाल पूछना हो, तो भी अंग्रेजी मे पूछना पड़ता था। अगर अंग्रेजी मे बोल न सके, तो सवाल भी मन मे ही रह जाता था। इतना अंग्रेजी पर जोर देने पर भी हिन्दुस्तान मे अच्छी अंग्रेजी जाननेवाले दो प्रतिशत लोग होंगे बाकी लोग अंग्रेजी नहीं जानते। इतनी मेहनत करने के बाद और इतनी अहमियत देने के बाद भी यह स्थिति है कि लड़के सी, ए, टी, कैट और डी, ओ, जी, डॉग ही

करते रहते हैं। इससे क्या फायदा ? इसके बजाय चन्द लोग उसे सीखें और बहुत बढ़िया सीखें। लेकिन आम लोगों पर, बच्चों पर, अंग्रेजी लादी जाय, तो मुझे उसके लिए एक ही लफ्ज सूझता है, यह 'जुल्म' है। खुशी की बात है कि लड़के इसे कबूल नहीं करते। इंग्लिश लादी जा रही है और विज्ञान को भी ऐच्छिक रखा है। अब यह ठीक है कि लड़के इतने बेवकूफ नहीं हैं कि विज्ञान न लें।

आज की तालीम के तीन दोष

मैं यह कहना चाहता हूँ कि हमारे यहाँ की तालीम की नजरिया में फर्क करना चाहिए। तालीम में बच्चों को कुछ-न-कुछ मुफीद काम सिखाना चाहिए। आज हम ऐसी तालीम नहीं देते, जिससे देश की दौलत बढ़े। तालीम में दूसरा नुक्स यह है कि अंग्रेजी लादी जाती है, जिसकी वजह से लड़के मादरी जबान भी ठीक से नहीं सीख पाते। तीसरा नुक्स यह है कि इस तालीम में अखलाकी चीज नहीं है। कहा जाता है कि बाइबिल, कुरानशरीफ, गीता, जपुजी—यह सब नहीं सिखा सकते। याने जिन चीजों ने हजारों वर्षों से हम लोगों के दिल और दिमाग पर असर डाला है और जिनसे लोगों की फित्रत (स्वभाव) बनती है, वह सब हम स्कूलों में नहीं सिखा सकते ! कहा जाता है कि स्कूलों में धर्म निरपेक्ष ज्ञान ही दिया जा सकता है। यह बात पहले से आज तक मेरी समझ में नहीं आयी कि यह धर्म-निरपेक्षता क्या है और इसके मानी क्या है ? जिससे बच्चों के दिमाग में विश्वास पैदा हो, परमात्मा, अल्ला की तरफ उनका रूझान हो, उनके मन में अल्ला के लिए डर हो, प्यार हो—यह जरूरी है या गैरजरूरी है, इस पर आप सोचिये। अगर गैरजरूरी साबित होता हो, तो उसकी तालीम मत दीजिये। लेकिन जरूरी साबित होता हो, तो उसकी तालीम कौन देगा ? इन दिनों सरकार ने कुल काम करने का ठेका ही ले लिया है, फिर इसे भी वही उठाये।

कुछ लोग कहते हैं कि मजहबवाली जो अच्छी-अच्छी किताबें हैं, उनकी कोई जरूरत नहीं है। लेकिन जरा सोचिये कि हर भाषा मे अच्छे से अच्छे साहित्य की किताब है। हिंदी में तुलसी-रामायण से बढकर कौन किताब होगी, जो साहित्य की दृष्टि से बेहतर हो? संस्कृत मे उपनिषद्, रामायण, महाभारत, तमिल मे कुरल, कब रामायण, वहाँ के भक्तों के भजन, इन सबसे बढ़कर कौन चीज है, जो साहित्य के खयाल से सीखने लायक है? हिंदुस्तान का कुल-का-कुल साहित्य धर्म के साथ जुडा है, फिर चाहे वह हिंदी का हो, पजाबी का हो, बगाली का हो या तमिल का हो। चैतन्य, कबीर, मीरा, नानक, तुलसी—इन सबको टालकर आप बच्चों को कौन-सी चीजें सिखानेवाले हैं? वे सारी चीजें धर्म-निरपेक्षता मे नहीं आतीं, यों कहकर आप नहीं पढायेंगे, तो फिर क्या पढायेंगे? जिस तालीम का रूहानियत से कुछ वास्ता नहीं, जिसमे कोई चीज पैदा करने का इल्म नहीं, जिसमे मादरी जबान का ज्ञान नहीं, ऐसी तालीम से क्या फायदा होनेवाला है? ऐसी तालीम पाने से तो बिलकुल ही तालीम न पाना बेहतर है।

भगवान् की मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा-योजना

एक भाई ने कहा कि 'सम एज्युकेशन इज बेटर दैन नो एज्युकेशन' (शिक्षा न होने से कुछ शिक्षा होना अच्छा है)। मैं कहता हूँ कि 'नो एज्युकेशन इज बेटर दैन समहाउ एज्युकेशन' (बेढगी शिक्षा से बिलकुल शिक्षा न होना अच्छा है)। मैं आपको 'चैलेंज' दे रहा हूँ। क्या आप समझते हैं कि आप नहीं सिखायेंगे, तो बच्चे नहीं सीखेंगे? मुसलमान लोग जिसकी सबसे ज्यादा कद्र करते हैं, इज्जत करते हैं, वह (मुहम्मद पैगम्बर) 'अनलेटर्ड प्रॉफेट' (निरक्षर पैगम्बर) था, पढना-लिखना नहीं जानता था। लेकिन हमने पढने-लिखने को इतनी अहमियत दी है, तिस-पर भी जो नहीं पढे हैं, जिनको नहीं पढाया है, वे निकम्मे नहीं रह गये हैं और न निकम्मे रहेंगे ही।

फ्री एज्युकेशन (मुफ्त शिक्षा) और कम्पल्सरी एज्युकेशन (अनिवार्य शिक्षा) का मसूबा परमात्मा ने तैयार किया है और वह हर बच्चे को दे रहा है। हर बच्चे को मॉ की गोद मे जन्म दिया है। मॉ उसे बचपन से मादरी जबान सिखाती है। यह है 'फ्री एज्युकेशन'। हरएक के पेट मे भूख होती ही है। इसलिए काम करना पड़ता है। यह ज्ञान, इल्म होगा। यह है 'कम्पल्सरी एज्युकेशन'। इस तरह 'फ्री' और 'कम्पल्सरी एज्युकेशन' परमात्मा दे रहा है। आप हट जायेंगे, तो इसमे कोई फर्क पडनेवाला नहीं है। मौजूदा तालीम मे मुझे किसी प्रकार की तसल्ली नहीं है, इतमीनान नहीं है। तालीम का ठेका आपने क्यो ले रखा है? सरकार मे है तालीम देने की कूवत ?

केरल का शिक्षा-विधेयक

केरल की सरकार ने एज्युकेशन बिल (शिक्षा-विधेयक) बनाया, तो उसके खिलाफ वहॉ के ईसाई खडे हुए। फिर वह बिल राष्ट्रपति के पास भेजा गया। राष्ट्रपति ने उसे सुप्रीम कोर्ट (सर्वोच्च न्यायालय) के पास भेजा। इस तरह फुटबॉल का खेल चलता रहा। इधर से लात मारकर उधर और उधर से लात मारकर इधर भेजा गया। आखिर सुप्रीम कोर्ट उसे लात मारकर आगे नहीं भेज सकता था। इसलिए उसने थोड़े सुधार पेश किये, जो बिलकुल मामूली थे, उस बिल का ज्यादा रूप बदलनेवाले नहीं थे। केरल की कम्युनिस्ट पार्टी ने वे सुधार मान्य किये और उसके मुताबिक सुधरा हुआ बिल लाया, जो वहॉं की असेंबली ने पास कर दिया। उसके खिलाफ वहॉं के लोग खड़े हुए। मेरी उनके साथ हमदर्दी है, जो उस बिल के खिलाफ हैं, इसलिए कि मैं चाहता हूॅ कि तालीम सरकार के हाथ मे न रहे। लेकिन आज तालीम सरकार के हाथ मे है और सरकार का वह फक्शन (कार्य) माना जाता है। इस हालत मे केरल की हुकूमत ने जो किया, वह ठीक ही था। कम्युनिस्ट जरा ज्यादा

क्षमतावान् होते हैं, इसलिए उन्होंने वहाँ ठीक ढग से काम लिया। लेकिन आप भी दूसरे सूबों में उसी तरह करते हैं। अभी मैं पंजाब से आया हूँ। मैंने वहाँ देखा कि वहाँ की सरकार ने स्कूल की फीस मुआफ की, तो उसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ से जो अच्छी चीज, खानगी शालाएँ—जो फीस के आधार पर चलती थीं—बन्द हो रही हैं। इन सबके मानी यह है कि आप सरकार के हाथ मे तालीम रखना चाहते हैं, ठीक से करना चाहते हैं और तालीम का पेटर्न बनाना चाहते हैं।

शिक्षा पर सरकारी नियन्त्रण एक खतरा

आप जो तय करेंगे, वही कुल लडकों को पढना होगा। हमने कई दफा कहा है कि आज के शिक्षण विभाग के अधिकारी के हाथ मे जो ताकत है, वह पहले बड़े-बड़े आलिमों के, विद्वानों के भी हाथ मे नहीं थी। हिन्दुस्तान या दुनिया मे ऐसी कोई तालीम नहीं निकली, जो हरएक के लिए लाजमी हो सके, लेकिन आज शिक्षण विभाग का अधिकारी मनचाही किताब को लाजमी कर सकता है और कह सकता है कि स्टेट के हर बच्चे को फलानी किताब पढनी ही चाहिए। जो किताब वह तय करेगा, उसीका अध्ययन, चिन्तन, मनन, रटन हर लडके को करना होगा। इसके मानी यह है कि सरकार के हाथ मे तालीम का एक शिकंजा है। तालीम के जरिये वह सब बच्चों को एक साँचे मे ढालना चाहती है। लेकिन दिमाग की आजादी के लिए इससे खतरनाक बात और क्या हो सकती है? तालीम सरकार के हाथ मे रहती है, तो फिर कम्युनिस्ट हुकूमत हो, तो सब बच्चों को कम्युनिज्म पढाया जाता है। केरल की कम्युनिस्ट हुकूमत के खिलाफ यही शिकायत थी कि उसने जो किताब स्कूल के लिए लाजमी की थी, उससे तालीम को एक ढाँचे मे ढालने की कोशिश हो रही थी। अगर फासिस्ट हुकूमत हो, तो सब बच्चों को फॉसिज्म की तालीम दी जाती। हिटलर यही करता था। वहाँ के कुल बच्चों के दिमाग वह जिस ढग के

बनाना चाहता था, वैसे बना रहा था। अगर जनसंघ की सरकार हो, तो उसका तत्त्वज्ञान बच्चों को सिखाया जायगा और वेलफेयर स्टेट हो, तो पंच-वर्षीय योजना के गाने सिखाये जायेंगे। इस तरह बच्चों का दिमाग एक ढाँचे में ढालने की बात लोकशाही के खिलाफ है। और डिसिप्लीन (अनुशासन) के नाम पर यह सब होता है, लोगों को बिलकुल मशीन बनाया जाता है।

पिछली लड़ाई में दुनिया ने एक तमाशा देखा। जब हुक्म हुआ, तब जर्मनी की ५० लाख फौज ने हमला किया। लोगों का अपना कोई अभिक्रम नहीं था। वे सिर्फ हुक्मबरदार थे। लेकिन चार साल बाद जब जर्मनी ने देखा कि अमेरिका की ताकत बढ़ी है, तो जर्मन सैनिकों को शस्त्र रखने का हुक्म दे दिया। एक ही दिन में १० लाख की फौज ने हथियार नीचे रख दिये। सेनापति की ओर से फौज को कहा जाता है कि "आपको सवाल पूछने का हक नहीं है, आपको तो सिर्फ हुक्म के मुताबिक करना और मरना है"—

Your's not to question why
Your's but to do or die.

सर्वोदय-विचार की माँग

सर्वोदय-विचार की यही माँग है कि तालीम सरकार के हाथ में नहीं रहनी चाहिए। अपनी सरकार को चाहिए कि वह देश के विद्वानों को आजादी दे और लोगों को उत्तेजन दे कि लोग जिस किस्म की तालीम चाहते हैं, दे सकें। अभी बम्बई-राज्य में एक तमाशा चल रहा है। वहाँ की हुकूमत ने पहले तय किया था कि स्कूल में आठ जमात के बाद अंग्रेजी शुरू हो। चार-पाँच साल तक वह रहा। अब फिर से पाँचवीं जमात के बाद अंग्रेजी पढ़ाने की बात चली है। आखिर आप कौन होते हैं बच्चों की जिंदगी और दिमाग के साथ खिलवाड़ करनेवाले? आपको क्या हक है? माँ-बाप अपने बच्चों को जो भी सिखाना चाहें, सिखायें, लेकिन आप कैद रखते हैं कि सरकार की नौकरी उसीको मिलेगी, जो

डिग्री पाया हुआ है। इसके मानी यह है कि आपने तालीम की जो मशीनरी बनायी है, उसीसे जानेवाले को नौकरी मिलेगी। आपको इल्म की कद्र नहीं है, अपनी मशीनरी की ही कद्र है। मैं क्या अपने लड़के को तालीम देने के लिए नाकाबिल हूँ? क्या डिग्री पाया हुआ प्रोफेसर तालीम दे सकता है?

डिग्री के बजाय विभागीय परीक्षा हो

मैंने सरकार के सामने सुझाव रखा है कि आप डिपार्टमेण्टल परीक्षा लें। जो भी परीक्षा देना चाहे, वह फीस देकर परीक्षा देगा और पास हुआ, तो नौकरी मिलेगी। उस परीक्षा के लिए डिग्री की कैद क्यों होनी चाहिए? इस पर सरकारवाले कहते हैं कि ऐसा करने से परीक्षा देनेवालों की बहुत बड़ी तादाद होगी। मैं कहता हूँ कि इससे आपका क्या नुकसान है? अगर ५ लाख लोग परीक्षा दें, तो आप प्रति व्यक्ति ५ रु० फीस रखो, आपको २५ लाख रु० मिल जायँगे। क्या २५ लाख से ५ लाख का इम्तिहान नहीं हो सकता? इस तरह जो बिलकुल फिजूल आक्षेप उठाये जाते हैं, उसके मूल में यह है कि वे अपने हाथ से तालीम नहीं जाने देना चाहते, उसे कसकर रखना चाहते हैं।

मैं कब तक खामोश रहूँ?

दो साल पहले पं० नेहरू हमसे मिले थे। मैंने उनके सामने यही बात रखी थी कि आप डिपार्टमेंटल परीक्षा लें, तो खानगी स्कूलों को उत्तेजन मिलेगा। फिर लोग अपने-अपने स्कूल चलायेंगे। उन्होंने कहा कि मैं आपके इस सुझाव को पसन्द करता हूँ। फिर उन्होंने इसके लिए एक कमेटी बनायी। दो साल बाद मेरे पास उस कमेटी की रिपोर्ट आयी। वह रद्दी की टोकरी में डालने लायक है। उस कमेटी ने जो सिफारिश की है, उसमें कुछ है ही नहीं। उसमें कहा गया है कि पहले और दूसरे दर्जे की नौकरी के लिए डिग्री चाहिए। तीसरे दर्जे की नौकरी के लिए कहीं डिग्री की जरूरत

रहेगी, तो कहीं नहीं रहेगी। अभी कैबिनेट (मन्त्रिमडल) ने फैसला किया है कि डिग्री की जरूरत है। दो साल के बाद यह फैसला होता है, तो मै लोगों से कब तक यह बात छिपाकर रखूँ और कब तक सरकार पर टीका न करूँ?

कुछ लोग कहते हैं कि आप सरकार पर टीका क्यों करते हैं? आपके दिल मे कोई बुराई नहीं है, तो फिर उनको (सरकारवालों को) प्राइवेटली (खानगी) पत्र क्यों नहीं लिखते हो! मेरा यह जवाब है कि क्या मै सरकार की बेटी या बीबी हूँ कि उन्हे प्राइवेटली पत्र लिखूँ? लोकशाही में लोगों के सामने अपनी बात रखने की आजादी हरएक को होनी चाहिए। मेरी जबान मे कडुआपन है ही नहीं। आप कहीं से लाना चाहे, तो भी नहीं आयेगा। यहाँ के केशर मे अच्छे गुणों के साथ कुछ कडुआपन है, वैसा बाबा की जबान मे नहीं है। मैं सरकार से पूछना चाहता हूँ कि आप अपने डिपार्टमेंट की परीक्षा क्यों नहीं लेते? मैं डिग्रीयाफ्ता नहीं हूँ, क्योंकि मैंने पहले से ही कॉलेज छोड दिया था। अगर मैं नौकरी माँगने जाऊँ, तो मुझे नहीं मिल सकेगी। मुझे किसी विद्यापीठ की डिग्री हासिल करनी होगी। मै नौकरी नहीं चाहता, यह बात अलग है। लेकिन अगर चाहूँ, तो मेरे लिए परीक्षा देने के सिवा दूसरा चारा नहीं है। यह अक्ल की बात नहीं है। आपकी परीक्षा ऐसी कौन सी गगोत्री है कि पानी उसी मुख से आना चाहिए, दूसरे मुख से नहीं!

आज की तालीम जल्दी दफनायी जाय

बड़े-बड़े लोग भी यही कहते हैं। लेकिन कोई सुनता नहीं। फिर में सूरदास का एक भजन गाता हूँ—"ऊधो कर्मन की गति न्यारी। मूरख मूरख राजा कीन्हें। पडित फिरत भिखारी।" हे ऊधो, कर्मों की गति न्यारी है, उसके कारण दुनिया मे अजीब तमाशा दीखता है। जो मूरख हैं, उनको चुन-चुनकर राजा बनाया है और पडित भिखारी बनकर आठ साल से घूम रहा है! मुझे तो घूमने में ही मजा आता है, क्योंकि मै

चाहता ही नहीं कि मेरा किसी पर दबाव पड़े। इसलिए मुझे समझाने मे ही खुशी मालूम होती है। लेकिन जमाने की माँग है कि आज जो तालीम चल रही है, उसे जल्द-से-जल्द दफनाया जाय। दो तरह से दफनाया जाता है। पिता की लाश को इज्जत के साथ दफनाया जाता है। लेकिन यह हमारी तालीम इज्जत के साथ दफनाने लायक है ही नहीं। यह बुरी चीज है, जो हिंदुस्तान के जिगर को खा रही है। लोगों का पराक्रम खत्म कर रही है। इसलिए उसे तो दूसरे तरीके से ही दफनाया जाना चाहिए।

आप बच्चों को इतनी बेकार तालीम देते है और कहते है कि बच्चों मे अनुशासन नहीं है। मुझे तो ताज्जुब होता है कि बच्चे इतने भी अनुशासित कैसे है! मैं तो अनुशासन मे नहीं रहता था। प्रोफेसर कोई लेक्चर, तकरीर करें और मैं सुनता रहूँ, यह कभी नहीं हो सकता था। मैं तो घूमने चला जाता था। अगर उनका सारा इल्म मैने लिया होता, तो आज मैं कहाँ होता? कहीं नौकरी करता और पेन्शन लेकर बैठा रहता।

सर्वोदय के बुनियादी उसूल

सर्वोदय के बुनियादी उसूल इस प्रकार हैं :

(१) तालीम लोगों के हाथ मे होनी चाहिए, सरकार के हाथ मे नहीं।

(२) तालीम का जरिया मादरी जबान ही होना चाहिए।

(३) उसके साथ-साथ दूसरी जबानें भी सिखायी जायँ, लेकिन लादी न जायँ।

(४) तालीम मे अखलाकी, रूहानी चीज जरूर होनी चाहिए।

(५) तालीम मे कोई न कोई दस्तकारी जरूर होनी चाहिए।

इन पाँच उसूलों को हम कभी नहीं छोड सकते। आप इस पर सोचिये। सरकार आपकी बनायी हुई है, इसलिए आप सोचेंगे, तो तालीम मे जरूर फर्क हो सकता है।

तालीम भारत की खास चीज

हमे मगरीब (पश्चिम) से बहुत सीखना है, खासकर विज्ञान लेना है।

मैं विज्ञान का कायल हूँ। जितना विज्ञान बढेगा, उतनी रूहानियत बढेगी। विज्ञान और रूहानियत के जोड से इन्सान इस दुनिया में बहिश्त ला सकेगा। मगरीब ने विज्ञान बहुत विकसित किया है। इसलिए उसे जरूर सीखना चाहिए। लेकिन हमारे देश की अपनी भी कुछ चीजे हैं, जिनमे तालीम एक है। जिस जमाने मे यूरोप मे तालीम नहीं थी, उस जमाने मे हिन्दुस्तान मे काफी तालीम थी। उपनिषद् मे, जो कि चार हजार साल पहले की किताब है, एक राजा अपने राज्य का बयान करता है। "न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः न अविद्वान्।" मेरे राज्य में कोई चोर नहीं है और कोई कंजूस नहीं है। इसमे उसने चोर के साथ कंजूस को जोड दिया, क्योकि कंजूस चोर का बाप है, जो उस बेटे को पैदा करता है। राजा कहता है कि मेरे राज्य मे कोई शराब पीनेवाला नहीं है और कोई अविद्वान् नहीं है। याने सिर्फ पढा-लिखा ही नहीं, बल्कि आलिम नहीं, ऐसा शख्स मेरे राज्य मे कोई नहीं है। इस तरह चार हजार वर्ष पहले का राजा अपनी हुकूमत का बयान करता है। तालीम अपने देश की खास अपनी चीज है, जिसमें हमने दस हजार साल का तजुर्बा हासिल किया है।

मेरे निजाम में पंडित नेहरू 'प्रोफेसर'

हमने तय किया था कि इन्सान की जिन्दगी मे तालीम देना हरएक का फर्ज है। बचपन मे इन्सान ब्रह्मचर्य की तालीम लेगा। फिर गृहस्थ बनेगा। उसके बाद पुख्ता उम्र आयेगी, तो वह वानप्रस्थी बनेगा। कुरान-शरीफ मे कहा है कि चालीस साल की उम्र मे दिल दुनिया से हटकर परमात्मा की तरफ जाता है, जाना चाहिए। पैगम्बर ने अपने तजुर्बे से यह बात कही है। चालीस साल के बाद उनका दिल परमात्मा की तरफ गया था। ब्रह्मचारी याने पढनेवाला लडका, गृहस्थ याने दुनिया मे काम करनेवाला। तीसरी अवस्था वानप्रस्थ की है, जो तजुर्बेकार (अनुभवी) होता है। इसलिए उसका फर्ज है कि वह विद्यार्थियो को पढ़ाये। आज तो यह होता है कि बीस साल का जवान डिग्री हासिल करके टीचर या प्रोफे-

सर बनता है। बी० कॉम० पास करनेवाला जवान क्या कॉमर्स (व्यापार) सीखेगा ? क्या उसने कभी व्यापार किया था ? पाँच हजार रुपये उसे दे दिये जायँ, तो वह उसके ५० हजार नहीं, ५०० ही बनायेगा। उसे कुछ भी तजुर्बा नहीं है। उसने सिर्फ किताबें पढ़ी हैं। ऐसे बेतजुर्बेकार जवान उस्ताद बनते हैं, तो बच्चों को क्या तालीम मिलेगी ? यह बी० कॉम० बेकाम ही होते हैं। इसी तरह 'पॉलिटिक्स' पढ़ानेवाले भी जवान ही होते हैं, जिन्हें कुछ भी तजुर्बा नहीं होता। 'पॉलिटिक्स' कौन पढ़ायेगा ? प० नेहरू नाहक प्रधानमन्त्री बनकर बैठे हैं। वे प्राइममिनिस्टरी छोड़कर उस्ताद बनें, तो 'पॉलिटिक्स' अच्छी तरह पढ़ा सकते हैं। यह अपने देश की चीज है कि इन्सान को एक उम्र के बाद उस्ताद बनना चाहिए। आपने तालीम पायी है, इसलिए तालीम देना आपका फर्ज है। अगर मेरा निजाम (राज्य) चले, तो मैं प० नेहरू को राजनीति का प्रोफेसर बनाऊँगा और घनश्यामदास बिड़ला को कॉमर्स (व्यापार) का प्रोफेसर।

तालीम का माहिर कौन ?

हम आधुनिक जमाने में हैं, इसलिए लोग सोचते हैं कि हमारे पास कुछ भी नहीं है, सब कुछ मगरीब से ही लेना है। जो उठा सो प्रोबेल, पेस्टोलॉजी और मान्टेसरी की बातें समझाता है। यह बात सही है कि उन्होंने कुछ तजुर्बे हासिल किये हैं। लेकिन उन लोगों के पास आत्मा को पहचानने की कोई चीज नहीं है। जो आत्मा को नहीं पहचानते, वे कितनी भी ऊँची उडान उड़ें, तो भी तालीम नहीं दे सकते। तालीम का माहिर वही हो सकता है, जो आत्मा को पहचानता है। यह अपने देश की चीज है, कश्मीर की अपनी चीज है। इसलिए यह मत कहो कि कश्मीरी जबान अविकसित है। आप कश्मीरी में अच्छी से अच्छी तालीम दे सकते हैं।

श्रीनगर
५-८-'५९

: ४८ :

आप किसके नुमाइन्दे हैं ?

[सरकारी अधिकारियों के बीच]

कुछ लोग मामूली इन्सान होते हैं, कुछ गाइडेन्स (पथ-प्रदर्शन) देनेवाले होते हैं और कुछ देवता होते हैं। गाइडेन्स देनेवाले ऋषि होते हैं, जो अक्सर बहुत कम होते हैं, लेकिन उनके नाम से अक्सर दूसरे लोग गाइडेन्स देने लगते हैं और कभी-कभी मिसगाइड (गलत पथ-प्रदर्शन) भी करते हैं। यहाँ पर आप लोग जो आये हैं, उन्हे मैं देवता कहता हूँ।

जनता से अलग रहनेवाले देवता

जो लोग हुकूमत के जरिये खिदमत करते हैं, वे हैं देवता। वे अक्सर बहिश्त मे रहते हैं। उनका मकान आला दरजे का होता है और वे लोगों से अलग रहना पसद करते हैं। उनका रहन-सहन और उनका लिबास वगैरह मामूली लोगों से अलग रहता है। पुराने देवता हिन्दी या उर्दू मे नहीं बोलते थे। कश्मीरी का तो सवाल ही क्या ? वे परशियन बोलते थे। उनसे पुराने देवता सस्कृत बोलते थे और आजकल के देवता अग्रेजी बोलते हैं, जो उन्हे मामूली लोगों से अलग रखती है। अक्सर वे लोगो की जबान बोलना पसन्द नहीं करते और न जानते ही हैं। घर मे माँ से तो जरूर उनको कश्मीरी मे बोलना पड़ता है, लेकिन दो जुमले बोलने के बाद वे अग्रेजी लफ्ज बोलने लगते हैं। जब वे अग्रेजी में बोलते हैं, तब 'एट होम फील' (मुक्तता का अनुभव) करते हैं।

इन देवताओं की सत्ता

इन देवताओ मे कुछ हैंड्स (हाथ) और कुछ हेड्स (सर) होते हैं।

हैण्ड्स को दिमाग से कुछ काम नहीं करना होता, वे हुक्मबरदार होते हैं। हेड्स हाथ से कुछ करना नहीं जानते, वे मनसूबे बनाते हैं और 'मन ऑन दि स्पॉट' (कार्यकर व्यक्ति) उसका अमल करते हैं। 'मन ऑन दि स्पॉट' जो कुछ करता है, वह मालिक की हिदायत से करता है। वह जो कुछ करेगा, ऊपरवाला उसका हमेशा बचाव ही करता रहेगा।

एक पुरानी कहावत है, 'राजा करे, सो न्याव' याने राजा या बादशाह कभी गलती नहीं कर सकता। आजकल यह बादशाहत बढ़ गयी है। जिले के डी० सी० के हाथ मे उतनी ताकत होती है, जितनी पुराने जमाने के किसी बादशाह के हाथ में भी नहीं थी। फिर चाहे वह 'डेस्पॉट' (तानाशाह) या 'इम्परर' (सम्राट्) ही क्यों न कहलाता हो। और यही सारा डेमोक्रेसी कहलाता है।

जम्हूरियत मे बादशाहत की नकल

प्राइममिनिस्टर (प्रधान मन्त्री) लोगों का चुना होता है, लेकिन अपनी कैबिनेट (मन्त्रिमडल) वह खुद मुकर्रर करता है, उस पर लोगों का कोई खास असर नहीं होता। यह कहा जाता है कि प्राइममिनिस्टर टीम बनायेगा। कैबिनेट मे वह अपने भरोसे के लोगों को रखेगा, जो उसकी हॉ मे हॉ मिलायेंगे। अगर वे कुछ दूसरी बात कहेंगे भी, तो दबी जबान से, आखिरी आवाज तो प्राइममिनिस्टर की ही होगी। इसीका नाम है 'टीम'। यह मैं इसी देश की बात नहीं कर रहा हूँ। आज दुनियाभर की जम्हूरियत बादशाहत की नकल बन गयी है। बादशाह ही अपने सरदार तय करते थे और वे उनका सारा काम करते थे और अब अपने मिनिस्टर तय करते हैं। यह सारा 'एफिशेन्सी' (क्षमता) के लिए होता है, बादशाहत मे 'एफि-शेन्सी' थी। वह अगर जम्हूरियत मे न आये, तो वह पनपेगी कैसे ? इसी-लिए तय हुआ कि बादशाह की तरह प्राइममिनिस्टर कैबिनेट बनायेगा। क्योंकि उसमे मुख्तलिफ आवाज नहीं होनी चाहिए।

इस तरह बादशाहत की कॉपी (नकल) करनी पड़ी और पड़ रही है। नाम जम्हूरियत का है, लेकिन ढग बादशाहत जैसा है। बादशाहत मे प्रजा का एक ही काम रहता था। वह यह कि अगर बादशाह अच्छा हो, तो उसकी तारीफ करना और अगर बुरा हुआ, तो उसकी निन्दा करना। औरगजेब खराब था, तो सब उसे गाली देते थे। अकबर अच्छा था, तो सब उसकी तारीफ करते थे। नसीब मे हाकिम अच्छा आया, तो उसकी तारीफ करना, नहीं तो बुराई। यही आम लोगों का काम रहता था।

आजकल जहाँ देखें, वहाँ एक ही नाम सुनायी देता है 'अल्लाह् हु समद्'—एक बक्शी साहब। वे भले मनुष्य हैं, इसलिए लोग उनकी तारीफ करते हैं। बुरे होते, तो उनकी निन्दा करते। लेकिन इससे लोगों की अपनी कोई ताकत नहीं बनती। आज की जम्हूरियत में और पुरानी बादशाहत मे कोई फर्क नहीं, सिर्फ फार्म मे है।

भारत की यह गुलाम मनोवृत्ति

'बिहार के गाँव गाँव मे मैं सवा दो साल तक घूमा हूँ। शायद ही बिहार के बाहर का कोई शख्स बिहार मे इतना घूमा हो। वहाँ के लोगों से मैंने पूछा कि जवाहरलाल नेहरू कौन हैं? तो उन्होंने कहा : "हमारे देश का बादशाह।" यही वे दरअसल समझते भी हैं। देखिये न, वह खुश्चेव आया, तब उसकी हद से ज्यादा बड़ाई की गयी। वे दो भाई आये थे, लेकिन अब उनमे से एक गायब है। उनका स्वागत करने के लिए करोडों लोग आते थे, जैसा गाधीजी का स्वागत करने के लिए आया करते थे। बच्चों को स्वागत करने का तरीका सिखाया गया। मानो वे कहीं आसमान से उतरे हों। उनके दर्शनों से करोड़ों लोगों को क्या सवाब मिला, यह मैं नहीं जानता। इसका पता तो अल्लामियाँ के पास ही चलेगा, लेकिन इससे हिन्दुस्तान की गुलामी तो जाहिर हो ही गयी।

पंडित नेहरू का रशिया मे स्वागत हुआ, तो वहाँ बुल्गानिन का। लेकिन दोनों स्वागतों म जमीन-आसमान का फर्क है। वहाँ करोड़ों लोग आते थे—इतना प्रचार किया गया। लोग उन्हे बादशाह समझकर दर्शन करने आये होंगे।

यह है हमारा ज्ञान

हमारे यहाँ जानकारी कितनी है। अभी एक भाई साहब ने हमें बताया कि इम्तहान में लड़कों ने लिखा कि महात्मा गाधीजी का जन्म पाकिस्तान में हुआ था। खैर, वह तो बच्चे थे, लेकिन मेरा निजी तजुर्बा ही देखिये। उदयपुर बड़ा शहर है। वहाँ से दस मील दूर मोटर रोड पर एक गाँव है। उस गाँव में सुबह मेरे आने के बाद जो लोग इकट्ठा हो गये थे, उनकी सभा हुई। तीस जनवरी का दिन था। वह, जो कि गाधीजी की पुण्यतिथि है। एक बडी उम्र की बहन से मैंने पूछा : "गाधीजी का नाम सुना है ?" उसने कहा : "जी हाँ।" मैंने फिर पूछा : "वे कहाँ हैं ?" उसने बताया . "वे शहर मे होंगे।" मैंने पूछा : "उदयपुर मे या किसी दूर के शहर मे ?" उसने कहा : "वहीं होंगे।' फिर मैने जवानो में से एक को, जो करीब २० साल का होगा, पूछा . "तुमने गाधीजी का नाम सुना है ?' उसने कहा . "जी नहीं।" आगे सवाल पूछना बाकी ही नहीं रहा। हमारे केन्द्रीय शिक्षामत्री श्रीमालीजी साथ मे थे। उदयपुर उनका निर्वाचन-क्षेत्र है। अक्सर यह रिवाज है कि जिनके निर्वाचन-क्षेत्र में से बाबा गुजरता है, वहीं के नुमाइन्दे यात्रा में हाजिर हो जाते हैं। मैंने श्रीमालीजी से कहा कि अपने निर्वाचन क्षेत्र में आपने इतनी जहालत कायम रखी है ?

मैसूर के नजदीक लगभग बीस मील की दूरी पर एक देहात था। वहाँ के लोगों को मैं यह समझा रहा था कि जिस तरह बगाल के अकाल मे लाखों लोग मर गये, उसी तरह आज भी मर सकते हैं। लेकिन वह

समझाते हुए मुझे शक हुआ कि क्या ये लोग बंगाल का नाम जानते होंगे ! उस सभा में मैंने कहा कि जिन्होंने बंगाल का नाम सुना हो, वे हाथ ऊँचा करें। उस गाँव के कुल-के-कुल लोग बंगाल का नाम तक नहीं जानते थे। मैं यह समझ सकता था कि बंगाल के अकाल के बारे में वे लोग नहीं जानते, क्योंकि उस घटना को १४ साल बीत चुके थे। लेकिन एक पूरे सूबे का नाम भी न जानना और सो भी मैसूर जैसे उच्च शिक्षित कहे जानेवाले राज्य में। यह तो एक अजीब बात थी। खैर, मैं यह कह रहा था कि हमारी जम्हूरियत बादशाहत की नकल ही है, उसमें आप लोगों की कोई तरक्की नहीं हो सकती।

राजनीति से संन्यास लेने की परम्परा कायम हो

एक बात मैंने इन लोगों को बार बार समझायी है कि कम-से-कम एक नियम कर दीजिये कि कोई भी राजनीतिज्ञ अमुक अवधि के बाद अपनी जगह पर नहीं रहेगा। वह वहाँ से रिटायर्ड हो जायगा। हमने यह माना है कि सबसे बडे जज, जिनका कि मस्तिष्क सन्तुलित होता है, वे भी ६५ साल के बाद रिटायर्ड हो जाते हैं। लेकिन मिनिस्टरों के लिए ऐसी कोई मियाद नहीं है ! क्या उनका दिमाग बडे-से-बड़े जज से भी ज्यादा पुख्ता है ? क्या बुढ़ापे का असर उन पर कुछ नहीं होता ? हमारे शुक्लजी (भूतपूर्व मुख्यमन्त्री, मध्यप्रदेश) ८० साल तक मुख्यमन्त्री रहे। आखिर में मरे, इसीलिए छूटे। इस तरह क्यों चिपके रहते हैं ? क्या हमारे विधान में ऐसा कोई प्रबन्ध नहीं है कि अमुक साल बाद लोग अपने स्थान पर नहीं रहेंगे ? इसका मुझे कोई जवाब नहीं दिया गया। बादशाह और सबको हटा सकता था, अपने-आपको नहीं। वैसा ही अब भी है। इसीलिए यह सारा नाटक चलता है।

राष्ट्रपति की यह शान

मैं किसीकी बेइज्जती नहीं करना चाहता। लेकिन एक मिसाल देता

हूँ। मेरे दोस्त, मेरे पूज्य, गाधीजी के साथी, बुजुर्ग राष्ट्रपति सादगी की मूर्ति हैं, लेकिन जब उनकी सवारी निकलती है, तब क्या शान होती है। चाहे जान भले ही जाय, पर शान से सवारी निकाली जाती है। ऐसे हमारे शान-शौकत के खयाल है। नतीजा यह हुआ कि राज्य-कारोबार खर्चीला हो गया है और हम लोगों को एकॉनॉमी सिखाते हैं। एक ओर ऑस्टिरिटी (सादगी) की बातें और दूसरी ओर यह सारा खर्च। क्या उनसे सादगी से नहीं रहा जाता ? व्यक्तिश वे आज भी रहते ही हैं। लेकिन विक्टोरिया रानी का वह रोब उठाने के लिए तो कई आदमी चाहिए, यह भावना हमारे दिमाग से अभी तक गयी नहीं है।

खादिम सादगी से रहे

इसलिए सरकारी अधिकारी, जो वास्तव में खादिम है, लोगों मे घुल-मिल नहीं सकते। देखा जाता है कि उनमे से जो भी लोगों मे मिलते हैं, वे कितने प्यारे बन जाते हैं। इसका जरा आप लोग भी अनुभव करके देखिये। मिसाल के तौर पर बक्शीजी लोगों मे मिलते हैं, तो उन्होंने काफी प्यार पाया है। उन्होंने इज्जत खोयी नहीं है। लेकिन अक्सर अफसरों मे अकड़ होती है। देश के लोगों की जिन्दगी के साथ उनका कोई ताल्लुक होता नहीं। इसीलिए तो उनको 'देवता' नाम मिला है।

आज मुझे 'डल लेक' मे ले गये थे। मैंने देखा कि वहाँ कुछ अच्छे 'हाउस बोट्स' बने थे, साथ ही-साथ कुछ गरीबो की झोपड़ियाँ भी। अगर हममे जरा भी 'सेन्स ऑफ ब्यूटी' (सुन्दरता का विचार) होती, तो हम ऐसा नहीं होने देते। इसमे कोई ब्यूटी नहीं है, यह भद्दापन है। वे लोग नगे रहे और हम अपनी अकड़ में रहें एव उसे अपना दर्जा समझें, यह बिलकुल गलत खयाल है। तवारीख में आप देखेंगे कि उन्हीं बादशाहों का लोगों पर सबसे ज्यादा असर रहा है, जो सबसे अधिक सादगी से रहे हैं। नेपोलियन, शिवाजी वगैरह इसके उदाहरण है। सादगी के कारण लोगों

का उन पर प्यार बढ़ा और वे उनके लिए मर मिटने को तैयार हुए। अक्सर कई अफसर अच्छे होते हैं। वे चाहते है कि उनके हाथ से मुल्क की खिदमत हो। पहले मेरा यह खयाल नहीं था। लेकिन इस आठ साल की पदयात्रा मे मैंने देखा है कि इनमे बहुत से ऐसे होते हैं, जो खिदमत करना चाहते हैं। लेकिन उनका रहने का ढग ही उन्हे जकड़े रहता है।

आप किसके नुमाइन्दे हैं ?

मैं आपको कोई नसीहत देने के लिए यहाॅ नहीं बैठा हूॅ। मैं आपसे इतना ही कहना चाहता हूॅ कि आपका ताल्लुक जिनके साथ है, उनकी हालत बिल्कुल गिरी है। कश्मीर मे हमने जो कुछ 'ब्यूटी स्पॉट्स' (सौन्दर्य के स्थल) देखे, वे सब-के-सब 'डर्टी स्पॉट्स' (असौन्दर्य के स्थल) थे। वहाँ हमने हद दर्जे की गुरबत देखी। लोरेन, गुलमर्ग जहाँ गये, वहाँ एक ही हाल था। मैं एक जगह अपने साथियों से आगे अकेला पहुॅच गया। गाँववालों से मैंने कहा कि मै आपके यहाँ खाना खाऊॅगा। सारे गॉव में सिर्फ एक ही घर मे खाना था। उस एक घर मे मुझे मकई की रोटी और तरकारी मिली। मैं यह जानता हूॅ कि यहाॅ के लोग इतने मेहमान-नवाज हैं कि अगर किसी भी घर में जरा भी खाना होता, तो वे खुद छोड़कर मुझे जरूर देते। हमारे साथ जो मजदूर थे, वे पैसा लेने से इनकार करते थे। वे कहते थे कि हमे खाना दो। ऐसी हालत लोरेन मे थी। आप ऐसे गरीब देश के नुमाइन्दे है, यह कभी मत भूलिये, नहीं तो सस्कृत मे एक कहावत है, 'राज्यान्ते नरकप्राप्तिः'।

श्रीनगर के रास्ते खूब चौड़े बना दिये, यह तो ठीक है, लेकिन इतना ही काफी नहीं है। यह आप न भूले कि आप किसके नुमाइन्दे हैं। इन्सानियत बड़ी चीज है। जहाॅ वह होती है, वहाँ 'पुलिस-स्टेट' भी अच्छी बन जाती है और जहाँ वह नहीं होती, वहाँ 'वेलफेयर स्टेट' (कल्याणकारी राज्य) भी 'इलफेयर स्टेट' (अकल्याणकारी) बन जाती है। आजकल तो वेलफेयर के नाम से सारी ताकत चद लोगों के हाथ मे आ गयी है।

'रघुवंश' के एक श्लोक में 'वेलफेयर स्टेट' का वर्णन किया है :

'स पिता पितरस्तासा केवल जन्महेतव '

यानी वह राजा प्रजा का रक्षण करता है, प्रजा को शिक्षण देता है और सभी कुछ करता है। असल मे प्रजा का पिता वही है। लोगों के माँ-बाप तो सिर्फ जन्म देनेवाली मशीनें हैं। ऐसी 'वेलफेयर स्टेट' अगर रही, तो जिन्दगी मे क्या रह जायगा ? मजा नहीं रहेगा। जिन्दगी के सारे काम के लिए प्रजा सरकार पर निर्भर रहे, यह कतई ठीक नहीं है।

सब इन्सान समान हैं

लोग सोचने की जिम्मेदारी खुद उठायें, अपने पाँव पर खडे हों, यह आवश्यक है। आपमे से जो मुसलमान हैं, वे जानते हैं कि जामा मस्जिद मे नमाज पढने के लिए जाते हैं, तब नमाज पढनेवाले सभी लोग समान माने जाते हैं। बादशाह भी वहाँ एक खानसामे के साथ बैठता है, मामूली लोगों के साथ बैठता है। यही इस्लाम के लोकतन्त्र का खयाल है। उपनिषदों में भी यही आता है। बाइबिल में भी ऐसा ही प्रसग है। 'लव दाय नेबर, एज दायसेल्फ' अर्थात् अपने जिस्म पर जितना प्यार हो, उतना ही प्यार पडोसी पर भी करो।

आज मुझे आपसे यही एक बात अर्ज करनी थी कि आप खायें, पीयें और मौज करें, तब इस चीज का बराबर खयाल रखें कि आप किसके नुमाइन्दे हैं।

श्रीनगर

६-८-'५९

: ४९ :

रूहानियत या ब्रह्मविद्या से ही मसलों का हल

मुझे बडी खुशी हुई कि श्रीनगर मे बहुत-सी जमातों से खुले दिल से बातें हुई। यह मेरी खुशनसीबी है कि जिन-जिन लोगों ने मुझसे बाते कीं, दिल खोलकर कीं और किसीने भी अपनी कोई चीज मुझसे छिपायी नहीं। जिसके जी मे जो था, कह ही डाला। यह उनके लिए एक बड़ी फायदे की बात थी, मेरे लिए और सारे समाज के लिए भी थी। अक्सर सियासत मे फँसे लोग ऊँचे भी होते हैं। उनके दिमाग खुले भी होते हैं, लेकिन लोगों के सामने अपनी बात रखने मे हिचकते हैं। कुल हिन्दुस्तान मे मेरा यही तजुर्बा रहा है कि जो-जो मुझसे मिलने आये, उन्होंने बिना किसी झिझक के मेरे सामने अपनी बाते रखीं। यहाँ इस तरह बातें हुई, जिससे मुझे बड़ा फायदा हुआ। अवाम का माइंड (दिल) किधर जा रहा है, यह सब समझने मे बड़ी मदद हुई।

आज मैं जो बात आपके सामने रखने जा रहा हूँ, वह बहुत ही बुनियादी चीज है। सर्वोदय-विचार के खयाल से तो बुनियादी है ही, लेकिन कुल दुनिया की जिंदगी के खयाल से भी बुनियादी है। २-४ साल से मेरा उस पर चिंतन चला है।

आज तक का चिंतन मन की भूमिका पर

आज तक जितनी सियासत चली, समाज-रचना की जितनी कोशिशें की गयीं, जितने तरह-तरह के इन्किलाब आये, लाये गये या लाने की कोशिश की गयी, वे सब दूसरे ही उसूल पर थे। वे उसूल आज कतई चलनेवाले नहीं हैं, यह बात मेरे दिल मे पक्की बैठ गयी है। अब तक

जो चिंतन चला, सारा मेंटल लेवल (मन की भूमिका) पर चला। उससे ऊपर उठने की बात अगर किसीने की, तो शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर, अनफरदा (अकेले) की। लेकिन हम जहाँ एक समाज के तौर पर सोचने बैठते हैं, तो या तो माली, इक्तसादी हालत के बारे में सोचते हैं, जो एक नीचेवाला पहलू है या उसके ऊपर उठकर सोचते हैं, तो मन की भूमिका में सोचते हैं, जिसमें सारा मानसशास्त्र (साइकॉलॉजी) आता है और मन से मन टकराते हैं।

कश्मीर का छह मुल्कों से सीधा ताल्लुक

आज रायशुमारी* चाहनेवाले भाई हमसे मिलने आये थे। मैंने उनसे कहा कि तुम लकीर के फकीर मत बनो! जरा सोचो, तो क्या 'मेजॉरिटी वोट' (बहुमत) लेना और उसे माइनॉरिटी (अल्पमत) पर लादना, यह बात दुनिया में चलेगी? आज दुनिया में कोई भी मसला छोटा नहीं रहता, बड़ा रूप लेता है। इसलिए सारी दुनिया की दृष्टि (वर्ल्ड वाइड आस्पेक्ट) से सोचो। मेरे पाँव में फोड़ा है, तो वह पाँव का ही नहीं, कुल जिस्म का है। इसमें सिर्फ पाँव को ही दिलचस्पी नहीं, सारे जिस्म को है। हम यहाँ कश्मीर-वैली में बैठे हैं। एक बाजू से उसका सम्बन्ध हिंदुस्तान से है। दूसरी बाजू में पाकिस्तान और तीसरी बाजू में अफगानिस्तान से है। फिर उधर चीन और रूस से भी सम्बन्ध है और अमेरिका से भी। जहाँ वह दीखती नहीं, वहाँ, पाकिस्तान में अमेरिका पड़ी है। इस तरह छह मुल्क इसमें बिल्कुल डाइरेक्ट्ली कन्सर्न्ड हैं। उनका इससे सीधा ताल्लुक है।

तिब्बत के मसले के दो पहलू

अभी तिब्बत पर चीन का एक तरह से हमला हुआ, तो हिंदुस्तान

---

* कश्मीर में एक राजनैतिक पक्ष है, 'प्लेबिसाइट फ्रंट', जो चाहता है कि कश्मीर का मसला रायशुमारी (प्लेबिसाइट) से हल हो।

और पाकिस्तान में सबको सदमा पहुँचा, सिवा उनके, जिन्होंने अपने खयालात दूसरे बनाये हैं। लेकिन हम चीन की बाजू से देखें, तो पता चलेगा कि हमारा मन एक तरह से काम कर रहा है, तो उनका दूसरी तरह से।' 'आज मैं ऐसी बातें रखनेवाला हूँ कि जिनसे काफी गलत-फहमी हो सकती है। लेकिन गलतफहमी के डर से मैं अपनी बातें रखने से नहीं डरता। हम जरा सोचें कि चीन का मन किस तरह काम कर रहा है। चीनवाले सोचते होंगे कि नेपाल एक अलग स्टेट है, जहाँ अमेरिका का प्रवेश हो जाय, तो हमारी बार्डर (सीमा) पर खतरा हो जायगा। इसलिए डिफेन्स (रक्षण) के लिए यह जरूरी है कि अपनी सीमा कस ली जाय। इस तरह विचार का यह एक पहलू है। इसलिए तिब्बत मे अन्याय हुआ है, यही नहीं मानना चाहिए। उसकी दूसरी भी बाजू है, जिस पर सोचना चाहिए।

विज्ञान-युग में अतिमानस भूमिका जरूरी

इसीलिए जब हम अपने मन से ऊपर उठकर सोचेंगे, 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचेंगे, तभी दुनिया के मसले हल हो सकेंगे, नहीं तो नहीं। हम मन की भूमिका पर सोचते रहेंगे, तो टक्कर ही होगी—मेरा मन आपके मन से टकरायेगा। यह मन कैसे बनता है, जरा सोचना होगा। उसके पीछे तवारीख (इतिहास) लगी रहती है। मैं कहता हूँ, क्या यह कमबख्त तवारीख हमे बाँधने के लिए है या मदद पहुँ-चाने के लिए ? तवारीख एक जंजीर, बेड़ी बन जाय और हमारा चिंतन महदूद करे, तो खतरा है। इसलिए आज तक जो हुआ, उसे अलग रख-कर आब्जेक्टिवली (तटस्थता से) सोचना होगा। विज्ञान के जमाने में जिस तरह सोचना जरूरी है, उसी तरह सोचना होगा।

कश्मीर आपके बाप का था, आपका नहीं है

कश्मीर का ही मसला लीजिये। कुछ भाइयों ने हमसे कहा कि कश्मीर

हमारा है, हमारे बाप का है। मैंने कहा कि कश्मीर आपके बाप का था, लेकिन आपका नहीं है। मेरे बाप के जमाने में हिन्दुस्तान मेरे बाप का था, लेकिन आज मेरा नहीं है। चीनवालों के बाप के जमाने में चीन उनका था, लेकिन आज चीन उनका नहीं है। आज चीन, हिंदुस्तान, कश्मीर, हर देश दुनिया का है। यह हम जितना जल्दी समझेंगे, उतने जल्दी हमारे मसले हल होंगे। फिर उन मसलों का स्वरूप ही बदल जायगा। छोटी नजर से देखने पर जो रूप दीखता है, बड़ी नजर से वह नहीं दीखता, बल्कि दूसरा ही दीखता है। एक छोटा-सा कीड़ा मेरे पाँव के अँगूठे के नाखून पर बैठा है। उसे क्या मालूम कि यह बाबा नाम का एक जानदार प्राणी है। उसके पास कितनी ताकतें पड़ी हैं। उसके एक हिस्से पर, जिसे 'नाखून' कहते हैं, मैं बैठा हूँ। वह कीड़ा सिर्फ नाखून को जानता है, उससे ज्यादा इल्म उसे नहीं है। इसी तरह से हम छोटे दिमाग से देखते हैं, तो किसी चीज का जो रूप और रंग दीखता है, अगर हम सारी दुनिया की 'सेटिंग' (पटल) में देखेंगे, तो रूप बिलकुल ही बदला हुआ दीखेगा।

मन कैसे बनता है?

इसलिए पुरानी सारी किताबें, मजहब, जबानें, वंश (रेस), सूबे आदि सारी छोटी छोटी चीजें भूलकर सोचें। हम उन सबसे अलग हैं। हम विश्व मानव हैं। ऋग्वेद में, जो कि दस हजार साल का पुराना ग्रन्थ है, यह लफ्ज आया है—'विश्वमानुषः' याने कुल दुनिया के इन्सान एक हैं। हम किसी एक जगह के नहीं, बल्कि कुल दुनिया के हैं। उसी निगाह से हमें सोचना होगा। आपका और हमारा 'माइण्ड' किस तरह बना है, यह जरा देखें। मैं बचपन में किसी एक परिवार में पला हूँ, जहाँ मैंने संस्कृत सीखी है। कुछ किताबें बार-बार पढ़ी हैं। उन सबका मुझ पर असर है, जिससे मन बनता है। यह ठीक है

कि मैंने दूसरी जबानें सीखी हैं। सब धर्मों के धर्मग्रन्थ पढे हैं। इसलिए मुझे अपने मन को वसी (विशाल) बनाने का मौका मिला है। लेकिन जिसे ऐसा मौका नहीं मिला, वह अपने बने हुए मन से दुनिया के मसले पर सोचेगा, तो हरगिज उन्हे हल नहीं कर सकेगा।

मसले हल नहीं हो रहे है

आज विज्ञान का जमाना है। वैसे विज्ञान तो कदीम जमाने से चला आया है और धीरे-धीरे बढता गया है। पुराने जमाने मे इन्सान ने जब आग की खोज की, तब वह बहुत बड़ी खोज थी। इसलिए उस वक्त अग्नि को देवता समझकर उसके गाने गाये गये। वह एक बड़ी भारी ईजाद थी। इस तरह विज्ञान विकसित होता गया। लेकिन इन दस-बारह साल मे विज्ञान की जितनी तरक्की हुई है, उतनी उसके पहले दस हजार साल मे भी नहीं हुई थी, इस बात को हमे समझना चाहिए। हिरोशिमा पर जो एटम बम गिराया गया, उस एक बम से जापान टिक नहीं सका और उसे शरण जाना पड़ा। लेकिन उस बम से हजार गुना ताकतवाले बम की आज खोज हुई है। इस हालत मे आज देश के और दुनिया के छोटे-छोटे मसले हल नहीं होते हैं, उसका क्या कारण है? पुराने मसले कायम ही हैं और नये पैदा हो रहे हैं। उधर चीन है, जिसके पास अब अमेरिका आ बैठा है (फार्मोसा मे)। उसका सवाल पड़ा ही है। गोवा, इराक, मिस्र, अल्जीरिया, इनमे से क्या कोई सवाल हल हुआ है? पुराने सवाल लटकते (इन सस्पेंस) ही रहते हैं। उन्हें आगे ढकेला जाता है। फिर-फिर से कमेटियाँ बनती हैं। उनकी मीटिंगे होती है, बहस चलती है और कागजात का ढेर लग जाता है। विश्व-युद्ध (वर्ल्ड वार) कोई भी नहीं चाहता, क्योकि उसमे इन्सान और इन्सानियत को बड़ा भारी खतरा है। इसीलिए उसे टालने की कोशिश चलती है। छोटे छोटे मसलों पर जागतिक परिस्थिति (वर्ल्ड सिच्युएशन) से सोचा जाता है और उन्हे दूर ढकेला जाता है। इन सब मसलो का हल कब होगा?

वर्ल्ड वार या वर्ल्ड एडजस्टमेंट से मसले हल होंगे

मैं कहना चाहता हूँ कि इन सब मसलों का हल 'वर्ल्ड वार' (विश्व-युद्ध) से होगा या 'वर्ल्ड एडजस्टमेंट' (विश्व-सन्तुलन) से। या तो लड़ाई होगी और कुल दुनिया का खात्मा होगा, कुल मसले हल होंगे या एक दिन ऐसा आयेगा, जब सबके मन ऐसे बनेंगे कि कुल दुनिया के मसले एक ही दिन में हल होंगे। उसके लिए मैं एक मिसाल देता हूँ। हिन्दुस्तान ने आजादी के लिए बहुत कोशिश की, इसलिए उसे आजादी हासिल हुई। लेकिन बर्मा ने, लंका ने आजादी के लिए क्या कोशिशें की थीं? जिन्होंने खास कोशिश नहीं की थी, उन्हें भी आजादी हासिल हुई। एक ऐसा माहौल पैदा हुआ कि हिन्दुस्तान के साथ दूसरे भी २४ देशों को आजादी मिल ही गयी। याने एक जागतिक वातावरण (वर्ल्ड सिच्युएशन) बनता है और काम हो जाते हैं। इसी तरह इसके आगे ये लटकनेवाले सवाल भी कुल-के कुल एक दिन में हल होंगे। वह तब होगा, जब हम मन से ऊपर उठेंगे और 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर जाकर सोचेंगे।

आणविक अस्त्र अहिंसा के नजदीक

मैंने कई दफा कहा है कि मुझे विश्व-युद्ध का डर कभी भी मालूम नहीं होता। बहुत से लोग उसे टालने की कोशिश करते हैं। बहुत से लोग कोशिश करते हैं कि 'न्यूक्लिअर वेपन्स' (आणविक अस्त्रों) का उपयोग न हो, उनके प्रयोग न हों, लेकिन मुझे 'न्यूक्लिअर वेपन्स' का उतना डर नहीं मालूम होता, जितना 'कन्वेन्शनल वेपन्स' (मामूली अस्त्रों) का मालूम होता है। मैं मानता हूँ कि जब तक आपके खंजीर, तलवार, बन्दूक, ये सारे चलेंगे, तब तक अहिंसा नहीं पनपेगी। लेकिन 'न्यूक्लिअर वेपन्स' और अहिंसा बिलकुल नजदीक है। जैसे वर्तुल के दो सिरे बिलकुल नजदीक होते हैं और सबसे ज्यादा दूर भी, वैसे ही 'एटॉमिक वेपन्स' अहिंसा के बिलकुल नजदीक भी हैं। उन्हें विकसित होना है, तो होने दें। विश्व-युद्ध

से मैं कहता हूँ कि तू आ जा ! तू मेरे लिए जगह देनेवाला है। याने तेरे बाद दुनिया को अहिंसा के सिवा गति ही नहीं है। लेकिन ये जो छोटे छोटे औजार हैं, लाठी, तलवार, स्टेनगन, पिस्तौल—ये सारे खतरनाक हैं। जब तक ये जारी रहेंगे, तब तक अहिंसा को सामने आने का मौका ही नहीं मिलेगा। आज 'न्यूक्लिअर वेपन्स' ने आपके मामूली 'वेपन्स' (शस्त्रों) को बेकार बना दिया है, यह एक बड़ी बात है। अब 'टोटल नॉनवायलेन्स' (परिपूर्ण अहिंसा) और 'टोटल वायलेन्स' (परिपूर्ण हिंसा), इन दोनों के बीच मुकाबला होगा। अब दुनिया के सामने एक ऐसा 'आल्टरनेटिव' (विकल्प) खड़ा है कि या तो इसे कबूल करो या उसे।

आज का समाज पहले से ऊँचा

दार्शनिक (फिलॉसफर्स) तो हमेशा कुल दुनिया का ही चिंतन करते हैं—आज भी करते हैं और पुराने जमाने में भी करते थे। वे कुल दुनिया को अपने हाथ का गेंद समझते थे और कुल दुनिया पर नजर डालकर अपना तत्त्वज्ञान बनाते थे। इसलिए मैं दार्शनिकों की बात नहीं करता। लेकिन इन दिनों जो राजनीतिक चिंतन (पॉलिटिकल थिंकिंग) चलता है, वह भी पहले से ज्यादा वसी (व्यापक) है और कुल दुनिया पर नजर रखकर चलता है। इसलिए आज दुनिया उतनी निठुर नहीं है, जितनी पुराने जमाने में थी। क्या आज कोई पसन्द करेगा कि चोरी करनेवाले के हाथ काटे जायँ ? लेकिन हमारे पुराने धर्मग्रन्थों में भी लिखा है कि चोर के हाथ काटे जायँ। यह कोई मामूली राज्य चलाने-वाले (एडमिनिस्ट्रेटर) की अक्ल नहीं है, बल्कि धर्म-ग्रन्थवालों की अक्ल है। ऐसी चीजें हिन्दू, मुसलमान आदि सभी के धर्मग्रन्थों में मिलती हैं। कुरानशरीफ में भी हैं। लेकिन आज कोई भी पसंद नहीं करेगा कि चोर के हाथ काटे जायँ। बल्कि आज यही सोचा जायगा कि चोर के हाथ काटने से उसका सारा बोझ समाज पर पड़ेगा। इसलिए

हाथ नहीं काटने चाहिए, उनसे काम लेना चाहिए। वह चोरी करना चाहता था यानी हाथ से काम नहीं करना चाहता था और थोड़ी-सी मेहनत में जिन्दगी बसर करना चाहता था। इस तरह आज इस सजा को कोई पसन्द नहीं करेगा, लेकिन एक जमाने में दहशत (डिटरेंट) के तौर पर उसे पसन्द किया जाता था।

इसका मतलब यह हुआ कि आज का समाज पुराने समाज से ऊँचा है। उसका चिन्तन का स्तर ऊँचा है। मैंने कहा है कि पुराने जमाने के ऊँचे से ऊँचे मनुष्यों से भी हम ऊँचे हैं। यह सब मैं बोल रहा हूँ, तो लोगों को लगता होगा कि बाबा क्या-क्या दावे करता है। लेकिन मैं ये दावे शख्सी (व्यक्तिगत) तौर पर नहीं कर रहा हूँ, सारे समाज की बात कर रहा हूँ। छोटा लड़का छोटा होने पर भी बाप के कंधे पर खड़ा है, इसलिए दूर की देखता है। मैं बड़ा नहीं हूँ, पुराने लोग ही बड़े हैं, लेकिन मैं उनके कंधों पर खड़ा हूँ। जो ज्ञान, इल्म उन्होंने हासिल किया, वह मुझे मुफ्त में ही मिल गया। न्यूटन ने गणित में बड़ी-बड़ी खोजें की हैं, लेकिन आज का कॉलेज का मामूली विद्यार्थी न्यूटन से ज्यादा गणित जानता है, क्योंकि जमाना आगे बढ़ा हुआ है। इसीलिए आज के समाज में उतनी निठुरता नहीं है, जितनी पुराने समाज में थी। तलवार लेकर किसी पर प्रहार करने में जो बेरहमी, सख्तदिली, निठुरता है, वह ऊपर से बम डालने में नहीं है। बम से लाखों लोग मरते हैं, इसीलिए बम डालने का नतीजा खौफनाक है। लेकिन जिसने बम डाला, वह तो एक हुक्म बरदार है, किसीके हुक्म से काम करता है। उसका दिल उतना निठुर नहीं है, जितना तलवार लेकर हमला करनेवाले का होता है। बम डालने का जो काम होता है, उसके नतीजे खौफनाक होते हैं, लेकिन उसमें जहालत और मूर्खता है, निठुरता नहीं है।

समाज की विवेक-बुद्धि आगे बढ़ी

आज के जमाने में हम बहुत आगे बढ़े हुए आज हैं औ के आध्या-

त्मिक मूल्य (स्पिरिच्युअल वैल्यूज) पुराने जमाने के आध्यात्मिक मूल्यों से बहुत आगे बढ़े हुए हैं। सभा में द्रौपदी ने पूछा है कि क्या पाण्डवों का उस पर हक है, तो 'भीष्म, द्रोण, विदुर भये विस्मित।' याने उस जमाने के महाज्ञानी भी उसका जवाब नहीं दे सके। इतना यह उनके लिए कठिन सवाल बन गया। लेकिन इसमें क्या कठिन है ? क्या आज इसमें किसीको कोई शक है कि खाविंद (पति) का औरत पर ऐसा हक नहीं है कि वह उसे बेच सके। लेकिन उस जमाने के महाज्ञानी, बड़े आलिम भी इसका फैसला नहीं दे सके कि क्या खाविंद अपनी औरत को बेच सकता है ? इस तरह इस जमाने की विवेक-बुद्धि (कॉन्शेन्स) पुराने जमाने की विवेक-बुद्धि से आगे बढ़ी हुई है।

एक सादी-सी बात लीजिये। इंग्लैण्ड ने १५० साल पहले हिंदुस्तान पर हमला किया, उस पर कब्जा कर लिया। इस तरह इंग्लैण्ड हिंदुस्तान को निगल गया। लेकिन वहाँ की जनता ने उसकी कोई खास मुखालिफत नहीं की। मगर अभी इंग्लैण्ड ने मिस्र पर हमला किया, तो वहाँ की जनता ने उसके खिलाफ आवाज उठायी, प्रदर्शन किये और आखिर वहाँ की हुकूमत को वह कदम वापस लेना पड़ा। यह किस्सा बता रहा है कि समाज की 'विवेक-बुद्धि' किस तरह आगे बढ़ी हुई है।

कसरत राय से फैसला करने में गलत

इस हालत में कोई वही पुरानी, रायशुमारी की बात करते हैं, तो क्या कहा जाय ! क्या मेरे पाँव की रायशुमारी की जाय और उससे पूछा जाय कि पाँव ! तेरे फोड़े का क्या किया जाय ? आखिर जिनका इसके साथ ताल्लुक है, उन सबकी रायशुमारी लेनी चाहिए। इसमें और एक बात यह है कि ५२ प्रतिशत लोग एक बाजू और ४८ प्रतिशत दूसरी बाजू हों, तो ५२ वालों की राय ४८ वालों पर लादना क्या न्याय, इन्साफ है ? कसरत राय (बहुमत) से फैसला करने की बात बहुत ही 'क्रूड' (भद्दी) है। आज की

लोकशाही इतनी औपचारिक है कि उसमें सिर्फ सिरों की गिनती की जाती है, सिरों के अन्दर जो माद्दा भरा है, उसको नहीं नापा जाता। सोचने की बात है कि जहाँ आप संसार के नसीब की बात सोच रहे हैं, वहाँ केवल एक मेकेनिकल प्रोसेस (यान्त्रिक प्रक्रिया) नहीं हो सकती। इसलिए ऐसे मसले पुराने ढंग से हरगिज हल नहीं हो सकते।

सारे मसले एक ही दिन हल होंगे

आज मन से मन टकराता है, इसलिए सब मसले लटकते ही रहेंगे। आज पाकिस्तान अमेरिका के इशारे के बिना हिंदुस्तान पर हमला करे, यह नामुमकिन है। अगर अमेरिका चाहेगा, तो पाकिस्तान हमला करेगा। तब तो विश्व युद्ध ही होगा। इस हालत में छोटी नजर से सोचने से मसले हल नहीं होंगे। विज्ञान के जमाने में हम बहुत नजदीक आ रहे हैं। इसलिए यह नहीं हो सकता कि हम कोई मसला अलग से हल कर सकें। इसलिए ये सारे मसले लटकते रहेंगे और फिर होली का, पूनम का दिन आयेगा, तब सारे कागजात जलाये जायँगे। कश्मीर के मसले के कागजात, गोवा के, तिब्बत के मसले के, कुल-के-कुल मसलों के कागजात एकदम जलाये जायँगे। इन कागजात को आग लगानेवाले जो लोग होंगे, वे 'सुप्रामेंटल लेवल' (अतिमानस भूमिका) पर सोचनेवाले होंगे। 'मेंटल लेवल' (मन की भूमिका) पर सोचनेवाले समस्याओं का हल न कर सकेंगे।

रूहानियत : जमाने की माँग

गांधीजी के जमाने का सत्याग्रह भी अब पिछड़ गया है। उस सत्याग्रह में यह बात थी कि सामनेवाला यह देखेगा कि मेरी आँखों में कितना प्यार है। मेरी जबान में कितना प्यार है। वह मेरी आँख देखेगा, शक्ल देखेगा, जबान सुनेगा और जैसे नारद ने वाल्मीकि का दिल बदला, वैसे मैं उसके दिल पर असर करूँगा। यह सत्याग्रह का पुराना ढंग था। अब इस जमाने में

जिसके खिलाफ सत्याग्रह करना है, वह मुझे देखता ही नहीं, मेरी जबान सुन नहीं पाता, इसलिए पुराने जमाने का सत्याग्रह अब पिछड़ गया है। अब हमें सत्याग्रह की ऐसी युक्ति हासिल होनी चाहिए, जो इस जमाने में काम दे सके। इन दिनों 'इण्टर कॉन्टिनेन्टल बैलीस्टिक मिसिली' (आन्तर् महादेशीय ब्रह्मास्त्र) का ईजाद हुआ है। उसमें जैसे वह एक जगह बैठकर सारी दुनिया को आग लगा सकता है, वैसे ही हमें एक जगह बैठकर सारी दुनिया में शांति कायम करने की, दुनिया को बचाने की तरकीब ढूँढनी चाहिए। वह एक जगह बैठकर 'कण्ट्रोल्ड मिसिली' (नियन्त्रित आयुध) भेज सकता है। उसे कहेगा कि 'न्यूयॉर्क या वॉशिंगटन पर जा गिरो', तो वह वहाँ जाकर ठीक उसी 'एंगल' (कोण) में हुक्म के मुताबिक गिरेगी। इस तरह घर बैठे दुनिया को आग लगाने की ताकत विज्ञान ने ईजाद की है, वहाँ आपको ऐसी ताकत ढूँढनी चाहिए कि घर बैठे दुनिया को मुतस्सिर (प्रभावित) कर सके, दुनिया में शांति कायम कर सके। वह ताकत आध्यात्मिक (स्पिरिच्युअल) के सिवा दूसरी कोई नहीं हो सकती। इसलिए 'स्पिरिच्युअलिटी', रूहानियत (आध्यात्मिकता) इस जमाने की माँग है, उसके बिना नजात (मुक्ति) मुमकिन नहीं है। मैं जाती नजात (व्यक्तिगत मुक्ति) की नहीं, बल्कि सारे समाज की नजात की बात करता हूँ। इसीलिए कहता हूँ कि पुराने जमाने में हम किसी एक विषय पर जज्बा (भावना) पैदा करते चले जाते थे, उसी पुरानी मन की भूमिका पर काम करने से कोई मसला हल नहीं होगा। इसलिए अब हमें अपने भारत की पुरानी कूवत, ताकत, जो रूहानियत में है, उसे बाहर लाना होगा। उसी ताकत से कश्मीर के, हिन्दुस्तान के और दुनिया के मसले हल होंगे।

पुरानी और नयी ब्रह्मविद्या

मैंने आपके सामने (पहले चार प्रवचनों में) जो चार बातें रखीं, उनके मूल में हमारा भारतीय चिन्तन है, जिसमें ब्रह्मविद्या आती है।

उसकी तरफ आज मैंने आपका ध्यान खींचा है। वह पुरानी ब्रह्मविद्या नहीं है। अभी मुझे एक भाई मिले, जो पाँच साल पहले मिले थे। वे आध्यात्मिक मैदान मे काम करते हैं। मैंने उनसे पूछा कि आपने क्या काम किया, तो उन्होंने कहा कि ध्यान करता था। मैंने कहा, इसमें क्या ब्रह्मविद्या हुई? जैसे काम करने की ताकत होती है, वैसे ध्यान की भी एक ताकत होती है। जैसे कोई काम करने की ताकत बढ़ाता है, तो क्या यह कहा जायगा कि वह अध्यात्म मे आगे बढ़ा है? वैसे ही किसी एक विषय (ऑब्जेक्ट) पर एकाग्र होना,—'वन पॉइण्टेड माइण्ड' बनाना, इसे मैं एक ताकत ही समझता हूँ। इसमे रूहानियत कहाँ है? जो बड़े-बड़े वैज्ञानिक होते हैं, उनका दिमाग दूसरी बात सोचता ही नहीं, उसी एक 'पॉइण्ट' (बिंदु) पर सोचता है। मेरी ही मिसाल लीजिये। मुझे एकाग्रता के लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता, मुझे चारों ओर ध्यान हो, तो उसीमे तकलीफ होती है। कुछ लोगों की ऐसी हालत होती है कि वे किसी कोठरी में गये, तो अपनी आँख से पचास चीजें देख लेते हैं। लेकिन मैं किसी जगह पहुँचा, तो मुझे पता ही नहीं चलता कि वहाँ क्या-क्या है? मुझे ध्यान के लिए, एकाग्रता के लिए कुछ भी मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन एकाग्रता हो गयी, तो क्या आध्यात्मिक मूल्य (स्पिरिच्युअल वैल्यूज) बदल गये, रूहानियत आ गयी! एकाग्रता तो एक मामूली ताकत है। हम लोगों में एक गलतफहमी पैठी है। कोई किसी एकात मे कोने मे, गुफा मे गया, तो हम समझते हैं कि आध्यात्मिकता आ गयी। लेकिन मुझे लगता है, लोगों मे रहने से ये क्यों घबड़ाते हैं और ऐसी गुफा मे बैठते हैं, जहाँ न हवा है, न रोशनी है, बदबू भी होती है। मैंने एक स्वामी की गुफा देखी, जहाँ उनकी समाधि लगती थी, वहाँ इतना अँधेरा था कि मैं तो हैरान हो गया!

इस जमाने का समाधि लगानेवाला जो महापुरुष होगा, वह अँधेरे मे नहीं जायगा। बंगाल में विष्णुपुर मे एक तालाब के किनारे बैठकर राम-

कृष्ण परमहंस की समाधि लगी थी, उसी स्थान पर बैठकर मैंने बड़ी नम्रता से कहा था कि रामकृष्ण ने जो काम शख्सी, निजी, व्यक्तिगत समाधि का किया था, वही काम सामाजिक समाधि का सामाजिक तौर पर मैं करना चाहता हूँ। जो समाधि व्यक्ति को हासिल हुई, वही सारे समाज को हासिल हो। रामकृष्ण ने गुफा मे बैठकर, अँधेरे मे समाधि लगाने की कोशिश नहीं की, बल्कि बिलकुल खुली हवा मे, कुदरत मे, आसमान के नीचे बैठकर कोशिश की। उन्हे किसी चीज का डर नहीं था। जो कुदरत से, खुली हवा से, इन्सान से डरता है और दूर किसी गुफा मे जाकर कहता है कि अब मेरा ध्यान लगता है, वह इतना टूटा-फूटा मन लेकर क्या करेगा ? जरा कहीं खट् आवाज हुई, चिड़िया फड़फड़ायी, तो इसका ध्यान उधर जाता है। इस तरह गोशे में जाकर ध्यान-चिन्तन करने की जो पुरानी बात थी, उसे मैं ब्रह्मविद्या नहीं मानता। ब्रह्मविद्या के मानी है, आपका और मेरा दिल एक हो और आप सबके लिए मेरे मन मे उतना ही प्यार हो, जितना प्यार मुझे अपने लिए है। मुझमे और दूसरों मे कोई तफरका (भेद) नहीं है, इसका जिसे एहसास हुआ, उसे ब्रह्म-विद्या का स्वाद चखने को मिला। इसी ब्रह्मविद्या की तरफ इन दिनों मेरा सारा ध्यान है।

मुझे इस बात की बड़ी खुशी है कि श्रीनगर के लोगों ने पाँच दिन लगातार मेरी बातें बिलकुल खामोशी से सुनीं। उन्होंने अपने दोनों कान मुझे दिये और मेरा खयाल है कि मन भी दिया। मुझे उम्मीद है कि यहाँ पर जो विचार-बीज बोया गया, वह उगेगा और उसका कुछ-न-कुछ लाभ कश्मीर को, हिंदुस्तान को और दुनिया को मिलेगा।

श्रीनगर
६-८-'५९

: ५० :

मजहब के पाँच अर्कान

परमात्म-दर्शन का आधार

मजहब में अक्सर पाँच बातें हुआ करती हैं। एक तो यह कि हर मजहब में चन्द लोग ऐसे होते हैं, जो दुनिया में रहते हुए भी दिल और दिमाग से दुनिया से अलग रहते हैं। वे अपना दिल और दिमाग अल्लाह की तरफ लगाते हैं और उन्हें परमात्मा के दर्शन के तजुर्बे भी होते हैं। परमात्मा कोई छोटी चीज नहीं है कि इधर-उधर देखकर कहा जा सके कि यही उसका रूप है। अपना तय किया हुआ ही अल्लाह का रूप है—ऐसा कोई नहीं कह सकता। इसीलिए जिस किसीको अल्लाह का दर्शन हुआ, उसे परमेश्वर का एक हिस्सा, वह भी बहुत छोटा, हुआ—ऐसा कहा जा सकता है। लेकिन उतने से इल्म से बिल्कुल जिन्दगी ही बदल जाती है यानी एक ही क्षण में इन्सान बदल जाता है। आज तक दुनिया के मुख्तलिफ महापुरुषों को परमात्मा का ऐसा तजुर्बा हुआ है। जिन्हें परमात्मा का तजुर्बा हुआ है, उनका फर्ज है कि वे अपना-अपना तजुर्बा दुनिया के सामने पेश करें। उसमें मजहब का कोई सवाल नहीं है। यह सब मजहबों में होता है। तो पहली बात जो सभी मजहबों में होती है, वह है परमात्मा का दर्शन।

इबादत का आधार

दूसरी बात है—परमेश्वर की इबादत कैसे की जाय? उसका तरीका है, तरीकत भी है। इबादत किस तरह करें? तस्वीर रखें या न रखें?

नमाज कैसे पढ़ें ? घुटने टेककर बैठें या और किसी दूसरी तरह ? इबादत का तरीका भी मजहब का एक हिस्सा है।

कहानियाँ

मजहब का तीसरा हिस्सा, जिसे कुरानशरीफ में 'कसस' कहा है। याने जैसे इब्राहीम की कहानी, मूसा की कहानी, अब्राहम की कहानी, नल-दमयती की कहानी, हरिश्चंद्र की कहानी, यूसुफ और जुलेहा की कहानी। इस तरह अलग-अलग मजहबों के ग्रन्थों में ऐसी ही कहानियाँ हैं। यह 'कससवाला' हिस्सा भी हरएक मजहब में होता ही है। कसस याने कहानी।

कानून

चौथा हिस्सा कानून का है। उसमें विरासत वगैरह के कानून होते हैं। याने बाप की इस्टेट (जायदाद) में से बेटे को कितना मिलेगा, बेटी को कितना मिलना चाहिए ? शादी कैसे हो, मरने के बाद दफनाया जाय या दहन किया जाय ? यह कानून का हिस्सा सभी मजहबों में होता है।

नीति

पाँचवाँ और बहुत बड़ा हिस्सा है—नीति। हमेशा सच बोलना, प्यार करना, एक-दूसरे के दुःख में हिस्सा लेना। मेहनत-मशक्कत करके खाना, आलस न करना, चोरी न करना, दूसरों के लिए दिल में हमदर्दी रखना। ये अखलाकी, नैतिक चीजें हर धर्म की, हर मजहब की किताब में होती हैं। इस प्रकार मजहब के ये पाँच जुज हैं।

सब धर्मों की शामिलात इस्टेट

हम सोचते हैं कि इसमें जो परमात्मा के दर्शन का हिस्सा है, वह मुख्तलिफ हो सकता है। याने हरएक को जो दर्शन होता है, वह मुख्तलिफ हो सकता है और मुख्तलिफ होना लाजमी भी है। मैं परमात्मा का एक रूप [illegible] दूसरा दूसरा रूप देखेगा। तीसरा तीसरा रूप देखेगा—यह

सारा मिलाना होगा। मिलकर जो तस्वीर सामने आयेगी, उससे परमेश्वर-दर्शन का एक हिस्सा सामने आ जायगा। गुरु नानक, मीरा, ल्लेश्वरी, कबीर—ऐसे कई नबी और फकीर हो गये। उनमें से हरएक को जो तजुर्बा हासिल हुआ, वह एक दूसरे से अलग जरूर हुआ, लेकिन वह एक-दूसरे के खिलाफ नहीं है। वे एक-दूसरे की ताईद करते हैं। उनके तजुर्बों को इकट्ठा करेंगे, तो परमेश्वर-दर्शन का एक हिस्सा, एक अंश मिलेगा। फिर भी अल्लाह बाकी रहेगा, क्योंकि वह रहनेवाला ही है।

हिन्दू, इस्लाम, ईसाई वगैरह धर्मों में यह जो परमेश्वर के दर्शन का हिस्सा आता है, वह सब धर्मों की शामिलात इस्टेट है। फिर चाहे वह हिन्दू धर्म का तजुर्बा हो, ईसाइयों का हो या मुसलमानों का हो! परमेश्वर के दर्शन की बातें 'कॉमन प्रापर्टी' हैं। अंग्रेजी में जिसे 'कॉमन-वेल्थ' है, ऐसा कहते हैं, वही बात इसमें भी है।

'कसब' वाली बात भी सबकी इस्टेट है। नल-दमयंती की कहानी, हरिश्चन्द्र की कहानी—यह सब धर्मवाले पढ़ें। उससे नसीहत लेनी है। राम की कहानी से हिन्दू नसीहत ले सकता है, मुसलमान ले सकता है और दूसरा भी ले सकता है। जो नसीहत उससे मिलती है, वह हम सबके लिए है। हम सब धर्मवाले उसके हकदार हैं। इसलिए वह भी शामिलात इस्टेट है।

सबके लिए इबादत का एक तरीका ढूँढ़ें

इबादत (उपासना) के तरीके में थोड़ा-थोड़ा फर्क जरूर रहेगा। जहाँ इबादत का सवाल आयेगा, वहाँ अपनी पुरानी इबादत के मुताबिक थोड़ा फर्क रहेगा। उसमें कोई नुकसान नहीं है। मिसाल के तौर पर सुबह का वक्त है। सूरज उग रहा है, सारी जीनत वहाँ (पूर्व दिशा में) है। उधर मुँह करके हिंदू इबादत करेगा और मुसलमान जिधर काबा है, उधर याने पश्चिम की तरफ, मगरीब की तरफ मुँह करके इबादत करेगा। लेकिन

इबादत का ऐसा भी तरीका ढूँढना चाहिए, जिसमे सब एक हो सकें। अल्लाह के नाम से हम अलग-अलग होते हैं, यह हमारे लिए बदकिस्मती है। हम सब काम में एकत्र होते हैं और अल्लाह के नाम से अलग हो जाते है, क्या यह जुल्म नहीं है? हमे ऐसा तरीका निकालना चाहिए, जिसमें हम सब एक हो सके और सब एक साथ उसमे भाग ले सकें। इबादत का जाती (व्यक्तिगत) तरीका अलग-अलग हो सकता है। अपनी-अपनी जमात का तरीका भी अलग अलग हो सकता है। लेकिन कुल जमातें इकट्ठा होकर इबादत करती हैं, ऐसा भी तरीका निकालना चाहिए, ढूँढना चाहिए।

बहनें भी शामिल हों

मुसलमानों में नमाज पढने मे भाइयों के साथ बहनें नहीं आतीं। दस-ग्यारह साल पहले की बात है, अजमेर के दरगाहशरीफ मे दस हजार लोग इकट्ठा हुए थे, लेकिन वहाँ बहने नहीं थीं। हमारे साथ जो दो बहनें थीं, वे ही केवल वहाँ थीं। उनके अलावा और कोई बहन वहाँ नहीं थी। लेकिन ऐसा भी तरीका होना चाहिए, जिसमे सभी मजहब के लोग, भाई-बहनें और बच्चे भी शामिल हो सकें। वह तरीका हमने ढूँढ निकाला है। उसके मुताबिक हम आज यहाँ सभा के आखिर में इबादत करेंगे (रोज भाषण के अंत मे मौन प्रार्थना होती है)।

नीति की बातें सब धर्मो मे समान

अब बात रही अखलाक की, नीति की! आज इन्सान का दिमाग इतना आगे बढा है कि अब उसे पुरानी बातें सुनने की जरूरत नहीं रह गयी है। जरूरत है नयी बातें और नया विचार सुनने की। अखलाकी बातें सभी मजहब की किताबों मे होती हैं। एक-दूसरे को मदद करना, सचाई पर चलना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना—ये बातें मैंने कुरानशरीफ

में, गीता में, धम्मपद मे पढी हैं और दूसरे ग्रंथों में भी पढी हैं। इन सब गवाहों ने एक ही बात बतायी है। केस में एक ही गवाह होने की अपेक्षा ज्यादा गवाह हों, तो केस पक्की बनती है। वैसे ही सच्चाई की जो बात मैं हिंदू मजहब की किताब में पढ़ूँगा, वही धम्मपद में और सिखों की किताब में पढ़ूँगा, तो मेरा सच पक्का हो जायगा। ऐसी जो बुनियादी अखलाकी बातें हैं, उनमे मुखालिफत करने की जरूरत ही नहीं है और जहाँ तक इन पर अमल करने की बात है, इनमे मुख्तलिफ राय नहीं है।

पुराने कानून नहीं चलेंगे

अब बात रही कानून की। मेरा खयाल है कि पुराने कानून आज नहीं चलेंगे। वे सब पुराने हो गये। यह कानून का हिस्सा हर धर्म में आता है। लेकिन ये पुरानी बातें आज के जमाने मे नहीं चलेंगी। हमने नागपुर मे देखा था, दो भाई (जिनमें एक हिन्दू और दूसरा मुसलमान था) एक ही थाली मे खाना खा रहे थे। हमने पूछा: "यह क्या हो रहा है?" जवाब मिला: "भाईचारा! हिन्दू मुस्लिम एकता!" मैंने कहा: "आप चारा तो नहीं खा रहे हैं? यह तो दाल चावल है। यह कहाँ का भाईचारा है?" उन्होंने जवाब दिया: "अरबस्तान मे ऐसा होता है।" मैंने कहा: "भाई, आपने वहाँ जाकर देखा है क्या? वहाँ के लोग एक थाली में खाते है, लेकिन क्या खाते है? रोटी और खजूर! आप हिन्दुस्तान मे हैं! यहाँ खजूर कहाँ से मिलेगा? लेकिन जो बात वहाँ है, वही यहाँ करनी है, इसलिए हिन्दुस्तान मे, कश्मीर मे दाल-चावल भी आप एक थाली मे खायेंगे, तो बीमारियाँ फैलेंगी।"

इस तरह से हमे सोचना होगा! पुराने कानून अब नहीं चलेंगे। वे कानून उस जमाने के लिए, उस-उस मुल्क के लिए थे, यह समझना चाहिए। अरबस्तान के, कश्मीर के, पंजाब के और दूसरे स्थानों के कानून अलग-अलग हैं और हर जगह हालात के मुताबिक होते हैं। इसके आगे हिन्दू लॉ

अलग, मुसलमानों का लॉ अलग, ईसाइयों का लॉ अलग, ऐसा नहीं चल सकेगा। क्योंकि लॉ को 'सेक्यूलर' माना जायगा। आज उसे सेक्यूलर नहीं माना जाता।

धर्म का परिवर्तनीय, अपरिवर्तनीय हिस्सा

धर्म में कुछ चीजें बदलती भी रहेंगी, जमाने के मुताबिक, मुल्क के मुताबिक। लेकिन कुछ चीजें कॉमन रहेंगी और कायम रहेंगी। कुरान शरीफ में एक आयत है। उसमें आता है कि किताब के दो हिस्से होते हैं, एक 'उम्मुल' किताब होती है, याने किताब की माँ और कुछ होते हैं, 'मुतशाबिहात'। उसके बारे में मुख्तलिफ राय हो सकती है। इसलिए जो 'उम्मुल किताब' होती है, उस पर जोर देना चाहिए। कानून नये सिरे से बनाने चाहिए। उसको लेकर झगड़े हों, इसमें सार नहीं है।

एक भाई कहते थे कि आप धर्म की ऐसी बातें मत छेड़िये, ताकि किसीका दिल न दुखे। मैंने कहा, ऐसे डर से इन्सान तरक्की नहीं कर सकेंगे और न इन्सानियत ही पनपेगी। जो बात सच है, उसे जरूर सामने लाना चाहिए।

अवंतीपुरा
८-८-'५९

: ५१ :

मेरा मजहब

तरह-तरह के लोग हमसे मिलने आते हैं। यह हमारी खुशकिस्मती है कि वे लोग अपने-अपने खयाल, फिर चाहे मजहबी हों, सियासी हों या कैसे भी हों, बिना हिचकिचाहट के हमारे सामने रखते हैं। आज भी कुछ भाइयों से दिलचस्प बातें हो रही थीं।

सब मजहबों में एक ही बात

एक भाई ने हमसे सवाल पूछा कि आखिर आपका मजहब क्या है ? मैंने कहा मेरा धर्म है, सब पर प्यार करना, दुःखी और गरीबों के लिए रहम रखना, एक-दूसरे से प्यार करने के लिए, सचाई पर चलने के लिए, रहम रखने के लिए मदद देना। जहाँ ताकत की जरूरत हो, वहाँ ताकत देना और जरूरत पड़ने पर लेना। कुरानशरीफ मे यह आता है—अल्लाह की इबादत करनेवाले, अल्लाह के प्यारे एक दूसरे से सलाह-मशविरा करते है। मेरा मजहब दूसरे को मदद देगा। अपने रास्ते पर चलने के लिए मदद हासिल करना, सब पर प्यार करना, हमदर्दी रखना, सचाई पर चलना, यह भी मेरे मजहब का काम है। मुहब्बत, रहम और सचाई, यह मैं अपनी जिंदगी मे लाना चाहता हूँ। दूसरे को मदद पहुँचाना चाहता हूँ। यही है मेरा धर्म।

सचाई, मुहब्बत, रहम—यह तीनों बातें मुख्तलिफ मजहबों के नबीयों ने और सत सत्पुरुषों ने बतायी हैं, यही इन्सानियत है। इन्सानियत ही धर्म है। यही बात गीता मे आती है, बाइबिल मे और जपुजी मे भी आती है। सब मजहबों की किताबों मे, धर्मग्रंथों मे आती है और मैने वही पकड़

ली है। मैंने इन सब धर्मग्रन्थों का मुताला, अध्ययन किया है और सभी में मैंने ये ही बातें पायी हैं। इसलिए मैं समझ गया हूँ कि यह मजबूत, पक्की बात है। ५० लोग एक बात मानते हैं, तो वह पक्की हो जाती है।

अल्लाह मशरिक में भी है और मगरीब में भी

अब सूरज की तरफ मुँह करना या मगरीब की तरफ—यह अपने अपने इबादत के तरीके है। यह कोई बड़ी बात है, ऐसा मैं नहीं मानता। इसका कोई महत्त्व नहीं है, कोई मगरीब की तरफ मुँह करे या कोई मशरीक की तरफ करे, अल्लाह तो मगरीब में है और मशरीक मे भी है। वह चारों दिशाओं में है। अल्लाह नहीं है, ऐसी कोई भी जगह नहीं है। पर हरएक का अपना इबादत का तरीका होता है। मैंने अपने लिए तरीका ढूँढ लिया है। दुनिया में करोड़ों रुपये हैं, लेकिन मैं कहता हूँ, मेरे लिए १०० रु० बस हैं। उसी तरह मैं कहता हूँ कि यह मेरा तरीका है।

खैरात में तफरका नहीं

एक भाई ने बड़ा मजेदार सवाल पूछा—क्या आप किसी खास मजहब के लोगों में जमीन बाँटते हैं? यह आठ साल से एक तहरीक चल रही है, उसके बाद भी ऐसा सवाल लोग पूछते हैं। इसमें लोगों का दोष नहीं है। सब हमारा है, क्योंकि हमने जानकारी नहीं पहुँचायी है। आज तक हमें ५० लाख एकड़ जमीन मिली है और करीब ८६ लाख एकड़ जमीन बाँटी है। वह सब मजहबवालों में बँटी है। मेरे सामने यह सवाल नहीं आता है कि मेरे सामने कौन धर्मवाला खडा है? मेरे सामने यही सवाल आता है कि कौन बेजमीन है? काश्त करना कौन चाहता है? उसीको मैं जमीन देता हूँ।

कोई मुझे ऐसी शर्त पर जमीन दान देता हो कि आप अमुक मजहब या जातिवाले को जमीन दीजिये, तो मैं वैसी जमीन लेने से इनकार करता हूँ। ब्राह्मण बेजमीन हैं, तो उन्हें जमीन मिलनी चाहिए, जो बेजमीन होगा,

फिर चाहे वह किसी भी धर्म, जाति या पंथ का हो, उसे जमीन मिलनी चाहिए। मैं कोई शर्त कबूल नहीं करूँगा। देखा इतना ही जायगा कि वह शख्स खेती करना जानता है या नहीं, खेती करना चाहता है या नहीं। फिर चाहे वह किसी भी धर्म का हो। यह जानने की जरूरत मैंने कभी नहीं मानी है।

मैंने उस भाई से कहा कि मैं किसी खास मजहबवाले को दूँगा, तो खैरात, जहन्नुम में जाऊँगा। खैरात में किसी तरह का फर्क करना, अच्छे काम में, सत्कार्य में जहर मिलाने जैसा होगा। इसलिए आप अपने दिमाग में यह बात कतई मत लाइयेगा। धर्म का क्या सवाल है? सबको खाना-पीना मिलना चाहिए। सबको जमीन मिलनी चाहिए। जमीन अल्लाह ने सबके लिए पैदा की है। सभी अल्लाह की सन्तान हैं। इसलिए सबको जमीन मिलनी चाहिए।

तरीकत में फर्क हो, हकीकत में नहीं

बहुत खुशी की बात है कि यहाँ लोग खालिस दिल से हमारे सामने बातें रखते हैं। हम चाहते हैं, कश्मीर दरअसल बहिश्त (स्वर्ग) बने। बन सकता है, बशर्ते कि सब मजहबवाले मिल जुलकर, एक होकर रहें। इबादत के तरीके अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन सचाई, रहम, मुहब्बत—इन पर चलने की बात सब धर्मों की है। इसलिए तरीकत में फर्क हो सकता है, हकीकत में फर्क नहीं हो सकता है। अब हमें दिल्ली जाना है। वहाँ जाने के लिए मुख्तलिफ रास्ते हैं। लेकिन दिल्ली तो एक ही चीज है। वैसे ही प्यार, रहम, सलामी—यह एक ही चीज है। आपने घुटने टेककर अल्लाह को याद किया, नीचे बैठकर याद किया या खड़े होकर किया, यह सवाल नहीं है। सवाल है आपने अल्लाह को याद किया है या सेनी को? अहमियत अल्लाह को याद किया या नहीं—इसी बात की है। इसलिए तरीके चाहे अलग-अलग हों, लेकिन हकीकत एक ही हो। इस बात का एहसास आपको होगा, तो कश्मीर बहिश्त बन सकता है।

कानून और प्यार

प्यार करने का, हमदर्दी रखने का कानून नहीं बनाया जा सकता। यह काम इसी तहरीक से हो सकता है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि बक्शीजी हमें सब तरह से मदद करते हैं। लेकिन फिर भी बक्शीजी एक हाथ है और हम हैं दूसरा हाथ। एक हाथ कानून बनाता है और दूसरा हाथ प्यार और हमदर्दी बढ़ाने का काम करता है। दो हाथों से ताली बजती है, सरकार से जो बनता है, वह उसे करे। हम वह चाहते भी हैं। फिर भी हमारे लिए और आपके लिए काम बचेगा।

दें भी, दिलायें भी

आज एक भाई श्रीनगर से आये और ५० कनाल जमीन दान दी। यह जमीन वे कहाँ से लाये ? उनके पास कानून के मुताबिक १७२ कनाल जमीन है। उसीमें से उन्होंने जमीन दान दी। बड़ी बात है। अब यह काम सरकार की ताकत के बाहर का है। इसे भूदान-तहरीक ही कर सकती है। वे भाई खुद आये और जमीन दी, तो मैंने उनसे कहा, "शाबाश ! आपने अच्छा काम किया। लेकिन यह काम का एक हिस्सा हुआ। आपने जमीन तो दी, लेकिन दिलाने का काम भी करना चाहिए। आपने मीठा आम चखा। आपको मीठा लगा। अब आप दूसरों को भी कहिये कि आप भी आम खाइये।" मतलब यह कि मुझे जमीन देनेवाले भी चाहिए और दिलानेवाले भी।

खीजबेहारा
९-८-'५९

: ५२ :

जनता-जनार्दन के दर्शन के लिए यात्रा

हमारी यात्रा आठ साल से चल रही है। 'मार्तण्ड' एक यात्रा का स्थान है। यहाँ 'अमरनाथ' जानेवाले यात्री ठहरते हैं। अक्सर लोग काशी, बद्रीकेदार, अमरनाथ, रामेश्वर की यात्रा करते हैं। हमारी यात्रा उन स्थानों में भी होती है। लेकिन हिंदुस्तान मे जितने गाँव हैं, जहाँ हमारे भाई रहते हैं, वे सब हमारे लिए यात्रास्थान हैं। हम उन सबके दर्शनों के लिए यात्रा कर रहे हैं।

मानव-देह ही मंदिर है

हमें यहाँ का मंदिर* बताया गया, जो तोड़ा गया है। लेकिन हम सिर्फ उसीको मंदिर नहीं मानते। हम मानते हैं कि अपना देह, जिस्म भी एक मंदिर ही है, जिसमे भगवान् विराजमान हैं। इससे बेहतर मंदिर हमने नहीं देखा। हमने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। मदुरा मे मीनाक्षी का आलीशान खूबसूरत मंदिर है, जिसमे हजार खम्भोंवाला मंडप है, लेकिन उन सब मंदिरों से ज्यादा खूबसूरत परमात्मा का कोई मंदिर है, तो वह मनुष्य देह ही है। इसमे जो रोशनी रोशन होती है, वह दूसरे किसीमें नहीं होती। हम तो इसीके दर्शन के लिए घूमते हैं।

यह कैसी भक्ति ?

हम सबको यही बात समझा रहे हैं कि तुम परमात्मा के भक्त बनना

---

* 'मार्तण्ड' एक प्राचीन स्थान है, जहा पर आठवीं शताब्दी में ललितादित्य राजा ने एक विशाल सूर्य-मंदिर बनाया था, जिसे चौदहवीं शताब्दी में 'बुतशिकन' सिकंदर ने तोड़ा। मार्तण्ड में उसके खँडहर अभी भी मौजूद हैं।

चाहते हो, तो एक-दूसरे पर प्यार करो। इन्सान का इन्सान पर प्यार न हो, अदावत हो, तो अल्लाह उसकी इबादत हर्गिज कबूल नहीं करेगा। वह कहेगा कि तुम मेरे भक्त कहलाते हो, तो एक-दूसरे पर प्यार क्यों नहीं करते? अल्लाह 'अल् गैब' अव्यक्त है, जो दीखता नहीं, उस पर तुम प्यार करने का दावा करते हो, लेकिन जिनको देखते हो, जो अल्लाह की ही संतान हैं, उन पर प्यार नहीं करते हो, तो वह कैसी भक्ति हुई? हम कहते हैं कि तुम्हारे देह-मंदिर में जो भगवान् विराजमान है, उनकी तुम पूजा करो। दुनिया में जो इन्सान है, फिर वह चाहे जिस मजहब का, जाति का, जबान का या सूबे का हो, उस पर हमारा उतना ही प्यार होना चाहिए, जितना हमारे इस जिस्म पर है। एक-दूसरे पर प्यार करने के लिए ही हम कहते हैं कि जमीन की मिलकियत मिटाओ, जमीन सबकी बनाओ, हम जितने भी काम करते हैं, सब प्यार बढ़ाने के लिए। अल्लाह की इबादत के लिए करते हैं।

चलने का सबब

हमारे परमात्मा हर जगह मौजूद हैं, इसलिए हम पैदल यात्रा करते हैं। एक भाई ने हमसे पूछा कि आप इस हवाई जहाज, रेल, मोटर के जमाने में पैदल क्यों घूमते हो? हमने उसे जवाब देते हुए मजाक में कहा कि हम हवाई जहाज में घूमते, तो हमें हवा ही मिलती, जमीन नहीं। लेकिन उसका असली जवाब यह है कि हम यात्रा के लिए निकले हैं। इसलिए हम घोड़े पर बैठेंगे, तो सारा सवाब (पुण्य) घोड़े को ही मिलेगा, हमको नहीं। पुण्य हमें मिले, इसलिए हम पैदल चलते हैं।

बोझ क्यों उठाते हैं?

यह अक्ल हमें आठ साल पहले सूझी थी, लेकिन कश्मीर में हमें और एक अक्ल सूझी कि हमें अपना निजी सामान भी खुद उठाना चाहिए। हाँ, किताबें वगैरह दूसरी चीजें मोटर से जा सकती हैं। आप हमें कन्धे पर

बोझ उठाये हुए देख रहे हैं, जो हम पहले नहीं उठाते थे। इस तरह इस बुढ़ापे में हमें नये नये विचार सूझते हैं, हम नया नया बोझ उठाते हैं। लेकिन जबसे हमने यह बोझ उठाया, तब से हमें आराम महसूस हुआ। सरस्वती को 'कश्मीरपुरवासिनी शारदा' कहा जाता है। इसलिए कश्मीर में ही उसने हमें यह अक्ल सुझायी कि हम अपना सामान खुद ढोयें। ऐसा करने से ही सच्ची यात्रा होगी। यह बोझ उठाने से हमारी बुद्धि पर जो बोझ था, वह हट गया और हमें नये विचार सूझे।

हम सवाब बाँटना चाहते हैं

अब हमें इस यात्रा का पूरा सवाब मिलेगा। लेकिन हम वह सवाब लेना नहीं चाहते हैं, आप सबमें बाँटना चाहते हैं। पाप और पुण्य दोनों बाँटना चाहते हैं। सवाब का भी बोझ उठाना नहीं चाहते। जो भाई दान देंगे, उन्हें हम यह सवाब खैरात में बाँट देंगे और दान लेनेवालों को भी बाँटेंगे। सवाब के हम तीन हिस्से करेंगे। उन्हें हम दान देनेवालों में, लेनेवालों में और दिलानेवालों में बाँट देंगे।

मार्तण्डवालों से

यह 'मार्तण्ड' है। यहाँ 'सूर्य मन्दिर' है। सूर्यनारायण दुनिया को रोशन करते हैं। इसलिए यहाँ से दुनिया में रोशनी फैलनी चाहिए। 'मार्तण्ड' में ऐसा कोई अभागा न रहे, जिसने दान न दिया हो। अगर हर घरवाला कुछ-न कुछ देगा, तो 'मार्तण्ड' से कश्मीर में, हिन्दुस्तान में और दुनिया में प्यार की रोशनी फैलेगी।

मेरी यह जो यात्रा आठ साल से चल रही है, वह इसीलिए कि लोग प्रेम से दें। हमारा यही काम है कि हम जनता के पास प्यार का पैगाम लेकर पहुँचते हैं और उसे दान देने के लिए प्रेरित करते हैं। जनता जनार्दन का दर्शन करना और उसे विचार समझाना, यही मेरी जियारत है।

मार्तण्ड

१०-८-'५९

: ५३ :

तीर्थक्षेत्र में झगड़े शोभा नहीं देते

अभी हम टीले पर हो आये। वहाँ मार्तण्ड का पुराना मंदिर है, वह देखा। बहुत प्रेम से एक जमाने मे लोगों ने वह चीज बनायी। खूबसूरत चीज है। उसे तोड़नेवाले भी दुनिया मे निकले। लेकिन विज्ञान के जमाने में अब एक ऐसी चीज निकली है, जिससे अब इस प्रकार तोड़ने की तकलीफ भी लोगों को नहीं करनी पड़ेगी। बम ऊपर से गिरता है, तो कुल का कुल खात्मा होता है। हिरोशिमा पर बम गिरा और इतना बड़ा शहर खत्म हो गया।

कश्मीर मे विद्या नहीं रही

आज कुछ पडित आये थे। उन्होंने हमें वेद और गीता सुनायी। हमें सुनकर बहुत दुःख हुआ। वे तलफ्फुज (उच्चारण) ठीक नहीं करते थे। न वेद और न गीता ही वे ठीक बोले। वेद का तो ठीक है, वह जरा कठिन है, लेकिन गीता भी ठीक नहीं बोल सके। यह कश्मीर है। 'कश्मीरपुरवासिनी शारदे !' शारदा याने विद्या की देवता। वह यहाँ रहती थी। ऐसा वर्णन उपनिषद् मे आता है। जिस कश्मीर में इतनी विद्या थी, वहाँ अब वह विद्या नहीं रही। विद्या का अभिमान रह गया है। गुरूर रह गया है।

अब यहाँ झगड़े हैं। उन्हें इतना महत्त्व क्यों दिया जाना चाहिए ! होना तो यह चाहिए कि इन झगड़ों को खत्म करें। यहाँ का झगड़ा मिटाना ऐसी कौन-सी बड़ी बात थी ? लेकिन यह झगड़ा अब कोर्ट मे गया है, ऐसा कहते हैं।

धर्म और झगड़े

यहाँ हमने देखा कि एक मस्जिद है, इबादत की जगह है। लेकिन वहाँ हिन्दू, मुसल्मानों के झगड़े है। यह ओछापन है, नीचता है। हिंदू-मुसलमान, हिंदू-सिखों के झगड़ों को इतनी अहमियत दी जा रही है कि मानो दुनिया में यही एक मसला है। यहाँ वह जो इबादत की जगह है, वहाँ कोई गीता पढ़े, तो सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए? कोई गुरु-ग्रन्थ पढ़े, तो हिन्दू को दुःख क्यों होना चाहिए और कोई कुरानशरीफ पढ़े, तो हिन्दू और सिखों को दुःख क्यों होना चाहिए? पर दुःख होता है। सभी अपने अपने हक की बात करते हैं। क्या अंग्रेजो का हिन्दुस्तान पर हक नहीं था? आज हमसे किसीने पूछा कि क्या यहाँ के झगड़ों के कागज आप देखेंगे? हमने कहा, वह कागजात होली मे जला दो, तो दिल जरा ठंडा होगा। अंग्रेजों के पास भी कागज थे हिन्दुस्तान की मालकियत के। हैदराबाद के निजाम के पास भी कागज थे। लेकिन क्या चाहते हो कागज को? दो दिन की जिन्दगानी है। मर जाओगे, तो फिर क्या करोगे? क्यों झगडते हो? मालिक बनकर बैठे हो! मरने के बाद क्या होगा? मुट्ठीभर हड्डी!

तीर्थक्षेत्र में भी इन्सानियत नहीं!

यह तीर्थक्षेत्र है! तुम यहाँ रहकर लड़ोगे? दुनियाभर के लोग यहाँ आते हैं। उनको झगड़ा सुनाओगे, तो तुम्हारी हँसी होगी। वे लोग एक दिन के लिए मन मे भावना लेकर आते हैं और तुम लोग यहाँ ३६५ दिन रहते हो। बाहर के लोग सोचते होंगे, कितना पुण्य यहाँ के लोग कमाते हैं। परन्तु यहाँ के झगड़े देखकर वे ही पुण्य की भावना लेकर आनेवाले बाहर जाकर क्या सुनायेंगे? मार्तण्ड मे हम गये थे। वहाँ क्या देखा? वहाँ इन्सान भी नहीं और इन्सानियत भी नहीं! अगर यहाँ आपस मे प्रेम दीखेगा, तो वे मार्तण्ड का महत्त्व गायेंगे। झगड़ा देखेंगे, तो यही कहेंगे

कि वहाँ हमने इन्सानियत नहीं, हैवानियत देखी। अब मैं यहाँ से जाऊँगा, तो क्या कहूँगा, यही कि यहाँ तीन जमातें रहती हैं, लेकिन उनका दिल तंग है। आपस-आपस मे प्रेम नहीं है। भाइयो, यह तीर्थस्थान है। सस्कृत मे कहावत है : 'अन्यक्षेत्रे कृतं पापं पुण्यक्षेत्रे विनश्यति। पुण्यक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति॥' दूसरी जगह जो पाप होते हैं, वे पुण्यक्षेत्र मे याने तीर्थक्षेत्र मे जाकर धोये जाते हैं। लेकिन तीर्थक्षेत्र मे जो पाप होते हैं, वे कहाँ धोये जायँगे? वे वज्रलेप हो जाते हैं, पक्के हो जाते हैं।

इन झगड़ों के कारण आपकी बदनामी हो रही है। आप भगवान् के पास जायँगे, तो वहाँ कोड़े पड़ेंगे। वह कहेगा कि क्या तीर्थयात्रा मे रहकर ऐसा व्यवहार करते थे! मैं यह नहीं मानता कि यही एक तीर्थक्षेत्र है। सभी गाँव मेरे लिए तीर्थक्षेत्र है। मैं मानता हूँ कि दुनिया पाक है। जहाँ प्यार है, वहाँ तीर्थक्षेत्र है। क्या ऐसा तीर्थक्षेत्र हो सकता है, जहाँ झगड़े हैं, द्वेष है, मत्सर है, हसद है? झगड़ा किस चीज का है? कोई कहता है, इसका नाम 'नानक-सरोवर' है और कोई कहता है 'मार्तण्ड'। बस! और तवारीख देखते हैं, तो कहते हैं, हमारा 'नाम' पुराने जमाने से चला आया है। इसी बात का झगडा है।

धर्मवाले ऐंठ मे न रहे

दुनिया मे दो प्रकार की तरक्की होती है : (१) रूहानी तरक्की और (२) माली तरक्की। लेकिन आपका जो ढग है, उससे दोनों प्रकार की तरक्की नहीं हो सकती है। यहाँ का झगड़ा सुनकर मुझे बहुत दुःख हुआ।

मुझे तो हर चीज मे आनद आता है। कोई गीता पढे तो भी आनद आता है, कुरानशरीफ पढे तो भी आनद आता है, बाइबल पढे तो भी आनद आता है और गुरुग्रथ पढे तो भी आनद आता है। सब ग्रथों मे एक ही चीज बतायी है। सब्र करो, रहम रखो, सचाई पर चलो! गुरुग्रथ मे क्या आता है? यही आता है—"हुक्म रजायी चलणा। नानक

लिखिया बात।" उसके हुक्म से सारा होता है। सब ग्रंथों में यही बताया गया है। फिर भी भगवान् का नाम लेकर झगड़ते हैं। एक हाथ में गुरुग्रन्थ और दूसरे हाथ में तलवार! मुख में राम और बगल में छुरी जैसा ही हुआ। अरे भाई! ऐसे कितने ही मार्तण्ड आयेंगे और जायेंगे। कितने बड़े बड़े किले टूटे। कितने बड़े-बड़े नगर खतम हुए। एक दिन हम भी तो जाना है! इसलिए नम्र बनो, अपनी ऐंठ में मत रहो, जरा झुको, रहम रखो।

यह न्याय? यह न्यायालय?

हाईकोर्ट में केस गया है। हाईकोर्ट में जज होता है। क्या कभी हाथ में कुदाली लेकर प्रोडक्शन का काम करता है वह? ये वकील, पुलिस, जज सारी बेकारों की जमात है। अपने-अपने में तुम लड़ते हो और उनको काम देते हो! चार साल लगातार केस चलती रहती है। वकील पैसा लूटता रहता है। तारीख जो होती है, वह आगे ढकेली जाती है। उन लोगों को तनख्वाह मिलती है। ये वकील, जज जो फैसला देंगे, वह सब आपको क्या मीठा लगेगा?

मैं गुणगान ही करूँगा

भाइयो, मेरे कहने से किसीका दिल दुःखी हो, तो अच्छा ही है। जरा सोचने लगेंगे। और दुःखी नहीं हो, तो भी अच्छा ही है। मैंने जो बातें कहीं, वे सही हैं। आप ठीक सोचेंगे, तो आपके ध्यान में वे बातें आयेंगी। नहीं तो आपको सँभालने के लिए परमात्मा बैठा ही है। वह जिस तरह सँभालेगा, सँभाले। मैं तो यहाँ से कल चला जाऊँगा और यहाँ की बातें यहीं भूल जाऊँगा। मेरे लिए तो यह खतम ही है। मैं आपकी बदनामी दुनिया में कतई नहीं करूँगा। हाँ, अगर आप अच्छा काम करेंगे, तो आपका गान जरूर गाऊँगा। लेकिन बदनामी तो कतई नहीं करूँगा।

मार्तण्ड
१०-८-'५९

: ५४ :

रियाज़त का राज़

आज मेरे सामने ऐसे बहुत-से लोग बैठे हैं, जो हिंदुस्तान के अलग-अलग सूबों से आये हैं। इनमें से कुछ अमरनाथ की यात्रा के लिए जानेवाले हैं*। ऐसी यात्राएँ भारत में हजारों बरसों से चल रही हैं। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो समझते हैं कि "इनसे मनुष्यों को कुछ भी फायदा नहीं होता है, इससे वे पहले जैसे थे, वैसे ही रह जाते हैं या कभी-कभी अपनी उस हालत से भी बदतर बन जाते हैं, क्योंकि तीर्थयात्रा करनेवाले समझते हैं कि हम यात्रा में गये, तो पुण्य हासिल हो गया यानी फिर आगे पाप करने का मार्ग भी खुल गया।" मैं नहीं मानता कि यात्रा में जानेवाले पहले से बदतर बनते हैं और गिरते हैं। बल्कि मैं मानता हूँ कि उनसे कुछ-न-कुछ लाभ जरूर पहुँचता है। लेकिन सोचने की बात है कि क्या यात्रा से भी बेहतर और कोई बात हो सकती है या नहीं? उसमें जितना परिश्रम किया जाता है, उतना ही परिश्रम दूसरी तरह किया जाय, तो क्या इन्सान की रूहानी तरक्की हो सकती है? इसमें कहने की गुंजाइश है कि इससे बेहतर तरीके भी हो सकते हैं।

अमरनाथ की ओर नहीं

मैं यहाँ तक आया हूँ, लेकिन अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ। मेरी उम्र ६४ साल की है। इसलिए मेरे लिए दुबारा वहाँ जाना मुमकिन नहीं।

---

* पहलगाँव से अमरनाथ सिर्फ २६ मील दूर है। राखी पूर्णिमा को वहाँ बड़ी यात्रा जाती है। पूर्णिमा निकट होने के कारण अमरनाथ जानेवाले यात्री पहलगाँव तक पहुँच गये थे, जहाँ से वे १५ तारीख को अमरनाथ प्रस्थान करनेवाले थे।

अभी मुमकिन था और मैं चाहूँ, तो मेरे लिए सब प्रकार की सुविधाएँ भी हो सकती हैं और हो भी रही थीं। लेकिन मैंने कहा कि उधर मेरा काम नहीं है, इसलिए मैं नहीं जाऊँगा। इसमें मेरा जो विचार है, वह मैं आपके सामने रखूँगा।

अभी मैं पीर पचाल लाँघकर आया हूँ। वह भी अमरनाथ की तरह १३॥ हजार फुट ऊँचा है। वहाँ हमें बरफ पर चलना पड़ा। भगवान् शिवजी बरफ पर बैठकर ध्यान करते होंगे, उनका खयाल करके हमने भी बरफ पर बैठकर ध्यान किया। २१ साल पहले कन्याकुमारी में समुन्दर के किनारे बैठकर हमने ध्यान किया था। उसी तरह पीर की ऊँचाई पर भी हमने ध्यान किया। लेकिन मैं पीर पर ध्यान के लिए नहीं गया था। मुझे कश्मीर जाना था और सैलाब ने मुझे पीर के उस पार रोक रखा। वहाँ से वापस जाना आसान था। लेकिन हमने तय किया कि हम आगे जायेंगे। फिर इतना सारा मेहनत का काम हमने किया, जिंदगी को खतरे में डाला, क्योंकि यही कर्तव्य था। अगर भूदान के सिलसिले में मुझे अमरनाथ जाना पड़े, तो मैं जाऊँगा। उसमें जो भी जोखिम उठानी पड़े, उठाऊँगा, क्योंकि भगवान् रक्षा करने बैठा है। लेकिन अभी मेरा फर्ज वहाँ नहीं है। इसलिए मेरा वहाँ जाना जरूरी नहीं है, इसीलिए मैं अभी अमरनाथ नहीं जा रहा हूँ।

ध्यान से फल-त्याग श्रेष्ठ

आप बड़ी श्रद्धा से अमरनाथ जायेंगे। आप जरूर जाइये। वहाँ स्वामी विवेकानन्द भी गये थे। उन्हें वहाँ बड़ा आनन्द मालूम हुआ। वे ध्यानयोगी थे। वहाँ उन्होंने भगवान् शकर का ध्यान किया होगा। गीता में कहा है 'ध्यानात् कर्मफलत्यागः' ध्यान से भी कर्मफल का त्याग श्रेष्ठ है। याने आपको जो कर्तव्य प्राप्त हुआ है, वह आप फलत्यागपूर्वक करते रहेंगे, तो वह चीज ध्यान से भी श्रेष्ठ है, क्योंकि ध्यान में भी फल की वासना

होती है। मैंने इतना ध्यान किया, तो मुझे तरक्की के रूप मे, चित्त-शुद्धि के रूप में उसका फल मिलना चाहिए, ऐसी वासना हो सकती है। मान लीजिये कि यहाँ जनता के सामने कोई मसला पेश है—सैलाब का मुकाबला कैसे करना, यह मसला पेश है, तो उसके लिए ध्यान भी करना पड़ेगा। यह ध्यान करना जरूरी भी है, क्योंकि वहाँ ध्यान कर्तव्य हो जाता है। जैसे हम यह नहीं कह सकते कि हम जो भी क्रिया करें, उससे आध्यात्मिक उन्नति होगी ही, वैसे ही जो भी ध्यान किया जाय, उससे आध्यात्मिक उन्नति होती ही है, ऐसा भी नहीं है। ध्यान भी कर्तव्य होता है और कर्म भी, तभी उससे आध्यात्मिक उन्नति होती है। जब कर्तव्य होगा, तब ध्यान किया जायगा और कर्म भी किया जायगा। दोनों फल-त्याग की भावना से किये जायेंगे। दोनों मे फल की आसक्ति नहीं रहेगी। अन्यथा ध्यान कर्तव्य न होकर चित्त मे उसकी आसक्ति हो, तो वह (ध्यान) आध्यात्मिक उन्नति के लिए बहुत ज्यादा मदद करनेवाली चीज हो सकती। बल्कि आध्यात्मिक उन्नति के मार्ग में रोड़ा अटकानेवाली चीज भी हो सकती है।

आप अमरनाथ हो आयेंगे, तब अपने-अपने गाँव पहुँचने पर जो वहाँ नहीं गये, वे लोग आपको नमस्कार करेंगे और कहेंगे कि आप बहुत बड़ा काम करके आये हैं, साक्षात्कार करके आये हैं। आपको साक्षात्कार हुआ या नहीं हुआ, पता नहीं। लेकिन वे तो मानेंगे कि जरूर हुआ है और फिर आपके चरण छूयेंगे। फिर आपने अगर माना कि हमे साक्षात्कार हुआ है, तो अमरनाथ की यात्रा से आपकी आध्यात्मिक उन्नति होने के बजाय अवनति हो सकती है, यह सोचने की बात है।

अहंकार आध्यात्मिक मार्ग में रुकावट

अभी मैं भूदान-ग्रामदान का काम करता हूँ, गरीबों की खिदमत करता हूँ। लोग मुझे प्रणाम करने आते ही हैं। एक दफा एक हाईकोर्ट

के जज ने मेरे चरण छूये। मैंने उन्हें मना करते हुए कहा कि आप पढ़े-लिखे होकर ऐसा क्यों करते हैं? उन्होंने कहा कि मैं पढ़ा लिखा हूँ, इसी-लिए करता हूँ। आपके पाँवों की बदौलत ही आपकी यात्रा चलती है, इसीलिए मैं आपके पाँवों को ही प्रणाम करता हूँ। इस तरह बड़े-बड़े लोग भी मेरे चरण छूते हैं। इससे मान लीजिये कि मेरे सिर पर अहंकार चढ़ जाय, तो मेरा सारा किया कराया खत्म हो जायगा। फिर भले ही दुनिया में मुझे इज्जत हासिल हो, लेकिन वहाँ (भगवान् के पास) इज्जत हासिल नहीं होगी। वहाँ एक न्याय करनेवाला बैठा है। खैर! वह वहाँ है या नहीं, यह अलग बात है। अपने दिल में ही फैसला होता है। दिल ही हमसे कहता है कि "कम्बख्त! तेरे सिर पर पुण्य का अहंकार चढ़ा है। अहंकार चढ़ा याने तुम नीचे गिरे। बहुत ऊँचा चढ़कर नीचे गिरना याने बिलकुल ही कमबख्ती है। इसमें तूने क्या कमाया? कमाने के बाद कुल का कुल गँवाया।" मरने के बाद फैसला देनेवाला कोई हो या न हो, फैसला देनेवाला दिल के अंदर ही बैठा है। वह कहता है कि "तूने अच्छा काम किया, लेकिन अच्छे काम का फायदा उठाया और तेरे सिर पर अहंकार चढ़ा, जो आध्यात्मिक उन्नति में बड़ी रुकावट है।"

पुण्य का बोझ पाप के बोझ से भारी

आध्यात्मिक उन्नति में सबसे बड़ी चीज है, अपने को पहचानना। जप, तप, ग्रन्थ पठन, ध्यान, परोपकार, सेवा, यात्राएँ आदि पचासों प्रकार की आध्यात्मिक साधनाएँ चलती हैं। कुछ ज्ञानी उन्हें गलत मानते हैं, लेकिन मैं उन प्रकारों को गलत नहीं मानता। अगर हम अपने को नहीं पहचानते, तो ये सब प्रकार गलत हो सकते हैं। आध्यात्मिक उन्नति न संसार से होती है, न जप, तप, ग्रन्थ पठन से होती है। न शादी करने से होती है और न शादी छोड़ने से होती है। न गृहस्थ बनने से होती है

और न सन्यासी बनने से। वह तो अन्दर ही ठीक से पहचान हो जाने से होती है। लेकिन ठीक पहचानने के लिए लायक मन चाहिए। वह मन बनाने में शायद इन चीजों का थोड़ा उपयोग होता है। ध्यान, जप, तप, सत्-संगति, यात्रा आदि कुछ-न कुछ किया होता है, तो चित्त बनाने में मदद मिलती है, जो चित्त सोचेगा और अपने अन्दर जाकर परख करेगा कि मैं कौन हूँ। जैसे वैसा चित्त बनाने मे जप, तप आदि चीजों की मदद हो सकती है, वैसे ही उन चीजों से उसमे मुश्किलात भी पैदा हो सकते हैं। घोड़े पर चढ़कर मुकाम पर पहुँचना भी संभव है और नीचे गिरना भी। जप, तप आदि चीजो से अपना मन आत्मा के अन्दर के विषय को सोचने के लिए लायक बन जाय, यह भी मुमकिन है और उन सब चीजो के कारण पुण्यजाल में फँसना भी संभव है। जैसे पापजाल मे फँसकर मनुष्य का मन बंधन मे पड सकता है और फिर गिर सकता है, वैसे ही पुण्यजाल में फँसकर भी गिर सकता है। कभी-कभी सिर पर चढा हुआ पाप का बोझ नीचे पटकना आसान हो सकता है, लेकिन सिर पर चढा पुण्य का बोझ नीचे पटकना मुश्किल हो जाता है।

ये बातें आपके सामने रखकर मैंने आपको कुछ मदद पहुँचायी या नहीं, यह मुझे पता नहीं। लेकिन मदद पहुँचाने की कोशिश जरूर की है। आप अपनी यात्रा जरूर पूरी करें और इन बातों पर सोचें।

माली और रूहानी गिरावट

जिस काम के लिए मैं यहाँ आया हूँ, उसका कोई बोझ मेरे सिर पर नहीं है, क्योंकि वह आप सबके सिर पर है। मेरे लड़के की शादी का सवाल होता, तो मेरे सिर पर बोझ होता। लेकिन मै चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के गरीबों को जमीन मिले और अमीरों की रूहानी तरक्की हो। आज देश में गरीबों की माली गिरावट (आर्थिक ह्रास) हुई है। उसका मतलब यह नहीं कि गरीब रूहानियत मे आगे बढे हुए हैं। वे भी बेवकूफ

है। चोरी, आलस करते हैं, जो पाप का परिणाम है और अमीरी भी पाप का परिणाम है। लेकिन दोनों में जरा तुलना करके देखें, तो कहना होगा कि गरीबों की माली गिरावट ज्यादा है और बड़े लोगों की रूहानी गिरावट भी ज्यादा है। दोनों की दोनों किस्म की गिरावट न हो, यह मेरा उद्देश्य है। हम यह नहीं चाहते कि सिर्फ गरीबों की उन्नति हो, बल्कि यह चाहते हैं कि सबकी उन्नति हो। उन्नति हो सकती है, तो सबकी उन्नति हो सकती है, एक तबके की नहीं। यह नहीं हो सकता कि समाज के एक ही तबके की रूहानी तरक्की हो। तरक्की होती है, तो सबकी होती है और गिरावट होती है, तो वह भी सबकी होती है, ऐसा मैं मानता हूँ।

सामाजिक समाधि

बंगाल में विष्णुपुर में एक तालाब के किनारे बैठकर रामकृष्ण परमहंस को पहले दफा समाधि लगी थी। मैं भूदान-यज्ञ के सिलसिले में वहाँ पहुँचा था। मेरी यात्रा तो आप लोगों के दर्शन के लिए ही चल रही है, दूसरे-तीसरे भगवान् के दर्शन के लिए नहीं। मेरे लिए आप ही भगवान् हैं। लेकिन उस यात्रा में जैसे दूसरे गाँव आये, वैसे विष्णुपुर भी आया। वहाँ मैंने कहा था कि मेरी ख्वाहिश है कि सामाजिक समाधि हो। जैसे वैज्ञानिक प्रयोगशाला में तजुर्बे (प्रयोग) करता है और उसका कुछ नतीजा आने पर वह समाज को लागू किया जाता है। प्रयोगशाला के तजुर्बों में एक चीज बनती है, तो फिर बाद में बड़े कारखानों में बड़े पैमाने पर वह चीज बनायी जाती है। ठीक वैसे ही आध्यात्मिक प्रयोग भी पहले व्यक्ति के जीवन-क्षेत्र में किये जाते हैं और फिर समाज में लागू किये जाते हैं। गांधीजी ने यह चीज हमें बतायी। इसका मतलब यह नहीं कि पुराने लोगों ने यह चीज नहीं पहचानी थी। सामाजिक साधना के लिए पुराने लोगों के पचासों मन्त्र मिलते हैं, लेकिन वे मन्त्र किताबों में पड़े हैं। इस जमाने में गांधीजी ने वही चीज कही है। हम उनकी कृपा-

दृष्टि में पले हैं, उनसे हमे बहुत मिला है, दूसरों को भी मिला है। उन्होंने कहा कि "मै सामाजिक समाधि चाहता हूँ। मै और आप किसी एक अकेले जिस्म में गिरफ्तार नहीं हैं। जिसने माना कि मैं इसी शरीर में पड़ा हूँ और सामने जो शरीर दीखते हैं, उनमें नहीं पड़ा हूँ, तो उसने असलियत नहीं पहचानी। माँ पहचानती है कि मैं बच्चे मे भी हूँ। लेकिन वह शारीरिक चीज है। बच्चा उसके शरीर से ही पैदा हुआ है, इसीलिए उसे ज्ञान होता है कि उसमे मै हूँ, मै उससे अलग नहीं हूँ। यही बात हमें सारे समाज के लिए पहचाननी चाहिए कि मैं एक शरीर मे महदूद नहीं हूँ, सारे शरीर मेरे हैं।

खाने के जैसा देना कुदरती हो

इसीलिए भूदान-ग्रामदान की मेरी जो कोशिश चल रही है, उसका मुझ पर जाती बोझ नहीं है। मै मानता हूँ कि आप सब लोग चाहेगे, तो चद दिनों मे यह काम खतम कर सकते हैं और अगर आप नहीं चाहें, तो नहीं होगा। मैंने ऐसा कोई अहकार अपने दिल पर नहीं रखा है कि मैं यह मसला हल करनेवाला हूँ। परमेश्वर की कृपा से मैं बिलकुल बेफिक्र घूमता हूँ। मैं चाहता हूँ कि आप प्यार से, समझ बूझकर दान दें। दान-देने मे यह बात न हो कि उससे पुण्य मिलेगा। बल्कि मैं खाता हूँ, तो पुण्य कमाने के लिए नहीं। इसी तरह दूसरों को भी कुछ देता हूँ, तो पुण्य कमाने के लिए नहीं देता, यही विचार हो। जैसे खाना कुदरती है, वैसे दूसरों को देना भी कुदरती है, ऐसा समझकर दान दीजिये।

आप अमरनाथ जानेवाले हैं, तो परमेश्वर की कृपा से कुछ-न कुछ दर्शन, प्यार आप ले जायेंगे। साथ ही यह चीज भी लेते जाइये और वापस लौटने पर हिन्दुस्तान मे जहाँ भी आप जायँगे, इस काम को अपना समझकर उठा लीजिये।

पहलगाँव

१२-८-'५९

: ५५ :

नयी तौहीद : इन्सान एक है

हमारे देश की यह खुशकिस्मती है कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें, मुख्तलिफ जबानें, कौमें, सूबे, मुख्तलिफ मजहब साथ साथ रहते हैं। ये ही हमारी ताकत साबित होंगी, बशर्ते हम एक दूसरे पर प्यार करें और इन्सान-इन्सान में कोई तफरका न करें।

हिन्दुस्तान : दुनिया की छोटी शक्ल

आज एक भाई हमसे पूछने लगे कि कश्मीर के मसले के बारे में आपकी क्या राय बनी है? मैंने कहा कि कश्मीर का मसला वही है, जो हिंदुस्तान का मसला है। वह यही कि यहाँ मुख्तलिफ जमातें रहती हैं। लेकिन यह कोई मसला नहीं है। यह हमारी खूबसूरती है, खुशकिस्मत है, खूबी है, बशर्ते हम खालिस प्यार करना सीखें। वह देश कमनसीब है, जिसमें मुख्तलिफ जमातें नहीं हैं। ऐसे देश विज्ञान के जमाने में बहुत ज्यादा तरक्की करनेवाले नहीं हैं। हिन्दुस्तान की यह खूबी है कि वह कुल दुनिया का एक नमूना है, सिर्फ इसलिए नहीं कि दुनिया की आबादी का छठा हिस्सा या सातवाँ हिस्सा यहाँ है, बल्कि इसलिए कि जैसे दुनिया में मुख्तलिफ जमातें हैं, वैसे ही हिंदुस्तान में भी हैं। कुल दुनिया की एक छोटी-सी शक्ल में हिन्दुस्तान है। इसलिए हमारा दिल बड़ा होना चाहिए, तंग नहीं। अगर बड़े देश में हम दिल तंग रखकर रहना चाहेंगे, तो झगड़ों के सिवा कुछ नहीं होगा, हमारी तरक्की नहीं होगी, हम तबाह हो जायेंगे। लेकिन अभी आपने यहाँ देखा कि अमरनाथ यात्रा हिंदुओं की होती है, इसलिए हिन्दू वहाँ जाते हैं, फिर भी जितने मजदूर उनकी सेवा

मे जाते हैं, वे मुसलमान होते है। याने एक-दूसरे का नाता-रिश्ता ऐसा जुड़ गया है कि हम एक ही जिस्म के जुज हैं, जिन्हे काटकर अलग नहीं किया जा सकता। कान को या पॉव को काटकर अलग रखा जाय, तो जिस्म की क्या हालत होगी ? इसी तरह हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, पारसी, बौद्ध, यहूदी—ये सारे हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ आजा (अवयव) हैं।

जबानें सीखें

यहाँ जिस तरह चौदह अच्छी, ताकतवर जबानें हैं, वैसी दुनिया के दूसरे किसी देश मे नहीं हैं। यूरोप मे ऐसी ही अच्छी जबाने हैं, लेकिन अभी वह एक देश नहीं बन पाया है। वहाँ अलग-अलग, छोटे-छोटे देश हैं। यहॉ कश्मीर मे भी मुख्तलिफ जबानें हैं। कश्मीरी, उर्दू, हिन्दी, पजाबी, डोगरी, बोधी—इतनी सारी जबानें चलती हैं। इसलिए यहॉ स्कूल खोलने हों, तो इतनी सारी जबाने पढ़ानी होंगी। इसके अलावा पण्डितों की जबान सस्कृत है, तो दूसरे अरबी-फारसी भी सीखते हैं। इतने छोटे-से सूबे में, जहाँ सिर्फ ४० लाख लोग रहते हैं, ७-८ जबानें है। हर जबान पढाने का इन्तजाम हमे करना होगा। यह अपने देश की खूबी है कि यहाँ हम सारे इकट्ठा हुए हैं।

कश्मीर पर दुनिया का हक

कुछ लोग पूछते है कि कश्मीर किसका हिस्सा है ? मै उनसे कहता हूँ कि तुम कैसे बेवकूफ बने हो, जो इस तरह पुराने जमाने का सवाल पूछते हो ! अगर पुराने जमाने की बात होती, तो मै कहता कि कश्मीर जम्बू-द्वीप का हिस्सा है। लेकिन आज वैसा नहीं कहूँगा, बल्कि यही कहूँगा कि कश्मीर दुनिया का हिस्सा है। आज हर देश दुनिया के साथ ताल्लुक रखता है। अभी हमने सुना कि इस साल यहॉ सैलाब की वजह से अमरनाथ जाने के लिए बाहर से कम यात्री आये। इससे यहाँ के लोगों को तकलीफ हुई। यहॉ दुनियाभर के 'टूरिस्ट' (मुसाफिर) आते हैं और

करोड़ों रुपये देकर चले जाते हैं। वे यहाँ की खूबसूरती देखते हैं। तो क्या इस खूबसूरती पर कश्मीर का ही हक है? हम समझना चाहिए कि इस पर कुल दुनिया का हक है। जैसे-जैसे विज्ञान तरक्की करेगा, वैसे-वैसे दुनिया की कुल कौमें ज्यादा नजदीक आयेंगी। ऐसी हालत में पुराने सवाल क्या पूछते हो कि कश्मीर पर किसके बाप का हक है? कश्मीर पर कुल दुनिया का हक है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, अमेरिका, रूस, इंग्लैण्ड, जापान वगैरह सब देशों पर कुल दुनिया का हक है। अगर ऐसा नहीं होगा, तो दुनिया में कशमकश जारी रहेगी और कुल दुनिया तबाह हो जायगी। यह सवाल सिर्फ कश्मीर का नहीं, बल्कि कुल दुनिया का है। विज्ञान के जमाने में हम पहले जैसे अलग अलग नहीं रह सकते। यहाँ आप होटल में जायेंगे, तो दुनियाभर की चीजें मिलेंगी। कल यह भी होगा कि दुनिया के दूसरे देशों के लोग यहाँ आकर होटल खोलेंगे, सेवा करेंगे और कुछ फायदा भी उठायेंगे। इसलिए १०-१२ साल पहले के छोटे छोटे सवाल अब पुराने हो गये हैं।

अब पासपोर्ट, वीसा नहीं रहेंगे

इन १० सालों में जमाना बहुत बदल गया है। विज्ञान के जमाने के १० साल याने पुराने १०० साल हैं। हिरोशिमा पर बम गिरा और जापान को लड़ाई फौरन बन्द करनी पड़ी। आज अमेरिका और रूस के पास ऐसे बम पड़े हैं, जो हिरोशिमावाले बम से हजारगुना ज्यादा ताकतवर हैं। मैं कोई बढ़ा-चढ़ाकर बातें नहीं करता, बल्कि साइन्सदाँ जो बता रहे हैं, वही कह रहा हूँ। आज इन्सान को बड़ी-बड़ी ताकतें हासिल हुई हैं। इस-लिए अब कश्मीर, गोवा जैसे छोटे छोटे मसलों को भूल जाओ और यही याद रखो कि हम सबको प्यार से रहना सीखना है। दुनिया का यही एक मसला है कि मुख्तलिफ जमातें प्यार से इकट्ठा कैसे रहें, दूसरा कोई मसला ही नहीं है। अभी तिब्बत में चीनी लोग गये हैं, तो कुछ कशमकश चल

रही है। इस जमाने मे यह बन नहीं सकता कि चीनी वहाँ न जायँ। लेकिन उससे तिब्बत मे डर फैला और मसले पैदा हुए। ऐसा होने से दिल टूट जाते हैं। दिल से दिल अलग होते हैं। नतीजा यही आनेवाला है कि इन्सान का खात्मा होकर रहेगा। इस वास्ते समझना चाहिए कि अब यह लाजमी है कि जमातें नजदीक आनेवाली हैं, इसे आप रोक नहीं सकते। पहले कश्मीर आने के लिए परमिट लेना पड़ता था। लेकिन हमारे यहाँ आने से पहले परमिट हटाया गया। हम समझते हैं कि हमारे विचार का इस्तेकबाल (स्वागत) करने के लिए ही यह कार्य हुआ। अब हिंदुस्तान और कश्मीर मे आना-जाना खुले तौर पर चल रहा है। इसी तरह कल पासपोर्ट, वीसा भी खत्म होंगे और हिन्दुस्तान-पाकिस्तान मे आना-जाना जारी होगा, हिन्दुस्तान, चीन वगैरह सब देशों मे आना-जाना शुरू होगा।

तारीख अल्लाह जानता है

यह कब होनेवाला है, उसकी तारीख हम नहीं बता सकते। कुरान-शरीफ मे कहा है कि कुछ बातें अल्लामियाँ ही जानता है। वह तारीख तो अल्लामियाँ ही जानता है, लेकिन यह मियाँ (विनोबा) इतना जरूर जानता है कि पासपोर्ट, वीसा यह सब हटनेवाला है। अब वह दिन दूर नहीं, नजदीक ही है। उसकी तारीख हम नहीं जानते, वह इल्म अल्ला-मियाँ के पास है। लेकिन इतना यकीन रखो कि ऐसा होनेवाला है और जल्दी ही होनेवाला है। उस दिन के लिए अपना दिल तैयार रखो। नहीं तो वह दिन आयेगा और हम गये-बीते साबित होंगे।

टूरिस्टों का गलत तरीका

यहाँ कोई टूरिस्ट आता है, किसी दूकानदार, मजदूर या घोड़ेवाले से पूछता है कि कश्मीर के मसले के बारे मे तेरी राय क्या है और फिर अपना खयाल बनाता है। मैं कहना चाहता हूँ कि जब वह

घोड़ेवाले से पूछता है, तो घोड़े से ही क्यों नहीं पूछता कि घोड़े, तेरी राय क्या है? जानकारी हासिल करने का यह भी कोई तरीका है? कोई टूरिस्ट गाँव गाँव जाने और लोगों के दिलों मे बैठने की तकलीफ तो उठाता ही नहीं है। उस हालत में वह कश्मीर के बारे मे क्या जान सकता है? हमें समझना चाहिए कि कश्मीर का मसला याने हिन्दुस्तान का मसला है, दुनिया का मसला है।

अभी बर्लिन मे कशमकश जारी है, क्योंकि बर्लिन के टुकड़े हुए हैं। उन टुकड़ों को एक कैसे बनाया जाय, इस पर बहस चल रही है। समझना चाहिए कि जब तक जर्मनी नहीं जुड़ेगा, तब तक दुनिया मे अमन नहीं हो सकता। सिर्फ जर्मनी के जुड़ने से काम नहीं बनेगा। जर्मनी, फ्रांस और सारा यूरोप जुड़ेगा, तभी अमन होगा। फिर आप यह तमाशा देखेंगे कि जैसे यहाँ अमरनाथ की यात्रा के लिए सारे हिन्दुस्तान से यात्री आते हैं, वैसे ही यूरोप जुड़ने पर लंदन का आदमी 'वोल्गा' के उद्गम का दर्शन करने जायगा और कहेगा कि वहाँ एक पत्थर है, जो लिंगाकार है, जिसके दर्शन करना है। रूस के लोग बोलेंगे कि हमें 'टेम्स' का दर्शन करना है, वह जियारत की जगह है।

नयी तौहीद

आपको समझना चाहिए कि हिन्दुस्तान के लोग ज्यादा आगे बढ़े हुए हैं और यूरोप के लोग पिछड़े हैं। श्रीनगर में शंकराचार्य के नाम से एक पहाड़ है। शंकराचार्य केरल का याने हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिणी सिरे का शख्स था। १२०० साल पहले वह यात्रा करने के लिए श्रीनगर आया था और उस पहाड़ पर उसने भगवान् शंकर की एक मूर्ति स्थापित की। वह पैदा हुआ केरल मे और उसकी वफात हुई हिमालय मे। इस तरह सारे हिन्दुस्तान को हमने एक माना था, इसीलिए जगह-जगह जियारत की जगहें बनीं। यूरोप के लोगों को अभी यह करना बाकी है कि

हम सब यूरोपीय एक हैं। लेकिन सिर्फ यूरोपीय एक हैं, ऐसा होने से दुनिया का काम नहीं बनेगा। बल्कि यूरोपियन, एशियन—हम सारे एक हैं, हम सब इन्सान हैं, ऐसा करना होगा। कुरानशरीफ ने एक बात सिखायी है—'अल्लाह् हुवहद्' याने अल्लाह एक है। अब इसी तरह नयी तालीम देनी होगी कि इन्सान एक है—'इन्सान हुवहद'। पुरानी तौहीद है कि अल्लाह एक है, नयी तौहीद है कि इन्सान एक है। उसके लिए लफ्ज कुरानशरीफ में मिलेगा। हिन्दू, बौद्ध, ईसाई वगैरह सब मजहबों की किताबों में मिलेगा। यह सब किताबों में लिखा है, लेकिन हम किताबें पढ़ते नहीं, सिर्फ किताबों का गुरूर बना हुआ है।

किताबें तोड़नेवाली नहीं हैं

दरअसल जो चीजें जोड़नेवाली थीं, उन्हें हमने तोड़नेवाली बनाया है। मैं कुरानवाला, तुम बाइबलवाले, मैं अलग, तुम अलग। यहाँ तक होता है कि खाने-पीने के लिए तो सब इकट्ठा होते हैं, लेकिन अल्लाह का नाम लेने का मौका आने पर यह इधर जाता है, तो वह उधर। याने यह अल्लाह ही ऐसा कम्बख्त निकला कि उसके नाम से हम अलग हो जाते हैं। अल्लाह तो सबको जोड़नेवाला है। किताबें सबको जोड़ने के लिए आयी थीं, लेकिन हमने उन्हें तोड़नेवाली बनाया। अल्लाह ने साइन्स के जरिये एक करामात की है। जो चीजें पहले तोड़नेवाली थीं, उन्हींको अब जोड़नेवाली बना दिया है। जापान और अमेरिका पहले बिलकुल अलग थे। प्रशान्त महासागर ने उन्हें तोड़ा था। आज उसी समुन्दर ने उन दोनों को जोड़ दिया है। जो समुन्दर पहले तोड़नेवाला था, वही अब जोड़नेवाला बन गया है। लेकिन हम ऐसे कम्बख्त हैं कि जो किताबें जोड़नेवाली थीं, उन्हींको हमने तोड़नेवाली बनाया। कुरानशरीफ में कहा है कि हम किताबों में फर्क नहीं करते। किताबों की एक-दूसरे के साथ टक्कर नहीं हो सकती। जिस जमाने में तोड़नेवाला समुन्दर भी जोड़नेवाला बना, उस

जमाने में आप अल्लाह का और किताबों का नाम लेकर एक दूसरे का दिल तोड़ेंगे, तो क्या टिक सकते हैं ?

अल्लाह चाहता है

हमें दो काम करने चाहिए : १. मुख्तलिफ मजहबों को, जमातों को जोड़ना, २. गरीब-अमीर को जोड़ना। ये दो काम करने के लिए बाबा कश्मीर आया है। लेकिन बाबा क्या कर सकता है ? बाबा की कोई ताकत नहीं है, अल्लाह जो करायेगा, वही होगा। कुरानशरीफ में कहा है : "तुम क्या चाहोगे ? अल्लाह जो चाहेगा, वही होनेवाला है।" इसलिए मेरा सारा दारोमदार उसी पर है। मैं मानता हूँ कि वह चाहता है कि यह काम हो। अगर वह नहीं चाहता, तो क्या मेरे जैसे बूढे को घुमाता ? मेरे सामने जब पीर-पंचाल खड़ा था, तब मैंने अल्लाह से कहा कि मैं पीर नहीं लाँघ सका, तो कश्मीर नहीं जाऊँगा। फिर अल्लाह ने यह करामात की कि दो दिन आसमान बिल्कुल साफ रखा, जिससे हम पीर लाँघ सके। मेरे पाँवों में पीर लाँघने की कोई ताकत नहीं थी। लेकिन अल्लाह चाहता है कि सबके दिल जुड़ जायँ, इसीलिए वह मेरे पाँवों में ताकत भरता है। यही यकीन लेकर मैं कश्मीर आया हूँ।

कानून से दिल नहीं जुड़ते

दिलों को जोड़ने का काम कानून से नहीं हो सकता है। मैंने देखा कि यहाँ पर कानून तो बना, लेकिन बेजमीनों को कुछ नहीं मिला। इस-लिए जमीन का मसला जितना हिंदुस्तान में है, उतना ही कश्मीर में है। वह मसला तो दिलों को जोड़ने से ही हल होगा। यहाँ सीलिंग बनने के बावजूद भी यहाँ के लोग अच्छी जमीन दान दे रहे हैं, याने अपने जिगर का टुकड़ा ही दे रहे हैं। कश्मीरी लोगों का खूबसूरत दिल देखकर हमें बड़ी खुशी होती है।

पहलगाँव

१४-८-'५९

: ५६ :

कश्मीरी जबान देहात और शहर का भेद मिटायेगी

कश्मीरी जबान खूब फले, फूले। उसकी तरक्की हो। वह स्कूलों मे चले और उसमें अच्छी-अच्छी कितावें आया हो। हिंदी, उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत भी चले। थोडी अंग्रेजी भी चले। थोड़े बच्चे अरबी, संस्कृत सीखेंगे, ज्यादा हिंदी-उर्दू सीखेंगे और उससे भी ज्यादा कश्मीरी सीखेंगे। अगर कश्मीरी जबान यहाँ नहीं चलेगी, तो शहर और देहात के बीच एक दीवार-सी खड़ी हो जायगी। इल्म से देहाती दूर रहेंगे। चद लोगो को इल्म रहा, तो वे बाकी लोगों को, गरीबों को चूसते, लूटते, ठगते रहेंगे और दोनों के बीच कशमकश, दगे-फसाद जारी रहेंगे। इसलिए जरूरी बात यह है कि शहरवाले लोग भी कश्मीरी जबान सीखें, पढें, लिखे, बोले। यह न समझें कि यह गॅवार लोगो की जबान है। जिस जबान मे लल्ला के वाक्य हैं, वह जबान गॅवारों की नहीं हो सकती है और न बेव-कूफों की ही हो सकती है।

हिंदी और उर्दू जबान बडी है, लेकिन कश्मीरी भी उतनी ही बडी है। वह आसान भी है। आपकी माॅ की जबान है। बच्चों को स्कूल मे वह जबान लाजमी नहीं है।—माॅ बोलेगी कश्मीरी, बाप बोलेगा उर्दू, बाजार मे उर्दू चलेगी और उस्ताद अंग्रेजी बोलेगा। इस तरह तीन बाजू की खिचानों मे आपके तीन टुकड़े हो जायेंगे। देहात और शहर के बीच दीवार खडी रहेगी। उनमें मेल नहीं होगा। इसलिए आपको फख्र होना चाहिए कि आप कश्मीरी बोलते हैं। कश्मीरी बोलना नीचा नहीं है। हिंदी, उर्दू बोलनेवाला ही अकलवाला है, ऐसा मानना गलत है। मादरी

जबान के सिवा दूसरी कोई जबान नहीं चलेगी। इंग्लैंड में ८० प्रतिशत लोग दूसरी जबान नहीं जानते हैं। सिर्फ इंग्लिश जानते हैं, बोलते हैं और पढ़ते हैं। उसमें फख्र महसूस करते हैं। इसलिए यह न समझें कि कश्मीरी चमारों की, कुम्हारों की जबान है। पंडितों की जबान ऊँची है, यह न समझें। अगर वह जबान ऊँची है, तो उसे जाने दो आसमान में, उसे जमीन पर क्यों लाते हो? कश्मीरी बोलने में पढ़ने में मजा आना चाहिए। जोरों से उसे जानना चाहिए, नहीं तो हिंदी उर्दू जोर करेगी। अंग्रेजी उससे भी ज्यादा जोर करेगी। फिर हालत ऐसी होगी कि कश्मीरी में बोलना मुश्किल हो जायगा।

आज पढ़े-लिखे लोगों का क्या हाल है? वे आज अंग्रेजी लफ्जों के बिना मुश्किल से बोल सकते हैं। हर जुमलों में दो तीन अंग्रेजी लफ्ज होते हैं। अब यहाँ यह टोपी है, वह किसान की, मजदूरों की, अवाम की टोपी है। हमारा लिबास मजदूर जैसा होना चाहिए। वैसे दूसरा लिबास पहनने वालों को मैं बुरा नहीं मानता हूँ।

ऐशमुकाम
१६-८-'५९

: ५७ :

दुनिया का बोझ उठानेवाले अनंतनाग मजदूर हैं

पीर पन्चाल लॉघते वक्त हम तो पैदल चल रहे थे, लेकिन हमारा सामान दूसरे भाइयों के कन्धे पर था। तब हमें लगा कि हम भी अपने सामान का कुछ हिस्सा क्यों न उठाये। जब से हमने थोड़ा सामान उठाना शुरू किया है, तब से हमारा दिल मजदूरों के दिल के साथ घुल मिल गया है। यही हमारी जियारत है। दुनिया का कुल बोझ मजदूरों ने उठाया है। हम उसीकी खिदमत करना चाहते हैं। हम चाहते हैं कि हम और वह एक हो जायँ। संस्कृत में अनन्तनाग के मानी है सॉप, जिसके सिर पर धरती है। हम मानते हैं कि कुल धरती का बोझ उठानेवाला अनन्तनाग है, बेजमीन मजदूर। जब से हमने सिर पर बोझ उठाना शुरू किया, तब से पता चला कि गरीबों के सिर पर कितना बोझ है। नहीं तो हम लोग उन पर इतना बोझ लादते हैं कि उनकी पीठ झुक जाती है। हम महसूस ही नहीं करते कि उससे हम कोई जुल्म करते है। उन पर ज्यादती करते हैं। जब तक हम गरीबो की जिन्दगी के साथ अपना मेल नहीं मिलाते, तब तक उनके दुःख का अदाज हमे नहीं लगेगा। तब तक हमारे दिल मे हमदर्दी पैदा नहीं हो सकती है। जब तक हमारा बोझ उन पर है, तब तक हम इतना जुल्म करते हैं कि हमारी गिनती जालिमों मे होती है और इसका जवाब हमें अल्लाह के सामने देना पड़ेगा। हमने अपना बोझ उठाना शुरू किया, उससे जिस्म को तो तकलीफ होती है, लेकिन रूह को खुशी होती है। गरीब भाई हमारे ही साथी हैं। हमारे कुनबे के ही लोग हैं, इस खयाल से दिल मे सुकून पैदा होता है। यह अक्ल हमे कश्मीर ने सिखायी, इसलिए हम कश्मीर के शुक्रगुजार है।

अनन्तनाग
१८-८-'५९

: ५८ :

कश्मीरी अफसरों की जिम्मेवारी

इन पाँच छह सालों में ऐसे सरकारी अधिकारियों के सामने बोलने का मौका मुझे कई दफा मिला है। लेकिन दूसरी जगह और कश्मीर में फर्क है। इसलिए यहाँ के अधिकारियों की कुछ विशेष जिम्मेवारी हो जाती है। ये अधिकारी किसी भी पार्टी के नहीं होते। सरकार चाहे किसी पार्टी की हो, पर अधिकारी स्वतन्त्र ही होते हैं। हिन्दुस्तान में कांग्रेस की सरकार है, केरल में कम्युनिस्टों की सरकार थी। इस तरह सरकार किसी भी पार्टी की हो सकती है, लेकिन सरकारी अधिकारी तो सेवक होते हैं। सेवा के कुछ नियम होते हैं, उनके मुताबिक वे सेवा करते हैं। इसलिए यह मानी हुई बात है कि जितने भी अधिकारी होंगे, वे सब-के सब गैरजानिबदार होंगे।

पार्टीवालों की अपेक्षा आप मेरे नजदीक

फलाना मनुष्य किस मजहब का है या किस जाति का है, यह आपको नहीं देखना है। इन्सान की सेवा इन्सान के नाते करना आपका काम है। इसी प्रकार की सेवा, काम मैं करता हूँ। आप सरकार से तनख्वाह पाते हैं, पर मैं नहीं पाता। लेकिन मैं भी आप जैसा लोगों का खिदमतगार हूँ। वही मेरी हैसियत है। लोग मुझे खिलाते हैं। सीधे लोगों से ही मुझे मिलता है। आप भी लोगों से ही पाते हैं, लेकिन लोग सरकार को देते हैं और फिर सरकार से आप पाते हैं। याने आप लोगों से अप्रत्यक्ष (इन्डाइरेक्टली) लेते हैं, तो मैं प्रत्यक्ष (डाइरेक्टली) लेता हूँ। ऐसी हालत में आपकी और मेरी एक जमात है। जो लोग सियासी पार्टी में हैं, उनसे आप मेरे ज्यादा नजदीक हैं। पार्टीवाले क्या करते हैं? जो लोग

उनकी पार्टी में नहीं होते, उनको वे दूर के मानते हैं—अपना नहीं मानते या अपने खिलाफ मानते हैं। लेकिन जितने लोग होते हैं, उन सबको आप मालिक मानते और उनकी सेवा का काम करते हैं। लोगों से आप यह नहीं पूछते कि "किस पार्टी के है ?" अगर आप पर किसी पार्टी का रोब रहता हो, किसी पार्टी को आपकी सेवा का लाभ मिलता हो, तो आप गलत काम कर रहे हैं, नौकरी ठीक तरह से नहीं कर रहे हैं, यही माना जायगा।

गैरजिम्मेवारों को प्यार से जीते

लेकिन आपका यह काम कश्मीर में मुश्किल है, इसलिए कि ऐसे भी लोग यहाँ पड़े है, जो बिलकुल गैरजिम्मेवार माने जाते है। उनका भी खयाल आप लोगों को रखना पड़ता होगा। इसलिए सावधान रहकर, सजग रहकर सेवा करनी होगी। उनकी भी सेवा आपको करनी है, वैसे वे भी आपकी सेवा के लायक हैं। लेकिन आपको चौकन्ना जरूर रहना होगा। इसीलिए मैंने कहा कि हिन्दुस्तान के सरकारी नौकरों और आपमे फर्क है।

मेरी राय मे ऐसे जो लोग हों, उन्हे हमे प्रेम से जीतना चाहिए। हमारा यहाँ का जो निजाम है, इन्तजाम है, वह अगर अच्छा चलता होगा, तो वे लोग भी प्रेम से जीते जा सकेंगे। डेमोक्रेसी मे अगर हम गरीबों को सुखी न कर सके, तो उसमे लोगों की आज जो मुहब्बत है, वह कायम रहेगी, ऐसा नहीं कहा जा सकता। मिस्र, इराक, फ्रास मे लोगो ने यही देखा। वहाँ डेमोक्रेसी थी और देखते-देखते लश्करशाही आ गयी, क्योंकि वहाँ की डेमोक्रेसी मे गरीबो को सीधी मदद नहीं पहुँचती थी। भ्रष्टा-चार (करप्शन) बढ़ा, तो उस 'करप्ट डेमोक्रेसी' (भ्रष्ट लोकशाही) से 'ऑनेस्ट ओटोक्रेसी' (ईमानदार तानाशाही) को ही लोग ज्यादा पसद करेंगे। लोगो को आपकी 'क्रेसी' से कोई ताल्लुक नहीं। उनकी मुश्कि-लातो को दूर करनेवालो को ही वे चाहते हैं। मैं मानता हूँ कि ऐसे

लोगों को आप प्रेम से जीत सकते हैं। आप अवाम की खिदमत करें और लोगों में वह एहसास पैदा करें कि "हमारी आफत में हमारी हुकूमत भी दौड़े आती है, 'करप्शन' यहाँ बिल्कुल ही नहीं है, गरीबों को सीधी मदद पहुँचती है, बीच में कोई एजेण्ट नहीं है, जो सबसे ज्यादा गरीब हैं, उनको पहले मदद मिल रही है।" ऐसा अगर यहाँ दीखेगा, तो मुझे यकीन है कि आप अवाम को जीत सकते हैं।

गरीबों को आपके लिए यकीन हो

मैं आपका तवज्जुह इस तरफ दिलाना चाहता हूँ कि गरीबों को महसूस हो कि आप उनकी खिदमत में दौड़े जाते हैं, उनकी जिन्दगी आप जी रहे हैं। जैसे आपके लड़कों को पूरा यकीन होता है कि आप जो कुछ काम करते हैं, वह सब उनके लिए ही करते हैं, वैसे ही लोगों को, गरीबों को पूरा यकीन होना चाहिए कि आप उनके खिदमतगार हैं, उनकी मुसीबतों में दौड़े जाते हैं, उनको सरकारी मदद भी पूरी पहुँचा देते हैं। वैसे सरकारी मदद तो आप पहुँचायेंगे ही, लेकिन उन्हें यह भी दीखेगा कि आप अपनी जिन्दगी में उनके लिए कुछ भूदान, सम्पत्तिदान देते हैं, तो उनके मन में एहसास पैदा होगा कि ये हमारे सच्चे खिदमतगार हैं।

लोग दुखी रहे, तो फौजी हुकूमत आयेगी

दूसरी बात मुझे यह कहनी है कि यह जमाना विज्ञान का है। साइन्स के जमाने में 'पॉलिटिक्स' (सियासत) बिल्कुल पिछड़ गयी है। अब सियासत से मसले हल नहीं होंगे। उल्टा वही सबको 'हल' कर सकती है, याने दुनिया को खत्म कर सकती है। सियासत से दुनिया में 'फ्रैक्शन्स' (टुकड़े) ही पड़ते हैं। सब मिलकर समाज को शिक्षित (एज्यूकेट) करते और उससे सरकार पर दबाव पड़ता है, यह जो राजनीतिक सिद्धान्त था, वह अब विज्ञान के जमाने में नहीं रह गया है। इस समय तो जिनके हाथ में हथियार का कब्जा आयेगा, उन्हींके हाथ में सियासत रहेगी।

आपने देखा, जिस दिन अयूब के हाथ मे राज्य आया, उसी दिन कुल राज-नैतिक पार्टियाँ खत्म हो गयीं। याने जिसके हाथ मे ताकत आयेगी, उसके सामने किसीकी कुछ नहीं चलेगी।

पुराने जमाने के जो बादशाह थे, उनके हाथ मे भी इतनी हुकूमत नहीं थी, जितनी आज के शासकों के हाथ मे है। औरंगजेब इतना बड़ा बादशाह था, लेकिन उसका फरमान हैदराबाद के उसके सरदार के पास पहुँचते-पहुँचते दो महीने लग जाते थे। औरंगजेब का फरमान सरदार के पास पहुँचा, उसका 'इण्टरप्रिटेशन' (अर्थ) क्या है, इस पर सोचा और कुछ मतभेद हुआ, तो उसने जवाब ही नहीं दिया। दिया भी तो उसे मन-वाने के लिए औरंगजेब क्या कर सकता था? वह इतना बड़ा बादशाह था, लेकिन उसकी सरदारो पर हुकूमत नहीं चलती थी। सरदारों के हाथ मे ही ज्यादा हुकूमत थी, ऐसा मानना होगा। लेकिन अभी आपने देखा—केरल मे कम्युनिस्टों की हुकूमत थी, वह खत्म हो गयी। कितने मिनटों मे खत्म हुई? दिल्ली में आपने तय किया शाम को छह बजे और उसी दिन शाम को छह बजे उसी मिनट पर वह मिनिस्ट्री खत्म कर दी और वहाँ राष्ट्रपति का शासन जारी हो गया। विज्ञान के कारण इन्सान के हाथ मे इतनी ताकत आ गयी है। इसका मतलब यह हुआ कि जिस किसीके हाथ मे 'सेना की शक्ति' रहेगी, उसके सामने किसीकी कुछ नहीं चलेगी और लोक-तंत्र मे 'नागरिक शासन' खत्म करके 'सैनिक शासन' आने मे देर नहीं लगेगी। यह काम एक मिनट मे हो सकता है। इधर चारों ओर भ्रष्टाचार चलता हो, लोग चिल्लाते हों, गरीबों को राहत न मिलती हो और मन्त्रि-मण्डल हमेशा बदलता हो, तो वहाँ फौरन कुल ताकत मिलिटरी के हाथ मे आ सकती है—फिर लोकतंत्र का परिवर्तन 'सैनिक शासन' मे होते देर नहीं लगती।

लोकशक्ति के अभाव में लोकतंत्र खतरे में

यह ताकत 'साइन्स' की वजह से हाथ मे आयी है। अब आगे पुरानी

राजनीति नहीं चलेगी। इसलिए अब जरूरत प्रत्यक्ष लोकतंत्र (डाइरेक्ट डेमोक्रेसी) की है। याने लोग खुद अपना काम करें। आज सारा कारोबार केन्द्र में है, केन्द्रीय सरकार के हाथ में है। पहले 'पुलिस राज्य' था, अब 'कल्याणकारी राज्य' हो गया है। पहले का राज्य 'टेक्स' वसूली और संरक्षण का काम करता था, लेकिन अब 'कल्याणकारी राज्य' हो गया, तो मजहब, शादी, खेती, तालीम, व्यापार—याने जिंदगी के कुल काम सरकार के हाथ में आ गये हैं। अब या तो बहुत अच्छा राज्य चलेगा या बहुत खराब। खराब राज्य चलेगा, तो लोकतंत्र खतरे में रहेगा और अच्छा कब तक चलेगा? जब तक अच्छे आदमी सत्ता में रहेंगे। याने यह नसीब का खेल हो गया। औरंगजेब आया, तो लोग दुःखी हो गये, अकबर आया, तो सुखी। लोगों के हाथ में कुछ भी नहीं रहा।

प्रातिनिधिक लोकशाही (डेलिगेटेड डेमोक्रेसी) में पाँच साल के लिए लोगों के हाथ में सत्ता आ जाती है। आज के ५ साल याने पुराने जमाने के ५०० साल! हम पाँच साल के लिए आपकी कुल जिम्मेवारी लेते हैं, ऐसा कहा जाता है। याने सब इनके हाथ में है। सैलाब आया, तो वहाँ आफत में मदद करना सरकार का काम है! लेकिन श्रीनगर और अनन्तनाग के लोगों का, नागरिकों का कोई फर्ज है या नहीं? ज्यादा नहीं, तो कम-से-कम कपड़ा इकट्ठा करके तो भेजें! लेकिन नहीं, हम कुछ नहीं करेंगे। जो कुछ करना है, सरकार करेगी। हम हाथ पर हाथ टेककर बैठे रहेंगे। यह है आज की हालत! इससे बचने का उपाय या इलाज यही है कि लोग ज्यादा-से-ज्यादा कारोबार अपने हाथ में ले और थोड़ी-सी मदद ऊपर से मिले। तभी लोकतन्त्र मजबूत रहेगा, नहीं तो वह टिक नहीं सकता।

जम्हूरियत कब महफूज होगी?

मेरा मानना है कि आप लोगों को ऐसी कोशिश करनी चाहिए कि गाँव का मन्सूबा (योजना), कारोबार गाँव ही करे और गाँव में जमीन

की मिल्कियत न रहे। गॉववाले मिलकर तय करें और जमीन की मिल्कियत छोड़ें। उस पर सबका हक हो। गॉव-गॉव अपने पॉवों पर खड़े रहे। सब गॉव अपना जिम्मा उठा ले। गॉव मे बेकार हों, तो उन्हे काम दें। इसमें सरकार थोड़ी मदद करेगी। इस तरह गॉव गॉव जग जायेंगे और अपना कारोबार देखेंगे, तो डेमोक्रेसी महफूज रहेगी। नहीं तो क्या होगा ? ऊपर अच्छे मनुष्य आये, तो लोग सुखी और खराब मनुष्य आये, तो लोग दुःखी होंगे।

आपने देखा--उत्तर प्रदेश मे काग्रेस पार्टी मे टुकड़े-टुकडे हो गये हैं। वहॉ एक झमेला खड़ा हो गया है। उडीसा मे 'गणतन्त्र' नाम की पार्टी है, जो विरोधी दल है और वह किसी तरह आपके कार्यक्रम में निष्ठा नहीं मानती। लेकिन उसे साथ लेकर वहाँ सरकार चलती है। इसलिए हम सुझाते है कि गॉव-गॉव में लोग अपने हाथ में राज्य लें और ग्राम-स्वराज्य बनायें। लेकिन आपके हाथ मे तो 'राष्ट्रपति-शासन' है। राष्ट्रपति का शासन और डिक्टेटरशिप में आप क्या फर्क मानते हैं ? आपके हाथ मे स्टेट का राज्य हो, तो वह खत्म हो सकता है। आज आपका राष्ट्रपति पार्लमेंट को पूछे बगैर कुछ भी नहीं करता और उसे उतनी पावर भी नहीं है और न वह ऐसा शख्स ही है। फिर भी घडीभर के लिए मान लीजिये, राष्ट्रपति ऐसा शख्स हो और उसका सेना पर कब्जा हो और कारोबार भी गलत चल रहा हो, तो डेमोक्रेसी की डिक्टेटरशिप बनने मे देर न लगेगी। दोनों की शुरुआत 'डी' से ही होती है। इसलिए डेमोक्रेसी को 'डीजेनेरेट' (भ्रष्ट) होने से बचाना चाहिए।

दोहरी प्रक्रिया

'डेमोक्रेसी' को यह खतरा सारे एशिया मे है। इसका इलाज अच्छी मदद पहॅुचाना मात्र नहीं। सबसे जो गरीब होंगे, उनको मदद तो पहॅुचानी ही चाहिए। साथ ही साथ उन्हे 'डिपेन्डेन्ट' (परावलम्बी) भी नहीं रखना

चाहिए। जैसे बाप बच्चे को खिलाता पिलाता है, यह उसका पहला फर्ज है, लेकिन उसका दूसरा फर्ज है—बच्चों को अपने पाँव पर खड़ा करना, वैसे ही डेमोक्रेसी में भी दुहरी बात होनी चाहिए। पहली बात है—गरीबों को खिलाना-पिलाना और उन्हें यह महसूस कराना कि राज्य हमारे लिए चल रहा है। और दूसरी बात है—जनता को अपने पाँव पर खड़ा करना। जिन लोगों ने आपको 'पावर डेलिगेट' की है—शक्ति सौंपी है, आप उन्हींको 'पावर रीडेलिगेट' करें—वापस शक्ति सौंप दें।

आज चंद लोगों के हाथ में खेती रहती है, इसलिए गाँवों में भाई-चारा नहीं रहता है। और ऐसी हालत में जब हुकूमत चलती है, गाँव-गाँव में ग्राम-पंचायत होती है, जिनके हाथ में ज्यादह जमीन है, जिनकी सरकार में इज्जत है, ऐसे लोगों के हाथ में सत्ता रहती है। याने डिसेण्ट्रलाइज मनसूबा, चूसने का आपने किया, ऐसा होगा। गाँव-गाँव के लोग चूसे जाते हैं। आज की हालत में गाँव में मसावात लाने की कोशिश हमें करनी होगी। आज वह कोशिश नहीं होती है। सारी पावर सेंटर में होती है। फिर गाँव गाँव में भी ऐसे लोग होते हैं, जो गरीबों को चूसते हैं। तो गाँववाले कहते हैं कि आप ही हमें चूसें, इसके बजाय श्रीनगरवाले चूसें, तो अच्छा है। वे ज्यादह चूस नहीं सकेंगे, क्योंकि वे दूर हैं। इसलिए ऐसे लोगों के हाथ में कारोबार सौंपना, जिनके हाथ में जमीन भी ज्यादा है, पैसा ज्यादा है याने चूसने का साधन देना है। इसलिए कश्मीर में मैं देखता हूँ, ग्राम स्वराज्य बहुत जरूरी है। यह विचार आप लोगों को समझा सकते हैं और इसके लिए आपको इस विचार का मुताला—अध्ययन—करना होगा।

अनन्तनाग
१८-८-'५९

: ५९ :

कश्मीर अपना कपड़ा बनाये

कश्मीर मे जाड़े के दिनों मे छह महीने बर्फ के कारण लोग घरों मे बैठे रहते हैं, कुछ काम नहीं करते। उस वक्त लोगों को कुछ न कुछ काम मिलना चाहिए। यहाँ पर ऊनी कपड़ा ज्यादा बनता है, लेकिन सूती भी इस्तेमाल होता है। मेरा हिसाब है कि हर मनुष्य के लिए सालभर मे बीस रुपये का कपडा लगता होगा। यानी यहाँ की चालीस लाख की आबादी के लिए आठ करोड रुपये का कपडा बाहर से आता है। यहाँ की बेरोजगारी दूर करने के लिए कपडा यहीं बनाना होगा। जम्मू मे कपास होती है। यहाँ कातने का फन भी है और घर-घर मे चरखा पड़ा है। इसलिए यह काम चलना चाहिए।

अच्छाबल

१९-८-'५९

: ६० :

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश !
रूहानियत + विज्ञान = सर्वोदय !!

आज यहाँ कुछ सियासी पार्टी के लोगों से हमारी बातचीत हुई। मैने उनसे कहा कि यह विज्ञान का जमाना है। इस जमाने में अब सियासत में कोई ताकत नहीं रह गयी है। इन्सान के हाथों में नये नये हथियार आ गये हैं। इसलिए अगर फूट और तफरके बढानेवाली सियासत बढेगी, तो इन्सान का खातमा होनेवाला है। पार्टीवाले यह बात महसूस नहीं करते, यह उनकी जहालत है। असली बात तो यह है कि आज नये-नये हथियारो की ईजाद हो रही है और वे हथियार ऐसे खतरनाक हैं कि अगर हमारे तफरके बढें, तो उनकी बदौलत एक दिन दुनिया का खातमा होने की नौबत भी आ सकती है। इसलिए समझदार लोगों को चाहिए कि वे सियासत से दूर रहे, सियासत को दूर करे और रूहानियत से अपने मसले हल करें। मिली-जुली सियासत, जोडनेवाली सियासत चाहिए। आज तक जो सियासत रही, वह जोडनेवाली नहीं, तोड़नेवाली ही रही। इसलिए मैं 'सियासत' यह लफ्ज ही छोड़ देना चाहता हूँ।

नयी पीढ़ियाँ रूहानियत समझेंगी

वे भाई मेरी बात मानते तो थे, फिर भी कहते थे कि एक दफा हमारे सियासी मसले हल हो जायँ, फिर हम रूहानियत को लेंगे। मै उनको समझा रहा था कि जब तक आप रूहानियत का रास्ता न लेकर सियासत का ही रास्ता लेंगे, तब तक आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं। अल्जीरिया, कोरिया, तिब्बत, ताईवान, हिन्दएशिया, कश्मीर—ऐसे कई

मसले हैं! पुराने मसले कायम हैं और नये-नये पैदा हो रहे हैं। इसलिए यह समझ लीजिये कि सियासत से आपके मसले हल होनेवाले नहीं हैं।

मेरी बात उनमें से कुछ लोग समझ रहे थे। वे रूहानियत का नाम लेते थे। रूहानियत का नाम सबको प्यारा है, उनको भी प्यारा था। इस-लिए वे कबूल भी करते थे। लेकिन कबूल करके फिर से अपना टट्टू, अपना घोडा पुरानी राह पर लाते थे। मैंने मजाक में कहा : "तुम मर जाओगे, तो आखिर तुम्हारे लड़के रूहानियत को उठा लेंगे?" वे कहने लगे कि "हमने जो चीज चलायी, वही हमारे लडके भी उठायेंगे।" मैंने कहा : "ठीक है, तुम्हारे लड़के नहीं उठायेंगे, लेकिन तुम्हारे लड़के के लड़के याने तीसरी पीढ़ी रूहानियत को जरूर उठा लेगी। सियासत से मसले हल नहीं होंगे, यह बात उनके खयाल में आ जायगी।" अपनी बात मैं उनको पूरी तरह समझा नहीं सका। मैंने हार मान ली।

बिलकुल नयी बात

लेकिन यह ठीक भी है, मैं एक बिलकुल नयी चीज बोल रहा था। आज सभी जगह पार्टीवाली बात चल रही है। लेकिन अब कुछ लोगों के मन में यह बात आ रही है कि सियासी पार्टियों से काम नहीं बनेगा, इसलिए एक ऐसी स्वतन्त्र जमात चाहिए, जो गैरजानिबदार होकर अवाम की खिदमत करे। आपको मालूम है कि इस समय मैंने अपनी आवाज इस पार्टीवाली सियासत के खिलाफ उठायी है। मैं कहता हूँ कि इसके लिए गाँव-गाँव की मिली-जुली ताकत खडी करनी होगी। हुकूमत विकेन्द्रित करनी होगी, अपनी सारी ताकत रूहानियत की राह पर लगानी होगी और जज्बा पैदा किये बिना चर्चा करके मसले हल करने होंगे। मैं यह एक नयी चीज समझा रहा हूँ।

जयप्रकाश नारायण, केरल के केलप्पनजी, बिहार कांग्रेस के एक प्रमुख नेता वैद्यनाथ बाबू आदि अपनी अपनी पार्टी छोड़कर इस काम में

आये हैं। ऐसे कुछ नाम मेरे पास हैं। फिर भी कई नाम ऐसे भी हैं, जिन पर मैं असर नहीं डाल सका। लेकिन मुझे इस बात का ताज्जुब है कि इतने लोग भी मेरी बात कैसे समझ रहे हैं! मेरी बात को कोई समझता नहीं, इसका मुझे अचरज नहीं होता, बल्कि मेरी बात थोड़े लोग भी क्यों न हो, पर समझते हैं, इसीका मुझे अचरज होता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जो मेरी बात करीब करीब समझते हैं। आज भी वे भाई मेरी बात करीब करीब समझ रहे थे। लेकिन उनका अपना भी कोई खयाल है।

पार्टियों के जरिये खिदमत नहीं होती

समझाना मेरा काम है। उसका नतीजा क्या आता है, इसकी फिक्र मैं नहीं करता। फल को छोड़ना, उसका त्याग करना, यह बात मैं 'गीता' से सीखा हूँ। नतीजा भगवान् पर छोड़ देता हूँ। मैं उसकी फिक्र नहीं करता। कितने लोग मेरी बात समझते हैं और कितने नहीं समझते, यह देखना मेरा काम नहीं है। समझाना और लोगों की खिदमत करना, यह अपना फर्ज तो मैं करता ही हूँ। मैं यह जानता हूँ कि पार्टीवाले लोग भी अच्छी और सच्ची नीयत से खिदमत करना चाहते हैं, लेकिन वे कर नहीं पाते। एक पार्टी खिदमत करने जाती है, तो दूसरी पार्टी उसकी तरफ शक शुबह की निगाह से देखती है। दूसरी पार्टी खिदमत करती है, तो पहली उसकी तरफ शक की निगाह से देखती है। इस तरह देखने का नतीजा यह होता है कि जिनकी खिदमत होनी चाहिए, उनकी खिदमत नहीं होती। सरकार से थोड़ी खिदमत होती है, पर उससे लोगों की ताकत नहीं बन पाती।

जमाना मेरे साथ

मगरीब से जो सियासत आयी, उसने हमे तोड़ा है। पहले से ही यहाँ तफरके, टुकड़े मौजूद थे, मगरीबी सियासत ने और बढ़ा दिये। मजहब के भेद, जबान के भेद, जाति के भेद—इस तरह से तरह-तरह के भेद मौजूद थे। वे इस सियासत के कारण और भी बढ़े। अलग-अलग

पार्टियाँ बनीं। भेदों मे इजाफा हुआ। एक एक पार्टी में भी 'एम्बीशस' (महत्त्वाकांक्षी) लोग होते हैं। वे भी अपना-अपना ग्रूप (गुट) बनाते हैं। एक-एक मन्त्री का अपना एक-एक गुट रहता है। अनेक पार्टियाँ, फिर एक-एक पार्टी के अलग-अलग ग्रूप, ग्रूप के गुट—नतीजा यह होता है कि देश की ताकत नहीं बनती। देश मे अरबो रुपयो का खर्चा बढ रहा है। इसलिए मैं चिल्ला रहा हूँ। इस समय मेरा क्राइंग इन दि वाइल्डरनेस (अरण्यरोदन) चल रहा है। लेकिन मुझे ताज्जुब इस बात का होता है कि इस पर भी लोग मेरी बाते सुनने के लिए आते है और खामोशी से सुनते है। मेरी कुछ बाते कुछ लोगों को जॅचती हैं। इस सबका मुझे ताज्जुब होता है। मै कभी मायूस नहीं होता। मायूस होने का माद्दा मुझमे नहीं है।

मैं लगातार आठ साल से घूम रहा हूँ और लोग मुझे पूछते हैं कि कब तक इस तरह घूमते रहेगे ? मैं उनको जवाब देता हूँ कि जब तक पॉव नहीं टूटेंगे, भगवान् नहीं रोकेंगे और मसले हल नहीं होंगे, तब तक मैं घूमता ही रहूँगा। इतना मै अपने विचार से चिपका हुआ हूँ। मैं लगा-तार सुनाता ही जा रहा हूँ। उसका नाप-तौल नतीजे से नहीं होता। नतीजा परमात्मा पर छोड देता हूँ। यह मेरी सिफत है। अलावा एक और बात है, वह यह कि जमाना मेरे साथ है। यहाँ जितने सियासतदाँ बैठे है, वे सब नादाँ हैं, क्योंकि आनेवाला जमाना मेरा है, उनका नहीं। यह मैं आपको समझाना चाहता हूँ।

फौज के हाथ में सियासत रहेगी

पाकिस्तान मे अयूब आया। उसी वक्त एकदम सभी राजनैतिक पार्टियाँ खत्म हो गयीं, उनके दफ्तरों को ताले लग गये। याने ताकत के सामने सियासत की कुछ नहीं चलती। इसके मानी तो यही हुए कि मॉडर्न मेकनाइज्ड आर्मी (आधुनिक शस्त्रास्त्रसम्पन्न सेना)

जिनके हाथ में रहेगी, कुल सियासत उन्हींके हाथ में जायगी या उनके सामने वह खत्म भी हो सकती है। जाहिर है कि इसके आगे जिनके हाथ में सेना की ताकत रहेगी, उन्हींके हाथों में ये सियासतदाँ भी रहेंगे। इससे उल्टे जो लोग रूहानियत की राह पर चलेंगे, वे उनकी तलवार छीन लेंगे। उनकी तलवार छीनने के लिए इनको अपने हाथ में तलवार उठाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जिनके हाथों में आज तलवार है, उनके दिल और दिमाग में ये रूहानियत की राह पर चलनेवाले लोग बैठेंगे। नतीजा यह होगा कि जिन्होंने अपने हाथों में तलवार उठायी है, वे खुद ब-खुद उन तलवारों को हल बनाने के लिए कारखानों में भेज देंगे।

सियासतदाँ पतझड़-से गिरेंगे

अभी मैं 'आर्मी' वालों के सामने बोलकर आया हूँ। मेरी यह खुश-किस्मती है कि मुझे उनके सामने बोलने का मौका मिला। इसका कारण यह है कि मैं सियासत से अलग हूँ। सियासतवाला कोई हो, तो वह 'आर्मी' के सामने बोलने के लिए नहीं जा सकता, लेकिन मुझे वहाँ जाने दिया। इस पर से आप पहचान लीजिये कि आप कितने नादाँ हैं और मैं कितना दाना हूँ। आपकी और मेरी हैसियत में फर्क है। मैं अपने विचार कहीं भी जाकर समझा सकता हूँ। वैसे ही वहाँ भी मैंने अपनी रूहानियत के विचार उनके सामने रखे। रूहानियत की बात उनको भी जँचती है। मैं मायूस नहीं होता हूँ। इसलिए कि मैं जानता हूँ कि आनेवाला जमाना मेरा है, आपका नहीं है, नेताओं का नहीं है।

आपके जो सियासी पार्टियों के बड़े-बड़े नेता हैं, वे ऐसे गिरनेवाले हैं, जैसे पतझड़! ओले गिरते हैं या बरफ पड़ती है, तब एकदम पतझड़ होती है, वैसे ही ये आपके सब लीडरान एकदम गिरनेवाले हैं, उनका एक ढेर होनेवाला है। लेकिन आज तो इसका भान उन्हें नहीं है। वे गुरूर में हैं।

हुकूमत का डण्डा उनके हाथ मे है। वे डण्डा उठाते हैं, इसकी मुझे कोई तकलीफ नहीं है। मैं तो उनके पास जाता हूँ, अपनी बातें सुनाता हूँ और वे मेरी बाते सुनते है। आपके बड़े-बड़े नेता भी मेरी बात सुनते हैं। मेरी बात उनको जॅचती भी है, लेकिन वे उसे अमल मे नहीं ला सकते। इसलिए नहीं कि वे उन्हे नहीं चाहते, बल्कि इसलिए कि वे एक बहाव मे बहे जा रहे हैं। इस बहाव से बाहर निकलना उनके आपे के बाहर की बात है। वे घोड़े पर बैठे है, लेकिन लगाम उनके हाथ मे नहीं है। वे 'वोटरों' की तरफ देखते है और 'वोटर' उनकी तरफ देखते हैं। उनके हाथ मे क्या है? सारा दारोमदार वोटरों के हाथ मे है। बूढा बाप कहता है कि मेरा काम बेटे के बिना नहीं चलता और बेटा भी कहता है कि मेरा बूढे बाप के बिना नहीं चलता। आखिर अल्लामियाँ बाप को जब छुड़ायेगा, तब वह छुटेगा।

सियासत+साइन्स=सर्वनाश, रूहानियत+विज्ञान=स्वर्ग

आज इन सियासतदॉ का बड़ा जोर है। लेकिन आप देखेंगे कि एक वक्त ऐसा आयेगा, जब जिन हाथों ने एटम बम बनाया, वे ही हाथ उन बमों को तोड़ेंगे और लोगों की खिदमत मे लगेंगे। मेरा तो कहना है कि यह समझ लेना चाहिए कि जितने लोग सियासत से अलग रहकर रूहानियत का आसरा लेंगे, पनाह लेंगे, वे ही लोग साइन्स के जमाने मे टिकेंगे। साइन्स के जमाने मे रूहानियत मार्गदर्शन देगी और साइन्स रफ्तार बढायेगा। मोटर मे एक यन्त्र राह दिखानेवाला होता है और दूसरा यन्त्र रफ्तार बढानेवाला। साइन्स आपकी जिन्दगी की रफ्तार बढायेगा और रूहानियत जिंदगी को दिशा दिखायेगी। इस तरह दोनों की ही मदद से आपकी जिंदगी चलेगी। अगर सियासत बीच मे आयेगी और जिंदगी मैं दखल देगी, तो आपकी मोटर गड्ढे मे जायगी। मैं आपके सामने एक समीकरण रखता हूँ—

सियासत + विज्ञान = सर्वनाश
रूहानियत + विज्ञान = बहिश्त

रूहानियत और विज्ञान एक हो जायँ, तो दुनिया मे बहिश्त (स्वर्ग) आयेगा, यह आप खूब समझ लीजिये। साइन्स का फायदा उठाना है, उससे काम लेना है, तो उसके साथ रूहानियत को जोड़ना होगा और अगर उसका फायदा न उठाना हो, उसके बदौलत मर मिटना हो, तो बीच मे सियासत लानी चाहिए।

अवाम को तबाह करनेवाले चुनाव

लेकिन इन्सान इस तरह नाहक खत्म होना नहीं चाहता। पर होता क्या है? अलग-अलग पार्टी के लोग एक दूसरे से मिलते भी नहीं। चुनाव आता है, तब एक पार्टी के लोग अवाम से कहते है कि तुम हमे चुनकर दो, तो हम तुम्हे जन्नत मे ले जायँगे। दूसरी पार्टी को चुनकर दोगे, तो वह तुम्हे जहन्नुम मे ले जायगी। ठीक इसी तरह दूसरी पार्टीवाले भी अवाम से बोलते हैं। याने अवाम के सामने एक दूसरे को गाली देना, नुक्ताचीनी करना ही उनका प्रोग्राम रहता है। फिर आपस मे टकराते हैं। मेरा राज चला, तो वे मुझसे टकराते है, उनका राज चले, तो मैं उनसे टकराता हूँ। इस तरह होता है, तब बीच मे अवाम तबाह हो जाती है। फिर आपके देखते-देखते मिलिटरी का राज आ जाता है।

हर देश मे फौजी हुकूमत

आप देखते है, आज अमेरिका मे मिलिटरी का राज है। वहाँ का मुखिया मिलिटरी-मेन (सैनिक) है। फ्रान्स मे मिलिटरी का राज है। जिस फ्रान्स मे रूसो, वोल्टेर जैसे लोग हो गये, जिस फ्रान्स ने दुनिया को रूहानियत सिखायी, उसी फ्रान्स मे आज एक आदमी का राज है, देगाल! क्या मिस्र मे और क्या इराक मे, बर्मा मे भी एक आदमी के हाथ मे राज चल रहा है। रूस मे क्रुश्चेव का राज चल रहा है। क्रुश्चेव और

उनका प्यारा दोस्त—दोनों मिलकर हिन्दुस्तान आये थे। याने एकदम डबल नेता आये थे। हमने बडे प्यार से उनकी आरती उतारी, जयदेव-जयदेव—ऐसी आरती की। बडा भव्य स्वागत किया। वे दोनों प्यारे थे, सच्चे दोस्त थे। लेकिन एक ने दूसरे को खत्म कर डाला। अब ख्रुश्चेव दुबारा हिंदुस्तान में आयेगा, तो अकेले आयेगा, वह दूसरे को साथ में नहीं लायेगा। तब भी हम उसकी आरती उतारेंगे। उसे भी कोई खत्म करने-वाला निकलेगा, तब वह भी नहीं रहेगा। लेकिन राज वहाँ एक ही आदमी का चलेगा। यही बात 'पार्टी' में भी होती है।

पार्टी का राज्य : चंद लोगों का राज्य

जैसे फौज का राज होता है, वैसे ही मान लीजिये, एक पार्टी भी चुन-कर आये, तो उसी पार्टी का याने उसके चन्द लोगों के हाथ में ही राज रहेगा। कहीं कांग्रेस चुनकर आयी, तो कहीं कम्युनिस्ट चुनकर आये। ४० की 'मेजॉरिटी' से चुनी हुई पार्टी रहती है। कोई बिल जानेवाला हो, तो पार्लमेंट में आने के पहले पार्टी मीटिंग बुलाती है और उसमें उसे १९ विरुद्ध २१ के बहुमत से पास किया जाता है। बिल पार्लमेंट में आने तक १९ लोग उसके खिलाफ वहाँ नहीं बोल सकते हैं। कारण, पार्टी का अनु-शासन होता है, ह्विप (सचेतक) होता है। पार्टी की जो राय होती है, उसके खिलाफ नहीं बोल सकते। याने पहले ४० प्रतिशत का राज था, अब २१ प्रतिशत का है। उन २१ प्रतिशतवालों में भी तीन चार लोग ऐसे होते हैं, जो वह बिल लाने में प्रमुख होते हैं। उनकी राय से ही सब बातें चलती हैं। अगर उनकी कोई न माने, तो वे धमकाते हैं। आखिर धमकाकर वह बिल पास कर लेते हैं। मतलब यह कि आखिर सारा दारोमदार दो-चार मुख्य लोगों पर ही रहता है। पुराने जमाने में यही था। अकबर आया, तो राज अच्छा चला, लोग सुखी थे। औरंगजेब आया, तो लोग दुःखी बने थे। बक्शीजी आये, तो लोग सुखी, नहीं तो दुःखी। इसीलिए मैं कहता हूँ कि आगे का जमाना साइन्स का जमाना है। साइन्स के

जमाने में मार्गदर्शन करने का सियासत का हक नहीं, रूहानियत का है। अब सियासत की कुछ नहीं चलेगी। वह अगर कुछ करेगी भी, तो गलत मार्गदर्शन करेगी और मोटर जोरों से गड्ढे में जा गिरेगी।

मेरा काम पैगाम पहुँचाना

कश्मीर में मुझे इसी बात की फिक्र है, यही समस्या मेरे सामने है कि मेरे यहाँ से चले जाने के बाद यहाँ का काम कौन करेगा ? यह काम कौन जारी रखेगा ? क्या कोई ऐसा गैरजानिबदार, खिदमतगार निकलेगा ? अगर कोई ऐसा निकलेगा, तो यहाँ के लोगों की खिदमत होगी, काम होगा। अगर कोई नहीं निकलेगा, तो मैं अल्लाह की इबादत करूँगा। कुरानशरीफ में कहा है : "अलैकल् बलागुल मुबीन्" "तेरे पर जिम्मेदारी बलग की है, याने पैगाम पहुँचाने की जिम्मेदारी तेरे पर है और हमारे पास हिसाब है।" मैंने आपके पास पैगाम पहुँचा दिया है। मैं बिल्कुल दिल खोलकर पैगाम पहुँचा रहा हूँ। अब मार्गदर्शन कौन करेगा ? रूहानियत। ताकत कौन देगा ? साइन्स। रूहानियत और विज्ञान, इन दोनों के अलावा तीसरी कोई चीज इसके आगे नहीं चलेगी।

कुकरनाग

२०-८-'५९

नया कश्मीर और नया इन्सान

आप देख रहे हैं कि 'नया कश्मीर' बन रहा है। सरकार की तरफ से योजना बन रही है। बहुत पैसा खर्च किया जा रहा है, हजारों नौकर काम कर रहे हैं। गाँव-गाँव में डेवलपमेण्ट ब्लॉक, कम्युनिटी प्रोजेक्ट वगैरह चल रहे हैं। कहीं सड़कें, स्कूल, मकान बन रहे हैं, तो कहीं कुछ कारखाने खोले जा रहे हैं। कहीं कुछ, तो कहीं कुछ! नित-नया कुछ बन हो रहा है। जैसे कोई मन्दिर या मस्जिद बनती हो, वैसे ही लगातार पाँच दस साल से अपना देश बन रहा है। दस वर्ष पहले आये हुए टूरिस्ट अगर अब फिर यहाँ आयेंगे और यहाँ के फोटो खींचेंगे, तो उन्हे कुदरत जैसी की तैसी ही दीख पडेगी। लेकिन अभी यहाँ जो इन्सानों ने बनाया है, उसमे बहुत फर्क दिखाई पड़ेगा। पहले जहाँ काश्त नहीं थी, वहाँ आज काश्त हो रही है। कुछ नये पेड लगाये हैं, बड़ी नदियों की नहरें बनी हैं। इस तरह बिलकुल नयी दुनिया दीखेगी।

क्या नया इन्सान बन रहा है?

हर सूबे मे निर्माण का बहुत बड़ा प्रयत्न हो रहा है, वैसे यहाँ भी हो रहा है। लेकिन क्या नया समाज बन रहा है? नया इन्सान बन रहा है? क्या पुराने दिमागवाले पुराने इन्सान मे कुछ फर्क पड रहा है? क्या कुछ नयी कद्रें (वैल्यूज) बन रही हैं? अगर इन सब सवालों का जवाब 'नहीं' है और आज भी अगर वे ही पुराने झगडे, फिरकापरस्ती, सगदिली, छोटे-छोटे जज्बात हैं, तो फिर मकानात, खेती और सड़कों मे फर्क होने से क्या होगा? वैसे तो सैलाब आये या जलजला हो जाय, तब भी बहुत फर्क पडेगा! अस्सी फी सदी मकानात वगैरह ढह जायेंगे और फिर नयी दुनिया बसानी होगी। पर नया बसा लेने से क्या हुआ? कुदरत, मकानात, कपडे पहनने का ढग

आदि सब बदला, लेकिन दिल और दिमाग में कोई बदल नहीं हुआ, तो इतना ही होगा कि पुराने जमाने में जो झगड़े छोटे पैमाने पर होते थे, वे अब साइन्स की वजह से बड़े पैमाने पर होंगे। पहले की लड़ाइयों में उधर ४० और इधर ५० लोग होते थे, फिर इधर ४००, उधर ५००, तो अब इधर ४ लाख, तो उधर ५ लाख होंगे। आगे की लड़ाइयों में इधर ४० करोड़ और उधर ५० करोड़ लोग होंगे, यानी एशिया के खिलाफ यूरोप इस तरह खड़े होंगे।

इन्किलाब कब आयेगा ?

दिल और दिमाग में फर्क न पड़ने से इन्सान की जिंदगी में इन्किलाब नहीं आ सकता। इन दिनों 'इन्किलाब जिंदाबाद' कहा जाता है। इसके मानी यह है कि मकान गिराने और नये खड़े करने की जो ताकत उसके हाथ में थी, वह इसके हाथ में चली आयी। लेकिन यह कोई इन्किलाब नहीं है। रूस में कम्युनिज्म आया, तो क्या हुआ ? जार के हाथ में जो ताकत थी, उससे क्रुश्चेव के हाथ में क्या कम है ? जार गया और स्टालिन आया। अब स्टालिन गया और क्रुश्चेव आया। दो साल पहले यहाँ बुलगानिन और क्रुश्चेव आये थे। उनकी खूब पूजा-अर्चा हुई। उन पर फूल चढ़ाये गये, नैवेद्य चढ़ाया गया, आरतियाँ उतारी गयीं। जितनी पूजा अमरनाथ की होती है, उतनी ही उन दोनों की हुई। उसके बाद उन दोनों में मुखालिफत हुई, तो अब बुलगानिन का पता ही नहीं है। पहले राजाओं के जमाने में भी यही था।

रूहानी ताकत नया इन्सान बनायेगी

इन्किलाब तब होता है, जब प्यार से दिल बदलता है। इसलिए माना कि दुनिया बदल रही है, दस साल पहले का कश्मीर आज नहीं रहा है, लेकिन दिल और दिमाग वही रहा, तो इन्किलाब नहीं होगा।

भूदान ग्रामदान में छोटे पैमाने पर लोगों के दिल बदलने की कोशिश

हो रही है। दिल और दिमाग मे तब्दीली लाकर उन्हे नया बनाया जा रहा है। यह कोशिश छोटी है, लेकिन राह नयी है। पुरानी राहें सब उखड़ गयी हैं। हम नयी राह बना रहे हैं। आज कश्मीर की सरकार कुछ काम करती है, लेकिन गाँव-गाँव के लोग क्या करते हैं ? क्या वे मिल-जुलकर काम करने लगे हैं ? जमीन की मिल्कियत मिटाने लगे हैं ? अपना मन्सूबा बनाने लगे हैं ? अगर यह सब होता है, तो नया इन्सान बनेगा, नहीं तो नयी दुनिया बन जायगी, तब भी नया इन्सान नहीं बनेगा। सरकार की तरफ से जो काम किया जाता है, उससे नयी दुनिया बनती है, लेकिन नया इन्सान नहीं बनता। नया इन्सान बनाने का काम वे करते हैं, जो रूहानी ताकत को पहचानते हैं। माली हालत बदलने की बात बाहर की चीज है। अन्दर की चीज बदलनी हो, तो रूहानी ताकत चाहिए। नयी राह पर चल-कर रूहानी ताकत बढ़ाने की हमारी यह एक छोटी-सी कोशिश हो रही है।

जोड़नेवाली ताकत : रूहानियत

हर इन्सान मे ताकत पड़ी है। अगर हम ताकतों को जोड़ना चाहते हैं, सबकी ताकतें इकट्ठा करके नया समाज बनाना चाहते हैं, तो जोड़नेवाली तरकीब चाहिए। जोड़नेवाली तरकीब सियासत या मजहब नहीं हो सकती है, रूहानियत ही हो सकती है। मैंने मजहब और रूहानियत मे जो फर्क किया है, उसे समझने की जरूरत है। मजहब पचास हो सकते है, लेकिन रूहानियत एक ही हो सकती है। मजहब, सियासत, जबानें चन्द लोगों को इकट्ठा करती है और चन्द लोगों को अलग करती हैं। लेकिन रूहानियत कुल इन्सानों को एक बनायेगी। इसलिए आप इस तहरीक की तरफ माली तब्दीली लानेवाली तहरीक की निगाह से मत देखिये, बल्कि अखलाकी और रूहानी तरक्की की निगाह से देखिये, तभी इसकी असलियत आपको मालूम होगी और आपके दिल का रुझान उसकी तरफ होगा।

कूकरनाग
२०-८-'५९

: ६२ :

रूहानियत और मजहब

एक भाई ने बहुत अच्छा सवाल पूछा कि मजहब और रूहानियत में क्या फर्क है ?

रूहानियत और मजहब एक नहीं

कल हमने कहा था कि सियासत तोड़ती है, रूहानियत जोड़ती है। रूहानियत मजहब से अलग चीज है। मजहब हर जमाने में, हर कौम के लिए और हर समय के लिए एक नहीं होता, पर रूहानियत एक होती है। जैसे प्यार करना, सच बोलना, रहम रखना रूहानियत है, वैसे ही अल्लाह की इबादत करना भी रूहानियत है। लेकिन अल्लाह की इबादत के लिए घुटने टेकना, मगरीब की या मशरिक की तरफ मुँह करके इबादत करना, ये सब मजहब हैं। अल्लाह के लिए दिल में भक्ति रखो, अल्लाह को हमेशा याद करो, अल्लाह की फिक्र रखो—यह रूहानियत है। ये सारे जो मजहब हैं, वे रूहानियत की तरफ ले जाने के लिए हैं।

दहन और दफन की मिसाल

सीढ़ियाँ बनायी गयी हैं। इन्सान सीढ़ी पर चढ़ा, लेकिन बीच में ही अड़ा रहा, तो ऊपर पहुँचने के बजाय बीच में ही रुक जाता है। जो चीज मजहब के लिए बनायी गयी है, वह इन्सान को एक हद तक मदद पहुँचाती है और बाद में रुकावट डालती है। मूरख लोग यह नहीं समझते और मजहब के नाम से झगड़ते हैं। वे नहीं समझते कि मजहब ही बदलता है, रूहानियत नहीं। मरने के बाद दफनाना चाहिए या दहन करना चाहिए ? हिन्दू होगा तो दहन करेगा, मुसलमान होगा तो दफनायेगा—यह सब हो गया मजहब। लेकिन हिन्दू हो, मुसलमान हो या

दूसरा कोई भी हो, अपने मरे बाप की लाश अपने घर मे नहीं रखेगा। बल्कि बाइज्जत उसे भगवान् के हवाले कर देगा। यह ठीक है कि किसीके भी मरने पर भगवान् की इबादत करनी चाहिए, उसकी दुआ माँगनी चाहिए, ताकि वह मरे हुए को ताकत दे, शान्ति दे। परन्तु उस मरनेवाले को परमेश्वर के हवाले मिट्टी के जरिये करना या आग के जरिये करना, यह दूसरी बात है! दिल्ली जाना है। जाने के लिए ५-१० रास्ते हैं। जिस किसी भी रास्ते से जायँ, मुकाम पर तो पहुँच ही जायँगे। जलाना हो या दफनाना, जिस किसी भी तरीके से हो, लाश परमेश्वर के पास पहुँचानी है। परमेश्वर के पास पहुँचाना रूहानियत है और दफनाना या दहन करना मजहब है।

किताबपरस्ती

मजहब के तरीकों मे कभी-कभी फर्क होता है। इसीलिए कभी-कभी मजहबवाले नाहक झगड़ते हैं। जैसे कभी-कभी जबान के, जाति के, सूबे के, मुल्क के झगड़े होते हैं, वैसे ही मजहब के भी झगडे होते हैं। मै नहीं समझता कि ऐसे झगड़े क्यों होने चाहिए! कहा तो है एक शायर ने कि "मजहब नहीं सिखाता आपस मे बैर रखना।" लेकिन मजहब के काम से ही झगडे होते हैं। मजहब से ही जज्बा पैदा होता है। कुरानशरीफ मे यह आता है कि "हरएक जमात, उसके पास जो चीज पड़ी है, उसी पर फख्र करती है।" मुझे लोग पूछते है: "क्या आप कुरानशरीफ पढ़ते है?" मैं कहता हूँ "जी हाँ।" फिर पूछते है: "क्या आप उन आयतों पर चलते है?" "जी नहीं।" क्योंकि जिस आयत से मुझे जितना लेना होता है, उतना लेता हूँ। मगर मै किसी आयत का, गीता का, कुरानशरीफ का, बाइबल का या किसी भी किताब का बोझ नहीं उठाता। बाजार मे जो चीज देखता हूँ और उसमे से जो जँचती है, उसे ले लेता हूँ। किसी चीज को पूरा पूरा लें या पूरा छोड़े, यह मैं कबूल नहीं करता।

यह बात मजहबवालों मे होती है। वे बुतपरस्ती नहीं चाहते, लेकिन किताबपरस्त जरूर हो जाते है। वे किताब के बारे मे कुछ ज्ञान जानते तो नहीं हैं। अभी मने सुना और देखा। एक जगह से मुझसे पण्डित लोग मिलने आये थे। वे वेद नहीं पढ सके। वेद न समझना ठीक है, क्योंकि वह बहुत कठिन चीज है। किन्तु पढते समय तलफ्फुज भी ठीक नहीं करते थे। ऐसी हालत है इनकी। इस पर भी कितनी जिद रखते हैं। वे किताब को पकड़े रहते हैं, उसे सिर पर उठाये रहते हैं।

किताब से मुफीद चीजें लें

समझना चाहिए कि किताब और धर्मशास्त्र इन्सान के लिए होते हैं या इन्सान उनके लिए? किताब मे से ऐसी ही चीज लेनी चाहिए, जो अपने लिए मुफीद हो, उपयोगी हो। मान लीजिये, दवा की किताब है। उसमे हर तरह की बीमारी की, मर्जों पर दवा बतायी है। पर क्या वह सभी दवा मुझे लेनी ही चाहिए? नहीं, मेरे मर्ज के लिए जिसकी जरूरत हो, वही लेनी चाहिए। किताब मे पचासों चीजें होती हैं। उनमे से कुछ ही ऐसी होती हैं, जो सबके लिए हैं। उसीका नाम है रुहानियत। जैसे—एक-दूसरे को हक पर चलने के लिए हिदायत दो, मदद करो, एक-दूसरे को रहम रखने के लिए सिखाओ। हक, सब्र, मुहब्बत—ये बातें सबको लागू होती हैं। पारसी, यहूदी, ईसाई, हिन्दू, मुसलमान आदि सभी धर्म-वालों पर भी लागू होती हैं। इसीका नाम है रुहानियत।

मजहब बाहरी और रूहानियत अंदरूनी चीजों के लिए

कुछ लोग रात मे फाका करते हैं, कुछ लोग दिन मे। कुछ लोग ऐसे हैं, जो रात मे कभी नहीं खायेंगे। जैसे जैन। जैन लोग शाम को सूरज डूबने से पहले खा लेंगे। वे कहते हैं कि रात मे चूल्हा जलाने से जन्तु, कीड़े आदि जीव मरते हैं। मुसलमान रोजा रखते हैं। वे रात में खायेंगे, दिन मे नहीं। इसीका नाम है मजहब। लेकिन अपने पर जब्र

रखने के लिए फाका करना—यह है रूहानियत ! जियारत के लिए मक्का जाना, अजमेर जाना या काशी, अमरनाथ जाना, यह सब मजहब है, लेकिन कभी-कभी घर छोडकर खिदमत के लिए बाहर निकलना रूहानियत है। मैं काशी गया, वहाँ भी मुझे खुशी हुई। अजमेर गया, वहाँ भी खुशी हुई। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है, मैं वहाँ-वहाँ जाता हूँ और वहाँ मुझे खुशी होती है, बहुत ताकत मिलती है। कुछ लोग ऐसे मूरख होते हैं, जो अमरनाथ की यात्रा मे जानेवालो को देखकर कहते हैं कि ये लोग कितने मूरख हैं और कुछ अजमेर जानेवालों को देखकर कहते हैं कि ये कितने मूरख है। ऐसा नहीं होना चाहिए। जहाँ-जहाँ जियारत की जगह है, वहाँ-वहाँ जाना चाहिए। बुजुगो ने जो राह बतायी है, उस पर चलो, बुजुर्गों की सेवा करो, उनकी बातें सुनो—यह सब रूहानियत है। मजहब बाहरी चीजों के लिए आदेश देता है, रूहानियत अन्दर की ताकत बढाती है।

मजहब आहिस्ता ले जाता है

मजहब का मतलब है—इन्सान को रूहानियत की तरफ ले जाना। दोनों एक ही चीज की तरफ जाते हैं। लेकिन कुछ लोग रास्ता नहीं जानते, इसलिए मजहब उनको आहिस्ता-आहिस्ता ले जाता है। रूहानियत एकदम रोशनी डालती है। सही चीज क्या है और क्या नहीं, रूहानियत एकदम बताती है। मजहब क्या करता है ? अधा समझकर इन्सान को हाथ पकडकर धीरे-धीरे ले जाता है। 'इधर चलो' या 'उधर चलो' ऐसे रास्ता बताता है। यह मुल्ला है, यह ब्राह्मण है, यह गुरु है, इनके पीछे चलो—यह सब मजहब सिखाता है। रूहानियत एकदम रोशनी देती है। वह कहती है, देखो, तुम्हारे और अल्लाह के बीच और कोई भी नहीं है। मजहब कहता है, अल्लाह के पास पहुँचना है, तो बीच मे कोई एजेण्ट चाहिए। फिर चाहे वह पुरानी किताब हो या पुरानी मूर्ति ! मन्दिर मे जाना हो या मस्जिद मे,

गुरु की बात सुनो या किताब की। मजहब में किताब, मन्दिर, मस्जिद यह सब आता है, तो अल्लाह और इन्सान के बीच परदा खड़ा हो जाता है। रूहानियत कहती है कि तेरा अल्लाह के साथ सीधा ताल्लुक है, बीच मे कोई एजेण्ट नहीं है। मजहब और रूहानियत मे यही भेद है।

मैं अल्लाह को पकड़ता हूँ

मैं गीता, जपुजी, कुरानशरीफ, बाइबल पढता हूँ। लोग कहते हैं, तुम किसी एक किताब को पकड़ो। मे कहता हूँ कि मैं किसी एक किताब को नहीं पकड़ता। अल्लाह को ही पकड़ता हूँ। वह चीज मुफीद है, वह मुझे हर चीज में मिल ही जाती है। कुरान मे कहा है : उम्मतु वाहिद। यानी दुनिया के नबियों, ऋषियों और वलियों को अल्लाह कहता है कि तुम्हारी सबकी कौम एक ही है। लेकिन लोगों ने फिरके बनाये हैं। हर कोई समझता है कि हमारी चीज अच्छी है। लेकिन अल्लाह ने नबियों से कहा है कि तुम्हारी कौम एक ही है।

रूहानियत एक ही है

अल्लाह को न भूलना, अल्लाह पर प्यार करना, झूठ न बोलना, सच बोलना—यह रूहानियत है। रूहानियत हमारे लिए एक ही है। मजहब गलत हो सकते हैं, अलग-अलग भी हो सकते हैं और अच्छे भी हो सकते हैं। लेकिन रूहानियत सबके लिए एक ही होती है और वह अच्छी ही होती है।

कुकरनाग
२१-८-'५९

: ६३ :

कश्मीर में क्या देखा ?

कश्मीर-वादी का हमारा यह आखिरी मुकाम है। हम कल फिर जम्मू-विभाग मे प्रवेश करेंगे और अगर परमात्मा ने चाहा, तो एक महीने के बाद पजाब मे प्रवेश करेंगे। कश्मीर-वादी मे हमने चालीस दिन बिताये। यहाँ हमे जो तजुर्बे हुए, लोगो का थोड़ा-सा अन्दाजा हुआ, उसका थोड़ा सा हिस्सा अभी मै आपके सामने रखूँगा।

दिलों को जानने की कूवत

आज हम भाई सादिक (डी० एन० सी० के नेता) से बाते कर रहे थे। उन्होंने कहा कि "आप अगर दस लोगों से मिले हों, तो सौ का अन्दाज़ा लगा सकते हैं, क्योंकि हिन्दुस्तान मे बहुत लोगों के साथ आपका ताल्लुक आया है और आपको यह कूवत हासिल है कि आप लोगों के दिलों को समझ सकते हैं।" सादिकसाहब ने जो बात कही, वह सही है। इस आठ साल के दौरान मे हिंदुस्तान के करोड़ों लोगों ने हमारी बातें सुनी हैं और करोड़ों के साथ हमारा ताल्लुक आया है। इससे ज्यादा लोगों के साथ ताल्लुक बहुत थोडे लोगों का आया होगा और इतना भी बहुत थोड़े लोगों का ही आया होगा। इसके अलावा कुछ ऐसी हालत होती है कि जिस शख्स का किसी फिरके से, पार्टी से, मजहब से लगाव नहीं होता और जो सबकी तरफ गैरजानिबदारी से देखता है और अल्लाह के साथ भी अपना ताल्लुक रखता है, ऐसे शख्स को थोड़े में बहुत कुछ जानने की सिफत हासिल होती है, जो हमे हासिल हुई है।

कश्मीरियों की सौम्य प्रकृति

कश्मीर-वादी मे हम सैलाब की वजह से सब जगह नहीं जा सके।

फिर भी जो देखा और सुना, उसका हम पर काफी असर हुआ है। यहाँ के हालात का कुछ अंदाजा हुआ है। पहली बात तो यह है कि कश्मीर-वादी में, संस्कृत मे जिसे 'सौम्य प्रकृति' कहते हैं, वैसी हालत है, याने यहाँ के लोगों का मिजाज ठंडा है, गर्म नहीं है। यह एक बड़ी ताक़त है, ऐसा हम मानते हैं। खासकर साइन्स के जमाने मे दिमाग ठंडा होना चाहिए। दिल में जोश होना चाहिए और दिमाग मे होश। हमने यह भी देखा कि यहाँ हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, सिख वगैरह सब जमातों के आपसी ताल्लुक़ अच्छे ह। बिगाड़नेवाले चन्द लोग दुनिया मे हर जगह होते हैं, वैसे यहाँ भी हैं, लेकिन बहुत कम। यहाँ आपस का मेल-जोल अच्छा है। दिल वसी (व्यापक) है। लोगों में मेहमाननवाजी है। यहाँ जितनी कुदरत खूबसूरत है, उतना ही दिल भी खूबसूरत है, इसका हम पर बहुत असर हुआ है। यह असर लेकर हम हिन्दुस्तान में जायँगे और कहेंगे कि कश्मीर के लोगों का दिमाग ठंडा है, वे मिलनसार हैं। कुछ दिमाग ऐसे होते हैं, जिन पर अच्छी चीज का अच्छा असर होता है, कुछ दिमाग ऐसे होते हैं, जिन पर अच्छी चीज का खराब असर होता है और कुछ दिमाग ऐसे होते हैं, जिन पर अच्छी चीज का ज्यादे अच्छा असर होता है। इस तीसरी किस्म मे हम कश्मीर-वादी के लोगों की गिनती करते है। यह जो हमारा तजुर्बा है, उससे हमे बड़ी खुशी होती है।

गुर्बत मिटाने की जरूरत

दूसरी बात है यहाँ की गुर्बत, जिससे हमे बड़ा सदमा पहुँचा है। हमे जो-जो जगह खूबसूरत जगह के तौर पर दिखायी गयी, वहाँ हमने बहुत गुर्बत देखी, इसलिए वे हमे बदसूरत मालूम हुई। लोलेन, गुलमर्ग, पहलगाँव—इन सब जगहों पर हमने जो गुर्बत देखी, उससे हमारे दिल को सदमा पहुँचा है। यह गुर्बत हिन्दुस्तान मे है और एशिया के

बहुत सारे हिस्सों में भी है। हमें इसका मुकाबला करना है। इसके लिए सभी लोगों को मिल-जुलकर अपनी ताकत लगानी होगी, पार्टियों के खयाल छोड़ने होंगे। ऐसा करना पार्टीवालों के लिए बड़ा मुश्किल है। एक पार्टीवाला सोचता है कि सैलाब का मुकाबला करने के काम मे हम दूसरी पार्टीवालों की मदद लेंगे, तो उनकी इज्जत बढ़ेगी और दूसरा भी इसी ढग से सोचता है। इसलिए अच्छे काम भी हम अकेले-अकेले ही करते हैं। एक-दूसरे की नीयत पर हमे शक होता है, इसलिए एक साथ काम करना मुश्किल हो जाता है। जम्हूरियत मे भी हम एक-दूसरे पर एतबार नहीं करते। बिना एतबार के सहयोग नहीं हो सकता। नतीजा यह होता है कि गुर्बत मिटाने के काम में जितनी ताकत लगानी चाहिए, उतनी नहीं लगा सकते।

गुर्बत हो, तो जम्हूरियत नहीं रहेगी

हमे समझना चाहिए कि जहाँ गुर्बत नहीं मिट सकती, वहाँ अवाम को सियासी बातों मे दिल्चस्पी नहीं होती। आप देख रहे हैं कि दुनिया के मुख्तलिफ मुल्कों में, जहाँ जम्हूरियत (लोकशाही) का ख्याल था, वहाँ से भी जम्हूरियत हट रही है—जैसे फ्रान्स, हिन्दएशिया, बर्मा। ऐसा इसलिए होता है कि वहाँ के मसले हल करने मे वहाँ की स्टेट कामयाब नहीं हुई। पाकिस्तान, मिस्र, इराक—इन सब मुल्कों में एक शख्स के हाथ मे कुल ताकत आयी है। रूस मे तो ख्रुश्चेव के हाथ मे कुल ताकत है ही, लेकिन जो स्टेट जम्हूरियत के नाम से चलायी जाती है, वहाँ भी हुकूमत चन्द लोगों के हाथ में है। जहाँ हद दर्जे की गुर्बत होती है, वहाँ लोगों को सियासत की शक्ल के बारे मे दिल्चस्पी नहीं हो सकती। इसीसे जम्हूरियत हटती है।

जमीन का मसला हल नहीं हुआ

तीसरा असर हम पर यह हुआ कि यहाँ की स्टेट ने सीलिंग का कानून बनाया, लेकिन जमीन का मसला हल नहीं हुआ है। कानून से जो कुछ

जमीन मिली, वह मुजारों में बाँटी गयी। बेजमीन जैसे-के-तैसे ही रह गये। अगर लोगों के पास जाकर हम बेजमीनों के लिए जमीन माँगते हैं, विचार समझाते हैं, तो लोग समझने के लिए राजी हैं और दिल खोलकर दान देने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन लोगों के पास विचार लेकर पहुँचनेवाले कारकून बहुत कम हैं। करीब करीब नहीं के बराबर हैं। यह हालत दर्दनाक है, खौफनाक है। अगर कारकून होते और वे जगह-जगह पहुँचते, तो यहाँ भूदान के काम में बहुत ज्यादा कामयाबी हासिल होती।

फिजा ग्रामदान के हक में

चौथा तजुर्बा यह है कि यहाँ का मसला ग्रामदान से हल होगा। हवा, पानी के समान जमीन भी सबकी बने। गाँव के लोग मिल-जुलकर काम करें। ग्रामदान की बात समझने का माद्दा यहाँ के लोगों में है। अगरचे यहाँ अब तक एक भी ग्रामदान जाहिर नहीं हुआ है, तो भी ग्रामदान के लिए यहाँ की फिजा तैयार है। मैं मानता हूँ कि यहाँ सैलाब आदि जितने मसले हैं, वे तभी हल होंगे, जब गाँव में मुश्तरका मिल्कियत होगी। इसका मतलब यह नहीं कि मुश्तरका खेती की जाय। खेती तो गाँव के लोग जैसी चाहें, करें। लेकिन शख्सी मिल्कियत न हो, अवाम की मिल्कियत हो। मैंने बार-बार कहा है कि जब हम यह दावा करते हैं कि हम जमीन के मालिक हैं, तो अल्लाह के साथ शिर्कत करते हैं। इसलिए यह दावा करना कुफ्र है। जमीन का मालिक अल्लाह ही हो सकता है। यह बात यहाँ के लोगों के दिल में बैठती है, इसलिए यहाँ की फिजा ग्रामदान के हक में है।

सबको हमारी बात जँची

हमारे दिल पर एक असर यह रहा है कि यहाँ की कुल की कुल सियासी जमातों ने हमारे सामने दिल खोलकर अपने खयालात रखे। नेशनल कॉन्फ्रेन्स, डेमॉक्रेटिक नेशनल कॉन्फ्रेन्स, महाज रायशुमारी,

पॉलिटिकल कॉन्फ्रेन्स, प्रजा-परिषद्, शिया, रिफ्यूजी, हरिजन, इस्लामिया जमात, इन सभीने हमारे साथ दिल खोलकर बातें कीं। मुझ पर इसका यह असर रहा कि चन्द भाइयो को छोडकर सबको मेरी यह बात जँची है कि आपस-आपस मे ताकत टकराने से मसले हल होने के बजाय नये-नये पैदा होते चले जायँगे। इसलिए जरूरत इस बात की है कि जितनी बातों पर मुत्तफिक राय है, उन पर सभी एक होकर मिल-जुलकर काम करे। मुझ पर यह एक बहुत अच्छा असर रहा कि यहाँ के बिलकुल 'एक्सट्रीम व्यूज' वाले लोग भी हमारी बात समझ सकते हैं, उस पर सोच सकते हैं।

पार्टियाँ एक हों

मुझ पर एक असर यह रहा है कि अब, जब कि बक्शीजी ने जाहिर किया है कि सुप्रीम कोर्ट और इलेक्शन कौंसिल का 'ज्यूरिसडिक्शन' यहाँ लागू होगा, इससे यहाँ की मुख्तलिफ पार्टियों को एक होने मे माकूल फिजा (अनुकूल वातावरण) तैयार हुआ है। हमने पार्टीवालों से भी बातें की हैं कि वे सहयोग करने की दिशा मे सोचें।

रूहानियत को समझने की ताकत

हमारे दिल पर और एक असर यह रहा है कि हमने जिस किसी शख्स से या फिरको से बातें कीं, उन सबका दिमाग यह मानने के लिए तैयार है कि मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से ही हल होंगे। इस बात को हमने बार-बार कहा है। यह हमारा यकीन है, अकीदा है, उसूल है, तजुर्बा है। दुनिया के बड़े बड़े सियासतदाँ यह नहीं समझ सकते। मुझे कहना पड़ता है कि आगे की दुनिया मे उनकी गिनती नादाँ में होने-वाली है। वे इसे भले ही न समझे, लेकिन यहाँ के लोग इसे समझे हैं, इससे मुझे बडी खुशी हुई। मैं मानता हूँ कि यह बात समझे बगैर साइन्स के जमाने मे इन्सान और इन्सानियत की तरक्की कतई नहीं हो सकती।

असीम प्यार

आज यहाँ की एक (सियासी) जमात के भाई मुझसे मिले, जिनके और मेरे विचारों में बहुत फर्क है। उन्होंने मेरे विचार समझने की कोशिश तो की ही, पर उन्होंने मुझ पर जो प्यार बरसाया, उसका मैं बयान नहीं कर सकता। यही होना चाहिए। हम भले ही विचार में मुख्तलिफ हों, लेकिन हमारे दिल जुड़े हों। हम भाई-भाई के जैसे रहें। एक भाई का विचार दूसरे भाई के विचार से अलग हो सकता है। दिमाग अलग अलग रहें, यह अच्छा ही है। उससे यह होता है कि एक के विचार में जो खामी है, वह दूसरे के विचार से पूरी हो सकती है। लेकिन प्यार में कमी नहीं होनी चाहिए। यहाँ सब मजहबवालों ने, सब फिरकों ने, सब जमातों ने मुझ पर जो प्यार बरसाया, उसका बयान लफ्जों में करना नामुमकिन है। उसके लिए मैं सबका शुक्रगुजार हूँ। मेरा दिल सबके प्यार से भरा है।

हमारी बात दिमाग को चुभे, दिल को नहीं

अगर हमारी जबान से यहाँ कुछ ऐसी बात निकली हो, जिससे किसीके दिल को सदमा पहुँचा हो, तो हम मुआफी चाहते हैं। हमारा दिल बिलकुल खुला है। हम किसीके दिल को जरा भी तकलीफ देना नहीं चाहते। हम चाहते हैं कि हमारी बात किसीके दिल को न चुभे, पर सभी के दिमाग को जरूर चुभे, ताकि जो दिमाग 'डल' बन गये हैं, वे सोचने लग जायें। जो शख्स रोज ३-४ दफा बोलता है, उसके बोलने में बावजूद इसके कि वह न चाहे, कोई ऐसा शब्द निकल सकता है, जिससे किसीके दिल को सदमा पहुँचे, किसीका दिल दुखे, उसके लिए मैं मुआफी चाहता हूँ और आप सबको बड़ी अदब के साथ प्रणाम करता हूँ।

वेरीनाग
२२-८-'५९

: ६४ :

कश्मीर की ऊँची तमद्दुन

सब लोग जानते हैं कि कश्मीर एक पुराना देश है। भारत जितना पुराना है, कश्मीर उससे कम पुराना नहीं है। वितस्ता (झेलम), चन्द्र-भागा (चिनाब)—इन नदियों के नाम दस हजार साल पहले की किताबों मे आते हैं। इन्हीं नदियों के किनारे बहुत पुराने जमाने से इन्सान रहता आया है। यहाँ एक के बाद एक तहरीकें हुई। लोग इधर से उधर, उधर से इधर आये-गये, अनेक राजा महाराजा, बादशाह खड़े हुए और गिरे, जिनका कोई हिसाब नहीं है। इन हजारों सालो की तवारीख देखते हैं, तो कहते हैं कि यहाँ हिन्दू, बौद्ध, पठान, मुगल और डोग्राओं का राज्य हुआ। कितने लोग आये और गये, इसका तो कोई हिसाब ही नहीं है। फिर भी लोग यहाँ पुश्त-दर-पुश्त रहते आये हैं, यह बात तय है।

दुःख की तरह ही सुख की बर्दाश्तगी

कश्मीर मे तकलीफें बहुत हैं और खूबसूरती भी खूब है। बर्फ के मौसम मे यहाँ तकलीफ होती है और दूसरे मौसम मे खूबसूरत मजर देखने को मिलते हैं। दोनों को बर्दाश्त करते हुए यहाँ के लोग जिन्दगी बसर करते हैं। सुख और दुःख दोनों बर्दाश्त करने होते हैं। दुःख को बर्दाश्त करने की बात लोग समझते हैं, लेकिन सुख को बर्दाश्त करने की बात नहीं समझते। सुख भी बर्दाश्त करना होता है। दुःख एक मिकदार से ज्यादा बढ़ा, तो खतरा है और सुख भी एक मिकदार से ज्यादा बढा, तो खतरा है। सुख भी ज्यादा हुआ, तो मनुष्य दिमाग खो बैठता है। जिन देशो में बहुत ऐशो-आराम की जिन्दगी बनी, वहाँ इन्सान गिरने लगा है और जहाँ बहुत तग हालत हुई, वहाँ भी वह जी नहीं सका है।

यहाँ के लोग जाहिल नहीं

यहाँ के लोग सुख और दुःख को बर्दाश्त करते गये। इतने सारे तजु-

रबे यहाँ के लोगों को हुए हैं, इसलिए यहाँ के लोग पढ़े-लिखे भले ही न हों, लेकिन उनमें गहरा इल्म भरा हुआ है। वह इल्म तजुरबे से हासिल होता है और पुश्त-दर-पुश्त चला आता है, यानी बाप से बेटे को मिलता है। इसलिए यहाँ के लोग जाहिल नहीं हैं, वे एकदम किसीके बहकावे में नहीं आते है। उनकी जिन्दगी धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, इसलिए ये पिछड़े हुए दीख पडते हैं। खासकर बाहर के लोग यहाँ आते हैं, तो कहते हैं कि यहाँ के लोग आगे बढ़े हुए नही हैं। इसमें कोई शक नहीं है कि ये लोग दूसरों को लूटने के काम मे आगे बढ़े हुए नहीं हैं। ये नहीं जानते कि दूसरों को कैसे लूटना, चूसना और अपना बोझ दूसरों पर कैसे लादना? ये अपना बोझ खुद उठाते हैं। इसीलिए जाहिल या अज्ञानी कहे जाते हैं। लेकिन ये ईमानदार हैं, नेक हैं, अपने दोनों हाथों से काम करके जीना पसन्द करते हैं।

धर्म की अफीम शराब से तो बेहतर है

जिनका कुदरत के साथ ताल्लुक है, जो थोडे मे तसल्ली कर लेते हैं और थके-माँदे होने पर भी भगवान् का नाम लेते हैं, वे पिछड़े हुए लोग नहीं हैं। अपने देश के बड़े शायर रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने कहा है कि यूरोप का मजदूर दिनभर काम करके थक जाता है, तो थकान मिटाने के लिए रात को शराब पीता है और हिन्दुस्तान का मजदूर दिनभर की थकान मिटाने के लिए रात को भगवान् का भजन करता है। इसमे शराब पीने-वाले की तमद्दुन ऊँची मानी जायगी या अल्लाह का भजन करनेवाले की? हमने कश्मीर में कई दफा लोगों को मस्त होकर गाते हुए सुना है। वे गाते समय दुनिया का सुख-दुःख बिलकुल भूल जाते हैं।

कम्युनिस्टों ने कहा कि धर्म अफीम है। ठीक है, इसे अफीम कहो, लेकिन यह न भूलो कि अफीम और शराब पीकर थकान मिटानेवाले की तमद्दुन से अल्लाह का जिक्र, भजन करनेवाले की तमद्दुन बेहतरीन है।

हर कोई देगा

मिल-जुलकर काम करने की और बाँटकर खाने की बात हम समझाते

है, तो कश्मीर के लोग समझते हैं। लेकिन उनके पास जाकर समझानेवाले ही नहीं मिलते हैं। समझानेवालो से मैं कहता हूँ कि हरएक के पास जाकर माँगो, तो मिलेगा। लेकिन वे माँगने की हिम्मत ही नहीं करते हैं। क्योंकि उनके पास भी माल-माया पड़ी है। इसलिए वे कुछेक बड़े लोगों के पास जाते हैं। वे गरीब के पास जाकर यह कहने की हिम्मत नहीं करते कि हमसे भी कोई गरीब है, जिसके लिए कुछ-न-कुछ देना हमारा फर्ज, धर्म है। अगर वे ऐसी हिम्मत करेंगे, तो कश्मीर मे हर कोई दान देगा। यहाँ के लोगों के दिल मे प्यार है।

अंग्रेजी और कश्मीरी

जब हम कश्मीर के लोगों की तरफ देखते हैं, तो उनकी तमीज मे कोई कमी नजर नहीं आती है। हमदर्दी मे, जबान से भगवान् का नाम लेने मे, हाथ से काम करने मे वे किससे कम है? तो उनमे कमी क्या है? कहा जाता है कि ये लोग अग्रेजी नहीं जानते हैं, यही बड़ी कमी है। ये अग्रेजी नहीं जानते, तो अग्रेज लोग कश्मीरी नहीं जानते। उनकी जबान अग्रेजी है, तो इनकी कश्मीरी है। उनके लिए अग्रेजी काफी है, तो इनके लिए कश्मीरी काफी है। लल्लेश्वरी ने कश्मीरी मे गाने लिखे, जिनका अग्रेजी तर्जुमा हमने पढ़ा, तो हमें अचरज मालूम हुआ। एक औरत ६०० साल पहले कश्मीरी जबान मे इतने ऊँचे विचार लिखती है, तो वह जबान कमजोर नहीं मानी जायगी। कश्मीर के लोग बड़े तजुरबेवाले है, दस हजार साल के पुराने हैं। इसलिए हमे यह खयाल कतई नहीं करना चाहिए कि ये लोग पिछड़े हुए हैं।

ज्ञानी सबके पास पहुँचे

यह बात ठीक है कि यहाँ के लोगों के पास दुनिया का इल्म कम है, वह जरा इधर-उधर जाने से ही बढेगा। हमारे स्पीकर साहब (कश्मीर असेम्बली के स्पीकर, जो मीटिंग मे हाजिर थे) अभी यूरोप गये थे, तो क्या वे यहाँ के सभी लोगो से कहेंगे कि तुम भी यूरोप चलो! क्या इतने सारे

लोग यहाँ से उठकर यूरोप जायँगे ? क्या वे बेकार हैं, उनके पास कोई काम नहीं है ? इसलिए स्पीकर साहब का काम है कि वे गाँव-गाँव जाकर समझायें कि यूरोप में लेने लायक क्या चीजें हैं ! किसीने कोई अच्छी किताब पढ़ी, तो उसका फर्ज है कि गाँव-गाँव जाकर लोगों को उस किताब की अच्छी बातें सुनाये, ताकि सबकी आँखों को किताब पढ़ने की तकलीफ न हो। जैसे गाय घास खाकर, पचाकर बछड़े को दूध पिलाती है, वैसे ही हम किताबें पढ़ें और पचाकर लोगों को इसका दूध याने निचोड़ दें, तो लोगों को बगैर तकलीफ के ज्ञान, इल्म मिलेगा।

एक जमाना था, जब इस देश में बड़े बड़े ज्ञानी, फकीर, नबी, वली पैदल घूमते थे और घर घर जाकर लोगों को ज्ञान देते थे। जैसे गाय के थनों में दूध भरा हुआ हो, तो वह दौड़ी जाती है और बछड़े को दूध पिलाती है, वैसे ही ज्ञानी सबके पास जाते थे। लेकिन आज सारा ज्ञान कॉलेजों और युनिवर्सिटियों में पड़ा है, लोगों के पास नहीं पहुँचता। पैसा देकर कॉलेजों, युनिवर्सिटियों में जाते हैं, उन्हींको ज्ञान मिलता है। जिनकी मेहनत-मशक्कत से हमने इल्म हासिल किया, उन्हें हम इल्म वापस नहीं देते हैं, तो यह हरामखोरी है। इन दिनों तो जो ज्ञानी हैं, वे श्रीनगर या दिल्ली में रहते हैं, वे गाँवों में नहीं जाते। अगर वे गाँव-गाँव और घर घर जाकर ज्ञान पहुँचाते, तो कितना ज्ञान फैलता और कौड़ी का भी खर्चा नहीं होता।

हम कश्मीर के बाशिंदे नहीं हैं, न कश्मीरी जबान ही जानते हैं। फिर भी यहाँ आने पर कभी भूखे नहीं रहे। यहाँ के लोगों ने हमें खिलाया। ज्ञानी गाँव-गाँव जायँ, तो लोग उन्हें खिलाने के लिए तैयार हैं। लेकिन वे जाते नहीं, शहर में रहकर अपना ज्ञान बेचते हैं।

तजुरबेकार लोग

इसलिए यहाँ के लोगों के पास इल्म नहीं है, यह कहना उन लोगों के लिए अच्छा नहीं है, जो इन्हीं लोगों के पैसे से इल्म पा चुके हैं। मैंने आपके पैसे से इल्म पाया है और आपको ही मूरख कहूँ, यह कहाँ तक

ठीक होगा ? यहाँ के लोग दस हजार साल के तजुरबेकार हैं। इनके पास अगर इल्म कम है, तो जिनके पास इल्म है, उनका फर्ज है कि इनके पास जायँ और सिर झुकाकर, इनके पाँव छूकर कहे कि आपने हमे पढाया, तो अब हम आपके पास इल्म पहुँचाने आये हैं।

आज बाबा की तारीफ की जाती है कि वह गाँव-गाँव घूमता है। लेकिन बाबा की लायकी सिर्फ इसीलिए साबित हो रही है, क्योंकि दूसरे लोग नालायक हैं, वे गाँव-गाँव मे घूमते नहीं। बाबा के जैसे सैकड़ों लोग घूमने चाहिए। बाबा ऊँचा नहीं है, वह खिदमतगार है।

वह पहाड़ से ज्यादा ऊँची है !

कल एक भाई दान देने आये थे, जिनकी औरत ने उन्हे दान देने के लिए कहा था। उस औरत ने किसी अखबार मे एक फोटो देखा, जिसमे बाबा किसीका हाथ पकडकर कठिन रास्ते से गुजर रहा था। वह फोटो देखकर उस बहन को लगा कि यह शख्स गरीबों के वास्ते इतनी तकलीफ उठाता है, इसलिए इसे जमीन न दें, तो ठीक नहीं होगा।

जिस औरत को वह तसवीर देखकर अन्दर से यह सूझ आयी कि हमें गरीबों के वास्ते कुछ करना चाहिए, उसकी तमद्दुन मे कुछ कमी है ? मैं मानता हूँ कि बाबा पीर-पचाल की १३॥ हजार फुट की ऊँचाई पर चढ़ा था, उस पहाड़ से भी उस बहन की ऊँचाई ज्यादा है। इसलिए ये लोग पढे-लिखे नहीं हैं, गँवार हैं, ऐसा सोचने का ढग ही गलत है। आपके लिए मेरे दिल मे बहुत प्यार और इज्जत है। मैं आपको नीच नहीं मानता हूँ। आप अल्लाह के बन्दे हैं, नेक है, हाथ से मेहनत करके रोटी कमाते हैं, इसलिए आप ऊँचे हैं। अल्लाह को याद कीजिये। गरीबों के लिए गरीब को भी कुछ करना है, यह सोचकर दिल की रहम को बाहर लाइये। आपकी तमद्दुन बहुत ऊँची है।

रामसू
२५-८-'५९

: ६५ :

सियासत की आखिरी छटपटाहट

मुझसे यहाँ सभी सियासी जमातवाले मिलते हैं। आज मुझसे 'नेशनल कान्फरेन्सवाले' और 'महाज रायशुमारी' (प्लेबिसाइट फ्रण्ट) वाले मिले थे। उन्होंने मुझसे बहुत प्यार से बातें कीं।

रायशुमारीवालों ने मेरी बात मान ली

रायशुमारीवालों ने दिल खोलकर बातें कीं। मुझे इसकी बहुत खुशी है कि वे महसूस करते हैं कि "इस शख्स के सामने दिल खोलने में जरा भी खतरा नहीं। यह शख्स हमारा दोस्त है। इसके साथ हम दोस्ताना ढंग से बातें कर सकते हैं, यह हमें सही सलाह देगा।"

मैंने उनसे कहा कि साइन्स के जमाने में कौमें, मुल्क नजदीक आ रहे हैं और एक दूसरे को एक-दूसरे के बारे में दिलचस्पी पैदा हो रही है। इस हालत में मसले सियासत से हल नहीं होंगे, रूहानियत से ही हल होंगे। उन्होंने मेरी इस बात को तसलीम किया। मैंने उनसे कहा कि सियासी मसलों को छोड़ दो और गाँव को एक बनाने में, गाँव की एक स्टेट बनाने के काम में लगो। आखिरी सूरत—जो बहुत दूर की नहीं, बल्कि नजदीक की ही है—में इधर गाँव की स्टेट, ग्राम स्वराज्य रहेगा, जो बुनियाद होगी और उधर दुनिया की स्टेट होगी। इसीलिए हम 'जय जगत्' कहते हैं। बाकी सूबे, मुल्क वगैरह जो बीच की कड़ियाँ होंगी, वे ग्रामस्वराज्य और दुनिया की हुकूमत को जोड़नेवाली कड़ियाँ होंगी। सारी इक्तसादी और असली ताकत गाँव की हुकूमत के हाथ में रहेगी और अखलाकी ताकत दुनिया के मरकज में रहेगी। अगर हम ऐसा नहीं करते, तो दुनिया का खात्मा होनेवाला है। अब या तो दुनिया प्यार से एक बननेवाली है, जिसकी बुनियाद ग्रामराज्य होगा और शिखर दुनिया का मरकज

होगा या दुनिया मिटनेवाली है। यह हम ध्यान मे नहीं लेंगे, छोटी-छोटी सियासत ही मन मे रखेंगे, तो समझना चाहिए कि इस जमाने मे हम बिलकुल गये-बीते, पुराने जमाने के लोग साबित होंगे।

यही बात मैं सबको दिल खोलकर सुनाता हूँ और हर पार्टीवालों को खूब फटकारता भी हूँ। लेकिन वे समझते हैं कि इस शख्स के मन मे अपने लिए प्यार है, इसलिए इसकी फटकार में भी प्यार ही भरा है। यही बात मैंने आज रायशुमारीवालों से कही। अभी तक ऐसा कोई शख्स यहाँ नहीं आया, जो 'हार्ट टू हार्ट टॉक' (दिल खोलकर बातें) करता हो, धीरज से समझाता हो, सब कुछ सुनता हो। रायशुमारीवालों ने भी यही महसूस किया। उनका प्यार देखकर मुझे बडी खुशी हुई। हर सोचने-वाला इस बात को समझता है कि हम दिल के साथ दिल जोडने की बात करते हैं, तभी दुनिया टिक सकती है। यह रूहानियत से ही होगा, सियासत से नहीं।

हमें दो काम करने हैं

हमे दो काम करने है : १. रूहानियत से मसले हल करने की तरकीब ढूँढ़नी है और दुनिया का रूहानी इन्तजाम करना है, जिसमे इधर गॉव की स्टेट और दुनिया की स्टेट हो और बाकी सब बीच की जोडने-वाली कडियाँ हो जायँ।- २ इक्तसादी (आर्थिक) हालत के बारे मे अलग-अलग जमात या कौम के लिए नहीं सोचना चाहिए। किन्तु कुल जमात के बारे मे, गॉव के बारे मे सोचना चाहिए। इसलिए मैं शरणार्थी, हरिजन वगैरह लोगों से कहता हूँ कि तुम यह मत सोचो कि हम शरणार्थी हैं या हरिजन, बल्कि यह समझो कि हम सब एक हैं। जैसे गुरु नानक ने कहा था : 'आयी पंथी सकल जमाती' कुल दुनिया मे हमारी एक ही जमात है, वैसे ही बरतना सीखो और छोटे-छोटे मुतालबे, छोटे-छोटे खयाल छोड दो।

भगवान् इन लीडरों से बचाये !

मुझे यह कहने मे बड़ा दुःख होता है कि पजाब के सिखों की ताकत टूट रही है। गुरुद्वारे की भी इस्टेट बन गयी है और उसे हथियाने की कोशिश चल रही है। जम्हूरियत का एक ढकोसला, ढोंग चल रहा है, जिसकी वजह से गुरुद्वारे मे भी चुनाव होंगे और उससे फैसले होंगे। प्यारे भाइयो, क्या कभी धर्म मे भी चुनाव हुए हैं? क्या गुरु नानक को मेजॉरिटी ने चुना था? सिख-विचार जिसके दिमाग को सूझा, क्या उसे ५१ प्रतिशत लोगों ने वोट दिया था और ४६ उसके मुखालिफ गये थे? ये सियासी पचड़े, सियासत मे भी तकलीफ दे रहे हैं, इसलिए मैं उन्हें वहाँ से हटाने की बात कर रहा हूँ। क्या वे धर्म मे भी आने चाहिए? मैंने सिख भाइयों से कहा है कि आप गुरुद्वारे मे जाते समय सियासत के जूते बाहर छोड़कर जाइये। लेकिन आज तो सब लोग सियासी जूते ही लेकर गुरुद्वारे मे जा रहे हैं। तोबा! तोबा!! भगवान् इन लीडरों से दुनिया को बचाये। दुनियाभर के लीडरों की एक जमात बन रही है, जो दुनिया को बिलकुल गुमराह कर रही है। अभी पजाब मे जो चल रहा है, उससे मेरे दिल को बहुत दुःख होता है। वह धर्म को ऊँचा ले जाने का रास्ता नहीं, बल्कि नीचे गिराने का रास्ता है। अब तो हमे यह करना चाहिए कि सब जमातें इकट्ठा बैठकर भगवान् की इबादत करें। मगर आज सिखों मे ही दो टुकड़े हो रहे हैं और गुरुद्वारे तक मे कत्ल होती है, यह सब आप क्या सुन रहे हैं?

एक ही सच्चा पंडित दुनिया के लिए भारी

कश्मीर में शिया लोग और कश्मीरी पण्डित मेरे पास आकर शिकायत करने लगे कि हमे यह हक हासिल नहीं, वह हक हासिल नहीं, हमारी हालत गिरी हुई है। मैंने पंडितों से कहा कि तुम पडित हो, पंडितों की हालत कभी गिरी हुई हो सकती है? अगर हम दरअसल मे पंडित हैं, तो एक पंडित एक बाजू और दूसरे दस हजार लोग दूसरी बाजू हों, तो भी पंडित को कोई पर्वाह नहीं। लेकिन दिमाग में अक्ल न हो और सिर्फ नाम के ही

पडित हों, तो कैसे चलेगा ? मैंने यह सुनाया, तो वे दुःखी हो गये। मैंने कहा कि दुःखी मत होओ, तुम बिलकुल महफूज हो। यहाँ अगर तुम सबकी खिदमत करने में लग जाते हो, तो तुम्हे किसी प्रकार की कमी नहीं रहेगी। फिर तुम जो माँगोगे, वह मिलेगा ही।

सियासत मरने की तैयारी में

इस साइन्स के जमाने मे 'मेरी-मेरी' मत कहो, 'हमारी' कहो। जो 'मेरी-मेरी' कहेगा, उसकी ताकत टूटेगी। 'हमारी' कहनेवाले की ताकत बढ़ेगी। रूहानियत पुराने जमाने से ही यह कह रही है कि 'मेरी-मेरी' छोड़ो और 'हमारी' कहो। अब साइन्स भी वही बात कह रहा है। जहाँ रूहानियत और साइन्स दोनों एक होकर यह बात कह रहे हैं, वहाँ 'मेरी-मेरी' कहनेवाला शख्स कैसे टिकेगा ? कोई भी शख्स बहाव के खिलाफ तैरकर कहाँ जा सकेगा ! दो-चार हाथ तैरेगा, लेकिन फिर डूब जायगा। इसलिए समझना चाहिए कि अब जमाना सियासत का नहीं, बल्कि रूहानियत और साइन्स का मिला-जुला जमाना है। रूहानियत की साइन्स के साथ कोई मुखालिफत नहीं है। जैसे मोटर मे दो किस्म की मशीनें होती हैं, एक दिशा दिखानेवाली और दूसरी रफ्तार बढानेवाली, वैसे ही अपनी जिन्दगी मे भी दो तरकीबों की जरूरत है। दिशा दिखाने का काम रूहानियत करेगी और रफ्तार बढ़ाने का काम साइन्स करेगा।

अब सियासत के हाथ मे कुछ भी शक्ति नहीं रहेगी। यह सियासत मरने की तैयारी मे है। इस समय यह मरते-मरते छटपटा रही है। हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, तिब्बत, कोरिया, बर्मा, इराक, मिस्र आदि जो जगह-जगह उलझनें पैदा हो रही हैं, वह सब सियासत की आखिरी छटपटाहट है। सियासत मरनेवाली है, इसीलिए ये सब उलझनें जारी हैं। अब जो कोई सियासत टिकाये रखने की कोशिश करेगा, वह भी उसके साथ ही मरनेवाला है।

इंजन साइन्स का, पटरी रूहानियत की

कुछ लोगों का खयाल है कि बाबा बिलकुल पुराने दकियानूस औजार

लेकर गाँव में काम करना चाहता है। लेकिन यह बिल्कुल गलत बात है। मैं तो चाहता हूँ कि गाँव में 'एटॉमिक एनर्जी' आवे, जो विकेन्द्रित हो। मैं उसकी इन्तजार में हूँ। मुझे साइन्स का कतई डर नहीं है। मैं चाहता हूँ कि साइन्स का इंजन जोरदार चले। हमारी जिन्दगी की ट्रेन बहुत रफ्तार से बढ़े, लेकिन उसके लिए पटरी रूहानियत की हो। इन्जन साइन्स का हो, लेकिन ट्रेन किस पटरी पर चले, यह इन्जन नहीं बतावेगा, यह अक्ल उसे नहीं है। इसलिए मैं साइन्स के इन्जन के साथ रूहानियत की पटरी चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि इस तरह गाँव का, मुल्क का और दुनिया का मन्सूबा बने। इस मन्सूबे के दो पहलू होंगे १. रूहानियत और २. साइन्स।

मैं उम्मीद करता हूँ कि आज यहाँ आया, तो काम हुआ और कल चला गया, तो खत्म नहीं होगा, बल्कि आज से काम शुरू होगा। जब तक हर शख्स ने कुछ-न-कुछ न दिया हो, तब तक आराम मत लो। यह समझो कि हर शख्स देनेवाला है। जिसने आज नहीं दिया, उसने इसीलिए नहीं दिया, क्योंकि वह कल देनेवाला है। जो शख्स आज नहीं मरा, वह इसीलिए नहीं मरा, क्योंकि कल मरनेवाला है और जो कल नहीं मरेगा, वह इसीलिए नहीं मरेगा, क्योंकि परसों मरनेवाला है। हर शख्स मरनेवाला है, यह तय है। वैसे ही यह तय है कि हर शख्स देनेवाला है, इसलिए कि यह जमाने का तकाजा है। जो परमात्मा मुझे घुमा रहा है, वही हर शख्स को जगाने वाला है। इसलिए तुम प्यार से हरएक के पास पहुँचो और विचार समझाकर माँगो। जिसने दिया, उसे प्यार से सलाम करो और जिसने नहीं दिया, उसे भी प्यार से सलाम करो। यह समझो कि भगवान् दुबारा उनके पास जाने का मौका देनेवाला है। मेरी यह जबान अपनी डायरी में लिख रखो कि हर शख्स देनेवाला है, दिये बगैर किसीको चारा नहीं है, क्योंकि इन्सानियत माँग रही है, रूहानियत माँग रही है, साइन्स माँग रहा है।

बटोत

२९-८-'५९

: ६६ :

रूहानियत की राह

[चपियाडी मे भारत सरकार की तरफ से पाकिस्तान से छुडाकर लायी हुई लडकियों की एक सस्था है, जहाँ विनोबाजी का निवास था ।]

ये बहनें !

आज यहाँ पर हमने लड़कियों से बहुत बातें कीं । हमे उम्मीद है कि वे जिन्दगी मे इसे कभी नहीं भूलेंगी और इस पर अमल करने की कोशिश करेंगी । इन लडकियों मे ज्यादातर ऐसी हैं, जिनके भाई, बाप या चाचा मारे गये । इन बहनों मे से कई बहने ऐसी हैं, जिनके पति मारे गये । वे सब बेकसूर, बेगुनाह मारे गये । किसीका कोई कसूर नहीं था, लेकिन १२ साल पहले जब यहाँ कबाइलियों का हमला हुआ, तब मीरपुर, मुजफ्फराबाद, पूँच, बारामुल्ला के इलाके मे वे सारे लोग मारे गये थे । अब ये लडकियाँ यहाँ रखी गयी है, इन्हे तालीम दी जा रही है स्टेट की तरफ से । इन्हे मदद दी जा रही है और काम करनेवाली काबिल बहनें इनकी खिदमत मे हैं । एक बहन ने हमे उसके हाथ पर जो गोली के निशान थे, वे दिखाये । जब हम हमलावर के उस हमले को याद करते हैं, तो हमे लगता है कि किसीकी किसीके साथ कोई अदावत नहीं थी । जो सियासत के पीछे पागल होते हैं, वे ही लोगों को बहकाते हैं और फिर लोगों में लड़ाई-झगड़े होते हैं ।

सियासी नेताओं से बचो

पिछली लड़ाई मे दो करोड़ लोग मारे गये थे । आपके कश्मीर की आबादी ४० लाख है, तो यही समझो कि ऐसे पाँच कश्मीर बर्बाद हो गये ।

यूरोप के मुल्कों के हर परिवार में कोई-न-कोई मरा है या जख्मी हुआ है। जैसे पतंग लड़ानेवाले होते हैं, वैसे ही सियासत लड़ानेवाले लड़ाकू लोग भी होते हैं। वे लीडर, नेता कहलाते हैं और लोगों को बहकाते रहते हैं। जब तक लोग जाहिल रहेंगे और नेताओं के बहकावे में आयेंगे, तब तक दुनिया की यही हालत रहेगी। इसीलिए मैं हमेशा लोगों से कहता रहता हूँ कि तुम पार्टी पॉलिटिक्स से अलग रहो। दुनिया में इनसे बदतर कोई चीज नहीं है। ये सियासतदाँ हमेशा लड़ानेवाले, नफरत पैदा करनेवाले, फसाद फैलानेवाले होते हैं। ये एक-दूसरे की तरफ शकशुबह की निगाह से देखते हैं, कहीं किसी पर एतबार नहीं रखते हैं। तोबा! तोबा!! दुनिया बेजार है इन लीडरों से! हमने आज ही पेपर में पढ़ा कि चीन और हिन्दुस्तान के बीच कशमकश शुरू हुई है। दोनों देशों के नेता इकट्ठा बैठकर बात करके मसले हल कर सकते हैं, लेकिन वे बैठते नहीं हैं।

अयूबखाँ की घोषणा

आज हमने पेपर में एक खुशखबरी पढ़ी कि अयूबखाँ ने कश्मीर के मुतल्लिक कहा है कि "हम हिन्दुस्तान पर कभी हमला करनेवाले नहीं हैं। हमें अगर हमला ही करना होता, तो पहले ही करते।" मैं जानता ही था कि वे हमला करनेवाले नहीं हैं, हमला करना उनके लिए नामुमकिन है। एक खेत का किसान पड़ोसी के खेत पर कब्जा कर ले, यह अलग बात है, लेकिन हिन्दुस्तान और पाकिस्तान जैसे बड़े देश एक-दूसरे पर हमला करें, यह तब बनेगा, जब अमेरिका पीछे रहेगी और कहेगी कि हमला करो। लेकिन इस समय अमेरिका यह नहीं कहनेवाली है, क्योंकि इससे वर्ल्ड वार होगा, इसलिए यह होनेवाला नहीं है। लेकिन हमेशा हमले का अंदेशा, डर, दहशत रहती है। अयूबखाँ ने लफ्जों में ऐसा एलान किया, इससे मुझे खुशी हुई। इसी तरह हम एक-दूसरे पर एतबार करना सीखेंगे, तो नजदीक आयेंगे।

प्यार कैदी बना

अमेरिका, रूस, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान आदि सभी देश के लोग अपने बाल-बच्चों मे रहते हैं। वे प्यार करना नहीं जानते सो नहीं, परन्तु उन्होंने प्यार को कैदी बनाकर रखा है। घर मे प्यार और बाहर दुश्मनी, शक शुबह, अदावत। प्यार को महदूद करने का नतीजा यह हुआ है कि प्यार की ताकत ही नहीं रह गयी है। इस समय प्यार फायदेमन्द न रहकर नुकसानदेह चीज साबित हो रही है। पानी का बहना रुक जाय, तो पानी गन्दा हो जाता है। उसी तरह प्यार बहता रहे, तो उसमे मजा आता है, जिन्दगी रहती है। यह मेरा बाप है, यह मेरा भाई है, बेटा है और इनके सिवा बाकी सब मेरे नहीं हैं, यह अगर इसी तरह चलता रहा, तो इन्सान के दिल के टुकडे हो जायेंगे। हमें समझना चाहिए कि जिसे इन्सान का दिल कहते है, वह सभी जिस्मों मे है। हम सिर्फ हमारे ही जिस्म मे नहीं रहते हैं, आपके भी जिस्म मे रहते है और आप भी सिर्फ आपके ही जिस्म मे नहीं रहते, हमारे जिस्म मे भी रहते है। जिस तरह से आसमान आलीशान मकान, झोपड़ी और सभी जगहों मे फैला हुआ है, वैसे ही अपनी रूह सिर्फ एक ही जिस्म में नहीं, बल्कि सभी जिस्मों में है। इसलिए मेरा-तेरा छोड़ दीजिये। मैं मुझमे हूँ और आपमे भी हूँ। आप आपमें भी हैं और मुझमे भी हैं। इस तरह हम महसूस करेंगे, तो हमे मालूम होगा कि यह जो सारा खेल चल रहा है, वह हममे ही चल रहा है। दुनिया मे हम ही हम है। सारे हमारे ही मुख्तलिफ रूप हैं, हम ही हमारे सामने खड़े हैं। कुछ आईने छोटी या बड़ी परछाई बताते हैं, लेकिन हमारे चारो ओर न भी हों तो हम सब जगह अपनी ही परछाई देखते हैं। वैसे ही हम महसूस करें। हमे जो भी दीखते हैं, वे सब हमारे ही रूप हैं। हम आपके हैं और आप हमारे हैं। इसीको रूहानियत कहते हैं।

इन्किलाबे-कल्ब

जब इन्सान को रूहानियत का खयाल आता है, तब उसकी जिन्दगी

मे आनन्द ही आनन्द, मजा ही मजा होता है। लोग बयान करते हैं कि बाबा को कितनी तकलीफ उठानी पड रही है। लेकिन मे कहना चाहता हूँ कि मुझे तकलीफ कतई नहीं हो रही है और न मुझे दुःख का एहसास ही हो रहा है। मेरी जिन्दगी मे आनन्द ही आनन्द है। इसलिए कि मैं यह समझता हूँ कि मैं अकेले इस जिस्म मे नहीं हूँ, दूसरे सभी जिस्मों मे भी मैं ही हूँ।

यही वजह है कि लोग मेरी बात सुनने के लिए आते है। वे समझते हैं कि बाबा जो कहता है, वह आसान है, उसमे कोई बोझ नहीं है, अगर इतना भी हमसे न बने, तो हम कम्बख्त हैं। बाबा जो बता रहा है, वह कोई गैरमामूली बात नहीं है। यह ऐसी बात है, जो 'इन्किलाबे कल्ब' (हृदय-परिवर्तन) लानेवाली है, सिर्फ बाहरी इन्किलाब नहीं, दिल को तब्दील करनेवाला इन्किलाब लानेवाली है।

व्यापारियों से

आज कुछ ताजीर (व्यापारी) हमसे मिलने आये थे, उन्होंने कुछ पैसा दान दिया है। मैंने कहा कि प्यार की अलामत के तौर पर यह ठीक है। लेकिन मै तो चाहता हूँ कि आपके घर में पाँच आदमी हैं, तो बाबा छठा है, यों समझकर अपनी कमाई का एक हिस्सा सम्पत्ति-दान के तौर पर हमेशा देते रहिये। आपकी दूकान, तिजारत वगैरह की मुझे कोई पर्वाह नहीं है। आपके पास लाख रुपये की इस्टेट हो या पचास रुपये की हो, आप अपने घर मे जो खर्च करते हैं, उसका छठा हिस्सा बाबा का है, यह कबूल कीजिये। उन्होंने यह बात समझ ली। यह ठीक है कि एकदम उस पर अमल करने की हिम्मत नहीं होगी। भगवान् उनमे हिम्मत भर देगा, तभी यह होगा।

चपियाड़ी
२१-८-'५९

: ६७ :

खूबसूरत मुल्क की बदसूरत सियासत

मैने देखा कि कश्मीर मे खूबसूरत कुदरत है, खूबसूरत लोग हैं और उनका दिल भी खूबसूरत है। लेकिन बदसूरत है, यहाँ की सियासत। इसीलिए मेरी अवाम से अपील है कि अब आप आगे आइये। सियासत से काम नहीं बनेगा। आपको अपनी ताकत बनानी चाहिए।

उधमपुर
२-९-'५९

: ६८ :

सेवा और हृदय-शुद्धि

स्वराज्य-प्राप्ति के पहले देश में कुछ सेवक थे, जो जनता में जाकर कुछ न कुछ सेवा-कार्य करते थे। लेकिन जैसे मकान बनवाने के लिए किसीको ठेका देते हैं, वैसे ही स्वराज्य के बाद हमने सेवा के ठेकेदार बनाये हैं। समाज सेवा के ठेकेदार सरकार और सरकारी नौकर और धर्म सेवा के ठेकेदार मुल्ला, भिक्षु, पुजारी और पुरोहित—इस तरह सेवा की एजेन्सी बनाकर हम उससे फारिग हो गये हैं। इस समय सब देशों मे सियासी जमातों के लोग ऊधम मचा रहे है। लेकिन उनमे सेवा की वृत्ति नहीं है। भगवान् हृदय देखता है, बाहर का ढोंग नहीं देखता है। सियासतवालों की सेवा में हृदय-शुद्धि नहीं होती है, इसलिए वैसी सेवा से दिल को तसल्ली नहीं होती है।

एक-दूसरे के तोड़नेवाले सियासतदाँ

सियासतवाले एक-दूसरे की बुराई कहते रहते हैं। विरोधी पक्षवाले अल्लाह से प्रार्थना करते होंगे कि हुकूमतवाले बुराई करें, ताकि उनको सत्ता का मौका मिले और हुकूमतवाली जमात चाहती है कि कोई अच्छा काम हो, तो उसे हम ही कर डालें। दूसरी पार्टीवालों को साथ लेकर करेंगे, तो उनकी पार्टी का वजन बढ़ेगा, जिससे अगले चुनाव मे हमारे लिए खतरा पैदा होगा। जैसे कोई तपस्या करने लगता, तो इन्द्र घबड़ा जाता और सोचता कि इसकी तपस्या सफल हुई, तो वही इन्द्रासन पर बैठेगा और मुझे आसन खाली करना पड़ेगा। इसलिए वह सुन्दर स्त्रियों को भेजकर तपस्या मे रोड़े अटकाने की कोशिश करता था। तपस्वी की तपस्या भग

हुई, तो इन्द्र खुश हो जाता था। एक भला आदमी गिरा, तो इन्द्र को खुशी क्यों होनी चाहिए। लेकिन वह सोचता था कि किसीका पुण्य न बढे, तभी हमारा इन्द्रासन बिल्कुल महफूज रहेगा। उसी तरह सियासी पार्टीवाले एक-दूसरे को तोड़ने की कोशिश करते हैं।

परमात्मा को राजी करनेवाली सेवा

हृदय-शुद्धि का थोड़ा भी कार्य कहीं चलता हो, तो वह फूल की खुशबू की भाँति सारे समाज मे फैलेगा। उससे दिल को तसल्ली होगी और परमात्मा भी राजी होगा। आज ऐसी सेवा चलती है, जिसके लिए लोगों मे आदर नहीं है। उससे न दिल को तसल्ली मिलती है और न परमात्मा ही राजी होते हैं।

उधमपुर
३-९-'५९

: ६९ :

प्यार को बदलू नहीं

फौजियों की विशेषता

आज कुछ भाई सिपाहियों में से आये थे। (उधमपुर जम्मू और कश्मीर राज्य का फौज का मुख्य केन्द्र है। वहाँ से फौजी भाई विनोबाजी के दर्शन के लिए दिनभर आते रहे।) उन्होंने हम पर बहुत प्यार बरसाया। आश्चर्य की बात है कि फौज में दाखिल हुए भाइयों के दिल में इतना प्यार भरा है, इतनी श्रद्धा भरी है! हमारे जवान (सोल्जर्स) अच्छे जवान हैं। उनके दिल में देश के लिए काम करने की और सेवा करने की लगन है। वे भक्त हैं। वे जाति-पाँति का भेद नहीं मानते हैं, यह बड़ी अच्छी बात है। आज डी० सी० साहब ने हमें बताया कि जब सैलाब के कारण बहुत नुक्सान हो गया, तब फौजी भाइयों ने बहुत ही प्यार से पुल बाँधने का काम किया। कई जगह पुल टूटे, वहाँ इन्होंने नये पुल बनाये। ऐसी सेवा की ख्वाहिश, परमेश्वर की भक्ति, जाति पाँति न मानने की प्रवृत्ति आदि अच्छे गुण फौजी भाइयों में हैं।

आज उनमें से बहुत-से भाइयों ने 'गीता प्रवचन' खरीदा है। इतना प्यार, भक्ति और श्रद्धा जिन लोगों में हो, उनके हाथों से कुछ-न-कुछ अच्छा काम होना ही चाहिए। वे हमसे मिले, तो उनको कितनी खुशी, कितना आनन्द हुआ! माँ और बच्चे बिछुड़ने के बहुत दिनों बाद फिर मिलें, तो जितना आनन्द होता है, उतना ही आनन्द उनको हुआ।

प्यार खींचता है

उनका जो प्यार है, वह हमारे जिस्म के लिए नहीं, हमारे काम के

लिए है। त्याग की, भक्ति की, कुर्बानी की बातें हिन्दुस्तान के दिल को ठडक पहुँचाती हैं। कुर्बानी मे तकलीफ होती है, फिर भी वह अच्छी लगती है। भक्ति, त्याग, दान—ये बातें किसके दिल को पसन्द नहीं आतीं ?

कश्मीर के गुण-दोष

'मैंने कश्मीर के बारे में बहुत सुना था। लेकिन जो सुना था, उससे एक-दम विपरीत देखने को मिला। झूठ और सच मे कितना फासला है, ऐसा कोई पूछे तो मैं कहूँगा, जितना फासला ऑख और कान मे है। मैं कश्मीर वैली मे घूमकर आया और मैंने देखा कि वहाँ के हिन्दू, मुसलमान आदि सब प्यार करना जानते हैं और चाहते हैं। चद बुरे लोग दुनिया में सब जगह होते हैं और जिन्दगी का जायका बढ़ाने के लिए ही होते हैं। वैसे कश्मीर मे भी हैं। लेकिन मैंने देखा, कश्मीर की हवा मे ठडक है, वैसे ही दिमाग में भी ठडक है। यह देखने से ही पता चला, सुनने से नहीं।

मैंने यहाँ के स्वभाव के गुण बताये, वैसे ही यहाँ दोष भी हैं। वे दोष निकालने चाहिए। यहाँ गन्दगी बहुत है। गन्दगी निकाल सकते हैं।

मैं पीर-पचाल लॉघकर कश्मीर-वैली मे गया, तब दो भाइयों के हाथ पकड़कर चलता था। उसमे एक भाई ब्लाक के अफसर थे और दूसरा भाई था पहाड़ी। पहाडी भाई का मुझे ज्यादा सहारा था। वह तीन-चार दिन रहा। उसने अपने कपड़े चार-छह महीने से धोये नहीं होगे। इसलिए वह जितने दिन रहा, उसके कपड़े की बदबू आती रही। मैं कुछ बोला नहीं। क्योंकि उसके प्यार की बदबू तो नहीं आती थी।

गढी
४-९-'५९

: ७० :

कश्मीरवालों को बधाई

हिन्दुस्तान के लोग भक्ति की बात सुनना चाहते हैं। ठीक तरह से समझानेवाला कोई शख्स मिल जाता है, तो उनके दिल खुल जाते हैं। उस लिहाज से आज का काम छोटा है, फिर भी अच्छा है। कश्मीर में अभी हवा बन रही है। यहाँ की हालत दूसरे सूबों जैसी नहीं है। यहाँ पर कानून से जमीन ली गयी है, उससे कुछ मसले भी पैदा हुए हैं, लोगों के बीच कुछ भेद-भाव पैदा हुए हैं और कुछ अच्छा काम भी हुआ है।

दूसरी बात यह है कि इस स्टेट की हालत डाँवाडोल मानी गयी है, जो नाहक मानी गयी है, लेकिन उसकी वजह से हिन्दुस्तान में भूदान-ग्रामदान के जो अच्छे काम बने, उसकी फिजा यहाँ नहीं पहुँची और हमारे आने के बाद ही यहाँ काम शुरू हुआ। यहाँ पर कोई कारकून भी नहीं थे। जो कारकून हैं, वे सियासी पार्टियों में बँटे हुए हैं, इसलिए लोगों की खिदमत करनेवाले कोई नहीं हैं। इस निगाह से आज का आपका काम अच्छा हुआ है और इसीलिए मैं आप सबको बधाई देता हूँ।

टिक्री
५-९-'५९

: ७१ :

अध्यात्म-दर्शन

कश्मीर में हमने बहुत दफा कहा है कि दुनिया के मसले सियासत से नहीं, रूहानियत से हल होंगे। रूहानियत याने अध्यात्म। 'अध्यात्म' एक वस्तु है और जिसे हम 'मजहब', 'पंथ' कहते हैं, वह दूसरी वस्तु है। जैसे सियासत से मसले हल नहीं होंगे, वैसे ही मजहब से भी मसले हल नहीं होंगे। सियासत की बात लोगों के ध्यान में आ गयी है, किन्तु अभी तक मजहबवाली बात ध्यान में नहीं आयी है। लोगों की समझ में आये या न आये, मैं अपना विचार रखता जाता हूँ। क्योंकि मैं यह जानता हूँ कि हवा में पहुँचा हुआ शब्द अपना काम किये बिना जाया नहीं जायगा। खैर, आज मैं इस योगाश्रम को ध्यान में रखकर बोलता जा रहा हूँ।

यह योगाश्रम (विश्वायतन योगाश्रम) कहा जाता है। इसका उद्देश्य है कि यहाँ लोग योग की तालीम पायें और हिन्दुस्तानभर में जाकर सबको योग-पद्धति से वाकिफ करायें, ताकि लोगों का आरोग्य सुधरे और साथ-साथ कुछ आध्यात्मिक भावना भी पैदा हो। यहाँ बीमार लोग अच्छे हों, ऐसी भी व्यवस्था है, बहुत अच्छी बात है। लेकिन अब मैं विचार की सफाई के लिए कुछ बातें कहना चाहता हूँ।

ध्यान स्वयमेव आध्यात्मिक नहीं

एक भाई ने कहा कि हम आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ना चाहते हैं, इसलिए ध्यान कर रहे हैं। हमने कहा कि ध्यान का अध्यात्म के साथ कोई खास ताल्लुक है, ऐसा हम नहीं मानते। कर्म एक शक्ति है, जो अच्छे-बुरे स्वार्थ, परार्थ और परमार्थ के काम में आ सकती है। उसी तरह

ध्यान भी एक शक्ति है, जो उन पाँचों कामों में आ सकती है। जैसे कर्म स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं, वैसे ही ध्यान भी स्वयमेव कोई आध्यात्मिक शक्ति नहीं है। कर्म करने के लिए मनुष्य को दस-पाँच चीजों की तरफ खूब ध्यान देना पड़ता है। वह भी एक तरह का विविध ध्यान-योग ही है। चरखा कातना हो, तो इधर पहिये की तरफ ध्यान देना पड़ता है, तो उधर पूनी खींचने की तरफ। इस दोहरी प्रक्रिया के साथ-साथ सूत लपेटने की तरफ भी ध्यान देना पड़ता है। तभी सूत कतता है। बहनों को रसोई करते समय कई बातों की तरफ ध्यान देना पड़ता है। इधर चावल पक रहा है, तो उसे देखना, उधर आटा गूँधना, रोटी बेलना, सेंकना, तरकारी काटना, लकड़ी ठीक से जल रही है या नहीं, यह देखना आदि-आदि सभी एक साथ करना होता है। इस तरह सब काम करनेवाली बहन का रसोई के काम में ध्यान नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता। उसमें विविध ध्यानयोग है।

कर्म करना सांसारिक नहीं

ध्यान करते समय हम अनेक चीजों की तरफ से ध्यान हटाकर एक ही चीज की तरफ ध्यान देते हैं। जैसे अनेक चीजों की तरफ एक साथ ध्यान देना एक शक्ति है, वैसे ही एक ही चीज की तरफ ध्यान देना, यह भी एक शक्ति है। जैसे कर्मशक्ति का पचविध उपयोग होता है, वैसे ही ध्यानशक्ति का भी होता है। लेकिन हिन्दुस्तान के लोगों के मन में अक्सर एक गलतफहमी रही है कि कर्म करना संसारियों का, परिवारवालों का काम है और ध्यान करना अध्यात्म की चीज है। इस गलत ख्याल को मिटाना बहुत जरूरी है।

ध्यान और कर्म अध्यात्म के साथ जोड़े जा सकते हैं

ध्यान का अध्यात्म के साथ सम्बन्ध जोड़ा जा सकता है और नहीं भी जोड़ा जा सकता। अगर सम्बन्ध जोड़ा जाय, तो ध्यान आध्यात्मिक

चीज बनेगी, न जोड़ा जाय, तो नहीं बनेगी। हमने खेत में कुदाली चलायी, कुँआ खोदने का काम किया, कताई, बुनाई, रसोई, सफाई आदि तरह-तरह के काम भी किये। बचपन मे हमारे पिताजी ने हमसे रँगाने का काम, चित्रकला, होजिअरी वगैरह के काम भी करवाये थे। वह सब करते समय हमारी यही भावना थी कि हम यह एक उपासना कर रहे हैं। उसमे हम अपने को मानवमात्र के साथ, प्राणीमात्र के साथ, कुदरत के साथ जोडते थे और इन सबका मरकज जो परमात्मा कहलाता है, उसके साथ भी जोड़ते थे। यह हमारा अनुभव है। चित्त मे बैठे हुए गलत सस्कार को निकालने मे जिस तरह नामस्मरण का, जप की प्रक्रिया का उपयोग हो सकता है, उतना ही उपयोग हमने खेती का किया है। किसान खेत मे काम करते हैं, तो उन्हे वह अनुभव नहीं आता, जो हमे आता है। बहनें पैसे के लिए सूत कातती हैं, तो वह कताई रोटी के साथ जुड़ी है, इसलिए उन्हे भी वह अनुभव नहीं आता। हमारी कताई आध्यात्मिक होती है, क्योंकि वह परमात्मा के साथ जुडी है।

निःस्वप्न निद्रा सर्वश्रेष्ठ समाधि

इसी तरह ध्यान भी दोनों पक्षो मे पड सकता है, इस बात का एहसास हिन्दुस्तान के लोगों को अभी तक नहीं हुआ है। इसीलिए यहाँ यह माना गया है कि कोई ध्यान करता है, तो आध्यात्मिक साधना करता है। परतु वैसे देखा जाय, तो गाढ निद्रा से बढकर कोई ध्यान नहीं हो सकता। हम अपना अनुभव बता रहे हैं कि गाढ़, निःस्वप्न, निर्दोष निद्रा से जितना उत्तम विकास होता है, उतना निर्विकल्प समाधि छोडकर दूसरे किसी मामूली काम मे नहीं होता। निःस्वप्न, निर्दोप निद्रा एक आध्यात्मिक वस्तु हो सकती है और वैसे ही यह एक भौतिक वस्तु भी हो सकती है। जानवर निद्रा लेता है, तो वह आध्यात्मिक वस्तु नहीं है। लेकिन निष्काम कर्मयोगी दिनभर काम करके सो जाता है, तो उसको निःस्वप्न, निर्दोप निद्रा मे वे

सारे अनुभव आ सकते हैं, जो निर्विकल्प समाधि छोड़कर दूसरे किसी काम मे नहीं आते।

उत्पादक श्रम : अध्यात्म का निकटतम पड़ोसी

इस आश्रम को हम एक साधना केन्द्र बनाना चाहते हैं, तो उसके लिए क्या जरूरी है और क्या जरूरी नहीं है, इसका ठीक एहसास हो, इसीलिए मै यह कह रहा हूँ। सबके साथ हमारा प्रेम का सम्बन्ध जुड़े, हममे अहंता न रहे, आत्मा का किसी तरह का सकोच न हो, हमारे पास छिपाने की कोई चीज न रहे, हम और सारी सृष्टि एकरूप बन जायँ, इसलिए शरीर को भी तालीम देने की जरूरत है। नेति, धोति, बस्ती आदि पचकर्म किये, इतने से अध्यात्म नहीं होता। वे चीजें शरीर की स्वच्छता के लिए सहायक होती है, लेकिन अध्यात्मविद्या के लिए सबसे ज्यादा अनुकूल और सबसे ज्यादा नजदीक अगर कोई चीज है, तो वह है उत्पादक शरीर-परिश्रम, ऐसा मैं अपने अनुभव से जाहिर करना चाहता हूँ। मनुष्य को भूख लगती है। वह भूख परमेश्वर की प्रेरणा है, जो हमें अध्यात्म मे किस दिशा की ओर जाना चाहिए, यह बताती है।

हम अपना सब कुछ समाज को देते है। शरीर की शक्ति भी उसीकी सेवा में लगाते हैं, साक्षात् भूमाता के साथ उत्पादक श्रम करते हैं, तो भूख के साथ जो पाप जुड़ते हैं, वे कुल-के-कुल खत्म हो जाते है। मनुष्य भूख से पीड़ित होकर खाता है, तो उस खाने के साथ कई पाप जुड़े रहते है। उन सब पापों से मुक्ति पाने का आसान रास्ता यह है कि हम अपने हाथ से परिश्रम करके अन्न उत्पादन करें। 'अन्नं ब्रह्मेति' शास्त्रकारों ने कहा है। उत्पादक परिश्रम करने से पृथ्वी, आकाश, अग्नि, सूर्य, वनस्पति, जल, पर्वत आदि जो देवता हैं, उन सबके साथ सम्पर्क बनता है। उन सबकी हम सेवा करते हैं और सेवा के फलस्वरूप जो मिलता है, वह समाज को अर्पण करके समाज की तरफ से प्रसादरूप से जो ग्रहण करते हैं, वह कुल प्रक्रिया अध्यात्म के लिए साधक है। इतने से ही अध्यात्म

जनेगा, ऐसी बात नहीं। लेकिन वह प्रक्रिया अध्यात्म के लिए ज्यादा मददगार है, बनिस्बत आसन, प्राणायाम के।

उद्योग : सबसे ऊँचा योग

संस्कृत शब्दों में जो खूबी होती है, वह गहराई में पैठने पर ही मालूम होती है। संस्कृत में एक शब्द है, 'उद्योग'। उद्+योग याने ऊँचा योग। अगर यह भूख न होती और उसके लिए शरीर-परिश्रम करने की प्रवृत्ति न होती, तो इन्सान अनेक दुर्गुणों से अपने को नष्ट कर डालता। इसलिए उद्योग याने हमारे लिए सबसे बड़ा योग है। परिश्रम करके हम जो कुछ पैदा करते है, वह समाज को समर्पण करना चाहिए। जहाँ समर्पण की भावना आयी, वहाँ वह चीज चाहे कर्म हो या ध्यान, आध्यात्मिक बन जायगी। जिसका समर्पण के साथ संबंध नहीं रहा, वह आध्यात्मिक चीज नहीं रहेगी। अध्यात्म के लिए समर्पण अनिवार्य है।

विचार की सफाई जरूरी

विचार की यह सफाई हिंदुस्तान मे बहुत जरूरी है। नहीं तो हम ऐसी चीजों मे फँस जाते हैं कि उसमें और कोई लाभ तो होता होगा, परंतु पारमार्थिक लाभ नहीं होता। हृदय की शुद्धि, व्यापकता और समाज के लिए जरूरी काम करें, हम परमेश्वर को समर्पित हों, इतनी चीजें अध्यात्म के लिए जरूरी हैं। इसीसे दुनिया के मसले हल होंगे। मैंने कहा कि रूहानियत से मसले हल होंगे, तो किसीने यह समझ लिया कि अब ध्यानयोग किया जायगा, उससे सिद्धियाँ, शक्तियाँ प्राप्त होंगी और फिर जैसे आज एटम बम फेंका जाता है, वैसे ही वे शक्तियाँ फेंकी जायँगी। लेकिन बात ऐसी नहीं है। इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप मेरे विचार को ठीक समझ लें।

कटरा
७-९-'५९

: ७२ :

दिल की अमीरी से गरीबी का मुकाबला

कश्मीर छोटी-सी शक्ल मे सारे हिंदुस्तान का एक नमूना है। हिन्दुस्तान की तरह ही यहाँ भी डोग्री, कश्मीरी, उर्दू, पजाबी, हिन्दी, बोधी आदि मुख्तलिफ जबानें और सिख, बौद्ध, ईसाई, जैन आदि मुख्तलिफ मजहब हैं। यहाँ की कुदरत भी तरह तरह का नजारा दिखाती है। जम्मू की तरफ कपासवाला मुल्क है, तो कश्मीर-वैली की तरफ चावलवाला मुल्क है। जम्मू मे गर्मी है, कश्मीर मे ठड। हमे यह देखकर बड़ी खुशी होती है कि एक छोटे-से हिस्से मे इतनी विविधता और खूबसूरती है।

मीठी याददाश्त

हमने कश्मीर-वैली मे मुसलमान ज्यादा और हिन्दू कम देखे। बौद्ध भी थोड़े ही हैं। लेकिन हमने वहाँ एक दूसरे के खिलाफ जजबा नहीं देखा। एक जमाना था, जब हिन्दुस्तान, पाकिस्तान बने, लोगों के दिमाग बिगडे, फिजा बिगड़ी और काफी मार-काट हुई। लेकिन उस वक्त भी कश्मीर वैली मे वे सारी चीजे नहीं चलीं, जो पजाब मे चलीं। इस पर से मेरे ध्यान मे यह बात आयी कि यहाँ के लोगों का मिजाज भी यहाँ के मौसम जैसा ही ठडा है। जैसे पानी खुद-ब-खुद गरम नहीं है, लेकिन मौके पर गर्मी लगने से वह भी गरम हो जाता है, वैसे ही यहाँ के लोगो का मिजाज मौके पर गरम हो सकता है, लेकिन यह बात जरूर है कि यहाँ के लोग फित्रत (स्वभाव) से ठडे दिमाग के हैं। इस तरह की एक मीठी याददाश्त लिये हम कश्मीर से विदा हो रहे हैं।

इन्सानियत की रक्षा के लिए जमीन दें

लोग कहते हैं कि कश्मीर मे सरकार ने जमीन का मसला हल कर दिया। लेकिन सरकार कितना भी चाहे, तब भी वह जमीन का मसला हल नहीं कर सकती। लोगों का मसला लोग ही हल कर सकते हैं। यह ठीक है कि सरकार ने सीलिंग बनाया है, लेकिन गॉव का मसला हल नहीं हुआ, बेजमीनों को जमीन नहीं मिली और दिलजमाई भी नहीं हुई। वह होना मुमकिन भी नहीं था। हम सरकार से वैसी उम्मीद रखे, तो वह भी गलत होगा। अपना मसला लोग स्वय हल कर सकते हैं।

हृदय-परिवर्तन का प्रतीक

उधमपुर जिले मे लोगों ने दो हजार कनाल से ज्यादा जमीन दान दी। कुल मिलाकर जमीन का यह रकबा कम ही माना जायगा, लेकिन लोगों ने अपना पेट काटकर यह दान दिया है। लोगों के पास अच्छी जमीन है। बाकी सारी जमीन सरकार ने ले ली। इसलिए देनेवालों ने बड़ी श्रद्धा से और भक्ति से दान दिया है। हिन्दुस्तान के दूसरे सूबों मे हमे जमीन काफी मिली, लेकिन हम यह नहीं कह सकते हैं कि जिन्होंने जमीन दी, उन सबका हृदय-परिवर्तन हो गया। एक बहाव था, जिसमे कइयों ने दिया। मनुष्य दूसरों को देखकर कोई अच्छा काम करे, तो उसे बुरा नहीं कह सकते हैं। उपनिषदों मे कहा है 'श्रिया देयम् , ह्रिया देयम्'। लज्जा (शर्म) से देना भी ठीक है। यहाँ पर लोगो ने जो जमीन दी है, वह हृदय से दी है और ठीक सोचकर दी है। इसलिए यहाँ जितनी जमीन मिली, उसे हृदय-परिवर्तन का चिह्न, निशानी माना जा सकता है।

सबकी समझ में आने लायक बात

यहाँ पर बहुत सारे लोग नाहक सियासत मे पड़े हैं और वे सोचते हैं कि सियासत से कुछ हो सकता है। लेकिन उनका यह सोचना गलत है। सियासत कोई चीज ही नहीं है, वह बिलकुल नाचीज है। उससे क्या होने-

वाला है? हमें ऐसे लोगों से खुलकर बातें करने का मौका मिला, जो
सियासत में पड़े हैं। उन लोगों ने हमसे कहा कि आज तक इस छोटे-से
मुल्क में ऐसा कोई नहीं आया, जो गाँव-गाँव घूमा हो, सभी पार्टियों के
लोगों से मिला हो और हरएक से खुलकर बातें करता हो। मेरी जबान
साफ थी, इसका एक ही मानी है कि मेरा प्रहार भी उन्होंने मीठा मान
लिया। मैंने बार बार कहा कि दुनिया के और खासकर इस इलाके के
मसले सियासत से हल नहीं होंगे और न मजहब से ही हल होंगे, वे अगर
हल होंगे ही, तो रूहानियत से होंगे। यह समझना मुश्किल नहीं है। मैंने
देखा कि मेरी यह बात गाँव-गाँव के अपढ़ लोग भी समझते हैं।

सोने का क्या मूल्य है?

एक गाँव में मैं गाँववाले एक शख्स का हाथ पकड़कर मुश्किल रास्ते
से जा रहा था। उसके हाथ में सोने की अँगूठी थी, जो मुझे चुभ रही
थी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी अँगूठी मुझे तकलीफ देती है, तो उसने
अँगूठी निकालकर जेब में डाल ली। दूसरे भाई ने उससे कहा कि क्या
तुम बात का इशारा नहीं समझे? आखिर वह समझ गया और उसने
अँगूठी मुझे देना चाहा। मैंने कहा, सोना मनुष्य को भ्रम में डालनेवाली
चीज है। इससे क्या पैदा होता है? ये सोने के पत्थर खेत की मेड़ में
रखे जायँ और उन पर पानी गिरते-गिरते उनका थोड़ा सा हिस्सा मिट्टी में
भी मिल जाय, तो क्या उस मिट्टी में से फसल आ सकती है? उसने कहा
कि मैंने ऐसी बातें सिर्फ सन्तों की जबान से सुनी थीं। फिर मैंने पूछा,
क्या यह बात जँचती है? हाँ, उसने कहा। तो क्या मैं यह अँगूठी फेंक
दूँ, तो उसने स्वीकृति दे दी। मैंने अँगूठी जंगल में फेंक दी और देखा कि
उसे दुःख होने के बजाय उसमें एक किस्म की मस्ती थी। उसने भूदान-
यज्ञ में बहुत काम किया।

हमारे लोगों के दिल इतने बहादुर हैं। वे चीन को समझते हैं, उन्हें

कोई समझानेवाला हो, तो वे मिथ्या चीज का भ्रम छोड़ सकते है। मेरे साथवालों को इस घटना से ताज्जुब हुआ। उन्हे लगा कि सोने की अँगूठी बहुत बडी चीज है। उसे कैसे फेका जाय? लेकिन हमे समझना चाहिए कि सोना कोई चीज ही नहीं है। हम नाहक जमीन खोद-खोदकर सोना बाहर निकालते हैं। सोने का भस्म बनाया जाय, तो उसका कुछ उपयोग क्षय-रोगियो के इलाज के लिए हो सकता है, लेकिन उसके फायदे थोड़े है। लोगों ने आज उसकी जो कीमत मानी है, वह खयाली कीमत है। उसका बाहर से कोई प्रमाण नहीं है। आज सोने की कीमत १०० रु० तोला है, लेकिन वह भाई आसानी से अँगूठी फेंक देने के लिए राजी हुआ। यह देखकर मैं खुश हुआ कि हिन्दुस्तान का दिल जिंदा है, मुर्दा नहीं है।

गरीबी का मुकाबला करने का तरीका

हमने कश्मीर वैली मे हद दर्जे की गुर्बत देखी। ऐसी गुर्बत उड़ीसा को छोड़कर हिन्दुस्तान के दूसरे किसी भी सूबे मे नहीं देखी। लेकिन वहाँ भी लोग हँसते रहते थे। उनके चेहरों पर दुःख नहीं था। यह क्यों? यह हिन्दुस्तान की मस्ती है। इस भूमि की यह खुसूसियत है कि यहाँ लोगों की रोनी सूरत नहीं दीखती। यहाँ पर गरीबी है, लेकिन गरीबी का मुकाबला हम दिल की अमीरी से करते है। हमे इस तरह खुशमिजाज देखकर बाहरवालों को ताज्जुब होता है। इसका राज क्या है? जिन्दगी के लिए जो मामूली चीजें है, जो हरएक को मुहैया होनी चाहिए, वे भी हमे मुहैया नहीं होती हैं। तिस पर भी हमारे लोग खुश रहते है। इसमें ताज्जुब की बात नहीं है। यह वेदान्त की भूमि है। इसमे मैं गुर्बत का बचाव नहीं करना चाहता हूँ, गुर्बत तो मिटानी ही है। लेकिन अन्दर की मस्ती कायम रखकर एव उसे बढाकर ही हम गुर्बत मिटाना चाहते हैं। नहीं तो आज अमेरिका और रूस जो कर रहे है, वैसा ही हम भी करते है, ऐसा माना जायगा।

हमने कल अखबार में पढा कि अमेरिका मे इतने मिनटों में एक खून होता है, इतने मिनटों मे एक व्यभिचार होता है। इसका मतलब यह नहीं कि वहाँ सारा समाज बिगड़ा हुआ है। वहाँ के लोग खुशहाल हैं, लेकिन उनमे अन्दर की मस्ती नहीं आयी है। इसलिए नहीं आयी कि वे बाहरी चीजों पर खुश होते है। बाहरी चीज पर आधार रखने से अन्दर की चीज सूखती है।

ताकत कैसे प्रकट होगी ?

हमने कश्मीर मे देखा कि जहाँ ज्यादा गुर्बत है, वहाँ भी मेहमान-नवाजी मे कोई कमी नहीं है। लोगों मे बहुत दिलेरी है। लोग मेहमानों के लिए सब कुछ न्योछावर कर सकते है। लेकिन अभी तक इसकी ताकत नहीं बनी। घर मे बिजली आयी है, उसका टैक्स भी दिया जा रहा है, लेकिन बटन नहीं दबाया, तो घर मे अन्धेरा ही रहेगा। अपने पास रूहानी चीज पड़ी है, लेकिन अभी तक उसकी ताकत नहीं बनी। वह बाहर नहीं आयी, इसलिए उसकी रोशनी नहीं दिखायी दे रही है। उसे जरा बाहर लाने की जरूरत है। हम उसे बाहर ला सकते है। उसकी ताकत कैसे बने, बिजली की रोशनी कैसे प्रकट हो, हमे इसकी तरकीब ढूँढनी चाहिए। तरकीब आसान है। तुलसीदासजी ने कहा है "मै और मोर तौ तोर माया"। हमारे पुरखाओं ने हमे सिखाया है कि 'मैं मेरा, तू तेरा' यह माया है। अगर हम परमेश्वर के हाथ के औजार, फकीर बन जायें, तो 'मेरा मेरा' हट सकता है। यह एक रास्ता है, लेकिन इस पर सब नहीं चल सकते है।

मेरा नहीं, हमारा

वह पीर पंचालवाला रास्ता, जिस पर हम चले थे, मामूली रास्ता नहीं है। सन्यास मार्ग मे चन्द लोग ही जा सकते है। लोग इस विचार को अच्छा तो मानते है, लेकिन उनका 'मेरा-मेरा' वाला सवार कायम ही रहता है। इजीनियर रास्ता बनाता है, तो धीरे-धीरे ऊपर चढ़ता है, उसी

तरह 'मेरा-मेरा' तोडने का एक रास्ता हाथ आया है। वह यह है कि आप 'मेरा' की जगह 'हमारा' बोलें। 'हमारा खेत, हमारा घर, हमारा गाँव' ऐसा बोलना शुरू कर दें। 'मेरा' की जगह 'हमारा' आ जाय, तो 'मेरा' आसानी से छूट सकता है। 'मेरी जमीन' को 'हमारी मुश्तरका जमीन, सबकी शामिलात जमीन' यह रूप देना निहायत जरूरी है, क्योंकि यह साइन्स का तकाजा है। साइन्स कहता है कि तुम अलग अलग रहोगे, तो टिक नहीं सकोगे। अब जिन्दगी ऐसी नहीं रही कि एक आदमी यहाँ रहे, दूसरा वहाँ। दोनों मे कोई वास्ता न हो। आज साइन्स जिस चीज की माँग कर रहा है, वही बात हमारी रूहानियत भी कहती है। इसलिए हमे 'मेरा' की जगह 'हमारा' कहना होगा।

साइन्स ने 'मैं' और 'मेरा' को तोड़ दिया

आज साइन्स की इतनी तरक्की हुई है कि एक मनुष्य की आँख बिगड़ गयी हो, तो उसकी जगह अभी-अभी मरे हुए मनुष्य की अच्छी आँख बिठायी जाती है। फिर क्या वह मनुष्य 'मेरी आँख' कह सकेगा ? किसीको कुष्ठरोग हुआ और उसकी टाँग सड़ गयी, तो उसकी टाँग काटकर तत्काल मरे हुए मनुष्य की टाँग लगायी जाती है और वह चलने लगता है, तो क्या फिर वह 'मेरी टाँग' कहेगा ? साइन्स का यह करिश्मा है कि जैसे मोटर का पहिया दूसरी मोटर मे लगा सकते हैं, वैसे ही एक शख्स के जुज दूसरे के जिस्म मे लगा सकते हैं। बीच मे बारह साल तक मैं नकली दाँत पहनता था। फिर मैंने वे दाँत फेंक दिये, यो सोचकर कि बुढापा आया है, तो यही नाटक अच्छा है। जब मैं वे नकली दाँत पहनता था, तो देखनेवाले को वे बडे खूबसूरत मालूम होते थे। कभी-कभी लोग दाँतों की तारीफ भी करते थे। मुझे कभी भी इन दाँतों का अभिमान नहीं हुआ, क्योंकि मैं जानता था कि ये दाँत डॉक्टर ने बनाये हैं। मैं तो सिर्फ पहनता हूँ। इसलिए दाँतों की तारीफ होती है, सो उन्हे बनानेवाले डॉक्टर

की होती है, मेरी नहीं। अब साइन्स और तरक्की करेगा, तो फिर 'मेरा-मेरा' नहीं चलेगा।

खूबसूरत जिंदगी बने

मैसूर राज्य में एक प्यारी लड़की ने हमें एक प्यारा सवाल पूछा था कि "गाँववालों ने जमीन की मिलकियत मिटा दी, सारी जमीन इकट्ठा की, सब लोग प्यार से काश्त करने लगे, 'हमारा' गाँव कहने लगे, तो भी 'हमारा' याने क्या? क्या नजदीकवाला गाँव हमारा नहीं है? फिर क्या गाँव-गाँव के बीच टक्कर नहीं आयेगी?" हमने कहा कि अपने देश की लड़कियाँ ऐसा सवाल पूछती हैं, इसका मुझे फख्र है। यह सवाल पूछने लायक है और उसका जवाब देने लायक है। अब तक छोटे छोटे कुनबे थे। अब हम गाँव का कुनबा बनाना चाहते हैं। फिर 'हमारी' वाली बात और आगे बढ़ायेंगे। हम कहते हैं कि गाँव के किसी भी शख्स के घर की शादी सारे गाँव का सार्वजनिक उत्सव होना चाहिए। सब लोग हाथ बँटायें, तो उस शख्स पर कोई बोझा नहीं आयेगा, नहीं तो आज एक शादी करके जिंदगी-भर बर्बादी होती है, क्योंकि शादी के लिए कर्जा लेना पड़ता है। मगर आज लोग कहते है कि यह बहुत आसान है, क्योंकि पहले हम यह करते ही थे। मैं कहता हूँ कि 'थे' मत कहो, 'हैं' कहो। हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम एक जिस्म में महदूद नहीं, सभी जिस्मों में हम ही हैं। इस बात को हम समझेंगे, तो यहाँ की कुदरत जितनी खूबसूरत है, उतनी जिन्दगी भी खूबसूरत बन सकती है।

नगरौठा
९-९-'५९

: ७३ :

लोकशाही और लश्करशाही

दुनिया शान्ति चाहती है

आपने पेपर मे पढ़ा होगा कि आइक इंग्लैंड गये, तब उनके स्वागत में हजारों लोग रास्ते पर खडे हुए एक ही आवाज लगा रहे थे कि 'वी वान्ट पीस' हमें शान्ति चाहिए, शान्ति चाहिए। वहाँ आइक बोले कि जनता शान्ति चाहती है, लेकिन हमीं लोग अशान्ति पैदा करनेवाले है। हम याने सरकार। दुनियाभर के लोग शान्ति चाहते हैं, यह बात आइक जैसे एक फौजी नेता के ध्यान मे आयी है। इससे वह समझ सकता है कि साइन्स के जमाने मे साइन्स की ताकत अगर हिंसा के साथ जुड़ेगी, तो दुनिया का खातमा हो जायगा। साइन्स की ताकत अहिंसा के साथ जुड़नी चाहिए। यह बहुत आवश्यक है। यह बात अब उनके ध्यान मे आ रही है, जिन्होंने शस्त्रास्त्र बढ़ाये और आज भी बढ़ा रहे हैं। आज भी वे शस्त्रास्त्र बढा रहे हैं, उसकी वजह यह है कि उन्हे नया रास्ता नहीं सूझ रहा है। इस समय सियासतवालो का हिंसा की ताकत पर विश्वास नहीं रहा और अहिंसा की ताकत पर विश्वास जमा नहीं है।

सियासत और समस्याएँ

अब हिंसा से या सियासत से मसले हल नहीं होंगे। खुशी की बात है कि अभी एक मसला हल होने की सूरत में आया है, पानी का मसला। लेकिन क्या वह सियासत से हल हो रहा है ? नहीं, वर्ल्ड बैंक के कारण उसे हल करने के लिए प्रेम का तरीका अपनाया गया है। इसलिए अब कनाल वाटर का झगडा मिटेगा। यह प्यार की बात है, सियासत की नहीं। अगर

यही मसला सियासत से हल करने की बात होती, तो यह भी लटकता ही रह जाता।

सत्ता चन्द लोगों के हाथ में

हमें अब नयी ताकत बनानी होगी। वह ताकत, जिसे मैं लोकशक्ति कहता हूँ, लोग स्वय अपना शासन चलाये। वर्तमान शासन को विकेन्द्रित करना होगा। अभी जो शासन है, वह चाहे वेलफेयर के नाम से हो, कम्युनिज्म के नाम से हो, डेमोक्रेसी के नाम से हो या किसी भी नाम से हो, उसके कारण कुल ताकत एक मरकज मे आ जाती है और सारे समाज पर भार बढ जाता है। फिर समाज की तरक्की के लिए चन्द लोग मन्सूबा करते है। कानून बनाते हैं और कानून की रक्षा के लिए पुलिस तथा लश्कर रखते है। उन चन्द लोगों के हाथ मे ताकत आ जाती है। आज दुनिया को बनाना या बिगाड़ना चन्द लोगों के हाथ मे है।

डेमोक्रेसी का ढोंग

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि फलानी चीज पडित नेहरू की समझ मे आ जाय, तो काम बन जाय और उनकी समझ में नहीं आये, तो काम नहीं बनेगा। जहाँ ऐसी फारमल डेमोक्रेसी होती है, वहाँ उसका रूपातर देखते-देखते फौजी शासन में हो जाता है। क्या कभी आप मिट्टी का रूपातर दही मे होते हुए देखते है? दूध का रूपातर दही मे हो सकता है। क्योंकि वे एक-दूसरे के नजदीक हैं। मिट्टी का रूपातर दूध मे नहीं हो सकता, तो डेमोक्रेसी का रूपातर फौजी सत्ता मे कैसे हो सकता है? इसलिए सही बात यह है कि आज असल मे डेमोक्रेसी है ही नहीं। इस समय डेमो-क्रेसी हो या वेलफेयरिज्म हो या सोशलिज्म, सबका आधार है फौज। जहाँ सबका रक्षण करनेवाला एक ही देवता (फौज) है, वहाँ सारे एक ही हैं। वे चाहे आपस-आपस मे लड़ें, लेकिन उनमे कोई भेद नहीं है। उनमे ज्यादा भेद समझने की जरूरत भी नहीं है। उनमे से कोई भी आज हिंसा

पर कंट्रोल करना चाहे, नियंत्रण करना चाहे, तब भी वह नहीं हो सकता। क्योंकि उन सबका दारोमदार फौज है और सारी सत्ता चंद लोगो के हाथ मे है।

कभी सत्ता इनके हाथ मे रहेगी, कभी उनके। कभी नेशनल कान्फरेन्स के हाथ मे रहेगी और कभी डेमोक्रेटिक नेशनल कान्फरेन्स के हाथ मे। लोग बेचारे अपना नसीब आजमाते रहेंगे। यह जो डेमोक्रेसी का एक प्रकार का ढोंग चल रहा है, उससे मुक्ति हासिल करनी होगी और लोगों की शक्ति बनानी होगी, तभी शाति हासिल होगी।

वाणी की चोरी सबसे भयानक

बचपन मे हमने एक कविता पढी थी, जिसमे कहा था आत्मस्तुति, परनिंदा और मिथ्या भाषण—ये तीन बातें नहीं करनी चाहिए।

कहा जाता है कि डेमोक्रेसी मे विरोधी पार्टी रहती है, तो उसका सरकार पर दबाव रहता है और हुकूमत करनेवाली पार्टी गलत काम करने से बचती है। परन्तु समझने की बात यह है कि जिनके हाथ मे हुकूमत रहती है, वे तो सत्ता चाहनेवाले होते ही है और जो अपोजिशन करनेवाले होते है, वे सत्ता अपने हाथों मे लेना चाहते हैं। याने सभी का नाम सत्ता के ही इर्द-गिर्द चलता है, इससे लोगों की सेवा नहीं बनती, सिर्फ झगड़े होते है। कुल मिलाकर सब पार्टियों की शक्ति चुनाव मे लगती है, इसलिए शुद्ध सेवा नहीं होती और न किसी भी विषय पर निष्पक्ष राय ही प्रकट होती है। आज तो जो भी राय प्रकट करेगा, वह अपने पक्ष के हित के लिए ही करेगा। मान लीजिये, कल अकाल पड़ा, लोग चिल्लाने लगे, तो अपोजिशन करनेवाली पार्टी उसका नाजायज फायदा उठाने की कोशिश करेगी। जब अपोजिट पार्टी का यह रूप होगा, तो हुकूमत करनेवाली पार्टी उससे ठीक उलटी दिशा ग्रहण करेगी। एक पार्टीवाला नेता दूसरी पार्टीवाले को गाली देगा और दूसरी पार्टीवाला पहली पार्टीवाले को। दोनों की

बातें जनता सुनेगी, तो वह उन दोनों की निन्दा करेगी। फिर किसीके भी शब्दों पर लोगों को भरोसा नहीं रह जायगा। जहाँ शब्दों पर से विश्वास उठा, वहाँ व्यवहार-शुद्धि नहीं रह सकती। मनु महाराज ने कहा है "वाच्यार्थो निहिता सर्वे वाङ्मूला वाङ्विनिःसृताः" जिसने वाणी की चोरी की, उसने सब कुछ चोरी कर ली। यह जरूरी है कि एक-दूसरे के शब्दों पर विश्वास किया जाय।

जहाँ लोगों का भरोसा उठा, वहाँ देश की परिस्थिति अच्छी नहीं रह सकती। बडे बडे नेता जोडने का काम नहीं करते, तोड़ने का काम करते है। तब देश की ताक़त कैसे बढ सकती है?

गैरजानिबदार सेवकों की जरूरत

मान लीजिये, डेमोक्रेसी मे मुखालिफत करनेवाली पार्टी की जरूरत रहेगी। लेकिन फिर भी एक ऐसी तटस्थ, गैरजानिबदार जमात होनी चाहिए, जो सरकार की गलतियों को उसके सामने तटस्थ भाव से रख सके और लोगों के सामने भी रख सके। यह पार्टी सियासी पार्टी से अलग रहेगी। अगर अलग न रही, तो देश की ताकत नहीं बन सकेगी। सियासी पार्टियाँ क्या करती है, यह तो आपने केरल मे देख ही लिया। सभी मिल-कर केरल पहुँचे। हमने अखबारों मे पढा कि आज यह गया, आज वह गया। बडे-बड़े-मिनिस्टर वहाँ पहुँचे। सबने आकर आखिर किया क्या? केरल के एक मिनिस्टर ने हमे टेलिग्राम भेजा कि "आप यहाँ आइये और यहाँ की स्थिति मे सुधार कीजिये।" हम पीर पन्चाल लाँघकर कश्मीर-वैली मे पहुँचे, तब वह टेलिग्राम हमे मिला। मिलते ही हमारे मुँह से निकला कि "सब तो वहाँ पहुँच गये। अब हमारा ही जाना बाकी रहा है!" सबने मिलकर वहाँ जो किया, वह तो आपने देख ही लिया। इसलिए मैं कहता हूँ कि बड़े-बड़े नेता दिलों को जोड़ने का नहीं, दिलों को तोड़ने का ही काम करते हैं, इसमे कोई शक नहीं।

हिन्दुस्तान पुरानी सियासत के रास्ते पर चलता रहेगा, तो देश की ताकत नहीं बनेगी। इसलिए सियासत से अलग होकर एक ऐसी जमात बनानी चाहिए, जो अलग-अलग पार्टियो के बीच मे जहाँ भी घर्षण हो, वहाँ तेल डाल सके, स्नेह दे सके। सेवापरायण, सत्यनिष्ठ और स्नेह बढाने-वाली जमात के लोग तटस्थ होकर हुकूमत करनेवाली पार्टी की तथा दूसरी पार्टियों की गलतियाँ बतायेंगे और सहानुभूतिपूर्वक उन्हे सुधारने की कोशिश करेंगे, तो देश मे एक नैतिक ताकत बनेगी।

समग्र दृष्टिवाले इन्सान की जरूरत

आज देश मे कुछ घोडे है, कुछ गधे, कुछ हाथी है, कुछ हिरन, लेकिन इन्सान नहीं है। इन सबसे काम लेनेवाला और इन पर अकुश रखनेवाला इन्सान चाहिए, जो घोड़े से घोड़े के नाते, गधे से गधे के नाते काम ले सके। घोड़ा, गधा, हाथी, हिरन आदि सभी काम के है। उनका उपयोग करनेवाला चाहिए। आप कहेंगे, कि मैंने पार्टियों से जानवर की उपमा दी। लेकिन यह तो एक विनोद है। जानवर चारों ओर से नहीं देख सकता। वह एक बाजू से देखता है। उसकी दृष्टि एकागी होती है। सर्वांगी दृष्टि इन्सान की होती है। पार्टियों मे सर्वांगी दृष्टि नहीं है। इसलिए पार्टीवालों को सब दूर सर्वांग दर्शन नहीं होता। मेरे इस कथन से आप यह न समझ लें कि सियासी पार्टियों मे कोई इन्सान ही नहीं है। इन्सान तो है ही, लेकिन पार्टियों का ढॉचा ही ऐसा है कि वे सर्वांगीण दृष्टि से देख नहीं सकते।

मैं जो गैरजानिबदार लोगों की बात कह रहा हूँ, वह सियासी पार्टी-वाले भी महसूस करते हैं। इसीलिए तो राष्ट्रपति, असेम्बली के स्पीकर, सरकारी नौकर, हाईकोर्ट के जज, शिक्षक और फौज आदि के लोग जानिबदार हों, ऐसा तय है। क्या आप पसन्द करेंगे कि फौज किसी एक पार्टी की हो ? नहीं। चाहे राज्य काग्रेस का हो या और किसीका, फौज तो गैरजानिबदार ही होनी चाहिए। शिक्षक, जज, कर्मचारी भी गैरजानिबदार ही होने चाहिए। आज हैं या नहीं है, यह अलग बात है।

इस समय जिस पार्टी की सरकार होती है, उस सरकार का उन सभी लोगों पर असर होता है। इसे हम नहीं भूल सकते।

काश, ऐसा हुआ होता !

गाधीजी चाहते थे कि काग्रेस गैरजानिबदार सस्था होकर काम करे। जिस दिन वे गये, उस दिन उन्होंने अपनी यह इच्छा लिखी थी कि काग्रेस लोक-सेवक सघ मे पुष्पित एव फलित हो। वह सियासी पार्टी न रहकर गैरजानिबदार जमात बन जाय और सत्ता पर तथा समाज पर नैतिक अंकुश रखे। काग्रेस अगर ऐसा करेगी, तो अपने पुराने पुण्य मे वृद्धि होगी। गाधीजी ने कहा, लेकिन उनके साथियों को यह बात जँची नहीं। मैं उन्हे भी दोष नहीं देना चाहता। हरएक के सोचने का ढग होता है और हरएक का दिमाग भी अलग होता है। उस समय देश मे परिस्थिति भी कुछ ऐसी थी कि लाखों लोग इधर से उधर और उधर से इधर आ-जा रहे थे। वैसी परिस्थिति मे शायद हम वह काम करने की शक्ति मे नहीं है, ऐसा गाधीजी के साथी महसूस कर रहे थे। इसीलिए उन्होंने बापू की इच्छा के अनुकूल कदम नहीं उठाया होगा। खैर, अगर गाधीजी की बात मानी होती, तो काग्रेस आज सेवापरायण सस्था होती और अपने निष्पक्ष बयानों से नैतिक असर डालनेवाली जमात बनती। वह आज नहीं बन सकी है और जिसका बनना निहायत जरूरी है।

सर्व-सेवा-संघ

इस समय देश मे एक छोटी-सी जमात काम कर रही है, वह है सर्व-सेवा-सघ। मै उस सस्था का सदस्य नहीं हूँ। मैं किसी भी सस्था का सदस्य नहीं हूँ। सिर्फ व्यक्ति के नाते सलाह देता हूँ। मेरी सलाह किसीको अच्छी लगे और वह माने, तो मुझे अच्छा लगता है और किसीको न जँचे, तब भी वह माने, तो मुझे अच्छा नहीं लगता। जिसे मेरी बात न जँचे और वह न माने, तब मुझे खुशी होती है। इस तरह वह माने या न माने—दोनों

हालतों में मुझे खुशी ही है। मैं सर्व-सेवा-संघ का सदस्य नहीं हूँ, फिर भी उस जमात के साथ मेरा ताल्लुक है। वह एक अच्छी जमात है। गांधीजी ने तालीमी संघ, चरखा-संघ, गोसेवा-संघ आदि रचनात्मक संस्थाएँ बनायी थीं। उन संस्थाओं की एक ताकत बने, ऐसा सोचकर एक मिलापी संघ, सर्व-सेवा-संघ बना। वह इतना बड़ा बना, तब भी उतना बड़ा नहीं बन सका, जितना कांग्रेस बनती। कांग्रेस वैसी नहीं बन सकी, इसलिए अभी सर्व-सेवा-संघ के लोग काम कर रहे हैं।

लोक-सेवकों का काम

हिन्दुस्तान में लगभग ४-५ हजार सेवक हैं। वे सब मिलकर हिन्दुस्तान में लोक-शक्ति बढ़ाने का काम करते हैं।

लोकसेवकों की ताकत लगने से हिंदुस्तान में सर्वोदय-समाज बनेगा। वह सत्ता पर, समाज पर नैतिक अंकुश रखेगा। गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य लाने की कोशिश करेगा और जब तक ग्राम-स्वराज्य नहीं आता है, तब तक उसके लिए हवा तैयार करने का काम करेगा। यह छोटा-सा अनुक्रम है, लेकिन इसके आधार पर कुल दुनिया में ऐसी जमात बनायी जा सकती है, जो शांति की स्थापना में कामयाब हो सकती है।

कश्मीर में सर्वोदय की जरूरत

जम्मू और कश्मीर में भी लोक-सेवक बनेंगे। बन सकते हैं। उसके लिए जो प्रतिज्ञाएँ हैं, वे कठिन नहीं हैं।

कश्मीर में हमारी ३०-४० जमातों से मुलाकात हुई। इससे मुझे यहाँ की हालत के बारे में वह ज्ञान हुआ, जो पहले नहीं था। यहाँ भी सर्वोदय-समाज की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि उस जरूरत को आप पूरा करेंगे और यहाँ सर्वोदय-समाज बनायेंगे, क्योंकि यहाँ की फिजा उसके लायक है।

जम्मू
२०-९-'५९

: ७४ :

भूदान से भक्ति की तालीम

दुनियाभर मे कहा जाता है और हम लोग भी महसूस करते है कि हिंदुस्तान मे परमेश्वर के लिए भक्तिभाव बहुत है। वैसे तो परमात्मा को माननेवाले दुनियाभर मे है ही, याने यह किसी देश का ठीका नहीं हो सकता कि वही परमात्मा की भक्ति करे। फिर भी परमात्मा की भक्ति हिंदुस्तान की एक खुसूसियत मानी जाती है। यहाँ के लोगों का रुझान परमात्मा की तरफ है। मैं मानता हूॅ कि यह बात सही है। यहाँ जगह-जगह मदिर, गिरजाघर, गुरुद्वारा, मस्जिदें हैं। जब कोई अच्छा टीला देखा, तो लोगों ने वहीं मदिर खड़ा कर दिया। इन सबके अलावा भी घर-घर मे भगवान् की भक्ति करने का रिवाज है। लेकिन आज तक भक्ति का जो रग था, अब उसमें फर्क करने की जरूरत है। मैं इसी तरफ आज आप लोगों का ध्यान खींचना चाहता हूँ।

नामस्मरण भक्ति का आरंभमात्र

अक्सर हम नामस्मरण करते हैं। यह एक अच्छी बात है। मनुष्य परेशान होता है या आफत मे फॅस जाता है, तो उस हालत में नामस्मरण से उसे कुछ शाति मिलती है। हम मूर्ति-पूजा, ध्यान वगैरह भी करते है। ऑंख के सामने कोई ऐसी चीज हो कि जिस पर दिल एकाग्र हो सके, तो वह भी एक फायदे की चीज है। मूर्ति सामने रखकर पूजा कर ली, ध्यान कर लिया, यह भी एक भक्ति ही है, पर इतने से भक्ति पूरी नहीं होती। यह तो भक्ति की इफ्तेदाह, आरम्भमात्र है। लोगों में अभी यह ख्याल आना बाकी है। मगर अब धीरे-धीरे आ रहा है। मैं चाहता हूॅ कि हिन्दुस्तान के लोग इस चीज को ठीक से समझें।

भगवान् कहाँ रहते हैं ?

दरअसल भक्ति के मानी क्या है ? भगवान् रहते कहाँ हैं ? क्या वे अमरनाथ, बद्री-केदार, काशी, रामेश्वर या यरुशलम या मक्का-मदीना मे रहते है ? वहाँ भी रहते हैं, इसमे कोई शक नहीं है, वे सारी भगवान् की ही जगहे हैं। अनेक साधु, सत्पुरुष, फकीर वहाँ यात्रा के लिए, जियारत के लिए गये और उन्होंने वहाँ काफी तपस्या की है। ऐसी सब जगहों पर जाकर मनुष्य को कुछ तसल्ली मिलती है, साधु-संगति मिलती है और लाभ होता है, यह मैं कबूल करता हूँ। किन्तु हमे यह भी साफ-साफ समझ लेना चाहिए कि काशी, कैलास, मक्का आदि सारी जगहे परमात्मा की खास जगहे नहीं है। उसकी खास जगह अगर कोई है, तो वह है इन्सान का दिल। अन्तर्यामी दिल के अन्दर ही रहता है। इस बात को हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वगैरह सभी मानते हैं। लेकिन अफसोस है कि इस पर अमल नहीं करते।

सेवा, सफाई : भगवान् की पूजा

हम इस बात को अभी तक समझे नहीं है कि परमेश्वर की सबसे बढ़कर और आसान जो पूजा, इबादत, भक्ति हम कर सकते है, वह है— दुःखी, रोगी, गरीबों की सेवा, गिरे हुओं को मदद देना। हिंदुस्तान मे कुष्ठरोगियो की सेवा अक्सर ईसाई करते हैं। ईसाई लोग दूर दूर के देशो मे जाकर सेवा करते हैं, यह उनके लिए इज्जत की चीज है। लेकिन हमारे देश के लोग अभी तक उस काम मे नहीं पड़े हैं। बीमारों की सेवा मे जिंदगी सर्फ करना भगवान् की पूजा है, क्या यों समझकर हम उस काम को करते हैं ? बहुत थोड़े लोग इस काम मे लगे हैं।

हमने मेहतरों का एक ऐसा वर्ग पैदा किया है, जो सफाई करता है। हम अपना काम इतना ही समझते है कि घर मे कचरा पड़ा हो, तो रास्ते पर फेंक दें ! फिर उसे उठाना मेहतर का काम है। इन मेहतरों को हमने

अछूत भी मान रखा है। दरअसल हमे समझना चाहिए कि सफाई करना याने परमेश्वर की पूजा है, सेवा है। मैंने काशी में तथा प्रयाग मे गंगा के किनारे पर देखा है कि वहाँ बड़ी फजर मे एक ओर तो सन्यासी सूर्योपासना कर रहा है और दूसरी ओर उससे ३०-४० कदम पर एक मनुष्य पाखाने बैठा है। लोग नदी के किनारे को गंदा बना देते हैं। उसमे हमे ऐसा महसूस नहीं होता कि हमने गलत काम किया। नदियों मे नहाने मे लोग बड़ा धर्म मानते हैं, लेकिन इस बात को नहीं समझते कि वहाँ की गंदगी को साफ करना भी धर्म है। हमे समझना चाहिए, किसी जगह को गंदा बनाना अधर्म है, भगवान् के प्रति द्रोह है। ठीक इसके विपरीत गंदगी उठाना, सफाई करना, भगवान् की पूजा है। याने गरीबों की सेवा करना ही दरअसल मे भगवान् की इबादत है।

हम भक्ति के मानी समझे नहीं

हम इस बात को नहीं समझते कि अपने गाँव के गरीबों को ही मदद देना भगवान् की पूजा है। अक्सर होता यह है कि हमने अपनी आँखों के सामने कहीं बहुत ज्यादा दुःख देखा, तो आँखों की लाचारी की वजह से, विवश होकर दया के मारे हम कुछ दे देते हैं। उस समय क्या हम यह समझते हैं कि सामने किसी गरीब को देखा है याने हमे परमात्मा का दर्शन हुआ है? हमारे सामने भूखा, प्यासा भगवान् खड़ा है। उसकी भूख और प्यास मिटाना, यही है भगवान् की पूजा! वैसे हम कभी-कभी दया के काम कर लेते हैं, लेकिन नित्य पूजा की तरह क्या हम महसूस करते हैं कि हमें गाँव-गाँव घूमना है और घर-घर जाकर ढूँढना है कि कौन दुःखी है, गरीब है, पीड़ित है, बीमार है और किसे मदद की जरूरत है? जरूरत-मन्दों को मदद पहुँचाने की कोशिश करेंगे, तभी हमारे हाथ से भगवान् की पूजा होगी। अब मूर्तिपूजा के दिन लद गये हैं। अभी भी हम अपनी भावना को सिर्फ मूर्ति तक सीमित रखते हैं, निठुर बनते हैं, व्यवहार मे

दूसरों को ठगते है, सूद ज्यादा लेते है। हम यह भी नहीं समझते कि यह भगवान् का द्रोह है। आज हर चीज में मिलावट होती है। खाने की चीज मे और दवा मे भी मिलावट होती है। इस तरह एक तरफ तो हम ऐसी मिलावट करके चीजें बेचते है और दूसरी तरफ थोड़ा धर्म का काम कर लेते है, तो दिल को तसल्ली हो जाती है।

सफेद बाजार भी काला हुआ

क्या आप समझते है कि ये जो सारी चीजें चल रही है, उनका भक्ति के साथ मेल है? इस समय कहाँ झूठ नहीं है? वकील समझते है कि बिना झूठ के काम नहीं चलता। राजनीतिज्ञ, व्यापारी समझते है कि झूठ बोलना और करना ही पड़ता है। हिन्दुस्तान का सफेद बाजार भी काला है। सफेद बाजार मे भी चीज ठीक दाम में मिलेगी ही, ऐसा कोई भरोसा नहीं। वहाँ केवल अक्ल की लड़ाई चलती है। हम बाजार में ठगे न जायँ, इसके लिए बहुत अक्ल चाहिए। यह सब चलता है और हम है कि महसूस ही नहीं करते कि इसका भगवान् की भक्ति के साथ कोई मेल नहीं है!

सेवा से दिल पाक बनेगा

हम परमेश्वर का नाम लेते हैं और लाच, रिश्वत के तौर पर उसे (परमेश्वर को) कुछ देकर फायदा उठाना चाहते है। किसी पर कोई आफत आयी, तो वह भगवान् की मिन्नत करेगा कि यह आफत चली जाय, तो मैं बकरे की बलि दूँगा या ब्राह्मणों को भोजन कराऊँगा। यह भगवान् को ठगने की बात हुई। इस तरह हम भगवान् के साथ सौदा भी करते हैं। मेरे इस कहने का भाव आप यह समझ लीजिये कि हम सिर्फ मूर्ति-पूजा करेंगे, बड़ी फजर उठकर नहा-धोकर चन्दन लगायेंगे, ग्रन्थ-पाठ करेंगे, मगर इतने से भक्ति नहीं होती। आसपास के दुःखी लोगों की सेवा करने की बात हमे सूझनी चाहिए। जब हम इस बात को सम-

झेंगे कि दुःखियों की सेवा से ही भक्ति होती है, तब हमारी भक्ति का सारा जजबा सेवा में लगेगा। आज हम भगवान् का नाम लेते हैं, लेकिन उतने से दिल पाक नहीं बनता, क्योंकि भगवान् की भक्ति का असली रूप क्या है, इसे हम समझे नहीं हैं।

भूदान के पीछे भक्ति की प्रेरणा

आज एक भाई ने हमसे कहा, आप भूदान के काम में लगे हैं, यह ठीक है, लेकिन कुछ धार्मिक काम भी उठायें और लोगों को धर्म की बातें समझायें। मैंने उससे पूछा, धर्म का क्या मानी समझते हैं आप? एक गरीब भाई है। उसके बाल-बच्चे भी हैं, परन्तु उसके निर्वाह के लिए न जमीन है, न काम का जरिया है। सिर्फ हम उसे जमीन देते हैं, तो यह धर्म का काम होता है या इक्तसादी सुधार का काम होता है? सरकार हमसे टैक्स लेकर अस्पताल खोलती है, इससे उसने तो दया का काम कर दिया, लेकिन हमारी दया से धर्म बढ़ा नहीं। हम बीमार की सेवा की कोशिश करेंगे, तभी हमारा धर्म बढ़ा, ऐसा माना जायगा। जहाँ मनुष्य के गुणों का विकास होता है, वहाँ धर्म होता है। सहयोग, प्रेम, सत्यनिष्ठा, हिम्मत, दया आदि सारे सद्गुण बढ़ेंगे, तभी धर्म बढ़ेगा। मैं मजाक में कहा करता हूँ कि हम पत्थर की पूजा करते हैं, तो हमारा दिल भी पत्थर के जैसा निष्ठुर बन जाता है। इस तरह पत्थर-दिल बन जायँ, ऐसी पूजा से क्या फायदा? अगर यह अनुभव हो कि दिल नर्म बन रहा है, दिल में प्यार, रहम, मेहेर पैदा हो रही है, हिम्मत, सत्यनिष्ठा बढ़ रही है, तब वह सच्ची भक्ति होगी। क्या भूदान का काम माली हालत सुधारने का ही काम है? वह काम तो सरकार करती ही है। लेकिन हम लोगों को समझाते हैं कि आपको अपने दुःखी भाइयों के लिए अपनी चीज का एक हिस्सा समझ बूझकर, प्यार से देना चाहिए, यह धर्म नहीं, तो क्या है?

परमेश्वर की भक्ति के मानी आप क्या समझते हैं ? मुझे भगवान् की भक्ति घुमा रही है या माली हालत सुधारने की बात ? भूदान का काम अगर माली हालत सुधारना ही होता, तो मेरे जैसा बेवकूफ और कोई नहीं साबित होता, जो ऐसे काम के लिए पैदल चलता। हम पीर-पंचाल लाँघने के वक्त १३॥ हजार फुट के पहाड़ पर चढ़े थे। इस तरह अपने को खतरे मे डालकर, पैदल चलकर पहाड़ लाँघने की क्या जरूरत थी ! क्या हम हवाई जहाज से नहीं जा सकते थे ! ओलों की मार खाना, इतना बड़ा खतरा उठाकर पहाड़ लॉघना, सतत पैदल चलना, यह या तो भक्ति है या बेवकूफी। अगर हम सिर्फ माली हालत सुधारने के लिए घूमते, तो यह बेवकूफी ही मानी जाती। अगर हमारा वही मकसद होता, तब तो हम सरकार के पास जाकर उसे समझा सकते थे, व्यापार वगैरह में पड सकते थे या दूसरे तरीके से भी काम कर सकते थे, लेकिन पैदल-पैदल घूमना और लोगों के पास जाकर आजिज होकर कहना कि अपने भाइयो के लिए जमीन दो, भक्ति नहीं है, तो क्या है ?

सच्ची भक्ति होती, तो गुर्बत न रहती

फलाना काम भक्ति का है और फलाना भक्ति का नहीं है, इस तरह जिन्दगी के टुकड़े नहीं हो सकते। प्यार से रसोई बनाकर अतिथि को खिलाना एक बडा यज्ञ है। अगर हम इसे ठीक से समझे होते, तो आज हिन्दुस्तान की गिरी हालत न होती। यहाँ पर इतना लोभ नहीं होता, सफेद बाजार भी काला बाजार नहीं बनता। एक बाजू अमीरी और दूसरी बाजू गुर्बत, यह हालत न रहती। अगर लोगों के दिल मे सच्ची भक्ति होती, तो ऐसी गुर्बत न होकर एक-दूसरे को मदद देने की वृत्ति होती। हम एक-दूसरे को मदद नहीं देते। ट्रेन मे खाना खाते समय पासवाले मुसाफिर की तरफ पीठ करके खाते है और घर मे खिडकी बन्द करके। हम अपना खाना लोगों के सामने खा नहीं सकते, क्योंकि किसीकी नजर लग

जाने का डर रहता है। लेकिन क्या बच्चा खाना खाता है, तो माँ की नजर लगती है या माँ खाती है, तो बच्चे की नजर लगती है ? माँ बच्चे को प्यार करती है और उसे खिलाकर फिर खाती है। लेकिन एक हम हैं, जो अपने इर्द-गिर्द रहनेवाले भूखे लोगों की पर्वाह किये बिना ही खाना खाते हैं। इसलिए उनकी आसक्ति की नजर लगती है।

भक्ति या नासमझी ?

एक ओर तो हमारा दिल निठुर बना है और दूसरी ओर भक्ति, नामस्मरण, पूजा, पाठ, यात्रा चलती है। मैं यह नहीं कहता कि यह सारा ढोंग चल रहा है। इसमें भी अच्छाई, भलाई हो सकती है। लेकिन ऐसा करनेवाले लोग समझे नहीं कि भक्ति क्या चीज है ? हजारों लोग अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हैं। उनमें सब ढोंगी नहीं हैं, लेकिन वे समझे नहीं हैं। वे सोचते नहीं कि यात्रा के समय जिन मजदूरों को साथ ले जाते हैं, उनकी क्या हालत है ? उस हालत को सुधारने के लिए कुछ भी कोशिश नहीं करते, किन्तु वहाँ जाकर बर्फ का लिंगाकार दर्शन होता है, तो मान लेते हैं कि दर्शन हो गया। लेकिन क्या सचमुच दर्शन हुआ ? मजदूरों के वास्ते कुछ रहम पैदा हुई ? अगर मुझे यकीन होता कि हिन्दुस्तान में भक्ति के नाम पर ढोंग चल रहा है, तो अपने देश की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। लेकिन यह ढोंग नहीं, बल्कि नासमझी है। अगर लोग समझते कि भक्ति क्या है, तब तो देश का नकशा ही बदल जाता।

खादी खरीदना श्रेष्ठ धर्म

लोग बड़ी श्रद्धा से यात्रा करेंगे, उसके लिए पैसा खर्च करेंगे, लेकिन उन्हें ही खादी पहनने को कहा जाय, तो वे कहेंगे कि खादी महँगी है। जरा सोचिये तो, अगर आप सालभर में मिल का कपड़ा खरीदते हैं, तो दस रुपये में मिलता है और खादी खरीदते हैं, तो बीस रुपये में। जो दस

रुपया ज्यादा खर्च हुआ, वह धर्म के काम में खर्च हुआ, ऐसा क्यों नहीं समझते? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो, उसमें पचास रुपये खर्च करते हो और उसे धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चरखा कातती है, उसे घर बैठे रोजी मिलती है, उसके बच्चों को खाना मिलता है, तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदने में आप धर्म क्यों नहीं समझते? भाइयो, मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते, तो दूसरे कामों मे पैसा खर्च करने से धर्म कैसे हो जायगा? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया, तो उसने रेलवे को पैसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठकर अमरनाथ गया। उसका सारा सवाब तो घोड़े ने ही खा लिया। अगर वह अमरनाथ पैदल जाता, तब तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन मे, मोटर मे, घोड़े पर या गधे पर बैठकर जाने मे क्या धर्म है? आप खादी नहीं खरीदोगे, तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्चे भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदने में धर्म नहीं है?

सिर्फ तीर्थ में नहाने से पवित्रता नहीं आती

एक अमीर यात्रा के लिए निकला। उसके साथ एक गरीब नौकर भी था, जो रसोई बनाकर उसे खिलाता था। उस अमीर ने २-४ साल घूमकर सारे भारत की यात्रा की। सब तीर्थों मे नहाकर आखिर घर पहुँचा, तो उसके नौकर ने उसे एक ऐसी तरकारी खिलायी, जिससे बहुत बदबू आती थी। मालिक ने पूछा : "तुमने क्या खिलाया?" तो नौकर ने जवाब दिया : "मैंने आपको बड़ी पाक तरकारी खिला दी। जब हम यहाँ से निकले थे, तो अपने साथ कुछ आलू लेते गये। जैसे आपने हर तीर्थ मे स्नान किया, वैसे ही मैंने आलू को भी हर तीर्थ मे नहलाया। गगा मे डुबोया, जमुना मे डुबोया, कावेरी मे डुबोया और फिर उस आलू की तरकारी आपको खिलायी, जो गन्दी नहीं; बल्कि बड़ी

पाक है। आप सब तीर्थों में स्नान कर चुके हैं, तो क्या गंदे हैं?" सुनते ही मालिक समझ गया कि इसने मुझे सबक सिखाया कि तीर्थों में नहाने से कोई पाक नहीं बनता। पचासों तीर्थों में नहाना एक बात है और दिल का पाक होना दूसरी बात। आखिर समझने की जरूरत है कि भक्ति का माद्दा किसमें है?

भूदान धर्म-स्थापना का काम

मैंने सोचा कि मैं कल यहाँ से जाऊँगा और पता नहीं दुबारा कब आ सकूँगा। इसलिए अपने हृदय की बात आपके सामने रखूँ और भगवान् से प्रार्थना करूँ कि वह आपको प्रेरणा दे कि आपके पास जो अपनी ताकत है, उसे आप दुःखितों की सेवा में, दुःख-निवारण में लगायें, जो सच्ची भक्ति है। श्रद्धा, तीर्थयात्रा वगैरह सब छोटी चीजें हैं। वह आप न करें, तो भी कोई परवाह नहीं है। लेकिन गरीबों के, दुःखियों के दिल को तसल्ली देने का काम आपको करना चाहिए। आपकी दौलत, जमीन, अक्ल, वक्त, इल्म सब आपको दुःखियों की सेवा में लगाना चाहिए। यह प्रेरणा देकर और भूदान-ग्रामदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है, बल्कि यह तो हिन्दुस्तान में धर्म-स्थापना करने का, देश को सच्ची भक्ति सिखाने का काम चल रहा है—यह आपको समझाकर मैं आपसे विदा ले रहा हूँ। 'जय जगत्।'

जम्मू
११-९-'५९

: ७५ :

ग्राम-परिवार गो-सेवा के लिए आवश्यक

यह गूजरो की बस्ती है। हमे यहाँ भाई अहमद खीच लाये। अहमद हमारे साथ पदयात्रा मे दस बारह दिन रहे थे। वे अपने साथ गाय भी रखते थे। उन्होंने हमे अपनी गाय का दूध भी पिलाया।

गूजरो का आवश्यक और अहम पेशा

'बकरवाल' नाम के लोग बकरी पालते हैं और 'गूजर' लोग गाय। ये लोग पुश्त-दर-पुश्त यह काम करते आये हैं। गूजरों के दिल मे गाय के लिए वही प्यार है, जो भगवान् कृष्ण के दिल मे था। जम्मू और कश्मीर मे गूजरों की बहुत बडी जमात है। इस जमात का पेशा बहुत जरूरी और अहम पेशा है। जहाँ तक मैं समझता हूँ, कम से-कम आज के जमाने में इस पेशे के बिना अब नहीं चलेगा। हाँ, इससे आगे कुछ ऐसी जड़ी-बूटी या तरकारी मिल सकती है, जो दूध का स्थान ले ले। दूध की जरूरत न पड़े, इसके लिए साइन्स की खोजे हो रही है। लेकिन अभी तो दूध की जरूरत है। यह अलग बात है कि अभी हिन्दुस्तान के हरएक आदमी को दूध नहीं मिल रहा है, जो कि मिलना ही चाहिए।

ससार मे आबादी बराबर बढ़ रही है। उसी हिसाब से जमीन का रकबा घट रहा है। दिन-ब-दिन मामला पेचीदा होता जा रहा है। इसलिए इस समय गायों की और गूजरों के काम की जरूरत है। इस जरूरत को पूरा करने के लिए सारे गाँववालों को एक होना ही पड़ेगा, ऐसा मेरा पक्का यकीन है। अब अगर लोग अलग-अलग रहेंगे और मवेशियों का बॅटवारा अनफरदा करेंगे, तो कोई टिक नहीं सकेंगे। इसलिए जरूरत है सब जमातों, गिरोहों और समूहों के एक हो जाने की। मालकियत शामिल रहे। जमीन सबकी रहे। सहूलियत के खयाल से उसका बॅटवारा भी कर

लिया जा सकता है। ग्राम-परिवार बने। यह सब हो, तभी गो-सेवा का काम सफल हो सकता है।

इन्सान इन्सान से दुश्मनी क्यों करता है ?

इस जमाने मे ये सियासी जमातें गाँव मे जाकर एक-दूसरे के खिलाफ आग लगाती हैं। मैं कहना यह चाहता हूँ कि आपको उनके बहकावे मे नहीं आना चाहिए। आप अपने गॉव को एक राज्य समझें। अपने गाँव के लिए मसूबा आप स्वय बनायें। अपने गॉव के टुकड़े न होने दें। मुकम्मिल से, कुल से काम होगा, जुज से काम नहीं होगा। गाँव में सियासत आयेगी, तो यह मेरे खिलाफ राय देगा, वह उसके खिलाफ राय देगा और फिर सब एक-दूसरे के दुश्मन होंगे। इससे गाँव मे अमन, सुख नहीं रहेगा, प्यार नहीं रहेगा। आज आपके गॉव में झगड़ा नहीं है, लेकिन वह इस सियासत से दाखिल हो सकता है।

आज अहमद कह रहा था कि उसके कुनबे के सभी लोग कत्ल हुए। पाकिस्तान और हिन्दुस्तान, ऐसे दो टुकड़े हुए हैं, तो आपने बड़ा भुगता है, सहन किया है। इस तरह इन्सान इन्सान से दुश्मनी करता है, इसकी वजह यही है सियासत। इन सियासतवालों के बहकावे मे आयेंगे, तो तबाह होंगे। इसलिए मैं आपको आगाह करना चाहता हूँ कि आप नेशनल कानफ्रेंस हो या डेमोक्रेटिक नेशनल कानफ्रेंस हो या कोई भी अन्य पार्टी हो, सबको शख्सी तौर पर इन्सान के नाते देखिये। (१) लालच मे फॅसाना और (२) डराना, धमकाना—यही पार्टीवाले लोगों के हथियार है। लेकिन हमें निडर रहना चाहिए, डरना नहीं चाहिए, बेखौफ रहना चाहिए। हमें उनको कह देना चाहिए कि भाई, हम अपनी-अपनी राय देंगे, लेकिन हमारे गॉव में झगड़े नहीं होने देंगे, गॉव के टुकडे नहीं होने देंगे।

सटिडी
१२-९-'५९

: ७६ :

सर्वोदय-समाज कब बनेगा ?

कोर्ट में केस न जाय

हम चाहते हैं कि जैसे सरकार ने सेवा की योजना बनायी, वैसे ही लोगों की तरफ से भी योजना बने। लोग अपने मे से हर पाँच हजार की आबादी के लिए एक सेवक खड़ा करें। उसके पीछे अपनी सम्मति बनाये रखने के लिए हर घर मे सर्वोदय-पात्र रखें और उसे अपना समझकर जो-जो काम वह सुझाये, उसमे मदद दें। ये सेवक मामूली वक्त में गाँव-गाँव जाकर प्रेमभाव बढाने का काम करेंगे। उसकी एक अलामत, पहचान, निशानी यह होगी कि उस इलाके से कोर्ट मे कभी केस नहीं जायेंगे। खास मौके पर, कहीं अशाति हो, तो वे सेवक ही शाति की स्थापना के लिए मर मिटने के लिए राजी होंगे। किसीने यह दिखा दिया कि किसी एक तहसील मे से कोर्ट मे एक भी केस नहीं जाता है और लोग अपने झगड़ों का निपटारा आप कर लेते हैं, तो मैं कहूँगा कि बेहतर सर्वोदय-समाज की स्थापना हुई। दूसरे लक्षण आगे-पीछे आयेंगे ही, लेकिन सर्वोदय-समाज बना या नहीं, इसकी परख तो हम इसी बात से करेंगे कि उस इलाके मे कोर्ट मे न जाने के कारण वकील, मजिस्ट्रेट बेकार हुए हैं, मजिस्ट्रेट को रोज यही लिखना पड़ता है कि 'आज कोई केस नहीं', तिस पर भी सरकार ने कोर्ट जारी रखा, तो मजिस्ट्रेट को चरखा दे देंगे। यह बात छोटी-सी दीखती है, लेकिन छोटी नहीं है। पेड को फल आया, तो वह छोटा दीखता है, लेकिन उसके पीछे बीज, पौधा, पेड़, डालियाँ, पत्ते, फूल यह सारा काम हुआ है, जिसका नतीजा वह फल है। जैसे बच्चे खेलते-खेलते झगड़ा करते हैं, तो वह झगड़ा कोर्ट में नहीं ले जाते हैं, वैसे ही यह होना

चाहिए कि गाँव में कहीं झगड़ा हुआ, तो गाँव के लोग ही उसका निपटारा कर लें और फिर से सब लोग इत्मीनान से रहने लगें। यह तो हुआ फल, लेकिन उसके पहले फूल भी जरूरी है। गाँव का एक कुनबा बनाना—यह फूल है। लेकिन फूल पैदा होने के लिए पत्तियाँ, डालियाँ वगैरह भी चाहिए। जमीन की मिल्कियत मिटाना और जमीन पर काम करने का मौका हरएक को देना, जमीन की खिदमत से किसीको महरूम न रखना, गाँव के सब भाइयों को काम देने की जिम्मेवारी उठाना, गाँव मे उद्योग बढाना—यही सब पत्तियाँ, डालियाँ वगैरह हैं।

ग्राम-संकल्प

आज हमने खादी-उत्पादन केन्द्र देखा, वहीं पर बहनें सूत कातती हैं, उन्हे मजदूरी दी जाती है। उनके सूत का कपड़ा जम्मू, श्रीनगर जैसे शहरों में बेचा जाता है। लेकिन यह स्वराज्य सर्वोदय-समाज का लक्षण नहीं है। आज बाजार में पचासों चीजें बिकती हैं, उनमे थोड़ी-सी खादी बिके, तो उतने से सर्वोदय-समाज नहीं बनेगा। सर्वोदय समाज तो तब बनेगा, जब गाँव के लोग तय करेंगे कि हम गाँव मे बनी हुई खादी पहनेंगे, बाहर का कपड़ा नहीं खरीदेंगे। तब गाँव की बहनों को और बेकार लोगों को काम मिलेगा। उसी तरह तेल, गुड़, रस्सी वगैरह चीजें भी गाँव में बननी चाहिए। जिन चीजों का कच्चा माल गाँव में मौजूद है और जिनके पक्के माल की गाँव को जरूरत है, वह पक्का माल गाँव मे बन सके, तो गाँव मे ही बनाया जाय। गाँव के लोग तय करेंगे कि हम अपने गाँव मे ही बनी हुई चीजें इस्तेमाल करेंगे, तो बेकारी खतम होगी। ऐसा होने से गाँव में जमीन के बारे मे असमाधान नहीं रहेगा और गाँववाले अनुभव करेंगे कि हमारा एक कुनबा है, तब यह फल दिखाई देगा कि कोर्ट खाली हो गये।

वेतन के साथ-साथ अनाज भी मिले

एक बात मैं सरकार से कहना चाहता हूँ। लेकिन सरकार की सरकार है आप (जनता)। इसलिए आप ही के सामने रखता हूँ। मेरी राय मे

जितने छोटे-बड़े सरकारी नौकर हैं, उन सबको उनके परिवार के लिए जितने अनाज की जरूरत है, उतना देना चाहिए। अगर किसीकी तनख्वाह २०० रु० है, तो उसे १६० रु० दिये जायँ और बाकी निश्चित अनाज दिया जाय। फिर अनाज के दाम ऊपर-नीचे चढ़ें, तो भी कोई पर्वाह नहीं। हिन्दुस्तान मे ५५ लाख सरकारी नौकर हैं। उनके परिवार के लोगों को गिनकर तीन करोड़ की जमात बनेगी। इतने लोगो को तय किया हुआ अनाज मिलेगा, तो बहुत बड़ी बात होगी। आज सरकारी नौकरों की यह हालत है कि अनाज के दाम ऊपर-नीचे चढ़ें, तो वे सोचते हैं कि अब गुजारा कैसे हो ! इस प्रकार से उनके लिए जीना मुश्किल हो जाता है। सरकार ने मुलाजिमों (नौकरों) का जो एक मध्यम वर्ग बनाया है, उसे उसकी तनख्वाह की निश्चित रकम के साथ-साथ निश्चित अनाज भी मिले।

लगान : अनाज के रूप में

एक बात और मैं सरकार से कहना चाहता हूँ, लेकिन उसके लिए आप भी आवाज उठायें। किसान सरकार से कहें कि हमसे पैसे मे लगान क्यों लेते हो ? पैसे से बढ़कर जो चीज हमारे पास पड़ी है, वह बेचने के लिए हमे क्यों मजबूर करते हो ! तय करके अनाज के रूप में हमसे लगान लो, फिर बाजार मे दाम कुछ भी हो। कहीं अकाल हो, तो अलग बात है। लेकिन सरकार अनाज के रूप मे लगान लेगी, तो उसके पास अनाज इकट्ठा होगा और किसान को भी अनाज बेचना नहीं पड़ेगा। क्या हमारे पास सोना है, तो आप यह कहेंगे कि हम सोना नहीं लेते ? सोना बेचकर नोट दो। अनाज तो सोने से बढ़कर चीज है। इसलिए लगान अनाज के रूप मे ही लो। साथ-साथ सरकार सब सरकारी नौकरों को तयशुदा अनाज देने का तय करेगी, तो तीन करोड़ के मध्यम वर्ग को हमने बचा लिया, ऐसा कह सकते है। फिर वह वर्ग सुख-चैन से जीयेगा। बाजार मे दूसरी चीजें सस्ती या महँगी हों, तो उसकी पर्वाह नहीं। लोगों को अनाज मिल जाय, जो अहम चीज है, तो वे बच जायँगे। अनाज मिलने से लोग सुखी रहते हैं।

सारी जनता भी ध्यान दे

गाँव-गाँव के लोगों से मैं यह भी कहूँगा कि उन्हें अपने गाँव के लिए, मजदूरों के लिए, जितना अनाज चाहिए, उतना रख लेना चाहिए और मजदूरों को भी तयशुदा अनाज देना चाहिए और ऊपर से थोड़ा पैसा भी देना चाहिए। हिन्दुस्तान के ३७॥ करोड़ की आबादी मे से ३० करोड लोग गाँवों मे रहते है। इस योजना से वे तीस करोड बच जायँगे, उन्हे बाजार से अनाज नहीं खरीदना पड़ेगा। साथ-ही-साथ तीन करोड़ सरकारी नौकर भी बच जायँगे, तो जो ४॥ करोड रह जाते हैं, उनमे व्यापारी, वकील, डॉक्टर, साहूकार वगैरह होंगे। वे महँगा अनाज भी खरीद सकते हैं। इस प्रकार ३३ करोड़ लोग अगर बाजार-भाव से बच गये, तो फिर जैसे आज अनाज का भाव ऊपर-नीचे हुआ करता है और समाज मे उथल-पुथल होती है, वह नहीं होगी। मैं चाहता हूँ कि अवाम (जनता) मे यह भावना पैदा हो जाय। जनता की आवाज उठेगी, तो सरकार पर उसका तुरत दबाव पड़ेगा।

सरकारी सेवक नहीं, लोक-सेवक

सरकार के सेवक कुछ काम करते ही हैं, लेकिन हम चाहते हैं कि लोक-सेवक खड़े हों। वे सेवक ऐसे होंगे, जो लोगों पर आधार रखेंगे, सबकी सेवा करेंगे। इनके पास लोगों का दिल खुलेगा, सरकारी नौकरों के पास नहीं खुलेगा। ऐसे सेवकों के लिए घर-घर मे सर्वोदय पात्र रखे जायँ, तब लोक-शक्ति जाग्रत होगी। इसलिए जब तक लोक-शक्ति जाग्रत नहीं होगी, तब तक नाम की ही लोकशाही चलेगी और असल मे पुराने बादशाहों के जमाने के जैसी ही हालत रहेगी।

बिजयपुर
२४-९-'५९

: ७७ :

'मनुष्य' की विशेषता

हमारी एक लड़की हमसे कहती थी कि कश्मीर में आप उर्दू बोलने की कोशिश करते हैं, लेकिन 'मनुष्य' शब्द को छोड़ते नहीं हैं। यह 'मनुष्य' शब्द हिन्दी या उर्दू मे इस्तेमाल नहीं किया जाता है। मैं कहना यह चाहता हूँ कि मनुष्य मे जो खूबी, खुसूसियत, विशेषता है, वह मनुष्य शब्द ही बताता है। मनुष्य याने मनन करनेवाला, सोचनेवाला, जो उसकी विशेषता है। खाना-पीना, भोग भोगना, बच्चे पैदा करना, बीमार पड़ना और मर जाना, यह प्राणीमात्र के साथ जुड़ी हुई चीज है, इसलिए मनुष्य के साथ भी जुड़ी हुई है, लेकिन वह मनुष्य की खुसूसियत नहीं है। इतने से मनुष्य की कभी तसल्ली नहीं हो सकती है। जिसके घर में खाने की चीजें पड़ी हैं, वह भी एकादशी या मुहर्रम के रोज फाका करता है। क्या आपने कोई जानवर देखा है, जो एकादशी के दिन फाका करता है? पेट बिगड़ा या खाना नहीं मिला, तो जानवर फाका करेगा। उसी दिन उसकी एकादशी हो जायगी। लेकिन पेट मे भूख है, घर मे अन्न भरा पड़ा है, फिर भी आज एकादशी है, इसलिए मैं नहीं खाऊँगा, भगवान् का नाम लेकर थोड़ा चिंतन, मनन करूँगा, ऐसी बात मनुष्य ही करता है। फाका करने से उसे तसल्ली होती है। त्याग करने मे, दूसरे के लिए कुछ काम करने मे उसे तसल्ली मालूम होती है। मनुष्य फाँसी के तख्ते पर भी खुशी से चढ़ता है। दुनिया की सेवा में मैं मर रहा हूँ, यों सोचकर खुश होता है। कितने ही फकीर घर छोडकर घूमते हैं। स्वामी रामतीर्थ ने कहा था 'घूमते हैं योगी दर-दर मुझमें-मुझमे' इसके मानी यह हैं कि वे महसूस

करते थे कि मेरी आत्मा इतनी फैली हुई है कि दुनिया मे घूमनेवाले सब योगी मुझीमे घूमते हैं।

क्या घूमनेवाले फकीर को और जेल जानेवाले कार्यकर्ता को कोई तकलीफ नहीं होती है। रोज सुबह उठने तथा बारिश, धूप, ठड मे घूमने से शरीर को तकलीफ नहीं होती है, ऐसी बात नहीं है। लेकिन शरीर को तकलीफ होने पर भी अन्तःकरण मे समाधान रहता है। आपने ऐसा कौन-सा जानवर देखा, जिसे तकलीफ मे भी समाधान मालूम होता हो? मनुष्य शब्द मे यह जो सारी खूबी है, उसीके कारण मैं मनुष्य शब्द को छोड़ता नहीं हूँ।

क्या यह इन्सान का लक्षण है?

आज मैंने यहाँ के लोगों से पूछा कि इस गाँव मे मुसलमानों के कितने घर हैं? जवाब मिला कि पहले कुछ डेढ़-दो सौ घर थे, लेकिन अब एक घर है। कुछ लोग मारे गये और कुछ लोग भाग गये। बीच मे हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के बँटवारे के वक्त एक खराब हवा चली थी, जिससे लोगों के दिमाग बिगड़ गये थे। इन्सान अपनी इन्सानियत खोकर हैवान बन गया था। उसी समय यह बुरा काम हुआ। जिन्होने मुसलमानों को कत्ल किया, उनमे जपुजी, गीता, रामायण पढनेवालों मे से ही कुछ लोग होंगे, जिनकी उन किताबों पर श्रद्धा भी होगी। ऐसी किताबों पर श्रद्धा रखनेवाले कत्ल कर सकते हैं, क्या यह इन्सान का लक्षण माना जायगा?

सावा
१५-९-'५९

: ७८ :

कामयाब सफर

[जम्मू-कश्मीर राज्य की यात्रा का यह आखिरी दिन था। राज्य-सरकार की तरफ से उद्योग-मंत्री श्री श्यामलाल सराफ तथा नेशनल कानफ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी श्री बक्शी अब्दुल रशीद ने आरम्भ में भाषण करते हुए कहा कि "विनोबाजी की यात्रा का कश्मीर पर बहुत असर हुआ है। हम सब आपके मार्गदर्शन में चलने की कोशिश करेंगे।"]

सुनने के मिशन में पूरी कामयाबी

आज मुझे बहुत ज्यादा नहीं बोलना है, बल्कि यहाँ कदम रखते हुए जो बात मैंने कही थी, उसमे मै कहाँ तक कामयाब हुआ, इसका इजहार करके आपसे विदा लेने का ही यह मौका है। मैंने इस स्टेट मे कदम रखते ही कहा था कि "मै यहाँ देखने, सुनने और प्यार करने आया हूँ।" सुनने और देखनेवाले को और जो प्यार करना चाहता है, उसको प्यार के लिए कभी-कभी बोलना पड़ता है और विचार-सफाई के लिए भी बोलना पड़ता है। उतना तो मैं बोलूँगा, लेकिन मेरा मिशन देखने, सुनने और प्यार करने का ही है। मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे इस मकसद मे अच्छी कामयाबी हासिल हुई है।

मुझे जो सुनना था, वह सब लोगों ने सुनाया। जितना सुनने की जरूरत थी, उससे ज्यादा सुनाया। लेकिन हर हालत में जो कुछ सुनाया है, दिल खोलकर सुनाया। जिन्होंने अपने विचार मेरे सामने रखे, वे एक-दूसरे के मुख्तलिफ थे। एक-दूसरे से डरते हुए भी पाये गये और उन्हें एकान्त मे बात करने की जरूरत महसूस हुई, इसलिए हमने एकान्त मे भी बात की। मुझे यह कहने में खुशी होती है कि जिस किसी

जमात के साथ हमारी बात हुई, चाहे वह सियासी जमात हो, मजहबी जमात हो या समाजी जमात हो, चाहे चन्द व्यक्ति हों, उन सबने यह महसूस किया कि यह अपना ही आदमी है और इसके सामने दिल खोल कर बात रखने मे कोई खतरा नहीं है। बल्कि इसकी तरफ से हमारे लिए हमदर्दी ही रहेगी और जवाब मे साफ बातें ही कही जायँगी। ऐसा विश्वास रखकर लोगों ने हमारे सामने अपनी बातें रखीं और मेरी सुनने की जो मंशा थी, उसमे हम पूरे कामयाब हुए।

देखने के मिशन में काफी कामयाबी

मेरा देखने का जो मंशा था, उसमे हम कुछ कामयाब हुए हैं, पूरे कामयाब नहीं हुए हैं। क्योंकि सैलाब की वजह से कुछ हिस्सा देखने का रह गया। सैलाब न आता, तो हम और हिस्से भी देखते। जो मियाद, मुद्दत हमने बाँध रखी थी, उसमे हम और हिस्सों मे भी जा सकते थे। हमारी कृष्णा बहन (कृष्णा मेहता, सदस्य, लोकसभा) का जन्मस्थान किश्तवाड़ मे भी हम जाना चाहते थे, लेकिन नहीं जा सके। उसमे वक्त की कमी भी एक कारण था और सैलाब की वजह से हमे कुछ जगहों पर ज्यादा रुकना पड़ा था। इसलिए देखने मे हम सौ फी-सदी कामयाब हुए, ऐसा नहीं कह सकते। लेकिन चावल पका है या नहीं, यह देखने के लिए चावल का हर दाना देखने की जरूरत नहीं रहती। थोड़ा-सा देखने पर मालूम हो जाता है। इसलिए मैंने जो देखा और काफी देखा, उससे काफी खयाल आ सकता है। अगरचे इस स्टेट का पूरा दर्शन करना हो, तो चार महीने नाकाफी है। एक साल की जरूरत है, क्योंकि यहाँ मुख्तलिफ मौसम होते हैं। उन मौसमों मे लोगों की क्या हालत होती है, यह उनके साथ रहे बगैर नहीं मालूम हो सकता। इसलिए जाड़े मे श्रीनगर मे रहना जरूरी था। तब मुझे पता चलता कि लोगों की क्या हालत होती है। लेकिन इतना समय मेरे पास नहीं था, न मैंने इतना समय देना जरूरी ही समझा। यह पहला

ही मौका था। अगर परमेश्वर ने चाहा और उसे जरूरत महसूस हुई, तो वह मुझे यहाँ दुबारा भी ला सकता है। लेकिन पैदल घूमनेवाला किसी जगह को छोड़ता है, तो फिर से आने का खयाल नहीं कर सकता, सब कुछ ईश्वर पर छोड़ता है। एक साल का अनुभव चार महीने मे नहीं आ सकता था, फिर भी मैंने जितना देखा, वह हालत का अन्दाजा करने मे काफी था।

पूरा प्यार किया

मेरा तीसरा काम था—प्यार करना। इन चार महीनों में एक भी मौका मुझे याद नहीं, जब कि प्यार के सिवा और कोई खयाल मेरे मन मे आया हो, मेरे मुँह से कोई सख्त शब्द निकला हो। वैसे शब्द तो काफी निकले हैं और सामने जो लोग आये, उन्हे मैंने डॉटा-फटकारा भी, लेकिन उन्होंने उस डॉट और फटकार में प्यार ही महसूस किया। मैंने उन्हे जितना डॉटा और फटकारा, उन्होंने उतना ही अपने मे और मुझमें नजदीकी महसूस की। परमात्मा की कृपा थी कि प्यार करने का मेरा इरादा पूरा हुआ। जहाँ तक ये तीनों चीजें मिलकर हालात को पहचानने और समझने की बात थी, उसमे मैं जो समझा, वह थोड़ा-थोडा लोगों के सामने रखता गया। खानगी में और जाहिरा तौर पर भी बोला हूँ। उसमें जो फर्क रहा, वह इतना ही कि जो बात चद लोग समझ सकते हैं, वह मैंने चन्द लोगों के सामने रखी और जो बात आम लोग समझ सकते हैं, वह आम लोगों के सामने रखी। इसके अलावा और कोई फर्क उन दोनों मे नहीं रहा। इस तरह का फर्क करने का माद्दा मुझमे नहीं है। मैं जो बोलता हूँ, वह समझनेवाले की कूवत देखकर बोलता हूँ। मुझे यह कहने में बड़ी खुशी होती है कि जहाँ अक्सर किसीको जाने का मौका नहीं मिलता, मुझे मौका मिला और इसमे किसीका कोई नुकसान होने का था ही नहीं। फौज के सामने भी बात करने का मौका मुझे मिला। मुझे

यह कहने मे बड़ी खुशी होती है कि मैंने पाया कि फौज में जो लोग आते हैं, वे सचमुच सेवा करने के खयाल से ही आते हैं। यह ठीक है कि उनका काफी समय ऐसे ही घूमने और देखने मे जाता है, लेकिन कुल मिलाकर मुझ पर यह असर रहा कि उनमे सेवा करने का खयाल है और मेरे विचार उन्होंने प्यार से ग्रहण किये। यहाँ पर मैं कई जमातों से मिला। मुसलमान, हिन्दू, सिख, बौद्ध वगैरह जमातें, हरिजन, रिफ्यूजी (शरणार्थी), एक्स-सोल्जर्स (अवकाशप्राप्त सिपाही) वगैरह लोग और कई तबकों के लोग मेरे पास आये और मेरे पास जो था, मैंने उन्हें दिया। इतने मे उन्होंने तसल्ली मानी। इससे हम कह सकते हैं कि हमने अपने प्यार करने तथा प्यार पाने का तीसरा मशा भी बहुत कुछ पूरा होते देख लिया। सर्वोदय मे प्यार पाना भी एक मुख्य काम है।

इल्म नहीं, अमल का दावा

यहाँ लोगों ने तीन-चार दफा मुझे याद दिलाया कि इसी प्रकार का मिशन लेकर भगवान् शकराचार्य कश्मीर आये थे। मैंने कबूल किया कि शकराचार्य के मिशन का जो स्वरूप था, उससे मेरे मिशन का स्वरूप मिलता-जुलता है। उन्होंने अद्वैत का विचार कहा था। याने इन्सान इन्सान मे कोई फर्क नहीं है, बल्कि इन्सान परमात्मा के नूर से भी जुदा नहीं है, परमात्मा के नूर का ही एक जुज है। वह कुल है, यह जुज है। यही अद्वैत है। यही पैगाम लेकर शकराचार्य यहाँ आये थे। मुझे यह देखकर खुशी हुई कि श्रीनगर में एक पहाड़ पर उनकी याददाश्त मे भगवान् शकर का मदिर बनाया गया है। मलाबार का एक लड़का—हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिण किनारे का एक लडका उस जमाने मे कश्मीर तक पैदल पैदल आया, सिर्फ यही बात समझाने के लिए कि इन्सान-इन्सान के बीच और इन्सान और भगवान् मे भी कोई फर्क नहीं है। इन्सान और भगवान् के बीच अगर कोई फर्क है, तो सिर्फ मिकदार (मात्रा) का फर्क है। वह कुल है, तुम

जुन हो। इस तरह परमात्मा, इन्सान और कुदरत—तीनो एक ही नूर की चीजें हैं। तीनों मे एक ही माद्दा है। सिर्फ यही बात समझाने के लिए वह शख्स यहाँ आया और उसने हिमालय मे, कैलाश मे जाकर देह छोड़ी। इस बात को यहाँ के लोग याद करते हैं और उसके साथ मेरा भी नाम जोड़ देते है। उनके साथ मेरी कोई तुलना ही नहीं हो सकती। वे बड़े आलिम थे, मैं तो एक खिदमतगार हूँ। अल्ला का बन्दा हूँ। मै इल्म का दावा नहीं कर सकता हूँ। बल्कि मुझमे जितना इल्म है, उसके अमल का दावा करता हूँ। वे बड़े आलिम थे और मै बुजुर्गों के दिये हुए इल्म पर अमल करने की कोशिश करनेवाला, उनकी रहनुमाई में चलनेवाला, उनका एक शागिर्द हूँ। इसलिए उनकी और मेरी कोई तुलना नहीं हो सकती।

'इलहाम'

मैं तो नाचीज हूँ, लेकिन जो मिशन लेकर आया हूँ, वह नाचीज नहीं है। बल्कि वह बहुत बड़ी चीज है। उससे न सिर्फ कश्मीर को, बल्कि हिन्दुस्तान को और दुनिया को नजात मिलनेवाली है। यह एक ऐसा ऊँचा विचार है, जिसे हम ऊँचा नहीं रख सकते, बल्कि हमे उस ऊँचाई तक पहुँचना होगा—उस पर अमल करना होगा। ऐसा एक ऊँचा विचार लोगों के सामने रखने की प्रेरणा भगवान् ने मुझे दी है। आप चाहे तो उसे 'इलहाम' (दैवी प्रेरणा) कह सकते हैं। मैं बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल करना नहीं चाहता। मामूली शब्द ही इस्तेमाल करना चाहता हूँ। लेकिन इलहाम अगर यह न होता, तो मैं अपने मे घूमने की ताकत न पाता। मैंने आठ वर्षों से देखा है और कश्मीर में भी, जैसा कि अभी भाई साहब ने कहा है, हमें कई मुसीबतों से गुजरना पड़ा, लेकिन मुझ पर उनका कोई भार नहीं है। जैसे गुल का कोई भार नहीं होता, खुशी ही होती है, वैसे जब मैं याद करता हूँ कि इन चार महीनों मे मुझे कहाँ-कहाँ जाना पड़ा, तो खुशी का ही एहसास करता हूँ। मुझे किसी भी किस्म की तकलीफ

का एहसास नहीं होता। इसका एक कारण यह भी है कि यहाँ के लोग बड़े मेहमान नवाज हैं। उन्होंने हमें अच्छी तरह से सँभाला, हिफाजत से रखा, कोई कमी नहीं रहने दी। लेकिन सबसे बड़ी चीज मैं यह मानता हूँ कि वह जो घुमानेवाला है, वह मुझे घुमा रहा है।

रूहानियत को अमल में लाने का तरीका : ग्रामराज्य

मैं आपके सामने एक बड़ी बात रखनेवाला हूँ कि दुनिया के मसले कैसे हल हो सकते हैं। अभी भाई साहब ने मुझसे पूछा कि कश्मीर के आपके अनुभवों का निचोड़ बताइये। हमने कहा कि निचोड़ यह है कि दुनिया के मसले रूहानियत से ही हल होनेवाले है, सियासत से कतई नहीं। सियासत नाचीज है। जितना साइन्स बढ़ रहा है, उतनी सियासत फीकी पड़ रही है। सियासत और साइन्स दोनों एक होंगे, तो समझना चाहिए कि दुनिया खत्म ही होनेवाली है। इसलिए हमें रूहानियत और साइन्स, इन दोनों को जोड़ना चाहिए। उन्होंने पूछा कि रूहानियत से मसले किस तरह हल किये जा सकते है? रूहानियत कैसे प्रकट की जा सकती है? तो हमने कहा कि गाँव गाँव के लोगों को यह एहसास हो कि हमारा गाँव एक कुनबा है। यों समझकर वे जमीन की मिल्कियत मिटा दें, शामिलात मिल्कियत मानें, जमीन बाँट दें, शख्सी मिल्कियत न रहने दें। गाँव की एक सभा बनायें, जो यह जिम्मा उठाये कि गाँव के हर शख्स को काम या खाना देना होगा। गाँव की दस्तकारियाँ बढ़ाने का काम भी वह करे। इस तरह गाँव गाँव अपना गाँव याने एक स्टेट ही है, ऐसा महसूस करके अपना मसूबा बनाये। फिर हम कहाँ रहें, भारत में, एशिया मे या दुनिया में, यह सवाल ही नहीं रहेगा। हम अपनी जगह हैं और ईश्वर की गोद मे हैं। बेवकूफ मुसाफिर यहाँ आकर लोगों से पूछते हैं कि आपको कहाँ जाना है? ताँगेवाले से वे पूछते है कि तुम कहाँ जाना चाहते हो? कोई चिड़िया होती, तो बताती कि फलाने घोसले में

जाना चाहती हूँ। लेकिन हमे कहाँ जाना है? हमे अपने खेत मे काम करना है, अपनी जगह नहीं छोड़नी है और अल्लाह की गोद मे रहना है। तुम टूरिस्ट आओ और जाओ, हमसे कोई मतलब नहीं। हमें परमात्मा की, इन्सान की सेवा करनी है। हम सारे गाँववाले इकट्ठा हुए हैं। हम सबकी खिदमत करते हैं। कुदरत की, इन्सान की और अल्लाह की खिदमत करते-करते हम जीयेंगे और जब अल्लाह हमे बुलायेगा, तब हँसते-हँसते उसके पास जायँगे, रोते-रोते नहीं। अगर हमसे पूछा जाय कि तुम्हे कहाँ जाना है, तो हम कहेंगे कि परमात्मा के पास जाना है। जब तक वह नहीं बुलायेगा, तब तक हम अपने गाँव मे प्यार से रहेंगे और अपने गाँव को बहिश्त बनाने की कोशिश करेंगे। रूहानियत और इन्सान की मदद से हम इस दुनिया मे जन्नत ला सकते हैं। वह लाने की हमारी कोशिश चलेगी। हमारा किसीके साथ कतई झगड़ा-फसाद नहीं है। यह बात गाँव-गाँव के लोग समझे और सरकार भी गाँववालों को यह बात समझाने की कोशिश करे।

लोग अपना मन्सूबा खुद बनायें। कोई चीज ऊपर से लादी जाती है, तो हम या तो ऊपरवालों की तारीफ करते हैं या उनके खिलाफ बोलते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। बल्कि हमे यह महसूस करना चाहिए कि हम अपने गाँव को बनायेंगे। गाँव में सियासी जमातों को दखल नहीं देने देंगे। सियासत का गाँव से कोई ताल्लुक नहीं है। ऊपर के तबके मे आप सियासत रखना चाहते हैं, तो रखें, लेकिन गाँव की तरक्की के साथ सियासत का कोई ताल्लुक नहीं है। अब तो सियासी पार्टियों को मिलकर तय करना चाहिए कि हमारे रवैये ऐसे हैं कि हमे देहात में दखल नहीं देना चाहिए। बल्कि देहात को प्यार से मुकम्मिल बनाने का रवैया हमें अख्तियार करना चाहिए।

सब एक साथ भगवान् का नाम लें

गाँव मे हिन्दू, मुसलमान, सिख वगैरह सब मजहबों के लोग भगवान्

का नाम लेने मे प्यार से इकट्ठा हों। रूहानियत और साइन्स दोनों के लिए यह जरूरी है। मुझे कभी-कभी यह देखकर दुःख होता है कि और कामों के लिए तो हम इकट्ठा हो सकते हैं, लेकिन जहाँ भगवान् का नाम लेने का मौका आता है, वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख सब अलग-अलग हो जाते हैं। मैं सोचता हूँ कि भगवान् कम्बख्त कैसा है कि उसका नाम लेने का मौका आया, तो हमें अलग होना पड़ता है। मैं कहना चाहता हूँ कि और कामों मे अलग होना मैं समझ सकता हूँ, लेकिन परमात्मा का नाम लेने में हमें एक होना चाहिए। इस तरह हम हर गाँव में परमात्मा का नाम लेने में इकट्ठा हों और उस वक्त कुरानशरीफ, गीता, ग्रन्थ-साहब, धम्मपद, बाइबिल वगैरह किताबो का मुताला मिलकर करें। एक मिला जुला समाज बनायें। कुरानशरीफ में कहा है, 'उम्मतुं वाहिद्' तुम सब एक उम्मत् हो। जितने भी पैगम्बर, नबी, वली, ऋषि, मुनि, साधु, महापुरुष हो गये, उन सबकी एक ही जमात है, एक ही कौम है। यह इजहार कुरानशरीफ ने दिया है। गीता में भी कहा है कि तुम कहीं से भी आते हो, मेरी तरफ ही आते हो। 'मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः' हे अर्जुन, सब इन्सान सब बाजुओं से मेरी तरफ ही आ रहे हैं। याने बिल्कुल कुरानशरीफ ने जो बात कही—'कुल्लुन् इलैना राजीऊन' वही बात गीता कहती है। सब अच्छे-अच्छे धर्मग्रन्थ एक ही बात कहते हैं। हम सब प्यार से एक साथ बैठकर उन धर्मग्रन्थों का मुताला करें। हम एक साथ गायें, एक साथ खायें, एक साथ खेलें, कूदें, नाचे, एक-दूसरे पर खूब प्यार करें और जाते समय हँसते हँसते चले जायें। मेरी सिर्फ एक ही ख्वाहिश है कि परमेश्वर के पास जाते समय रोने का मौका न आये, -हम हँसते हँसते चले जायँ। यों सोचकर कि हम भगवान् से मिलने जा रहे हैं, हमें खुशी होनी चाहिए। हमे अन्दर से यह यकीन होना चाहिए कि हम भगवान् के पास पहुँच रहे है, तो अब उनका प्यार हमें हासिल होनेवाला है। हम उनके हुक्मबरदार

हैं, उनके कदमों की खिदमत करने की हमने कोशिश की है, इसलिए हमें कोई खौफ नहीं है, कोई डर नहीं है। बिल्कुल बेखौफ, बेडर, जैसा कि कुरानशरीफ ने कहा है : 'ला खौफु ? अलैहिम वला हुम् यह जनून्' निर्भय होकर हम परमात्मा के पास हँसते-हँसते चले जायँ। गाँव-गाँव के लोगों को हम इस तरह तैयार करेंगे, तो जो सियासी मसले हैं, वे हवा में उड़ जायँगे।

कश्मीरियों का खूबसूरत दिल

कश्मीर वादी मे हमे जो अनुभव आया, उससे यही महसूस किया कि कश्मीर-वादी के लोग ठडे मिजाज के है, गरम मिजाज के नहीं। वैसे चन्द लोग तो गर्म मिजाजवाले होते ही है। उनके बिना जिन्दगी मे जायका नहीं रहता। जैसे खाने में थोड़ी-सी मिर्च रहे, तो जायका मालूम होता है, लेकिन मीठी ही चीज ज्यादा हो, तो उसके साथ थोड़ी-सी मिर्च, थोड़ा-सा कडुआपन चल जाता है। क्योंकि बाकी सारा मीठा ही मीठा मामला होता है। ऐसा ही अनुभव हमे कश्मीर-वादी मे आया। इस किस्म का तजुर्बा होगा, ऐसा मुझे पहले से अन्दाजा नहीं था, यह मै कबूल करता हूँ। वैसे पहले से ही अन्दाजा होना चाहिए था। मुझमे इतनी अक्ल होनी चाहिए थी कि जहाँ कुदरत ठडी है, वहाँ लोगों का दिमाग भी जरूर ठंडा होगा। फिर भी मुझे पहले अन्दाजा नहीं था और वहाँ जाने पर मैंने देखा कि लोगों मे बहुत प्यार है, किसी प्रकार की कौमियत का खयाल नहीं है। वैसे चंद लोग जो सियासत मे पडे हैं, उनकी बात छोड़ देता हूँ, लेकिन आम लोग मेहमाननवाज है, इन्सानियत को परखनेवाले हैं, रूहानियत की कद्र करनेवाले है और खूबसूरत दिलवाले हैं।

हिन्दुस्तान पर प्यार : दुनिया पर प्यार

जम्मू के लोगों से हमने कहा कि तुम गर्म मुल्क मे रहते हो, तो गर्म मिजाज मत रखो। तुम इधर से कश्मीर के साथ और उधर से हिमाचल

प्रदेश के साथ जुड़े हो। दो ठंडे प्रदेशों के साथ जुड़े हो और यहाँ झेलम, चिनाब और रावी जैसी बड़ी नदियाँ बहती हैं। कभी मिजाज गर्म हो जाय, तो नदी मे जाकर ठंडे पानी से नहा लो। हिन्दुस्तान के साथ तुम्हारा प्यार है। वह प्यार कायम रहे और बढे, यह मैं चाहता हूँ। हिन्दुस्तान और दुनिया मे कोई फर्क मत करो। एक जमाने मे हम 'जय हिन्द' कहते थे और ठीक ही कहते थे, क्योंकि हिन्दुस्तान मे एक ही जमात नहीं है, मुख्तलिफ जमाते, मजहब वगैरह हैं। इस कश्मीर मे हिन्दुओं के लिए अमरनाथ का मदिर है, वैसे ही उधर अजमेर मे मुसलमानों के लिए अजमेर का दरगाहशरीफ है और बौद्धों के लिए बोधगया और सारनाथ हैं। ईसाइयों के लिए केरल मे सेंट टॉमस का मॉट है। ईसामसीह के पहले शिष्यों में से एक शिष्य टॉमस हिन्दुस्तान मे आया था और यहीं मरा। इस तरह हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ जमातें रही हैं, इसलिए हिन्दुस्तान पर प्यार करने का मतलब है, दुनिया पर प्यार करना। हिंदुस्तान मुख्त-सर, थोड़े मे दुनिया ही है। इसलिए हिन्दुस्तान पर हम प्यार करेंगे, तो कौमियत में गिरफ्तार नहीं होंगे, क्योंकि यह वसी देश है।

तिब्बतियो को पनाह देना भारत का धर्म

दस हजार साल का पुराना इतिहास हमारे पीछे है। यहाँ सैकड़ों जमातें आयी हैं, अब भी आ रही हैं। अभी आपने देखा कि तिब्बत से लोग डर के मारे भागे और इन्हे कहाँ पनाह मिली? हिन्दुस्तान मे पनाह मिली। उनकी सियासत से हमें कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन वे मारे जा रहे थे, भाग रहे थे और पनाह चाहते थे, तो हमने पनाह दी। यह चीज चीन-वालो को ठीक नहीं लगी। लेकिन मैं चीनवालों से कहना चाहता हूँ कि मेरे देश की इज्जत इसके साथ जुड़ी हुई है। यह मेरा देश वह देश है, जिसने गौतम बुद्ध को जन्म दिया। यह देश किसीसे दुश्मनी करनेवाला नहीं है। इसलिए चीनवालो के साथ इसका वही प्रेम रहेगा, जो पुराने जमाने से

चला आ रहा है। लेकिन हम तिब्बत के लोगों को पनाह नहीं देते, तो हम इन्सानियत को खोये हुए साबित होते।

पुराने जमाने में यहाँ ईरान से पारसी लोग भागकर आये। करीब १३ सौ साल पहले की बात है। वे बम्बई के किनारे उतरे और उन्हे यहाँ पनाह मिली। आज दुनिया मे पारसी करीब एक लाख होंगे और वे हिन्दुस्तान में हैं। उनका एक मजहब है, जिसे जरथुस्त का धर्म कहते हैं। वे लोग हिन्दुस्तान मे हमलावर बनकर नहीं आये थे, पनाह माँगने आये थे, तो हमने उन्हे पनाह दी। जैसे पुराने जमाने मे हमने उनको पनाह दी, उनकी सियासत से हमारा कोई वास्ता नहीं था, हमारा तो इन्सानियत से वास्ता था। वे आफत में थे और भागकर आ रहे थे, इसलिए हमने उन्हे जगह दी। भारत देश का मतलब ही है—सबका भरण करनेवाला देश। इसलिए इस देश के दरवाजे सबके लिए खुले हैं। हमने तिब्बतवालों को इसीलिए पनाह दी।

मैं चीन को यकीन दिलाना चाहता हूँ

मैं चीनवालों को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि गौतम बुद्ध का पैगाम उठाने के लिए कूवत के साथ कोई देश राजी हो, तो हिन्दुस्तान राजी है और कोई देश राजी हो या न हो। गौतम बुद्ध का पैगाम हिन्दुस्तान ने जितना माना, शायद ही किसी देश ने माना होगा। अहिंसा की बात हिन्दुस्तान में जितनी पनपी, उतनी शायद ही दूसरे किसी देश में पनपी होगी। यह बात यहाँ के लोगों के खून मे जितनी गहरी पैठी है, उतनी दूसरे देश मे दिखाई नहीं देती। हमने बौद्ध-धर्म को यहाँ से बिदा नहीं किया, बल्कि यहाँ का शान्ति का पैगाम पहुँचाने के लिए बाहर भेजा। मैं फ़ख्र के साथ कहना चाहता हूँ कि यहाँ से बुद्ध भगवान् की नसीहत लेकर जो मिशनरी बाहर गये, वे फौज लेकर नहीं गये। वे तिब्बत, चीन, जापान, हिन्दएशिया, मगोलिया, लका, स्याम, बर्मा वगैरह

देशों में गये, तो उन्होंने वहाँ पर अपनी हुकूमत कायम नहीं की, बल्कि वे वहाँ इल्म और प्यार लेकर गये और इसी तरह से चीन से यहाँ यू-एन-त्सग जैसे बड़े-बड़े यात्री आये। इसलिए चीनवालों के साथ हमारे ताल्लुक कभी नहीं बिगड़ सकते हैं। मेरी आत्मा, हिन्दुस्तान की आवाज कह रही है कि हम चीनवालों को यह यकीन दिलाना चाहते हैं, लेकिन हमने तिब्बतवालों को पनाह दी, तो इन्सानियत के लिए दी, इसको वे समझें।

'जय जगत्' भारत के लिए स्वाभाविक चीज

भारत इण्टरनेशनल नेशन (अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र) है, मामूली राष्ट्र नहीं। इसलिए हम दस साल पहले 'जय हिंद' कहते थे, तो गलत नहीं था। लेकिन दस साल में हम इतने आगे बढ़े कि आज यहाँ का बच्चा-बच्चा 'जय जगत्' बोलने लगा है। यूरोप के लोग जब इस बात को सुनते हैं, तो उन्हे खुशी और ताज्जुब मालूम होता है कि हिन्दुस्तान के बच्चे किस तरह यह वसी खयाल कबूल कर सकते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के बच्चे 'जय जगत्' इसलिए कबूल करते हैं कि ऋषि-मुनियों का, नबियों का पैगाम यहाँ की हवा में फैला है। इसलिए हिंदुस्तान का बच्चा छोटी बात मुश्किल से समझ सकता है। मैं दूसरे देश से अलग हूँ, इसे नहीं समझ सकता। लेकिन मैं कुल दुनिया का हूँ और दुनिया हमारी है, इस बात को आसानी से समझ सकता है। सर्वोदय का मकसद यही है कि वह देश-देश के बीच जो दीवालें खड़ी की गयी हैं, उन्हे तोड़ना चाहता है। जैसे आज हम हिन्दुस्तान के एक सूबे से दूसरे सूबे में जा-आ सकते हैं, प्यार से कहीं भी रह सकते हैं, तिजारत कर सकते हैं, दर्शन के लिए, इल्म पाने के लिए जा सकते हैं, वैसे ही दुनिया में इन्सान कहीं भी जा-आ सकता है, यही हमे करना है। जब तक यह नहीं होगा, तब तक सर्वोदय माननेवाले लोग चैन नहीं पा सकते। इसलिए 'जय हिन्द' अच्छा ही विचार था, उसमें कोई कौमी खयाल नहीं था, तब भी देखते-देखते हम 'जय हिन्द' से

'जय जगत्' तक पहुँच गये। अभी भाई बख्शो रशीद ने अपनी तक़रीर 'जय जगत्' कहकर शुरू की। इतनी वह चीज फित्री है। बीच में अंग्रेजों के राज में उन्होंने कौमों के बीच झगड़े का जहर फैलाया, 'विभाजन और शासन' की नीति चलायी, इससे हमारे दिमाग बिगड़ गये, लेकिन अब हमारी असली चीज बाहर आ रही है और 'जय जगत्' का सन्देश हिन्दुस्तान कबूल कर रहा है।

'जय जगत्' मंत्र है

'जय जगत्' यह कोई नारा नहीं है। नारे एक-दूसरे के साथ टकराते हैं। इसलिए यह नारा नहीं, बल्कि अरबी में जिसे 'कौल' कहते हैं या संस्कृत में 'मन्त्र' कहते है, वह है। जैसे गायत्री-मन्त्र, अल्फ़ातिहा मन्त्र, 'बिस्मिल्ला हि रहमान, निर्रहीम' यह मन्त्र है, ऐसे ही 'जय जगत्' मन्त्र है, 'कौल' है। यह मन्त्र हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा बोल रहा है, इसकी मुझे खुशी होती है।

परमात्मा से दुआ माँगिये

यहाँ के लोगों ने कुछ जमीन दी है। वह सीलिंग बनने के बाद की जमीन है, इसलिए लोगों ने अपने जिगर का टुकड़ा काटकर दिया है। इसके मानी है कि लोग 'जय जगत्' पकड़ रहे हैं। उन्हें इसका एहसास हो रहा है। मैं आज ज्यादा बोलना नहीं चाहता, बल्कि सिर्फ प्रेम प्रकट करना चाहता हूँ। इन चार महीनों में मुझसे कोई गलत काम हुआ होगा या कुछ गलत लफ्ज मेरे मुँह से निकला होगा, मुझे तो याद नहीं, फिर भी निकला होगा—तो आप मुझे माफ कीजिये और परमात्मा के पास मेरे लिए दुआ माँगिये।

कठुवा
२०-९-'५९

: ७९ :

कश्मीर में विश्व-साक्षात्कार

[सर्व-सेवा-संघ की बैठक में]

साइन्स के जमाने में पुरानी सियासत इतनी पुरानी हो चुकी है कि वह छोड़नी ही होगी, तभी इन्सान आगे बढ़ेगा, नहीं तो नये-नये मसले तो पैदा जरूर होंगे और पुराने मसलों का हल नहीं निकलेगा। जितना मैं चिन्तन करता हूँ, उतना मैं इसी नतीजे पर आता हूँ।

अभी मैं कश्मीर गया था, तो वहाँ भी मुझे इसी चीज का दर्शन हुआ और मैंने ये बातें बार-बार लोगों के सामने रखीं। यह मेरी खुशनसीबी है, हमारी जमात की, याने सर्वोदय का विचार माननेवालों की खुशनसीबी है कि वहाँ जिन जिन भाइयों से, जमातों और तबकों से बात करने का मुझे मौका मिला, उन सबने मेरे सामने दिल खोलकर बातें रखीं और कभी किसी प्रकार का कोई संकोच महसूस नहीं किया, जब कभी वे मेरे सामने सियासी चीजें रखते थे, तो मैं उन चीजों पर सीधा प्रहार करता था और मुझे कहने में खुशी है कि बिलकुल ऐसे लोग कि जिनके लिए मैंने कतई आशा नहीं रखी थी कि वे मेरी चीज समझेंगे, वे भी उसे समझे और मुतस्सर हुए, उनके चित्त पर उसका परिणाम हुआ। आखिर कुछ लोगों ने मुझसे कहा कि इस प्रकार साफ-साफ बात हमारे सामने रखनेवाला और पूरी हमदर्दी के साथ पेश आनेवाला शख्स अभी तक कश्मीर में नहीं आया।

मसलों के हल का उपाय

जब वहाँ के लोगों ने मुझे सुनाया कि कश्मीर का एक मसला है और उसके तरह-तरह के हल जो उन्हें सूझे थे और उन्होंने सोचे थे, वे

मेरे सामने रखे, तो उन सबको मैंने तोड़ा और उन्हें स्पष्ट दर्शन कराया कि ये मसले जिस तरह आप सुलझाना चाहते हैं, उस तरह से सुलझते हैं ही नहीं, बल्कि दिन व-दिन हर छोटा-सा मसला छोटा ही नहीं रहेगा, सीमित नहीं रहेगा, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय रूप लेगा और पेचीदा बनता जायगा। इसलिए ऐसे सब मसले हल करने के लिए मन के ऊपर उठना चाहिए। अभी हमारा मन जिस स्तर पर काम करता है, उसके ऊपर के स्तर पर सोचना होगा। इन मसलों को हल करने का यही एकमात्र उपाय है। जब तक हम पुराने मन से काम करेंगे, तब तक इस साइन्स के जमाने में मसले हल करने मे हम नाकाम साबित होंगे और खुशी की बात है कि यह मेरी बात उन लोगों को सोचने लायक मालूम हुई और कश्मीर से मैं कुछ आत्म-विश्वास बढ़ाकर आया हूँ। आत्म-विश्वास दो प्रकार का होता है। एक आत्म साक्षात्कार से होता है, जो अन्दर से होता है और दूसरा विश्व-साक्षात्कार से होता है, या सामाजिक भाषा में कहना हो, तो लोक-साक्षात्कार से होता है, जो बाहर से प्राप्त होता है। पहला आत्म-विश्वास तो लेकर ही मैं वहाँ गया था। लेकिन दूसरे प्रकार का आत्म-विश्वास वहाँ से लेकर आया हूँ और अपने लिए जो शक्ति का भान मुझे बाहरी दृष्टि से नहीं था, वह कश्मीर की यात्रा के बाद हुआ।

पठानकोट
२३-९-'५९

●

शब्दकोश

अ

अकीदा–विश्वास
अक्लियत–अल्पमत
अक्सरियत–बहुमत
अखलाकी–नैतिक
अदब–साहित्य
अदम तशद्दुद–अहिंसा
अदावत–झगड़ा
अनफरदा–एक-एक
अमन–शांति
अलामत–निशानी
अवलिया–फकीर
अवाम–जनता
अहम–महत्त्वपूर्ण
अहमियत–महत्त्व

आ

आजमाइश–परीक्षा
आजा–इंद्रियाँ
आयनुल यकीन–दर्शन द्वारा प्राप्त विश्वास
आरामगाह–विश्राम स्थान
आला–उच्च
आलिम–विद्वान्
आसार–लक्षण

इ

इक्तसादी–आर्थिक
इजहार–अभिव्यक्ति
इजाफा–वृद्धि
इतमीनान–संतोष
इदारा–संस्था
इन्किलाबे कल्ब–हृदय-परिवर्तन
इन्तहा–सीमा
इन्तहाई–असीम
इफ्तेदाह–आरंभ
इबादत–पूजा
इबादतगाह–पूजा-स्थान
इमदाद–सहायता
इल्मुलयकीन–ज्ञान द्वारा प्राप्त विश्वास
इलाही–ईश्वरी
इल्म–ज्ञान
इस्तकबाल–स्वागत
इस्तकबालिया कमेटी–स्वागत समिति

ई

ईजाद–शोध

उ

उस्ताद–शिक्षक

ए

एहसास–भान

ऐ

ऐतबार–विश्वास

क

कदमबोसी–चरणों की पूजा
कदीम–प्राचीन
क़द्र–मूल्य
कज़ा–मृत्यु
क़ल्ब–हृदय
कशमकश–संघर्ष
कादिर–सर्वशक्तिमान्
काफिर–नास्तिक
काबिल–योग्य
काबिलियत–योग्यता
कायल–माननेवाला
कारकून–कार्यकर्ता
किताबपरस्ती–पुस्तक-पूजा
कुदरत–प्रकृति
कुफ्र–नास्तिकता
कुल–सम्पूर्ण
क़ौल–मंत्र, आवाज

ख

खालिक–शुद्ध
खाविन्द–पति
खिदमत–सेवा
खिदमतगार–सेवक
खिदमतपरस्त–सेवापरायण
खिदमतपरस्ती–सेवापरायणता
खिलकत–सृष्टि
खुदगर्ज–स्वार्थी
खुसूसियत–विशेषता
खूबसूरत–सुन्दर
खौफनाक–भयानक
ख्वाहिश–इच्छा

ग

गजब–गुस्सा
गरूर–गर्व
गालिब–विजेता
गिज़ा–अन्न
गुर्बत–दारिद्र्य
गैरजानिबदार–निष्पक्ष

च

चश्मा–सोता

ज

जखीरा–भंडार
जजबा–भावना
जद्दोजहद–संघर्ष

जन्नत–स्वर्ग
जम्हूरियत–लोकशाही
जलजला–भूकंप
जहन्नुम–नर्क
जहालत–मूर्खता
जाती तौर पर–व्यक्तिगत तौर पर
जाती नजात–व्यक्तिगत मुक्ति
जानिबदार–पक्षीय
जालिम–जुल्म करनेवाला
जिन्दादिली–Full of Life
जियारत–तीर्थस्थान, दर्शन
जिस्म–शरीर
जिस्मानी–शारीरिक
जिस्मानी मजदूरी–शरीर-परिश्रम
जीनत–शोभा
जुज–अवयव
जुनूब–दक्षिण
जुमला–वाक्य

त

तंगदिल–संकुचित हृदय
तंगनजरिया–संकुचित दृष्टि
तकरीर–भाषण
तक्सीम–विभाजन
तजुरबा–अनुभव
तजुरबेकार–अनुभवी
तनहाई–एकान्त
तफरका–भेद
तफसीर–भाष्य
तब्दीली–परिवर्तन
तमगा–पदवी
तमद्दुन–सभ्यता
तमन्ना–इच्छा
तमीज–विवेक
तर्जुमान–प्रतिनिधि
तलफ्फुज–उच्चारण
तवज्जुह–ध्यान
तवारीख–इतिहास
तशद्दुद–हिंसा
तसल्ली–समाधान
तसव्वुर–कल्पना
तहजीब–संस्कृति
तहरीक–आंदोलन
ताजीर–व्यापारी
तामीरी प्रोग्राम–रचनात्मक कार्य
तालिबिल्म–विद्यार्थी
तिजारत–व्यापार
तिलावत–पाठ
तीमारदारी–बीमारों की सेवा
तुलबा–विद्यार्थी (बहुवचन)
तौहीद–अद्वैत

द

दरख्त–पेड़

दस्तकारी—कुटीर-उद्योग
दिलकश—आकर्षक
दीदार—दर्शन
दीन—धर्म
दुआ—आशीर्वाद, प्रार्थना
दुश्वारी—कठिनता, अड़चन

न

नक्शेक़दम—चरण-चिह्न
नजरअन्दाज—दृष्टि से बाहर
नजरिया—दृष्टिकोण, विचार
नजात—मुक्ति
नजारा—दृश्य
नबी—पैगम्बर
नसीहत—उपदेश
नाकाफी—अपर्याप्त
नापाक—अपवित्र
नामानिगार—सवाददाता
निजाम—रचना
नियामत—देन
नुक्ता—बिन्दु
नुमाइन्दा—प्रतिनिधि
नूर—प्रकाश
नेक आमाल—अच्छे काम

प

पाक—पवित्र
पुख्ता—प्रौढ़
पैगाम—सदेश

फ

फख्र—गौरव
फज्ल—कृपा
फन—कला
फिजा—हवा
फित्‌रत—स्वभाव
फित्‌रती—स्वाभाविक
फिरकापरस्ती—साप्रदायिकता
फेहरिश्त—सूची

ब

बगावत—विद्रोह
बदसूरत—कुरूप
बहिश्त—स्वर्ग
बुजदिल—डरपोक
बुतपरस्ती—मूर्तिपूजा
बुनियादी इन्‌किलाब—आमूल क्राति
बेखौफ—निर्भय
बेतजुरबेकार—अननुभवी
बेदार—जाग्रत
बेदारी—जाग्रति
बेरहमी—निर्दयता
बैनुल अकवामी—अन्तर्राष्ट्रीय

म

मगरिब—पश्चिम
मजलूम—जिस पर जुल्म किया गया

मन्जर–दृश्य
मन्सूबा–योजना
मबनी–निर्भर
मरकज–केन्द्र
मर्दुमशुमारी–जनगणना
मशरिक–पूर्व
मश्क–अभ्यास
मसावात–समानता
महदूद–सीमित
महफूज–सुरक्षित
मह्व–लीन
माकूल–उचित
मादरी जबान–मातृभाषा
मादरे वतन–मातृभूमि
मायूस–निराशा
माली–आर्थिक
माहौल–वातावरण
मिकदार–मात्रा
मीजान–तराजू
मुकम्मिल–पूर्ण
मुकामी मैदान–स्थानिक क्षेत्र
मुखालिफत–विरोध
मुख्तलिफ–भिन्न
मुख्तसर–संक्षेप
मुजारा–किसान
मुतअस्सिर–प्रभावित
मुतालबा–माँग
मुताला–अध्ययन
मुत्तफिक–सहमत
मुत्तहिद–इकट्ठा, संयुक्त
मुश्तरका–सम्मिलित
मुश्तरका मिल्कियत–सामूहिक स्वामित्व
मुहय्या होना–प्राप्त होना
मुहलत–समय
मेहमाननवाज–अतिथि-सत्कार करनेवाला

य

याददाश्त–स्मृति

र

रजामन्दी–अनुमति
रसूल–भगवान् का दूत
रस्मुलखत–लिपि
रहनुमाई–नेतृत्व
रहम–दया
राज–रहस्य
रूह–आत्मा
रूहानियत–आध्यात्मिकता
रूहानी–आध्यात्मिक
रोजा–व्रत
रौनक–शोभा

ल

लकीर—रेखा

लफ्ज—शब्द

लमहा—क्षण

लातादाद—अनन्त

लुगात—शब्दकोश

लुत्फ—मजा

व

वफात—मृत्यु

वर्जिश—व्यायाम

वली—सत

वसी—व्यापक

वहदत—एकता

वाकफियत—परिचय

वाकिफ—परिचित

वादी—घाटी

श

शख्स—व्यक्ति

शख्सी मिलकियत—व्यक्तिगत स्वामित्व

शहवत—काम-वासना

शायर—कवि

शाया—प्रकाशित

शिरकत—साझेदारी

शिर्क—भगवान् के साथ और किसीको जोड़ना

शुमाल—उत्तर

ह

हक—सत्य

हमलावर—आक्रामक

हरारत—गर्मी

हर्फी—शाब्दिक

हसद—ईर्ष्या

हिकमत—युक्ति

हिदायत—आज्ञा

हुकूमतपरस्त—सत्तापरायण

हुकूमतपरस्ती—सत्तापरायणता

हैवानियत—राक्षसीपन

स

सगदिल—निर्दय

सबब—कारण

सब्र—धीरज

सरकारी मुलाजिम—सरकारी नौकर

सरमाया—पूॅजी

सरमायेदार—पूॅजीपति

सलीम—सुशील

सल्तनत—साम्राज्य

सवाब—पुण्य

सिफत—गुण

सिफर—शून्य

सियासत—राजनीति

सियासतदाँ—राजनीतिज्ञ

सुकून—शाति

सैलाब—बाढ़